प्रकाशक—
कृष्णानन्द शास्त्री
अध्यक्ष, भारतीय सस्कृत भवन,
माई हीरां गेट जालन्धर शहर

प्रथम संस्करण   २ श्रावण

मुद्रक—
श्री जीवनदत्त
मालिक इण्डियन नैशनल प्रैस,
प्रताप रोड जालन्धर शहर ।

विषय सूची

विषय			पृष्ठ
१. भूमिका	...	...	४–३२
२. पाणिनि-पारिभाषिक शब्दकोष		...	३३–४०
३. भ्वादिगणः	...	...	१–१९२
४. अदादिगणः	...	...	१९३–२४७
५. जुहोत्यादिगणः	...	...	२४८–२६७
६. दिवादिगणः	...	...	२६८–२९०
७. स्वादिगणः	...	...	२९१–२९७
८. तुदादिगणः	...	...	२९८–३०९
९. रुधादिगणः	...	...	३१०–३२३
१०. तनादिगणः	...	...	३२४–३३१
११. क्र्यादिगणः	...	...	३३२–३४१
१२. चुरादिगणः	...	...	३४२–३५७
१३. णिजन्तप्रक्रिया	...	...	३५८–३६९
१४. सन्नन्तप्रक्रिया	...	...	३७०–३८४
१५. यङन्तप्रक्रिया	...	...	३८५–३९३
१६. यङ्लुगन्तप्रक्रिया	...	...	३९४–३९९
१७. नामधातु प्रकरणम्	...	...	४००–४०३
१८. उपसर्गविषयः	...	...	४०४–४०९
१९. भावकर्मप्रक्रिया	...	...	४१०–४१६
२०. कृदन्तरूपावलि	...	...	४१७–४२३

भूमिका

काणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम्

भारतीय संस्कृति का मूलाधार निःश्रेयससाधक वैदिकवाङ्मय है जो कि वैदिक संस्कृत भाषा में विद्यमान है। वेद, वेद की शाखाएँ, ब्राह्मणादिग्रन्थ-समुदाय वैदिक वाङ्मय है। वैदिक वाङ्मय के सम्यक् अध्ययन, अर्थज्ञान, प्रयोग के लिये प्राचीन ऋषियों ने शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, छन्द ये छः वेदाङ्गों की रचना की। यद्यपि निरुक्त शास्त्र की रचना केवल मात्र वैदिक अर्थ ज्ञान के लिये ही हुई है तथापि निरुक्त शास्त्र की सफलता व्याकरण के बिना नहीं होती। अतएव वेदाङ्गों की गणना में व्याकरण का स्थान तीसरा होते हुये भी उसकी महत्ता का प्रतिपादन निरुक्तकार यास्क[1] तथा महर्षि पतञ्जलि[2] ने भी किया है।

व्याकरण का आदिस्रोत

भारतीय विद्वत्समाज का निर्णीत सिद्धान्त है कि वह प्रत्येक शास्त्र जिसका सम्बन्ध वैदिकवाङ्मय से है—वेदों से आविर्भूत हुआ है। महावैयाकरण पतञ्जलि ने वेदों को ही व्याकरण-शास्त्र का आदि स्रोत प्रमाणित करने के लिए 'चत्वारि शृङ्गा०' 'चत्वारि वाक्०' 'उतत्वः' 'सक्तुमिव०' 'सुदेवोऽसिवरुण०' ये वेद मन्त्र उद्धृत किए हैं। पतञ्जलि से पूर्ववर्ती निरुक्तकार यास्क ने भी निरुक्त १३।२ में 'चत्वारि वाक्०' मन्त्र की व्याकरण शास्त्र परक

---

1. विल्म ग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषु वेदं च वेदाङ्गानि च (निरु० १।०) नावैयाकरणाय निर्ब्रूयात् (निरुक्त २।३)

2. प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम् (म० भा० १।१।१)

व्याख्या करते हुये लिखा है 'नामाख्याते चोपसर्ग निपाताश्चेति वैयाकरणाः।' किञ्च—वैदिक मन्त्रों में कई शब्दों की प्रकृति-प्रत्ययात्मक व्युत्पत्तियाँ अनेकस्थानों में मिलती हैं। यथा—

स्तोतृभ्यो मंहते मघम्। (ऋ० १।११।३)
ये सहांसि सहसा सहन्ते। (ऋ० ६।६६।६)
केतपूः केतं नः पुनातु। यजु० ११।७)
तीर्थैं स्तरन्ति। (अथर्व १८।४।७)

इन उदाहरणों से सिद्ध होता है कि वेद ही व्याकरण का मूल स्रोत है।

व्याकरण का उत्पत्ति काल तथा आदि प्रणेता

व्याकरण-शास्त्र का उत्पत्ति काल इयत्ता से निर्धान करना अति-दुष्कर है। व्याकरण के आदि आचार्यों के काल का ही जब हम निर्णय नहीं कर पाते तो उनके रचित व्याकरण का काल निर्णय कोसों दूर रहा।

व्याकरणशास्त्र के आदिप्रणेताओं के नाम ऋक्तन्त्र (१।४) की निम्न लिखित पंक्तियों में मिलते हैं—

ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्यः, ऋषयो ब्राह्मणेभ्यः।

उपर्युक्त वचन में ब्रह्मा, बृहस्पति, इन्द्र, वरुण ये क्रमशः व्याकरण-शास्त्र के प्रवक्ता कहे हैं। महाभाष्य (पतञ्जलि) में उल्लेख किया है कि बृहस्पति ने प्रतिपद पाठ की विधि से इन्द्र को शब्दों का उपदेश दिया, पर शब्दों का उपदेश दिव्य वर्ष सहस्रों में भी समाप्त[1] न हो सका। कारण यह था कि उस काल में व्याकरण का कोई लक्षणग्रन्थ नहीं बन पाया था। फलतः

1. "बृहस्पति रिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्द-पारायणं प्रोवाच, न चान्तं जगाम" बृहस्पतिश्च प्रवक्ता, इन्द्रश्चाध्येता दिव्यं वर्षसहस्रमध्ययनकालः तथापि नान्तं जगाम। (महाभाष्य)।

शब्दोपदेश की इस कठिनाई को दृष्टिगोचर करके इन्द्र ने व्याकरणाचार्य 'वायु' की सहायता से लक्षणात्मक शब्दोपदेश की प्रक्रिया का आविष्कार किया जो उत्तरकालिक सभी वैय्याकरणों के लिये अनुसरणीय हो गयी। इस घटना का उल्लेख तैत्तिरीय संहिता में मिलता है—

वाग्वै पराच्यव्याकृता वदत्। ते इन्द्रमब्रुवन्, इमां नो वाचं व्याकुर्विति। सोऽब्रवीद् वरं वृणै मह्यं चैवैष वायवे च सह गृह्याता इति। तामिन्द्रो मध्यतोऽवक्रम्य व्याकरोत्।

इस पर व्याख्या लिखते हुये सायण लिखते हैं—'तामखण्डां वाचं मध्ये विच्छिद्य प्रकृति-प्रत्यय विभागं सर्वत्राऽकरोत्। उपर्युक्त लेख से स्पष्ट है कि व्याकरण शास्त्र के आदि ग्रन्थ प्रणेता 'इन्द्र' हुये हैं। इन्द्र का काल सत्ययुग का अन्त तथा त्रेता के आरम्भ का माना जाता है। व्याकरणशास्त्र तीन धाराओं में विभक्त है– १. वैदिक शब्द विषयक—प्रातिशाख्य[1] आदि। २. लौकिक शब्द विषयक—कातन्त्र आदि। ३. लौकिक-वैदिक शब्द विषयक—आपिशल, पाणिनीय आदि।

व्याकरणाचार्यों के दो भेद

इस समय यद्यपि व्याकरण के आचार्यों में पाणिनि ही प्राचीन माने जाते हैं तथापि पाणिनि से प्राचीन कई व्याकरणाचार्य हो चुके हैं। स्वयं पाणिनि ने स्वकृत अष्टाध्यायी में दस आचार्यों का नामोल्लेख किया है। अष्टाध्यायी के अतिरिक्त २३ व्याकरणाचार्यों के नाम अन्यान्य ग्रन्थों में मिलते हैं।

---

1. इस समय निम्नलिखित प्रातिशाख्य उपलब्ध हैं—(१) ऋक्प्रातिशाख्य (२) वाजसनेयप्रातिशाख्य (३) तैत्तिरीय प्रातिशाख्य (४) साम प्रातिशाख्य (५) अथर्व प्रातिशाख्य (६) मैत्रायणीय प्रातिशाख्य। इसके अतिरिक्त अन्य प्रातिशाख्यों के नाम भी ग्रन्थों में यत्र तत्र उपलब्ध होते हैं।

जो कि पाणिनि से प्राचीन[1] हैं। पाणिनि से अर्वाचीन प्रमुख १० दस वैयाकरण हुये हैं जिनकी रचनाएं उपलब्ध हैं।

पाणिनि से प्राचीन प्रवक्ता

पाणिनि से प्राचीन जो प्रवक्ता हुए हैं उनके नाम ये हैं—१ इन्द्र, २ वायु, ३ भरद्वाज, ४ भागुरि, ५ पौष्करसादि, ६ चारायण, ७ काशकृत्स्न, ८ वैयाघ्रपद्य, ९ माध्यन्दिनि, १० रौढि, ११ शौनकि, १२ गौतम, १३ व्याडि, १४ आपिशलि, १५ काश्यप, १६ गार्ग्य, १७ गालव, १८ चाक्रवर्मण, १९ भारद्वाज २० शाकटायन, २१ शाकल्य, २२ सेनक, २३ स्फोटायन। इन २३ आचार्यों में अन्तिम दस आचार्यों का नाम अष्टाध्यायी में नहीं मिलता तथा वे पाणिनि से प्राचीन हैं, इस में सन्देह नहीं। क्योंकि वार्तिकों में उन के नाम उपलब्ध हैं।

पाणिनि से अर्वाचीनव्याकरण ग्रन्थ

(१) कातन्त्र—इस के दो भाग हैं। तद्धितप्रकरणान्त प्रथम भाग के रचयिता शर्ववर्मा हुए। कृदन्तप्रकरणान्तद्वितीय भाग के रचियता वररुचि (कात्यायन) हैं। अत्यन्त सरल होने से भारत से बाहिर भी कातन्त्र का प्रचार हुआ। इस पर सब से प्राचीन दुर्गासिंह की वृत्ति मिलती है। सुकुमार मति बालकों को शब्द ज्ञान कराने के लिए इस व्याकरण की रचना हुई थी इसीलिए इसे 'कौमार' भी कहते हैं। अब तो कातन्त्र का पठन-पाठन केवल बंगाल में रह गया है।

(२) चान्द्र—पाणिनीय व्याकरण के अनन्तर चान्द्र-व्याकरण का स्थान है। चान्द्र-व्याकरण की रचना चन्द्रगोमी नामक प्रसिद्ध बौद्ध

---

1. इन २३ व्याकरणाचार्यों के अतिरिक्त प्रातिशाख्य आदि व्याकरण ग्रन्थों में ५७ व्याकरण प्रवक्ताओं के नाम भी पाये जाते हैं।

विद्वान् ने की थी जोकि ५०० विक्रम से पूर्व हुए । इस व्याकरण में छः अध्याय[1] मिलते हैं जिन में लौकिक शब्दों का साधन किया हुआ है ।

(३) जैनेन्द्र—जैनेन्द्र व्याकरण के रचयिता आचार्य देवनन्दी हुए जिन का काल विक्रम सम्वत् ५००-५५० के मध्य है । इस व्याकरण पर अभयनन्दी और गुणनन्दी की लिखी गयी वृत्तियां पाई जाती हैं । आचार्य देवनन्दी ने भी अपने व्याकरण के सूत्रपाठ पर 'जैनेन्द्रसंज्ञक' न्यास लिखा था ।

(४) विश्रान्त-विद्याधर—इसकी रचना वामन ने की । वामन का समय विक्रम सम्वत् ६०० से पूर्व है । विश्रान्तविद्याधर व्याकरण का नामोल्लेख गणरत्न महोदधि और हेमबृहन्न्यास आदि ग्रन्थों में मिलता है ।

(५) अभिनव-शाकटायन—इसकी रचना जैन आचार्य पाल्यकीर्ति ने की है । पाल्यकीर्ति महाराज अमोघवर्ष की सभा के सदस्य थे । इसीलिए उन्होंने अपने व्याकरण पर लिखी हुई वृत्ति का नाम 'अमोघा' रखा था । महाराज अमोघ वर्ष का काल वि० सं० ८७१-९२४ तक माना जाता है ।

(६) सरस्वती कण्ठाभरण—इसके रचियता धाराधिपति महाराज भोज हुए । इसकी विशेषता यह है कि गणपाठ, परिभाषा पाठ, लिंगानुशासन आदि सब को सूत्रपाठ में रखा गया है । महाराज भोज का समय विक्रम सम्वत् १०७५-१११० तक है ।

(७) हैमशब्दानुशासन इसके रचयिता आचार्य हेमचन्द्र सूरि जैन हुए । इनका जन्म वि० सम्वत् ११४५ में हुआ था । इस व्याकरण में संस्कृत और प्राकृत दोनों प्रकार के शब्दों का अनुशासन किया गया है, पहिले सात

---

1. चान्द्र व्याकरण के सू० १।१।१४५ की वृत्ति में उल्लेख मिलता है "स्वरविशेषमष्टमे वक्ष्यामः" । इस से प्रतीत होता है कि इस व्याकरण के भी आठ ही अध्याय रहे होंगे तथा वैदिक स्वरों का भी निरूपण रहा होगा जो कि नष्ट हो गया है ।

अध्यायों में संस्कृत शब्दों का तथा आठवें अध्याय में प्राकृत शब्दों का। आचार्य हेमचन्द्र ने स्वकृत व्याकरण पर नब्बे हजार श्लोकों में एक बृहन्न्यास भी लिखा था।

(८) सारस्वत--इसकी रचना श्री अनुभूति स्वरूपाचार्य ने की। इसका काल वि० सं० १२०० के लगभग है। कई इस व्याकरण को नरेन्द्राचार्य की रचना मानते हैं।

(९) जौमार—इसकी रचना क्रमदीश्वर ने की थी। इस व्याकरण पर जुमरनन्दी ने वृत्ति लिखी थी, इसीलिए इसका नाम 'जौमार' पड़ा। जुमरनन्दी का काल वि० सं० १२०० के लगभग है।

(१०) मुग्धबोध—इसके निर्माता श्री बोपदेव हुए। बोपदेव का काल वि० की चौदहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध है। बंगाल में मुग्धबोध व्याकरण का पठन-पाठन अब भी है।

व्याकरण शास्त्र का कलेवर

व्याकरण शास्त्र का कलेवर पाँच अवयवों से परिपूर्ण होता है। पहला अवयव सूत्र[1] जिन्हें मूल ग्रन्थ माना जाता है और जिस में प्रत्यक्ष शास्त्रीय विधि या निषेध को बतलाते हैं। दूसरा अवयव धातुपाठ होता है। धातुपाठ[2] व्याकरण का प्रधान अङ्ग तथा शब्दों का स्रोत माना जाता है। बहुत से वैयाकरणों ने सभी नामों को आख्यातज माना है। पाये जाने वाले धातुपाठों में पाणिनीय धातुपाठ सब से प्राचीन है। इस पर क्षीरस्वामी, मैत्रेयरचित, तथा सायण की वृत्तियाँ उपलब्ध

---

1. संज्ञा च परिभाषा च विधि र्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्॥

2. धातुसूत्रगणोणादिवाक्यलिंगानुशासनम्।
आगमप्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥

होती हैं ; तीसरा अवयव गणपाठ है । गणपाठ न हो तो कोई भी शब्दानु-शासन अतिविस्तृत हो जाता । सभी वैयाकरणों ने अपने २ गणपाठ बनाये । केवल भोजदेव ने गणपाठ को सूत्रों में ही पढ़ा । पाणिनीय गणपाठ पर रची गई टीका का नाम गणरत्नावली है जिसे भट्ट यज्ञेश्वर ने बनाया था । व्याकरण का चौथा अवयव उणादि सूत्र है । शाकटायन आदि वैयाकरणों के सम्प्रदाय को अक्षुण्ण रखने के लिये सभी वैयाकरणों ने उणादि सूत्र रचे जिन में सभी नामों को आख्यातज करने के लिये प्रकृति प्रत्यय से व्युत्पादित किया । व्याकरण का पांचवाँ अङ्ग लिंगानुशासन है । इस में संज्ञाओं के लिंग का निर्णय किया गया है । उपलब्ध लिंगानुशासनों में पाणिनीय लिङ्गानुशासन सब से प्राचीन है ।

पाणिनीय शास्त्र पर लिखे गये ग्रन्थ

वार्तिक—पाणिनि सूत्रों पर लिखे गये वार्तिकों[1] में कात्यायन रचित वार्तिक प्रमुख है । पतञ्जलि ने कात्यायन वार्तिकों की न्यूनता को उद्देश्य रख कर 'महाभाष्य' की रचना की है । कात्यायन का काल विक्रम से लगभग २७०० वर्ष पूर्व है ।

महाभाष्य—पतञ्जलि प्रणीत महाभाष्य पाणिनीय-शास्त्र पर लिखे सभी ग्रन्थों से महत्त्वपूर्ण है । इस की भाषा सरल, एवं गूढ़ार्थ है । पतञ्जलि शुङ्गवंश के महाराज पुष्यमित्र के पुरोहित माने जाते हैं । पुष्यमित्र का काल पौराणिक काल गणना के अनुसार विक्रम से लगभग १२०० वर्ष पूर्व है । महाभाष्य पर कई टीका ग्रन्थ लिखे गये, इन में महाभाष्य प्रदीपोद्योत का नाम अति प्रसिद्ध है ।

---

1. महाभाष्य तथा अन्यग्रन्थों में कात्यायन के अतिरिक्त इन वार्तिक-कारों के नाम भी उपलब्ध होते हैं—भारद्वाज, सुनाग, क्रोष्टा, वाडव, व्याघ्रभूति, वैयाघ्रपद्य ।

वृत्ति ग्रन्थ—अष्टाध्यायी पर लिखे गये वृत्ति ग्रन्थों में 'काशिका' सब से प्राचीन तथा प्रामाणिक मानी जाती है। इस की रचना विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुई। काशिका के आठ अध्यायों में पहले पाँच अध्यायों के रचयिता जयादित्य और अन्तिम तीन अध्यायों के रचयिता वामन हैं। सम्भव है—इन दोनों ने पृथक् २ अष्टाध्यायी की वृत्तियां लिखी हों और कालान्तर में दोनों वृत्तियों का सम्मिश्रण हो गया। काशिका पर अनेक व्याख्या ग्रन्थ लिखे गये जिन में न्यास (काशिका विवरणपञ्जिका) का नाम प्राचीन और विशद है।

प्रक्रियाग्रन्थ[1]—लगभग पाँच शताब्दियों से पाणिनीय अष्टाध्यायी का पठन-पाठन मौलिकक्रम को छोड़ कर प्रक्रियाक्रम से होना चला आ रहा है। प्रक्रियाग्रन्थों में धर्मकीर्ति का 'रूपावतार' प्राचीन है। इस के बाद कई प्रक्रियाग्रन्थ लिखे गये। इन में रामचन्द्र कृत प्रक्रियाकौमुदी, भट्टोजि दीक्षित कृत सिद्धान्त कौमुदी, नारायण भट्टकृत प्रक्रियासर्वस्व मुख्य हैं। इन प्रक्रिया-ग्रन्थों पर भी कई टीका[2] ग्रन्थ लिखे गये।

अष्टाध्यायी और प्रक्रियाग्रन्थों से व्याकरणाध्ययन में अन्तर

लगभग पाँच शताब्दियों से पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन प्रक्रिया-ग्रन्थों द्वारा हो रहा है जो कि अस्वाभाविक तथा चिरकाल साध्य है। प्रक्रियाग्रन्थों में अष्टाध्यायी के सूत्र क्रमबद्ध नहीं अतः सूत्रों के साथ कई गुणा वृत्तियां भी कण्ठ करनी पड़ती है। अष्टाध्यायी में तो अनुवृत्ति सम्बन्ध

---

1. प्रक्रियाकौमुदी पर शेषकृष्ण तथा विट्ठल की टीका। सिद्धान्तकौमुदी पर प्रौढ़मनोरमा, बालमनोरमा, तत्त्वबोधिनी, लघुशब्देन्दु शेखर, परिभाषेन्दु-शेखर व्याख्याएँ हुईं।

2. व्याकरणप्रवेश के लिये-मध्यकौमुदी-लघुकौमुदी ग्रन्थ रचे गये।

का ज्ञान रहने से अर्थबोध में बाधा उपस्थित नहीं होती। प्रक्रियाग्रन्थों में सूत्र व्युत्क्रम से होते हैं इसलिये 'पूर्वत्रासिद्धम्' 'विप्रतिषेधे परं कार्यम्' 'असिद्ध-वदत्राभात्' 'परं नित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं बलीयः' आदि विधियों के विषय में अध्येता को 'बाबा-वचनं प्रमाणम्' वाली लोकोक्ति के अनुसार आँखों पर पट्टी बाँधकर ग्रन्थमात्र पर विश्वास करके चुप रहना पड़ता है। अष्टाध्यायी में गुण, वृद्धि, इट् आदि विधिसूत्र एक तालिका में रखे हुए हैं, इस के विपरीत प्रक्रियाग्रन्थों में ये सूत्र विभिन्न प्रकरणों में बँटे हुए हैं। इन कारणों से अष्टाध्यायी से पाणिनि व्याकरण का अध्ययन अत्यन्त उपकारक माना जा सकता है।

हमारा मत

अष्टाध्यायी से व्याकरण का अनुशीलन तभी उपकारक है जबकि अध्येता प्रौढ़ और परिस्थितियों की सङ्कीर्णता से युक्त हो। आज का युग किसी भी व्यक्ति को निराबाध वातावरण नहीं दे सकता। पता नहीं कब उसे अध्ययन से विमुख हो जाना पड़े ? ऐसी स्थिति में अष्टाध्यायी के एक दो, अध्याय पढ़कर छोड़ने वाले को व्याकरण के किसी भी भाग या उपभाग का कोई ज्ञान न होगा। प्रक्रिया ग्रन्थों के आधार पर सिद्धान्तकौमुदी आदि के षड्लिङ्गान्त भाग तक पढ़कर छोड़ने वाले को कम से कम सन्धि-सुबन्त शब्दों का ज्ञान तो हो जायेगा। अष्टाध्यायी के प्रथमपाद के ४३ सूत्र "सुडनपुंसकस्य" से स्वादिपंच वचनों की सर्वनाम स्थान संज्ञा की गई है, परन्तु स्वादिप्रत्यय तो चतुर्थाध्याय प्रथमपाद के दूसरे सूत्र "स्वौजसमौट्—" में आवेंगे। इससे पहले "सुडनपुंसकस्य" पढ़ना किसी काम न आया। अतः हमारी समझ में प्रक्रियाग्रन्थों से अध्ययन में वृत्ति छोड़ने का जहां अधिक काम पड़ता है वहां उदाहरण-प्रत्युदाहरण द्वारा अध्येता का सन्तुष्टीकरण भी हो जाता है। हां, सिद्धान्त कौमुदी आदि पढ़ने वाले को अष्टाध्यायी भी अवश्य साथ रखनी चाहिये, जिस से सूत्रक्रम का ज्ञान भी हृदयङ्गम हो जाए।

पाणिनि का परिचय

आचार्य पाणिनि जी के पिता का नाम पाणि और माता का नाम 'दाक्षी' था। पतञ्जलि ने लिखा है—'दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः'। इन के गुरु उपवर्षाचार्य थे। इनका जन्मस्थान अटक माना जाता है। क्योंकि गणतन्त्र महोदधि में लिखा है—'शालातुरो नाम ग्रामः, सोऽभिजनोऽस्यास्तीति शालातुरीयः, तत्रभवान् पाणिनिः।' शालातुर का उल्लेख "तूदी शलातुर वर्मतीकूचवाराड्ढक्छण्ढञ्यकः (पा ४।३।९४) में मिलता है। जो कि अटक के समीप है। इसका उदाहरण 'शालातुरीयः' है। अध्ययन इन्होंने पाटलिपुत्र में किया। छात्रावस्था में ही आशुतोष भगवान् शंकर की आराधना से चौदह[1] सूत्र इन्हें प्राप्त हुए, उन्हीं के आधार पर पाणिनि ने शब्दानुशासन, (सूत्रपाठ), धातुपाठ, गणपाठ, लिंगानुशासन, उणादिसूत्र की रचना की।

आचार्य पाणिनि के काल का निर्णय भी गम्भीर है। पाणिनि का एक सूत्र केवल दो शब्दों की सिद्धि के लिए रचा गया है—"गवि युधिभ्यां स्थिरः" (पा० ८।३।९५) इसमें युधि+स्थिरः=युधिष्ठिरः शब्द की व्युत्पत्ति की गई है। सुतरां युधिष्ठिर काल के अनन्तर ही पाणिनि का प्रादुर्भाव होना चाहिये। किंच—"एजेः खश्" (पा० ३।२।२८) सूत्र भी केवल 'जनम् एजयति=जनमेजयः" इस प्रकार जनमेजय शब्द की व्युत्पत्ति के लिए है। तदित्थं जनमेजय काल से पश्चात् ही पाणिनि हुए। जनमेजय काल—

कलिगताब्द ३६ में पाण्डवराज्य समाप्त हुआ और तदनन्तर ३० वर्ष तक परीक्षित का राज्य रहा। इसके लिए देखिये पद्मपुराणान्तर्गतभागवत माहात्म्य—

---

1. नन्दिकेश्वरकृत काशिका—

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

"श्रीकृष्णनिर्गमात् त्रिंशद्वर्षेष्वधिगते कलौ ।
भाद्रशुक्ल नवम्यां हि कथारंभं शुकोऽकरोत् ॥

फलतः ६६ कलिगताब्द तक परीक्षित की पूर्णायु भी ६६ ही हुई । परीक्षित के बाद जनमेजय का राज्य हुआ, यदि जनमेजय की आयु १०० साल भी रख लें तो उसका प्रसिद्धि प्राप्त नाम 'जनमेजय' को भाषा प्रवाह में आते संभवतः सौ-पचास साल चाहियें, सो अनुमानतः कलिगताब्द लगभग ३०० वर्ष के बाद ही पाणिनि का प्रादुर्भाव हुआ होगा । युधिष्ठिरमीमांसक[1] जी ने खुले शब्दों में पाणिनि को विक्रम से १८०० वर्ष पूर्व माना है ।

पाणिनि व्याकरण का मूलाधार

पाणिनि व्याकरण की आधारशिला चौदह सूत्र[2] (अक्षर समाम्नाय) है, जोकि तपस्या से सन्तुष्ट भगवान् शङ्कर से प्राप्त हुए थे । इन्हीं सूत्रों से केन्द्र बिन्दु रखकर शेष सूत्रों की रचना की गई थी । ये सूत्र निम्नलिखित हैं—

१. अ इ उण् २. ऋलृक् ३. एओङ् ४. ऐऔच् ५. ह य व र ट् ६. लण् ७. ञ म ङ ण न म् ८. झ भ ञ् ९. घ ढ ध ष् १०. ज ब ग ड द श् ११. ख फ छ ठ थ च ट त व् १२. क प य् १३. श ष स र् १४. हल् ।

वैसे तो पाणिनि अष्टाध्यायी का एक सूत्र भी उठा लिया जाए तो शेष सूत्र-समुदाय इस तरह लड़खड़ाने लगेंगे जैसे किसी उपयोगी पुर्जे को उठा लेने से यन्त्र बेकार हो जाता है, पर इन चौदह सूत्रों के एक भी अक्षर को उठा लिया जाय, अथवा किसी एक भी सूत्र या सूत्र वर्ण को विपर्यास से रखा जाय तो सारा खेल बिगड़ जायगा इस में कोई सन्देह नहीं । इन सूत्रों की

1. संस्कृत व्याकरण का इतिहास ।
2. पाणिनीय शिक्षा— 'येनाक्षर समाम्नाय मधिगम्य महेश्वरात् ।
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः ॥'

रचना इच्छानुसार, कल्पना पर नहीं, प्रत्युत ध्वनि शास्त्र के वैज्ञानिक रहस्य पर निर्भर है। इन सूत्रों में वर्णों को मुख्य दो भागों में बाँटा गया है—स्वर और व्यञ्जन। जिस प्रकार वाह्य जगत् जड़ और चेतन दो भागों में है, चेतन के बिना जड़ में अपना कोई स्पन्दन नहीं होता, इसी प्रकार वर्ण जगत् में स्वरों को चेतन और व्यञ्जनों को जड़ समझना चाहिये। व्यञ्जन के पूर्व या पश्चात् कोई स्वर हो तभी व्यञ्जन का उच्चारण होगा अन्यथा नहीं[1]। प्रथम चार सूत्रों में स्वरों का सन्निवेश है शेष दस सूत्रों में व्यञ्जनों का। स्वरों में भी मूल स्वर (अ, इ, उ,) अलग अलग प्रथम सूत्र में है तथा दूसरे तीसरे चौथे सूत्रों में मूल स्वरों के विकार रूप—सन्धिस्वर[2] हैं। उच्चारण के लिये नाभिकमल से उठा हुआ प्राणवायु कण्ठ, तालु, ओष्ठ स्थानों से क्रमशः टक्कर खाता है इसी-लिये कण्ठस्थानीय 'अ' को प्रथम रखा, उस के बाद 'इ' और उसके भी अनन्तर 'उ,। जो तालु और ओष्ठ स्थान से उच्चारण किये जाते हैं। दूसरे सूत्र में ऋ और ऌ दो स्वरों का न्यास यद्यपि उच्चारण स्थान की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है तथापि मूल स्वर और सन्धि स्वरों के बीच इन्हें यहां रखना उचित समझा गया क्योंकि ये दोनों स्वर नई जाति के स्वर हैं अर्थात् पूर्ण स्वर नहीं। ऋकार में रेफ का अंश तथा ऌकार में लकार का अंश विद्यमान है।

---

1. यद्यपि व्यञ्जन का अर्धमात्रिक उच्चारण लिखा है तथापि यह नाममात्र को है। 'रामात्' में 'त्' का उच्चारण मकारोत्तर 'आ' के बल पर है। मेरी समझ में अकेले 'त्' का उच्चारण है ही नहीं। दुर्गास्तुति करते हुये रात्रि-सूक्त में अर्धमात्रा को विशेष रूप से उच्चारण के अयोग्य ही बताया गया है—'अर्धमात्रा स्थिता नित्यं याऽनुच्चार्या विशेषतः।

2. ऋ, ऌ यद्यपि दो स्वरों के मेल से नहीं बने तथापि स्वर-व्यञ्जन के मिश्रण से बने होने के कारण हमने सन्धि स्वर ही माने हैं।

3. क्योंकि पहले सूत्र में तृतीय वर्ण 'उ' जो कि ओष्ठ्य है—के न्यास के बाद ओष्ठ से पीछे हट कर मूर्धा स्थान वाले 'ऋ' का न्यास किया है।

तभी तो शुद्ध संस्कृत के शब्दों को छोड़ कर लोक भाषाओं में ऋ, लृ का प्रयोग न आ सका। फिर भी (भीतर की ओर से) मूर्धा स्थान वाले 'ऋ' को प्रथम रख कर दन्त स्थान के 'लृ' को बाद में रखा है। तीसरे सूत्र से मुख्य सन्धि-स्वर प्रारंभ होते हैं—पहला सन्धि स्वर 'ए' प्रथम सूत्र के प्रथम[1] द्वितीय वर्ण अ+इ से बना है। दूसरा सन्धि स्वर— जो पहले सूत्र के प्रथम तृतीय वर्ण अ+उ से बना है। चौथे सूत्र का पहला सन्धिस्वर—ऐ प्रथम सूत्र के पहले दूसरे वर्ण अ+इ के विकार को ही बढ़ा चढ़ा कर (अ+इ=ए, अ+ए=ऐ) बनाया गया है। इसी प्रकार चतुर्थ स्वर का सन्धिस्वर[2] औ भी अ+उ का ही विकार है। मूलस्वरों के उच्चारण क्रम के अतिरिक्त ए ओ। ऐ औ, इन वर्णयुगलों को पृथक् २ सूत्रों में रखने का कारण यह भी है कि ए, ओ और ऐ, औ के उच्चारण विवृततर[3] तथा विवृततम प्रयत्न के भी भेद हैं।

ह य व र ट् । लण्

यह, अक्षर समाम्नाय का पांचवां तथा छठा सूत्र है। यहां से व्यञ्जनों का समाम्नान किया गया है। इस पर कुछ विचार करना है। स्वरों की भांति व्यञ्जनों को भी मुख्य दो भागों में बांटा हुआ है— घोष और अघोष। अघोषों को श्वास (कठोर) भी कहते हैं। श्वास वर्ण कठोर ध्वनि वाले होने से पीछे रखे गये हैं और घोष वर्ण को मृदु ध्वनि वाले होने से पहले। सूत्र ५ से सूत्र १० तक कोमल व्यञ्जन और सूत्र ११ से सूत्र १४ तक कठोर ध्वनि वाले व्यञ्जन हैं। सूत्रों में व्यञ्जनों का न्यास करते हुए

---

1. 'अकारो वासुदेवः स्यात्।' जगत् में ब्रह्म की तरह सभी ध्वनियों में 'अ' की ध्वनि ओत प्रोत है।

2. इसी लिये इस सन्धि का नाम वृद्धि रखा है।

3. देखिये पाणिनीय शिक्षा—

"स्वराणामूष्मणां चैव विवृतं करणं स्मृतम्।
तेभ्योऽपि विवृता वेङौ ताभ्यामैचौ तथैव च॥

'ह' को प्रथम स्थान क्यों दिया ? यदि कहा जाये कि पहला वर्णोच्चारणस्थान कण्ठ है, यदि कण्ठ स्थान के 'अ' स्वर को पहले रखना ठीक है तो व्यञ्जनों में कण्ठस्थान के 'ह' का प्रथमोल्लेख भी ठीक है ? इस पर हमारा कहना है कि कण्ठस्थान के तो और भी व्यञ्जन हैं ही ! अकार-हकार का यदि संवृत[1] प्रयत्न सम है तो दूसरे व्यञ्जनों का भी संवार प्रयत्न है। हमारी समझ में तो यह आता है कि विशेष परिस्थिति में हकार का कण्ठस्थान के अतिरिक्त 'उरस्' स्थान भी है जोकि कण्ठस्थान से पूर्ववर्ती है। सुतरां—अकार-हकार को कण्ठस्थान समता, संवृत-प्रयत्न की समता, और उरस्[2] स्थान की विशेषता को ध्यान में रखकर व्यञ्जनों में 'ह' को प्राथमिकता का अधिकार दिया गया है।

'ह' के अनन्तर व्यञ्जन आते हैं—य, व, र, ल । इनकी ऐसी स्थिति क्यों ? इन्हें 'अन्तःस्थ' भी कहते हैं। 'अन्तःस्थ' का यहां पर अर्थ हो सकता है कि—इन के उच्चारण में जिह्वा को भीतर की ओर संकुचित होना पड़ता है, वहां यह अर्थ भी संगत है कि ये चार वर्ण 'अन्तःस्थ'—स्वर-व्यञ्जनों की मध्यावस्था में हैं। अर्थात् आधे स्वर और आधे व्यञ्जन। ये चारों व्यञ्जन क्रमशः इ, उ, ऋ, लृ के विकार हैं। हैं। यदि यण् (य, व, र, ल) आधे स्वर न होते तो इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के स्थान में इन्हें आदिष्ट न किया जाता ? शब्द शास्त्र के रहस्यानुसार कोई कारण नहीं कि स्वरों के स्थान व्यञ्जनों का आदेश किया जाय या व्यञ्जनों के स्थान पर स्वरों का। दोनों की जाति भिन्न २ है। केवल 'इको यणचि'

---

1. ह्रस्वस्यावर्णस्य प्रयोगे संवृतम्' 'हशः सम्वारा नादा घोषाश्च ।' (कौ०)

2. देखो पाणिनीय शिक्षा—

"हकारं पञ्चमैर्युक्त मन्तःस्थाभिश्च संयुतम् ।
उरस्यं तं विजानीयात् कण्ठ्यमाहु रसंयुतम् ॥

(पा. ६।१।७७) ही ऐसा आदेश[1] सूत्र है जो स्वरों के स्थान पर व्यञ्जनों को आदिष्ट करता है। यह भी विचित्रता है कि—'इग्यणः सम्प्रसारणम्' (पा. सू. १।१।४५) से य, व, र, ल को फिर से स्वरावस्था दी जाती है। तदेवम्—ये चारों वर्ण अ, इ, उ, ऋ में सजातीय होने से मूलस्वरों के ही क्रम से रखे गये हैं।

ञ म ङ ण न म्।

घोष व्यञ्जनों में अन्तःस्थों को प्रथम स्थान दे कर उस के अनन्तर उपरिलिखित पांच व्यञ्जन एक ही सूत्र में पिरोये गये हैं। इन में भी अन्य-व्यञ्जनों से एक विशेषता है। ये द्विस्थानिक हैं। अपने वर्ग के स्थान के अतिरिक्त इन का नासिका स्थान भी है। इसी से इन्हें अलग छांट दिया गया है। सम्वार, नाद, घोष, अल्पप्राण प्रयत्न समान होते हुए भी इन का न्यास-स्थान या वर्णों के वर्गक्रम से क्यों नहीं किया गया? यह समझ में नहीं आ सका। हाँ, कहीं २ अभीष्ट प्रत्याहारों के साधन के लिये आचार्य को क्रम का त्याग करना पड़ा है। क्योंकि यदि इस सूत्र में कण्ठ स्थानीय 'ङ' को पहले रखते तो 'ङ म्' प्रत्याहार में 'ञ' 'म' भी परिगणित हो जाते।

झ भ ञ्। घ ढ ध ष्। ज ब ग ड द श्।

ये वर्णसमाम्नाय के आठवें-नौवें-दसवें सूत्र हैं। इन में दस वर्ण हैं

---

1. यद्यपि "इको यणचि" के अतिरिक्त "एचोऽयवायावः" की विधि भी स्वरों के स्थान पर व्यंजन-रूप आदेश करती है तथापि वह विधि 'इको यणचि' का ही विस्तार मात्र है। तथाहि—'एचोऽयवायावः' से जो 'ए' को 'अय्' आदेश होता है वह वास्तव में 'इ' को य् ही है। अ+इ=ए होता है एकार में इकार को य् कर देने पर अ अलग बच जाता है-अ+य्=अय् होता है। इसी प्रकार अव्, आव् आदेश ओ-औ के उकार के स्थान पर 'व्' आदेश ही हैं। ओ, औ में अ. आ अलग २ रह जायेंगे। (सर्वत्र विभाषा गोः) यही स्थिति अवङ् आदेश में भी समझनी चाहिये।

जो अलग २ सूत्रों में हैं। इन वर्णों को इस स्थान में क्यों रखा ? यद्यपि ऊपर के परिच्छेद में लिखे अनुसार आचार्य को कहीं २ वर्गीय वर्णों के क्रम का त्याग करना पड़ा है फिर भी उन का वर्णन्यास किसी क्रम पर अवलम्बित है। स्वरों का न्यास करते हुए कण्ठ स्थान से बाहिर की ओर चले हैं।

परन्तु व्यञ्जनों का न्यास स्थान क्रम से नहीं, अपितु वर्गीय वर्णों के क्रम पर अवलम्बित है। पहले वर्ग के पांचवें, फिर वर्ग के चौथे, फिर तीसरे, दूसरे, उस के बाद पहले[1]। प्रत्येक वर्ग के वर्णों का प्रारंभ चवर्गीय वर्ण से किया है, केवल कवर्ग के वर्ण अपने ही वर्ग के दूसरे वर्ण 'ख' से प्रारंभ किये हैं। विचित्रता यह है कि—सूत्र ७ से सूत्र १० तक निरन्तर घोष हैं। सूत्र ११—१२ में अघोष। इन दोनों भागों में सुगम तथा उच्चारण किये जाने वालों को पहले और श्रुतिकटुओं को बाद में रखा गया है।

ख फ छ ठ थ च ट त व्। क प य्।

इन दोनों सूत्रों में वर्ग के द्वितीय और वर्ग के प्रथम व्यञ्जन हैं। ऊपर कह आये हैं कि बाकी वर्गों का प्रारंभ[2] चवर्गीय वर्ण से है, केवल कवर्गीय[3] वर्णों का प्रारंभ 'ख' (कवर्ग से) है। कारण ?—वर्गों के प्रथम-द्वितीय वर्ण कठोर ध्वनि वाले हैं, श्रुतिकटु या कठोर अर्थ को व्यक्त करने के लिये 'ख र्' शब्द अधिक उपयुक्त हो सकता है, इन वर्णों को 'खर' नाम के लिये (अर्थात् खर् प्रत्याहार बनाने के लिये) कवर्गीय वर्णों का प्रारम्भ 'ख' से किया है।

---

1. ञ म ङ ण न म्। झ भ ञ्। घ ढ ध ष्। ज ब ग ड द श्। ख फ छ ठ थ च ट त व्। क प य्। इस सूत्र क्रम को ध्यान से देखिये।

2. टिप्पणी नं० १ में सूत्रों के प्रथम वर्णों को देखिये।

3. देखिये सूत्र ख फ छ ठ थ।

श ष स र् । हल् ।

ये चार 'उष्मन्' हैं। इन का उच्चारण स्थान क्रम से तालु, मूर्धा, दन्त, कण्ठ है। यहां पर कण्ठ स्थान वाले को पहले नहीं रखा गया? - क्योंकि ऊष्मन् वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु को अपेक्षाकृत गर्म होना पड़ता है तभी इन की 'ऊष्म' संज्ञा चरितार्थ है। दूसरे ऊष्मन् वर्णों से 'श' के उच्चारण में प्राण अधिक मात्रा में गर्म होता है इसी लिये स्थान क्रम का उल्लङ्घन कर 'श' को प्रथम स्थान दिया है।

वर्ण समाम्नाय में 'ह' का दो बार निर्देश किया है। पहली बार के निर्देश से 'ह' अट् प्रत्याहार में गिना जायगा दूसरी बार के निर्देश से 'शल्' प्रत्याहार में। दोनों प्रत्याहारों में हकार का परिगणन शास्त्रीय प्रक्रिया के लिये अपरिहार्य[1] था।

प्रत्याहार

प्रत्याहार शब्द का अर्थ—जिसमें बहुत से वर्णों का संक्षेप से ज्ञान हो सके।

इन चौदह सूत्रों और सूत्रों के वर्णों को इस क्रम से रखने का मुख्य-ध्येय प्रत्याहारों का साधन है। वास्तव में प्रत्याहार पाणिनी शास्त्र के आधार-स्तम्भ हैं। इसके बिना शब्दानुशासन के नियम इतने संक्षिप्त सूत्रों में गुम्फित करना दुष्कर था। वर्णों के सङ्क्षिप्त नाम या सूची को प्रत्यहार कहना उचित होगा। यदि प्रत्यहार न होते तो "इको यणचि" सूत्र के स्थान पर लिखना पड़ता—'इ' उ, ऋ, लृ वर्णानां स्थाने य, व, र, ल स्युः अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ वर्णेषु परेषु। इस प्रकार ग्रन्थ बृहदाकार में हो कर धारण करने योग्य न रहता।

---

1. कारिका—

हकारो द्विरुपात्तोऽयमटि शल्यपि वाञ्छता ।
अर्हेणाधुक्तदित्यत्र द्वयं सिद्धं भविष्यति ॥

पाणिनि शास्त्र में प्रत्याहार ४२ हैं। यद्यपि इनसे अतिरिक्त भी प्रत्याहार बन सकते हैं परन्तु उनका शास्त्र में उपयोग नहीं। प्रत्याहारों की कारिका यूं है—

"स्यादेको ङञणवटैः षेण द्वौ, ज्ञेय इह कणाभ्याम्।
चत्वारश्च चमाभ्यां पञ्च यराभ्यां शलाभ्यां षट्॥

ङ, ञ्, ण, व, ट् से एक २ प्रत्यहार (एङ, यञ्, अण्, छव्, अट्), ष से दो झष्, भष्), क् ण् से तीन तीन (अक्, इक, उक्। अण्, इण्, यण्), च् म् से चार चार (अच्, इच्, एच, ऐच्,। अम, यम्, ङम्, झम्), य्, र् से पाँच पाँच (यय्, मय्, झय्, खय्, चय,। यर्, झर्, खर्, शर् चर्), श् ल् से छः छः (अश्, हश, बश्, झश्, जश्, वश्,। अल्, हल्, वल्, रल्, झल्, शल्)। प्रथम चार निर्दिष्ट ण् से एक ही प्रत्याहार अण् बनता है, दूसरी बार निर्दिष्ट ण् से अण्, इण, यण, ये प्रत्याहार बनते हैं।

स्थान

पाणिनीय व्याकरण में वर्णों के उच्चारण स्थान निश्चित हैं जो केवल कल्पना पर निर्भर नहीं अपितु ध्वनि विज्ञान पर आधारित हैं। लौकिक शब्दानुशासन[1] में कण्ठ, तालु दन्त, मूर्धा, ओष्ठ, नासिका इन छः वर्ण स्थानों का उपयोग है। वर्णों के उच्चारण स्थान के सम्बन्ध में आचार्य पाणिनि किसी सूत्र में निर्देश नहीं कर गये कि किन किन वर्णों का कौन २ स्थान है। संभव है आचार्य के समसामायिक दूसरे व्याकरण ग्रन्थोंमें स्थान-प्रयत्न का प्रख्यात निरूपण होने से फिर से साधारण सी बात की आवृत्ति को अनावश्यक समझा गया हो। हां, पाणिनि सूत्रों में कुछ एक स्थानों का उल्लेख है सब का नहीं। स्थान का परोक्षरूप से निर्देश इन सूत्रों में है —'तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्'' (पा० १।१।६) 'स्थानेऽन्तरतम.[2] '' (पा० १।१।५०) ''अकःसवर्णे दीर्घः '' (पा० ६।१।

---

1. शिक्षा में लिखा है - ''अष्टौ स्थानानि वर्णानाम्''।

2. अन्तरतमः—स्थान प्रयत्नाभ्यां सदृशः।

१०१) " प्रथमयो: पूर्वसवर्ण:" (पा० ६।१।१०२) "अणुदित् सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः" (पा० १।१।६९)। स्थान का प्रत्यक्ष निर्देश करने वाले सूत्र अंगुलियों पर गिनने के हैं—"मुखनासिका वचनोऽनुनासिकः" (पा० १।१।८) " उदोष्ठ्यपूर्वस्य " (पा० ७।१।१०२) "लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये" (पा० ७।३।७३) "अपदान्तस्य मूर्धन्यः " (पा० ७।३।५५)"। इन सूत्रों में नासिका[1] ओष्ठ, दन्त, मूर्धा नाम लिया गया है। कण्ठ, तालु स्थान का कहीं उल्लेख नहीं मिलता।

प्रयत्न

प्रयत्न का नामोल्लेख पाणिनि ने प्रत्यक्षरूप से "तुल्यास्य प्रयत्न सवर्णम्" (पा० १।१।९) में किया है और परोक्षनिर्देश " स्थानेऽन्तरतमः" (पा० १।१।५०) में किया है। इन दो सूत्रों के अतिरिक्त किसी भी सूत्र में प्रयत्न का नाम नहीं। वर्ण स्थानों की तरह यह भी नहीं मिलता किन वर्णों का कौन प्रयत्न है। इन बातों के ज्ञान के लिये पाणिनीय शिक्षा तथा वृत्ति ग्रन्थों का आश्रय लेना पड़ता है।

नाभिकमल से उठे हुये प्राण वायु की जहाँ टक्कर होती है उसे स्थान कहते हैं। प्राण वायु की अनुकूल स्थिति के लिए जिह्वा के व्यापार एवं प्राणवायु के व्यापार को प्रयत्न समझना चाहिये। इन दो कारणों से आभ्यन्तर और बाह्य भेद से प्रयत्न दो प्रकार के हैं—

(क) आभ्यन्तर प्रयत्न—आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्न के नाम वृत्तिग्रन्थों में परम्परा से चले आ रहे हैं। प्रयत्न के इन दो भेदों में मौलिक भेद का किसी टीकाकार ने निरूपण नहीं किया। हां, लघुकौमुदी की टीका करते हुए कई टीका कारों ने इतना अवश्य लिख डाला कि उच्चारण से पूर्व होने वाले प्रयत्न आभ्यंतर और उच्चारण के बाद होने वाले को बाह्य कहते हैं।

---

1. अनुनासिक (नासिक्य) का उल्लेख " अणोऽप्रगृह्यस्याऽनुनासिकः" आदि कई सूत्रों में मिलता है।

परन्तु – उच्चारण जब हो चुका तब प्रयत्न होगा क्यों ? वास्तव में कण्ठ से मुख तक जो व्यापार होता है उसे ही आभ्यन्तर प्रयत्न समझना चाहिए और कण्ठ से बाहिर अर्थात् भीतर की ओर प्राण वायु की चेष्टा को वाह्य प्रयत्न समझना अधिक उपयुक्त और संगत होगा। ये पाँच भेद हैं - स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद् विवृत, विवृत, संवृत। ये पांचों प्रयत्न मुख के भीतर होते हैं. वाह्य मुख के बाहिर।

(ख) वाह्य प्रयत्न के भेद ग्यारह हैं—विवार, सम्वार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित। इनमें पहले से आठ तक चार ऐसे हैं जो एक दूसरे के विपरीत हैं। अर्थात् जो वर्ण विवार हैं वे सम्वार नहीं। इसी प्रकार श्वास नाद आदि भी परस्पर विरोधी हैं। खर वर्णों के विवार, श्वास, अघोष प्रयत्न हैं, हशों के संवार, नाद, घोष। वर्गों के प्रथम-तृतीय-पञ्चम, तथा यण् (य, व, र, ल) का अल्पप्राण प्रयत्न है। वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ शल् (श, ष, स, ह) का महाप्राण प्रयत्न है। उदात्त, अनुदात्त, स्वरित का उपयोग वेद में है।

अब देखना है कि विवार, संवार आदि हैं क्यों ? उच्चारण के लिये कण्ठ की नाडियों के खुलने का नाम विवार और सिकुडने का नाम संवार है। उच्चारण के लिए अधिक श्वासों के उठने का नाम 'श्वास'[1] है, इस के विपरीत थोड़ा श्वास उठने का नाम नाद है। प्राणवायु को मस्तिष्क में चक्कर लगाना पड़ता है, इसे ही घोष प्रयत्न कहते हैं। इस के विपरीत प्राणवायु मस्तिष्क में होकर विना चक्कर लगाये लौट आती है तो उसे अघोष प्रयत्न कहते हैं। प्राणवायु जब उरस् (छाती) से थोड़ा

---

1. तबले की जोड़ी में आटा लगाये जाने वाले पुड़े से जो 'थप्' इस प्रकार की आवाज आती है। वही श्वास प्रयत्न वालों की ध्वनि है। मसाले वाले पुड़े से जो ध्वनि आती है वही नाद प्रयत्न वालों की है। नाद का अर्थ है-ध्वनि की लहर।

जोर लगाकर उठती है तो अल्पप्राण प्रयत्न होता है। छाती से अधिक जोर लगाकर प्राणवायु के उठने का नाम महाप्राण प्रयत्न है। उदात्त, अनुदात्त स्वरित ये तीनों प्रयत्न बताते हैं कि ध्वनि का उच्चारण कण्ठ, तालु आदि स्थानों के किस भाग मे विशेषतया उठ रहा है। सारांश—श्वास, नाद, घोष-अघोष, महाप्राण ये प्रयत्न व्यञ्जनों के ही होते हैं, स्वरों के नहीं। शेष प्रयत्न स्वर-व्यञ्जन दोनों के होते हैं।

वर्ग

यद्यपि आचार्य पाणिनि ने किसी सूत्र में उल्लेख नहीं किया कि किस २ वर्ग में कौन २ व्यञ्जन हैं, तथापि वर्गों का नाम परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से दिया है। वर्गों का परोक्षतया निर्देश "अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः (पा० १।१।६९) सूत्र में है। इसमें उदित् से अभिप्राय कु, चु, टु, तु, पु इन पांच वर्ग निर्देशक वर्णों से है। वर्गों का प्रत्यक्ष निर्देश निम्नलिखित सूत्रों में मिलता है—

अट् कुप्वाङ्नुम् व्यवायेऽपि	८।४।२
स्तोः श्चुना श्चुः	८।४।४०
ष्टुना ष्टुः	८।४।४१
तोः षि	८।४।४३

परन्तु वर्गों में क, ख, ग, घ, ङ इस प्रकार वर्णक्रम का साक्षात् उपदेश नहीं मिलता। तथापि कुहोः श्चुः" आदि विधि सूत्रों से वर्गों के वर्णक्रम का परोक्षनिर्देश अवश्य मिलता है।

सूत्र

पाणिनि के शब्दानुशासन में मुख्य स्थान सूत्रों का है। सूत्रों की संख्या अष्टाध्यायी के अनुसार ३९७३ है। प्रथम अध्याय – ३५१, द्वितीय—२६८, तृतीय—६३१, चतुर्थ— ६३५, पंचम— ५५५, षष्ठ—७३६, सप्तम— ४३८,

अष्टम—२९९ । छठे अध्याय में इतर पादों की अपेक्षा सूत्रसंख्या अधिक है । ध्यान रहे कि–पाणिनीय शास्त्र इन्हीं सूत्रों तक ही सीमित नहीं, वार्तिक, इष्टि, परिभाषा आदि भी पाणिनिशास्त्र के ही पूरक हैं।

सूत्रों के छः प्रकार हैं—सञ्ज्ञा[1], परिभाषा[2], विधि[3], नियम[4], अतिदेश,[5] अधिकार[6] । शास्त्रीय प्रक्रिया के 'नामकरण' को सञ्ज्ञा कहते हैं। अव्यवस्था में व्यवस्था देना परिभाषा है। कार्य के निर्देश को विधि कहते हैं। लक्ष्येतर में कार्य की व्यावृत्ति नियम है । जिस में जो विधि न दिखा कर उत्तर सूत्रों में आत्मसमर्पण किया जाए वे सूत्र अधिकार सूत्र होते हैं।

कुछ संज्ञाएं

पाणिनि की कुछ संज्ञाएं अल्पाक्षर की होती हैं जो व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की भांति विशेषार्थ की प्रतिपादिका नहीं होतीं । यथा—टि, घु, भ आदि। दूसरी महासंज्ञाएं किसी न किसी विशेषार्थ को अपने में छिपाये हुए होती हैं। कुछ का दिग्दर्शन कराते हैं—

(१) वृद्धि—यद्यपि इस संज्ञा का प्रथम ही सूत्र में न्यास मंगलार्थ है तथापि वृद्धि का अर्थ बढोत्तरी भी है। अर्थात् अ+इ=ए होता है, परन्तु वृद्धि में (अ+इ=ऐ, आ+ए=ऐ) भी होता है।

(२) गुण—अ+इ इन दो वर्णों के मेल से 'ए' बन जाता है। जैसे दो रंगों के मिश्रण से भिन्न प्रकार का रंग ।

---

1. "अदेङ् गुणः" आदि ।
2. "तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य" आदि ।
3. "इको यणचि" आदि ।
4. "रात्सस्य" आदि ।
5. "गोतो णित्" आदि ।
6. "धातोः" "स्त्रियाम्" आदि ।

(३) प्रगृह्य—प्र+गृह्य=प्रगृह्य। पाणिनि जी सावधानी देते हैं कि ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचनों को ध्यान से पढ़ो, कहीं गलती से सन्धि न हो जाये।

(४) षट्—षकारान्त नकारान्त संख्यावाचक शब्द कुल छः हैं—पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन्, षष्। इसीलिये नाम भी षट् ही रखा है।

(५) विसर्जनीय[1]—विविधरूपेण सर्जनीयः। इस संज्ञा का यह नाम इस लिए है कि— विसर्ग के स्थान पर विविध विकार होते हैं। विसर्ग के स्थान पर विसर्ग, स, ष, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय इतने आदेश हो सकते हैं।

६. निपात—निपतन्तीति निपाताः। जो 'प्र' आदि स्वतन्त्र अर्थ न होने से अपने पाँव पर खड़े नहीं रह सकते और अर्थ प्रकट करने के लिये दूसरे की ओर झुकते हैं—सहारा लेते हैं वे निपात होते हैं। चादयोऽसत्त्वे, प्रादयः। आदि निरुक्त में निपात का अर्थ लिखा है—"उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति"। अर्थात् प्रसंगानुसार विविध अर्थ बताते हैं।

७. उपसर्ग—उपसृज्यन्तेऽपरेण सह इति उपसर्गाः। जो किसी धातु से मिलकर नवीन अर्थ प्रकट करे। उपसर्ग पहले धातु के साथ फिर नाम के साथ जुड़ता है। दुरात्मा में 'दुर्' निपात है, क्योंकि दुर् और आत्मा का अलग २ संबन्ध है। अवगच्छति-में यहां अव+गच्छति का पृथक् २ अभीष्ट अर्थ नहीं प्रकट हो रहा। संज्ञाओं की विचित्रता का यह दिग्दर्शनमात्र है

1. विसर्जनीय को वृत्तिग्रन्थों में 'विसर्ग' नाम से पुकारा गया है, सूत्रों में नहीं। इन सूत्रों में विसर्जनीय नाम पाया जाता है—"विसर्जनीयस्य सः" ८।३।३४, "खरवसानयोर्विसर्जनीयः" ८।३।१५, "शर्परे विसर्जनीयः" ८।३।३५, "नुम् विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि" ८।३।५८। अन्यत्र किसी सूत्र में इस का निर्देश नहीं।

विस्तारभय से हम अधिक नहीं लिख रहे। पाणिनीय में केवल 'सर्वनाम स्थान' ही ऐसी महासञ्ज्ञा है जिस का कोई विशेष अर्थ नहीं।

अनुबन्ध

पाणिनीय शास्त्र में अनुबन्धों का महत्त्व नहीं। व्याकरण में इत्संज्ञा योग्य वर्ण को अनुबन्ध कहते हैं। धातुओं और आदेशों के साथ अनुबन्ध न होते तो व्याकरण प्रक्रिया पंगु ही रह जाती। प्रत्यय तथा आदेश के साथ जोड़े हुए उन वर्णों को अनुबन्ध कहते हैं जो स्वरूपतया तो चले जाते हैं परन्तु अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं। धातु से जब 'अण्' प्रत्यय किया जाता है तो 'ण्' दर्शन नहीं देता, तो भी णित् होने से धातु को वृद्धि हो सकती है। अनुबन्ध दो प्रकार के हैं—धातु, प्रत्यय आदि के आदि में लगाये जाने वाले तथा धातु आदि के अन्त में लगाये जाने वाले। अन्त में लगाए जाने वाले कई हैं। आदि में लगाये जाने वाले अनुबन्ध ये होंगे—धातु के आदि में ञि[1], टु, डु हो सकते है। प्रत्यय[2] के आदि में ष्, चवर्ग[3], टवर्ग कवर्ग[4], ल, श ये अनुबन्ध होंगे। आदि में और कोई अनुबन्ध न होगा।

शास्त्र की प्रवृत्ति

शास्त्र की प्रवृत्ति दो प्रकार से है—विधि के द्वारा तथा निषेध के द्वारा "प्रथमयोः पूर्व सवर्णः" विधि है, "नादिचि उस का निषेध है। विधि के भी दो भेद हैं—भावरूप विधि और अभाव रूप विधि। भावरूप विधि का उद्देश्य किसी वर्ण का अस्तित्व बनाना है एवं अभावरूप विधि में अस्तित्व मिटाया जाता है। भावरूप विधि के भी दो प्रकार हैं—

1. "आदि र्ञिटुडवः" १।३।५।
2. "षः प्रत्ययस्य" १।३।६।
3. "चुटू" १।३।७।
4. "लशक्व तद्धिते" १।३।८।

१. आदेश सामान्य—"शत्रुवदादेशः" इस में किसी वर्ण के स्थान पर स्थान प्रयत्न की समता वाला या विना समता वाला कोई दूसरा वर्ण या वर्ण समुदाय कर दिया जाता है। ये आदेश भी चार प्रकार के होते हैं—आद्यादेश[1], अन्त्यादेश[2], सर्वादेश[3], और एकादेश।

२. आगम—"मित्रवदागमः" पूर्वोक्त आदेश स्वयं भावरूप होता हुआ भी अपने स्थानी के अस्तित्व को मिटा देता है, परन्तु आगम स्थानी के अस्तित्व को कायम रखता हुआ अपना अस्तित्व रखता है। पाणिनिशास्त्र में आगम कुल तीन प्रकार के पाये जायेंगे—टित्, कित्, मित्। इन में टित् स्थानी के[4] आदि में, कित् स्थानी के अन्त में, मित्[5] स्थानी के अन्तिम अच् से परे है। आगम की यह भी विशेषता है कि वह स्थानी का ही अन्तिम अवयव या आद्यावयव पाया जाता है।

अभावरूप विधि

अभावरूप विधि का उद्देश्य किसी वर्ण या वर्ण समुदाय का अस्तित्व मिटाना होता है। इस के मुख्य चार भेद पाये जाते हैं—लोप १ लुक् २ श्लु ३ लुप् ४। लोप स्वरों का भी होता है और व्यञ्जनों का भी। लोप की भी विचित्र विधि है। कहीं तो सीधा ही किसी स्वर या व्यञ्जन का लोप हो जाता है—जैसे—"लोपः शाकल्यस्य" "यस्येति च"। कहीं इत् संज्ञा करने के बाद "तस्य लोपः" सूत्र से। इस में रहस्य यह है कि इत् संज्ञा करने के बाद किये गये लोप का उत्तर काल में भी गुण–वृद्धि–निषेध रूप कुछ न

1. "आदेः परस्य"।
2. "अलोऽन्त्यस्य"।
3. "अनेकाल् शित्सर्वस्य"।
4. "आद्यन्तौ टकितौ"।
5. "मिदचोऽन्त्यात् परः"।

कुछ फल रहता है और सीधे लोप का उत्तर काल के लिये कोई प्रभाव नहीं रहता। किञ्च-इत् संज्ञा किन्हीं नियमों पर आधारित है। लोप नियम के आधीन नहीं। अच् की तभी इत्सञ्ज्ञा होगी जब उसे अनुनासिक[1] माना गया हो। हल् की तभी इत्सञ्ज्ञा होगी जब वह अन्तिम[2] हो। कहीं आदि के हल् को इसञ्ज्ञा होती है तो प्रत्यय के आदि में या धातु के आदि में।

लुक्[3], श्लु, लुप् ये तीनों विधियें भी अस्तित्व को मिटाती हैं, या प्रत्यय के अस्तित्व को। इन में भी परस्पर सूक्ष्म, भेद है—'लुक्' नाम से जब प्रत्यय का अस्तित्व मिटाया जाय तो उस के बाद प्रत्यय के निमित्त से अंग[4] को कोई कार्य नहीं हो सकता। 'श्लु' नाम से प्रत्यय का अदर्शन करने के बाद प्रकृति को द्वित्व[5] हो जाता है। 'लुप्' नाम से जब प्रत्यय का अदर्शन हो तो सिद्धरूप को प्रकृति[6] की तरह ही लिंग-वचन होते हैं।

निषेध

निषेध उन शास्त्र वाक्यों को कहते हैं जिन से पूर्वोक्त विधि वाक्यों की अप्रवृत्ति दिखाई जाती है। निषेध भी दो प्रकार का होता है—प्रत्यक्ष १, परोक्ष २। प्रत्यक्ष निषेध में वाक्य का मुख्य उद्देश्य निषेध होता है, उस में विधि की प्रधानता नहीं होती। इसे ही 'प्रसज्य प्रतिषेध[7]' कहते हैं। प्रसज्य-प्रतिषेध में नञ् क्रिया से अन्वित होता है, नञ् का समास नहीं होता। यथा—

---

1. "उपदेशेऽजनुनासिक इत्"।
2. "हलन्त्यम्"।
3. "प्रत्ययस्य लुक् श्लु लुपः"।
4. "न लुमताङ्गस्य"।
5. "श्लौ"।
6. "लुपि युक्त-वद् व्यक्ति वचने"।
7. "अप्राधान्यं विधे र्यत्र प्रतिषेधे प्रधानता।
   प्रसज्य प्रतिषेधोऽसौ क्रियया सह यत्र नञ्"।

'नादिचि' । इस में अवर्ण से इच् परे होते पूर्वसवर्ण दीर्घ का निषेध किया गया है । पूर्वसवर्ण दीर्घ हो कहाँ ? इस से कोई मतलब नहीं । दूसरे परोक्ष निषेध में-वाक्य का प्रधान उद्देश्य विधि में होता है, निषेध गौण होता है, इसे ही पर्युदास कहते[1] हैं । पर्युदास में नञ् उत्तर पद के साथ समस्त होता है । यथा—"अनचि च" सूत्र अज् भिन्न-अच् सदृश हलों के परे होने पर द्वित्व करता है । सूत्र का अभिप्राय यह है कि अच् से भिन्न (हल्) परे हो तो द्वित्व हो जाय ।

रचना सौष्ठव

पाणिनि सूत्रों की रचना में वे सब विशेषताएं पाई जाती हैं जो सूत्र ग्रन्थों में होनी चाहियें । सूत्र की पहली विशेषता यह है कि सूत्र 'अल्पाक्षर[2] हो' । अल्पाक्षरता से भी ऊपर उठ कर मात्रा तक के लाघव का भी पूरा २ ध्यान रखा गया है । जहां कहीं मात्रा लाघव उपेक्षित किया गया आपाततः प्रतीत होता है वहां भी आचार्य का कोई विशिष्ट[3] ध्येय होता है । अर्धमात्रा लाघवं पुत्रोत्सववन्मन्यन्ते वैयाकरणाः ।

'एकमात्रा लाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः' यह लोकोक्ति यहां अक्षरशः चरितार्थ होती है । अल्पाक्षरता के लिये अनुवृत्ति और अधिकार का उपयोग किया गया है । सूत्रों को इस क्रम से रखा गया है कि—"विप्रतिषेधे परं कार्यम्" "परनित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं बलीयः" आदि शास्त्र वाक्य विवादस्थलों में पूर्ण निर्णय दे सकते हैं । सब सात अध्याय पूरे होने

1. प्राधान्यं हि विधेर्यत्र प्रतिषेधेऽप्रधानता ।
पर्युदासः स विज्ञेयो यत्रोत्तर पदेन नञ्" ।

2. "अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद् विश्वतो मुखम् ।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः" ॥

3. सिद्धान्त कौमुदी—'अष्टाभ्य औश्' इत्यत्र 'अष्टाभ्यः' इति वक्तव्ये कृतात्वनिर्देशो जश्शसो विषये आत्वं ज्ञापयति ।

पर आचार्य ने सूत्रों को दो भागों में बाँट दिया है—१ सपाद सप्ताध्यायी, २ त्रिपादी। पहिले भाग के सूत्रों के आगे त्रिपादी के सूत्र असिद्ध होंगे और त्रिपादी के सूत्रों में भी पूर्व २ सूत्र की दृष्टि में अगला अगला सूत्र असिद्ध होता जायगा। ७।१ की दृष्टि में ७।१।२।३।४ सूत्रों का तथा त्रिपादियों में भी पूर्व सूत्र के प्रति आगामी सूत्र का अस्तित्व नहीं रहता। इसी रचना सौष्ठव ने आचार्य पाणिनि और उसकी कृति को अमर कर दिया है। इसी लिये तो अंग्रेज विद्वान् प्रो. मोनियर विलियम ने लिखा है – 'पाणिनीय व्याकरण मानव मस्तिष्क की प्रतिभा का वह आश्चर्यजनक नमूना है, जिसे किसी देश ने अब तक सामने नहीं रखा।'

पाणिनि व्याकरण के सम्बन्ध में पूर्ण खोज की जाय तो हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। यदि जगदम्बा की कृपा बनी रही तो कालान्तर में इस दिशा में सफलता भी मिल जायगी। अब तो इस दिशा में प्रथम प्रयत्न है। जो कुछ लिखा है उस के ऐतिहासिक भाग का आधार दूसरे विद्वानों के अनुभव हैं। शेष भाग मेरा अपना अनुभव है। जो कुछ लिखा है वह सर्वाङ्ग सुन्दर एवं त्रुटि रहित है–ऐसा अभिमान नहीं। पर जब तक कृपालु विद्वान् अपने परिपक्व अनुभव देकर कृतार्थ न करेंगे तब तक मुझे इतने पर ही सन्तुष्ट रहना होगा। इस पुस्तक में धातु रूपावली की टिप्पणी में तथा अन्त में निष्ठा एवं प्रक्रिया के रूप भी दे दिए गये हैं। ताकि विद्यार्थियों को अधिक सुगमता मिल सके।

विद्वद्वशम्वदः—
चरणदासरत्न शास्त्री
साहित्यालङ्कारः

पाणिनीय-पारिभाषिक-शब्दकोष

अ

१. अनुदात्त—ताल्वादि स्थानों के मध्य भाग में उच्चारण किया गया स्वर ।

२. अनुनासिक—मुख-नासिका से उच्चारण किया हुआ वर्ण ।

३. अपृक्त—एक वर्ण का प्रत्यय । विशेषतया हलन्त व्यञ्जन ।

४. अङ्ग—विहित प्रत्यय के परे होते प्रकृति संज्ञा ।

५. अन्तरङ्ग—थोड़े अथवा समीप निमित्त को मानने वाला विधि सूत्र ।

६. अपवाद ऐसी विधि जहाँ पूर्व प्रचलित विधि को रोका जाय । निरवकाशको विधि रपवादः ।

७. अधमर्ण—ऋणी ।

८. अन्यतरस्याम्—विकल्प ।

९. अवसान—वर्णों का अभाव जिस से आगे और कोई वर्ण न हो ।

१०. अवधारण निश्चय ।

११. अधिकार्थ वचन—स्तुति या निन्दा करने वाला वाक्य ।

१२. अनभिहित—किसी प्रत्यय के विधान द्वारा न कहा हुआ कारक ।

१३. अपवर्ग फलप्राप्ति ।

१४. अन्वादेश—एक कार्य के लिये किसी का निर्देश कर के दुबारा दूसरे कार्य के लिये उसी का निर्देश ।

१५. अभिज्ञा—स्मृति ।

१६. अत्याधान—ऊपर रखना ।

१७. अनुप्रयोग—किसी शब्द को दूसरे के पीछे प्रयुक्त करना ।

१८. अल्पाख्या अल्पता का कथन ।

१९. अव्यय—तीनों लिङ्गों, वचनों और विभक्तियों में न बदलने वाला शब्द ।

२०. अधिकार—अगले सूत्रों में आत्मसमर्पण करने वाला सूत्र ।
२१. अविद्यमानवत्—सूत्रों की दृष्टि में जो शब्द न होने के बराबर हो ।
२२. असिद्ध—सूत्रों की दृष्टि में दूसरे सूत्रों का न होना ।
२३. अद्यतन—पिछली आधी रात से आज की आधी रात तक का समय ।
२४. अनद्यतन—आज की आधी रात से पहले और आगे का समय ।
२५. अभूततद्भाव—अप्राप्त अवस्था को नये सिरे से लाना ।
२६. अग्राख्या—मुख्यता का कथन ।
२७. असवर्ण—स्थान-प्रयत्न का न मिलना ।
२८. अनुज्ञा—राय देना ।
२९. अभ्यस्त—छठे अध्याय के सूत्रों से द्वित्व किये गये दोनों शब्द स्वरूपों की संज्ञा ।
३०. अभ्यास—द्वित्व किये शब्दों में पहले शब्द की संज्ञा ।
३१. अनुस्वार—बिन्दु (ं) ।
३२. अभिहित—प्रत्यय विधान के द्वारा कहा हुआ कारक ।
३३. अभिविधि—व्यापकता ।
३४. अधिकरण—आधार ।
३५. अपादान—वियोग की अवधि अर्थात् पृथक होना ।
३६. अल्—वर्ण का पर्याय ।

आ

३७. आर्धधातुक—धातु से विहित किया हुआ तिङ्-शित् से भिन्न प्रत्यय ।
३८. आत्मनेपद—क्रियाफल के कर्तृगामी होने पर आने वाले तिङ् प्रत्यय ।
३९. आमन्त्रित—सम्बोधित ।
४०. आभीक्ष्ण्य—क्रिया का बार २ होना ।
४१. आनुलोम्य—चित्त का अनुवर्तन ।

४२. आक्रोश—निन्दा ।

४३. आदेश—स्थानी को मिटा देने वाली लोप आदि विधि तथा वर्णविकार आदि की विधि । (एक वर्ण के स्थान में दूसरे वर्ण का विधान) ।

४४. आगम—स्थानी को न मिला कर किसी वर्ण का विधान ।

४५. आबाध—पीड़ा ।

४६. आसेवन—पुनः पुनः क्रिया होना ।

४७. आसेवा—औत्सुक्य ।

४८. आदिकर्म—क्रिया के आरम्भिक क्षण ।

४९. आख्यातोपयोग—नियम पूर्वक (गुरु शिष्यभाव से) पढ़ना ।

इ

५०. इत्—वर्ण का लोप होना ।

उ

५१. उपदेश—आगम-प्रत्यय आदि का आदि उच्चारण ।

५२. उपसर्ग—क्रिया से संयुक्त 'प्र' आदि ।

५३. उपसर्जन—गौण ।

५४. उत्तमर्ण—ऋणदाता ।

५५. उपपद—समीप उच्चारित पद ।

५६. उत्तरपद—समास का अन्तिम खण्ड ।

५७. उपधा—किसी शब्द में अन्तिम वर्ण से पूर्ववर्ती वर्ण ।

५८. उपक्रम—आदि आरंभ ।

५९. उपज्ञा—आदि ज्ञान ।

६०. उदात्त—तालु आदि स्थानों के ऊर्ध्व भाग में उच्चारित वर्ण ।

ए

६१. एषणा—प्रार्थना, इच्छा ।

६२. एकादेश—पूर्व और पर (दोनों) स्थानियों को किया गया आदेश ।

क

६३. कर्मधारय—विशेषण विशेष्य और उपमानोपमेय का समास ।

६४. कर्मप्रवचनीय संज्ञा—द्वितीया तथा पञ्चमी विधान कारक प्रकरण में प्रति, परि, अनु, उप, अप, आदि की संज्ञा ।

६५. कारक—कर्ता, कर्म आदि ।

६६. कर्मव्यतिहार—काम की अदला बदली ।

६७. क्रिया समभिहार—क्रिया का बार २ होना ।

६८. कर्म कर्ता—कर्म कारक की कर्तृत्व अवस्था ।

६९. कर्ता—क्रिया करने वाला और कर्ता को प्रेरणा करने वाला ।

७०. कर्म—एक कारक, जिसे कर्ता क्रिया द्वारा पाना चाहता हो ।

७१. करण—क्रिया का साधन व्यापार ।

७२. कामप्रवेदन—अभिप्राय प्रकट करना ।

७३. कुत्सा—निन्दा ।

७४. क्रिया सातत्य—लगातार क्रिया होना ।

७५. कृत्य—धात्वधिकार में तिङ् भिन्न प्रत्ययों की संज्ञा ।

७६. क्षेप—निन्दा ।

७७. क्षिया—आचार का उल्लङ्घन ।

ग

७८. गुण संज्ञा—ए, ओ, अर् की सन्धि ।

७९. गौण—अप्रधान ।

८०. गुरु—द्विमात्रिक स्वर ।

८१. गोत्र—पौत्रादि सन्तान ।

८२. गति—प्रादियों की क्रिया योग में संज्ञा ।

घ

८३. घ संज्ञा—तरप्-तमप् प्रत्यय ।

८४. घि संज्ञा—अनदी सञ्ज्ञक ह्रस्व-इकार उकारान्त शब्द।

८५. घु संज्ञा—'दा धा' रूप वाले धातु।

ट

८६. टि संज्ञा—किसी शब्द में अन्तिम अच् सहित भाग।

त

८७. ताच्छील्य— किसी काम करने का अभ्यास।

८८. तत्पुरुष—उत्तर खण्ड प्रधान समास का नाम।

८९. तद्राज—अञ् आदि प्रत्यय।

९०. तद्धित—ऐसे प्रत्यय जो धातुओं से न किये जाएं।

९१. तिङ्—तिप्-तस्, झि आदि प्रत्यय।

द

९२. द्वन्द्व—उभय खण्ड प्रधान समास।

९३. दीर्घ—द्विमात्रिक स्वर।

९४. द्विगु—संख्यापूर्वक समास।

ध

९५. धातु—क्रिया वाचक भू आदि, क्रियाओं के मूल रूप।

न

९६. नित्य—किसी कार्य के होने और न होने की भी अवस्था में प्रवृत्त होने वाली विधि।

९७. निपात संज्ञा—च, वा, और उपसर्ग आदि जो विविधार्थों को द्योतित करते हों।

९८. नदी संज्ञा—स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त ऊकारान्त शब्द।

९९. निष्ठा—क्त, क्तवतु (प्रत्यय)।

प

१००. परस्मैपद—क्रिया फल के कर्मगामी होने पर आने वाले प्रत्यय।

१०१. प्रत्यय—प्रकृति से विहित किया हुआ।

१०२. प्रगृह्य—अदस शब्द से आगे, ई, ऊ, ए अन्त वाले द्विवचन शब्द।

१०३. प्रतियत्न—गुण उत्पादन करना।

१०४. पर्याप्तिवचन—पूर्णता।

१०५. प्रयत्न - उच्चारण में किया जाने वाला व्यापार।

१०६. प्रकृति—जिस से प्रत्यय किया जाय।

१०७. प्रकृतिभाव—स्वरसन्धि का न होना।

१०८. परीप्सा—शीघ्रता।

१०९. प्रकारवचन—प्रकार का कथन।

११०. पुम्वद्भाव—पुंल्लिङ्ग जैसा प्रयोग।

१११. पूर्वपद—समास का पूर्वखण्ड।

११२. पूजा—आदर।

११३. पूरण—पूरक संख्या।

११४. पद—सुबन्त और तिङ् प्रत्ययान्त शब्द।

११५. पृष्ट प्रतिवचन - प्रश्न का उत्तर।

११६. प्लुत—त्रिमात्रिक स्वर।

११७. प्रति ज्ञान—अभिप्राय प्रकट करना।

ब

११८. बहुव्रीहि—अन्य पदार्थ प्रधान समास।

११९. बहुल—कादाचित्क विधि।

भ

१२०. भावलक्षण—क्रिया की पहिचान।

१२१. भाषित पुंस्कता—किसी पुंल्लिङ्ग शब्द का एक ही अर्थ में नपुंसकलिंग में प्रवेश।

य

१२२. याप्य—निन्दित ।

१२३. युवा—मूल पुरुष से चौथा पुरुष ।

ल

१२४. लघु—एक मात्रिक स्वर ।

१२५. लुक्—प्रत्यय का अदर्शन ।

१२६. लुप्— ,, ,, ।

१२७. लिप्सा—लालच ।

व

१२८. व्यवाय—व्यवधान !

१२९. व्यवायी—व्यवहित ।

१३०. व्याश्रय—पक्ष लेना ।

१३१. विभाषा—विकल्प ।

१३२. विप्रतिषेध—तुल्यबल विधियों का एकत्र समावेश । भिन्न २ प्रयोगों में चरितार्थता ।

१३३. व्यतीहार—व्यतिक्रम, अदला बदली ।

१३४. विसर्जनीय—विसर्ग (:) ।

१३५. विशब्दन—अभिप्राय प्रकट करना ।

१३६. विमोहन—ललचाना ।

१३७. विनियोग—अनेक कार्यों में प्रेरणा करना ।

१३८. व्यपदेशिवद्भाव—अप्रधान में प्रधान का सा व्यवहार ।

१३९. वृद्धि—आ, ऐ, औ की संज्ञा ।

१४०. वृद्ध—त्यदादि सर्वनामों की संज्ञा ।

१४१. वैयात्य—अविनय, शैतानी ।

१४२. वैकृत—विकार ।

श

१४३. श्रद्धाप्रतीघात—जी भर कर कोई काम करना।

ष

१४४. षट्—षकारान्त नकारान्त संख्या वाचक।

स

१४५. सवर्ण—जिन का स्थान प्रयत्न सम हो।

१४६. सर्वनाम—संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले सर्व आदि शब्द।

१४७. समास—शब्दों का मेल।

१४८. सम्प्रसारण—विपरीत क्रिया जिस में यणों के स्थान पर इक् किये जायें।

१४९. संहिता—वर्णों की अधिक समीपता।

१५०. सर्वनामस्थान—सु आदि पाँच वचन।

१५१. स्वरित—ताल्वादि स्थानों में मध्यभाग में उच्चारित स्वर।

१५२. समासत्ति—सन्निकर्ष।

१५३. समानाधिकरण—समान विभक्ति वाले पद।

१५४. संयोग—स्वरहीन व्यञ्जनों की संज्ञा।

१५५. सामर्थ्य—शक्ति प्रकाशन।

१५६. समाहार—समूह।

१५७. सामि—अर्ध।

१५८. समुच्चय—योग।

ह

१५९. हल्—व्यञ्जन।

१६०. ह्रस्व—एक मात्रिक स्वर।

१६१. हेतु—कर्ता का प्रयोग।

ॐ

। श्रीगणेशाय नमः ।

अथ धातुरूप-संग्रहः

गुणो वृद्धिर्यत्कृपातः प्रकृतिप्रत्ययस्तथा ।
कालातीता त्रिकालज्ञा सा दुर्गा शरणं मम ॥१॥
मध्यसिद्धान्तकौमुद्याः धातुरूपोपसंग्रहः ।
क्रियते छात्रबोधाय महादेव्या अनुग्रहात् ॥२॥

अथ भ्वादिगणः[1] ।

१. भू—सत्तायाम् (सकर्मकः, सेट्) परस्मैपदी ।

लट्

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्रथमपुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

टि०—1 धातु समूह के आदि में जो प्रथम धातु है, उसी से उस गण का नामकरण किया है ।

लिट्[1]

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र० पु०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म० पु०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ० पु०	बभूव	बभूविव	बभूविम

लुट्[2]

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र० पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः
म० पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उ० पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

टि० 1. लिट् लकार का प्रयोग परोक्ष भूतकाल में होता है, यद्यपि लिट् लकार के उत्तम पुरुष का प्रयोग असंभव है, क्योंकि—वक्ता के द्वारा स्वयं वर्णन की जा रही क्रिया उस के लिये परोक्ष नहीं हो सकती, तथापि प्रमाद, मूर्च्छा, स्वप्न आदि अवस्थाओं में वक्ता की वे क्रियाएँ परोक्ष समझी जा कर प्रयोग में आती हैं। यथा नैषधे—'बहु जगद पुरस्तात्तस्य मत्ता किलाहम्।'

2. अनद्यतने लुट्। बीती हुई रात्रि के अर्ध भाग से लेकर आने वाली रात्रि के मध्यभाग तक अद्यतन काल है उससे भिन्न अनद्यतन काल है। अनद्यतन काल में लुट् का प्रयोग करो। यथा—परश्वो गन्ताऽस्मि। सामान्य भविष्य में लृट् का प्रयोग करो।

लृट्[1]

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्[2]

प्र० पु०	भवतु-भवतात्	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव, भवतात्	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवानि	भवाव	भवाम

टि० 1. लृट शेषे च ३।३।१३॥ 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियार्थायां क्रियायाम्' से यह चौथा सूत्र है। 'भविष्यति गम्यादयः' से भविष्यति की अनुवृत्ति आ रही है। 'शेष' का अर्थ है—उक्त से अन्य। क्रियार्थक क्रिया में भविष्य-काल में तुमुन् और ण्वुल् ही आते हैं। शेष क्रियार्थक क्रिया के अभाव में लृट् होगा। पर सूत्र में 'च' फिर उसी क्रियार्थक क्रिया का बोध भी कराता है। क्रियार्थक क्रिया के होते हुए भी भविष्य में लृट् हो। सारांश यह कि—क्रियार्थक क्रिया के होते हुए धातु के दो रूप होंगे—एक तुमुन् और ण्वुल का (कृष्णं द्रष्टुं याति, कृष्णं दर्शको याति) दूसरा लृट् का। अन्तर यह है कि—तुमुन् और ण्वुल् क्रियार्थक क्रिया के भविष्य काल में ही आते हैं और लृट् क्रियार्थक क्रिया में और उसके बिना भी।

2. विधि, निमन्त्रण आदि अर्थों में लिङ् होता है, इन्हीं अर्थों में लोट् भी होता है। प्रारम्भ में तो इन का प्रयोग समान अर्थों में लिखा है तो भी हमें इतना समझना चाहिए कि लोट् की आज्ञा में कठोरता है और लिङ् की आज्ञा में कोमलता।

लङ्[1]

प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भूयात्[2]	भूयास्ताम्	भूयासुः
म० पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ० पु०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

लुङ्[3]

टि० 1. भूतकाल के दो भेद हैं—एक अद्यतन दूसरा अनद्यतन। अनद्यतन भूत परोक्ष या अपरोक्ष हो तो दोनों अवस्थाओं में लुङ् लकार होगा। अनद्यतन भूत यदि परोक्ष हो तो लिट् लकार जानो। यथा—रामो राज्यं चकार। अनद्यतनभूत यदि परोक्ष न हो तो लङ् लकार जानो। यथा—ह्यः कृष्णो वनमगच्छत्।

2. ये रूप केवल आशीर्वाद में प्रयुक्त किये जाते हैं।

3. माङि लुङ्। धातु के पूर्व निषेधार्थक 'मा' उपपद हो तो तीनों कालों में सब लकारों को बाध कर लुङ् लकार ही होगा। 'मा स्म' दोनों उपपद धातु के पूर्व हो जाएँ तो तीनों कालों में लुङ् और लङ् विकल्प से हो सकेंगे।

प्र० पु०	अभूत्[1]	अभूताम्	अभूवन्
म० ,,	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ० ,,	अभूवम्	अभूव	अभूम

लृङ्[2]

टि० 1. सिच् का लुक् ।

2 लिङ् निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ । कार्यकारण भाव प्रकट करना हो तो भविष्य काल में लृङ् लकार होगा, यदि क्रिया की असिद्धि बतलानी हो तो लृ . होगा यथा-देवदत्तो यद्यपठिष्यत्तदा परीक्षायामुत्तीर्णोऽभविष्यत् । देवदत्त यदि पढ़ेगा तो पास होगा । यहां पढ़ना कारण और पास होना कार्य है । चूंकि देवदत्त पढ़ने वाला नहीं अतः उत्तीर्ण भी नहीं होगा । इस प्रकार यहां क्रिया की असिद्धि भी प्रतीत हो रही है । ध्यान रहे कि यदि क्रिया की असिद्धि स्पष्ट शब्द से कही जाय तो लृङ् न होगा । यथा—'यदि सुवृष्टिर्न भविष्यति तदा सुभिक्षमपि न भविष्यति ।' यहां क्रिया की असिद्धि 'न' से स्पष्ट कह दी गई है । विशेष—यद्यपि लृङ् भविष्य काल के लिये ही लिखा है तथापि भूतकाल में भी कवि इस का प्रयोग करते आये हैं। यथा—१ 'न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत्, यतिः प्रजानां विफलोऽभविष्यत्'-रघुवंश । यथा—२ विक्रमोर्वशी में—'यदि सुरभिमवाप्स्यस्तन्मुखोच्छ्वास गन्धं, तव रतिरभविष्यत् पुण्डरीके किमस्मिन् ।' ध्यान रहे कि उपसर्ग और धातु की संहिता नित्य होती है । उपसर्ग आ जाने से धातु का अर्थ बदल भी जाता है। यथा-प्रभवति=समर्थ होता है । अनुभवति=अनुभव करता है । उद्भवति=उत्पन्न होता है । आविर्भवति=प्रकट होता है । परिभवति=तिरस्कार करता है । लुङ् लङ् लृङ् में अट् आट् करते समय उपसर्ग को अलग रख कर धातु को अट् आट् करें । यथा—समभवत्, समभविष्यत्, आविरभूत् इत्यादि । ऐसा न हो कि उपसर्ग को ही अट् आट् कर दो, क्योंकि अट् आट् धातु के आगम हैं । त=भूतः । तवतु—भूतवान् । क्त्वा=भूत्वा । तव्य=भवितव्यम् । तुम्—भवितुम् । घञ्—भावः । ल्युट्=भवनम् । तृच्=भविता ।

प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म० ,,	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ० ,,	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

२. अत सातत्य गमने, परस्मैपदी सेट्।

लट्

प्र० पु०	अतति	अततः	अतन्ति
म० ,,	अतसि	अतथः	अतथ
उ० ,,	अतामि	अतावः	अतामः

लिट्

प्र० पु०	आत	आततुः	आतुः
म० ,,	आतिथ	आतथुः	आत
उ० ,,	आत	आतिव	आतिम

लुट्

प्र० पु०	अतिता	अतितारौ	अतितारः
म० ,,	अतितासि	अतितास्थः	अतितास्थ
उ० ,,	अतितास्मि	अतितास्वः	अतितास्मः

लृट्

प्र० पु०	अतिष्यति	अतिष्यतः	अतिष्यन्ति
म० ,,	अतिष्यसि	अतिष्यथः	अतिष्यथ
उ० ,,	अतिष्यामि	अतिष्यावः	अतिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	अततु-तात्	अतताम्	अतन्तु
म० ,,	अत-तात्	अततम्	अतत
उ० ,,	अतानि	अताव	अताम

लङ्

प्र० पु०	आतत्[1]	आतताम्	आतन्
म० ,,	आतः	आततम्	आतत
उ० ,,	आतम्	आताव	आताम

विधिलिङ्

प्र० पु०	अतेत्	अतेताम्	अतेयुः[2]
म० ,,	अतेः	अतेतम्	अतेत
उ० ,,	अतेयम्	अतेव	अतेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अत्यात्	अत्यास्ताम्[3]	अत्यासुः
म० ,,	अत्याः	अत्यास्तम्	अत्यास्त
उ० ,,	अत्यासम्	अत्यास्व	अत्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	आतीत्[4]	आतिष्टाम्	आतिषुः[5]
म० ,,	आतीः	आतिष्टम्	आतिष्ट
उ० ,,	आतिषम्	आतिष्व[6]	आतिष्म

लृङ्

प्र० पु०	आतिष्यत्	आतिष्यताम्	आतिष्यन्

टि० 1. आडजादीनाम् । आटश्च ।

2. झेर्जुस् ।

3. सार्वधातुक लिङ् के सकार का लोप होता है ।

4. अस्तिसिचोऽपृक्ते । इट ईटि ।

5. सिजभ्यस्त विदिभ्यश्च ।

6. नित्यं ङितः ।

म० ,,	आतिष्यः	आतिष्यतम्	आतिष्यत
उ० ,,	आतिष्यम्	आतिष्याव	आतिष्याम

३. अव=रक्षणादिषु। परस्मैपदी, सेट्।

दशसु लकारेश्वैकैकम्[1] —अवति। आव। अविता। अविष्यति। अवतु। अवेत्। अव्यात्। आवीत्। आविष्यत्।

४. षिध्=गत्याम्। परस्मैपदी, सेट्।

लट्

प्र० पु०	सेधति[2]	सेधतः	सेधन्ति
म० ,,	सेधसि	सेधथः	सेधथ
उ० ,,	सेधामि	सेधावः	सेधामः

लिट्

प्र० पु०	सिषेध[3]	सिषिधतुः[4]	सिषिधुः
म० ,,	सिषेधिथ	सिषिधथुः	सिषिध
उ० ,,	सिषेध	सिषिधिव	सिषिधिम

लुट्

प्र० पु०	सेधिता	सेधितारौ	सेधितारः

टि० 1. जिन धातुओं में पिछले धातु से कोई विशेष अन्तर न होगा उनके एक २ ही रूप दिये जाएँगे, शेष रूप पिछले धातु के समान जानो। अत और अव के रूपों में समानता है।

2. धात्वादेः षः सः। दन्त्याजन्त सादि होने से षिध् धातु षोपदेश है।

3. पुगन्त लघूपधस्य च।

4. असंयोगाल्लिट् कित्। 'आदेशप्रत्यययोः' से षत्व।

म० ,,	सेधितासि	सेधितास्थः	सेधितास्थ
उ० ,,	सेधितास्मि	सेधितास्वः	सेधितास्मः

लृट्

प्र० पु०	सेधिष्यति	सेधिष्यतः	सेधिष्यन्ति
म० ,,	सेधिष्यसि	सेधिष्यथः	सेधिष्यथ
उ० ,,	सेधिष्यामि	सेधिष्यावः	सेधिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	सेधतु-तात्	सेधताम्	सेधन्तु
म० ,,	सेध-तात्	सेधतम्	सेधत
उ० ,,	सेधानि	सेधाव	सेधाम

लङ्

प्र० पु०	असेधत्	असेधताम्	असेधन्
म० ,,	असेधः	असेधतम्	असेधत
उ० ,,	असेधम्	असेधाव	असेधाम

विधि लिङ्

प्र० पु०	सेधेत्	सेधेताम्	सेधेयुः
म० ,,	सेधेः	सेधेतम्	सेधेत
उ० ,,	सेधेयम्	सेधेव	सेधेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	सिध्यात्[1]	सिध्यास्ताम्	*सिध्यासुः
म० ,,	सिध्याः	सिध्यास्तम्	सिध्यास्त
उ० ,,	सिध्यासम्	सिध्यास्व	सिध्यास्म

1. यासुट् के ङित् होने से लघूपध गुण न हुआ ।

लुङ्

प्र० पु०	असेधीत्[1]	असेधिष्टाम्	असेधिषुः
म० ,,	असेधीः	असेधिष्टम्	असेधिष्ट
उ० ,,	असेधिषम्	असेधिष्व	असेधिष्म

लृङ्

प्र० पु०	असेधिष्यत्[2]	असेधिष्यताम्	असेधिष्यन्
म० ,,	असेधिष्यः	असेधिष्यतम्	असेधिष्यत
उ० ,,	असेधिष्यम्	असेधिष्याव	असेधिष्याम

५. चिती=संज्ञाने। परस्मैपदी, सेट्।

चेतति। चिचेत। चेतिता। चेतिष्यति। चेततु। अचेतत। चेतेत्। चित्यात्। अचेतीत्। अचेतिष्यत्।

६. शुच=शोके। परस्मैपदी, सेट्।

शोचति। शुशोच। शोचिता। शोचिष्यति। शोचतु। अशोचत। शोचेत्। शुच्यात्। अशोचीत्। अशोचिष्यत्।

७. गद्=व्यक्तायां वाचि। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु— गदति। जगाद। गदिता। गदिष्यति। गदतु। अगदत्। गदेत्। गद्यात्। अगादीत्-अगदीत्। अगदिष्यत्।

---

1. 'नेटि' इडादौ सिचि हलन्तस्य वृद्धिर्न।

2 'उपसर्गात्सुनोति—' इति षत्वे निषेधति। अट् के व्यवधान में भी "प्राक् सितादड्व्यवायेऽपि" से षत्व—न्यषेधत, न्यषेधीत्। नि षि+ सेध, यहां "स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य" से अभ्यास व्यवधान में भी षत्व हुआ। परन्तु गत्यर्थ में "सेधतेर्गतौ" से षत्वनिषेध होगा—गंगां विसेधति॥

3. कुहोश्चुः। अत उपधायाः।

4. णलुत्तमो वा।

5. "अतो हलादेर्लघोः"। "नेर्गदनद..." णत्व—प्रणिगदति।

८. णद् =अव्यक्ते शब्दे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु-नदति[1] । ननाद[2] । नदिता । नदिष्यति । नदतु । अनदत् । नदेत् । नद्यात् । अनादीत्[3]-अनदीत् । अनदिष्यत् ।

९. श्च्युतिर्[4] =क्षरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	श्च्योतति	श्च्योततः	श्च्योतन्ति
म० ,,	श्च्योतसि	श्च्योतथः	श्च्योतथ
उ० ,,	श्च्योतामि	श्च्योतावः	श्च्योतामः

लिट्

प्र० पु०	चुश्च्योत[5]	चुश्च्युततुः[6]	चुश्च्युतुः

1. "णो नः ।" नर्द्, नाट्, नाथ्, नाध्, नन्द्, नक्क्, नॄ, नृत्, धातुओं को छोड़ कर शेष सभी धातुओं के आदि में ण ही समझें जिसे 'णो नः' से नकार किया जाता है । जो णोपदेश नहीं उन्हें णत्वविधान न होगा ।

2. अतः एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि" से एत्वाभ्यासलोप । 'णोनः, का आदेश लिट् निमित्तक नहीं, अतः यह एत्वाभ्यासलोप में बाधक नहीं हो सकता । हां, जहां 'कुहोश्चुः, तथा, 'अभ्यासे चर्चः लगें वहां एत्वाभ्यासलोप न होंगे । कारण कि—ये दोनों सूत्र अभ्यास कार्य हैं और अभ्यास लिट् निमित्तक है । यह सदा स्मरण रखें ।

3. "अतो हलादेर्लघोः ।" "नेर्गदनद..." से णत्व-प्रणिनदति । "उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य"-प्रणदति ।

4. 'इर इत्संज्ञा वाच्या' । यदि इ की 'उपदेशेऽजनुनासिकस्य' से इत्संज्ञा करते और र की 'हलन्त्यम् से, तो इदित् होने से धातु को नुम् प्राप्त हो जाता है ।

5. 'शर्पूर्वाःखयः ।' लघूपधगुण ।

6. असंयोगाल्लिट्कित् ।

म० ,,	चुश्च्योतिथ	चुश्च्युतथुः	चुश्च्युथ
उ० ,,	चुश्च्योत	चुश्च्युतिव	चुश्च्युतिम

लुट्

प्र० पु०	श्च्योतिता	श्च्योतितारौ	श्च्योतितारः
म० ,,	श्च्योतितासि	श्च्योतितास्थः	श्च्योतितास्थ
उ० ,,	श्च्योतितास्मि	श्च्योतितास्वः	श्च्योतितास्मः

लृट्

प्र० पु०	श्च्योतिष्यति	श्च्योतिष्यतः	श्च्योतिष्यन्ति
म० ,,	श्च्योतिष्यसि	श्च्योतिष्यथः	श्च्योतिष्यथ
उ० ,,	श्च्योतिष्यामि	श्च्योतिष्यावः	श्च्योतिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	श्च्योततु-तात्	श्च्योतताम्	श्च्योतन्तु
म० ,,	श्च्योत-तात्	श्च्योततम्	श्च्योतत
उ० ,,	श्च्योतानि	श्च्योताव	श्च्योताम

लङ्

प्र० पु०	अश्च्योतत्	अश्च्योतताम्	अश्च्योतन्
म० ,,	अश्च्योतः	अश्च्योततम्	अश्च्योतत
उ० ,,	अश्च्योतम्	अश्च्योताव	अश्च्योताम

विधिलिङ्

प्र० पु०	श्च्योतेत्	श्च्योतेताम्	श्च्योतेयुः
म० ,,	श्च्योतेः	श्च्योतेतम्	श्च्योतेत
उ० ,,	श्च्योतेयम्	श्च्योतेव	श्च्योतेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	श्च्युत्यात्	श्च्युत्यास्ताम्	श्च्युत्यासुः

म० ,,	श्च्युत्याः	श्च्युत्यास्तम्	श्च्युत्यास्त
उ० ,,	श्च्युत्यासम्	श्च्युत्यास्व	श्च्युत्यास्म

लुङ्

(अङ्[1] पक्षे)

प्र० पु०	अश्च्युतत्[2]	अश्च्युतताम्	अश्च्युतन्
म० ,,	अश्च्युतः	अश्च्युततम्	अश्च्युतत
उ० ,,	अश्च्युतम्	अश्च्युताव	अश्च्युताम

अङ् के अभाव में

प्र० पु०	अश्च्योतीत्	अश्च्योतिष्टाम्	अश्च्योतिषुः
म० ,,	अश्च्योतीः	अश्च्योतिष्टम्	अश्च्योतिष्ट
उ० ,,	अश्च्योतिषम्	अश्च्योतिष्व	अश्च्योतिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अश्च्योतिष्यत	अश्च्योतिष्यताम्	अश्च्योतिष्यन्
म० ,,	अश्च्योतिष्यः	अश्च्योतिष्यतम्	अश्च्योतिष्यत
उ० ,,	अश्च्योतिष्यम्	अश्च्योतिष्याव	अश्च्योतिष्याम

१०. च्युतिर्—आसेचने। परस्मैपदी, सेट्

दशलकारेषु—च्योतति । चुच्योत । च्योतिता । च्योतिष्यति । च्योततु । अच्योतत । च्योतेत् । च्युत्यात् । अच्युतत । अच्योतीत् । अच्योतिष्यत ।

११. टुनदि—समृद्धौ। पर० सेट्।

दशलकारेषु—नन्दति । ननन्द । नन्दिता । नन्दिष्यति । नन्दतु ।

---

1. "इरितो वा" से अङ् का विकल्प। यह धातु यकार रहित अर्थात् 'श्चुतिर्' ऐसा भी है। उस के श्चोतति, चुश्चोत आदि रूप होंगे।

2. अङ् के ङित् होने से "क्ङिति च" से गुणनिषेध।

अनन्दत् । नन्देत् । नन्द्यात्[1] । अनन्दीत् । अनन्दिष्यत्[2] ।

१२. कुथि[3]=हिंसासंक्लेशनयोः । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कुन्थति । चुकुन्थ । कुन्थिता । कुन्थिष्यति । कुन्थतु । अकुन्थत् । कुन्थेत् । कुन्थ्यात् । अकुन्थीत् । अकुन्थिष्यत् ।

१३ पुथि=हिंसासंक्लेशनयोः । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पुन्थति । पुपुन्थ । पुन्थिता । पुन्थिष्यति । पुन्थतु । अपुन्थत् । पुन्थेत् । पुन्थ्यात् । अपुन्थीत् । अपुन्थिष्यत् ।

१४. लुथि=हिंसासंक्लेशनयोः । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—लुन्थति । लुलुन्थ । लुन्थिता । लुन्थिष्यति । लुन्थतु । अलुन्थत् । लुन्थेत् । लुन्थ्यात् । अलुन्थीत् । अलुन्थिष्यत् ।

१५. मथि=हिंसासंक्लेशनयोः । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मन्थति । ममन्थ । मन्थिता । मन्थिष्यति । मन्थतु । अमन्थत् । मन्थेत् । मन्थ्यात् । अमन्थिष्यत् ।

१६. बिदि[4]=अवयवे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—बिन्दति । बिबिन्द । बिन्दिता । बिन्दिष्यति । बिन्दतु । अबिन्दत् । बिन्देत् । बिन्द्यात् । अबिन्दीत् । अबिन्दिष्यत् ।

टि० 1. "अनिदितां हल उपधायाः" का न लोप इदितों में प्रवृत्त नहीं होता ।

2. त-नन्दितः । त्वा—नन्दित्वा । तव्य-नन्दितव्य । अनीय-नन्दनीय । ल्युट्-नन्दन । तवतु-नन्दितवान् । तुम्-नन्दितुम् । णिच्-नन्दयति । सन्-निनन्दिषति । सन्नन्त से उ- निनन्दिषुः ।

3. कुथि, पुथि, लुथि, मथि धातुओं के रूप 'नदि' के समान ही हैं । कुथि में "कुहोश्चुः" की विशेषता है ।

4. विन्दुः इसी का प्रयाग है ।

भिदि—इति पाठान्तरे

भिन्दति। बिभिन्द[1]। भिन्दिता। भिन्दिष्यति। भिन्दतु। अभिन्दत्। भिन्देत्। भिन्द्यात्। अभिन्दीत्। अभिन्दिष्यत्।

१७. गडि— वदनैकदेशे। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—गण्डति। जगण्ड[2]। गण्डिता। गण्डिष्यति। गण्डतु। अगण्डत्। गण्डेत्। गण्ड्यात्। अगण्डीत्। अगण्डिष्यत्।

१८ चदि—आल्हादे परस्मैपदी, सेट्

दशलकारेषु—चन्दति[3]। चचन्द। चन्दिता। चन्दिष्यति। चन्दतु। अचन्दत। चन्देत्। चन्द्यात्। अचन्दीत्। अचन्दिष्यत्।

१९ त्रदि—चेष्टायाम्। परस्मैपदी, सेट्

दशलकारेषु—त्रन्दति। तत्रन्द। त्रन्दिता। त्रन्दिष्यति। त्रन्दतु। अत्रन्दत्। त्रन्देत्। त्रन्द्यात्[4]। अत्रन्दीत्[5]। अत्रन्दिष्यत्।

---

1. अभ्यासे चर्च।

2. कुहोश्चुः। नुम्, "नश्चापदान्तस्य झलि" "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः। 'गण्डः' इसीका प्रयोग है। (कृदन्तों में) त-गण्डित। क्त्वा-गण्डित्वा। तुम्–गण्डितुम्। अनीय–गण्डनीयम्। णिच्–गण्डयति। सन्–जिगण्डिषति।

3. क्त—चन्दितः। क्त्वा—चन्दित्वा। क्तवत्—चन्दितवान्। तुम्—चन्दितुम्। ल्युट्—चन्दनम्। तव्य—चन्दितव्यम्। णिच्—चन्दयति। सन्—चिचन्दिष्यति।

4. त—त्रन्दितः। त्वा-त्रन्दित्वा। तुम्—त्रन्दितुम्। ल्युट्–त्रन्दनम्। तव्य—त्रन्दितव्यम्। क्तवतु—त्रन्दितवान्। णिच्-त्रन्दयति। सन्-तित्रन्दिषति।

5. "नेटि"।

२० कदि—आह्वाने, रोदने च। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—कन्दति। चकन्द[1]। कन्दिता। कन्दिष्यति। कन्दतु। अकन्दत्। कन्देत्। कन्द्यात्। अकन्दीत्। अकन्दिष्यत्।

२१ क्रदि—आह्वाने, रोदने च। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—क्रन्दति[2]। चक्रन्द। क्रन्दिष्यति। क्रन्दतु। अक्रन्दत्। क्रन्देत्। क्रन्द्यात्। अक्रन्दीत्। अक्रन्दिष्यत्।

२२ क्लदि—आह्वाने, रोदने च। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—क्लन्दति। चक्लन्द। क्लन्दिता। क्लन्दिष्यति। क्लन्दतु। अक्लन्दत्। क्लन्देत्। क्लन्द्यात्। अक्लन्दीत्। अक्लन्दिष्यत्।

२३ क्लिदि - परिदेवने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—क्लिन्दति। चिक्लिन्द। क्लिन्दिता। क्लिन्दिष्यति। क्लिन्दतु। अक्लिन्दत्। क्लिन्देत्। क्लिन्द्यात्। अक्लिन्दीत्। अक्लिन्दिष्यत्।

२४ तकि—कृच्छ्रजीवने। परस्मैपदी सेट्।

दशलकारेषु—तङ्कति। ततङ्क। तङ्किता। तङ्किष्यति। तङ्कतु। अतङ्कत्। तङ्केत्। तङ्क्यात्। अतङ्कीत्। अतङ्किष्यत्।

२५ युगि—वर्जने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु युङ्गति। युयुङ्ग। युङ्गिता। युङ्गिष्यति। युङ्गतु। युङ्गतु। अयुङ्गत्। युङ्ग्यात्। अयुङ्गीत्। अयुङ्गिष्यत्।

---

1. "कुहोश्चुः"। क्त—कन्दितः। क्त्वा—कन्दित्वा। तुम्—कन्दितुम्। तव्य—कन्दितव्यम्। अनीय—कन्दनीयम्। क्तवतु—कन्दितवान्। णिच्—कन्दयति। सन्—चिकन्दिषति।

2. इन सभी धातुओं में पूर्ववत् इदित् होने से नुम् हो रहा है, कोई विशेष कार्य नहीं। क्त—क्रन्दितः। क्त्वा—क्रन्दित्वा। तुम्-क्रन्दितुम्। तव्य-क्रन्दितव्यम्। ल्युट्—क्रन्दनम्। णिच्—क्रन्दयति। सन्—चिक्रन्दिषति।

२६ जुगि—वर्जने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—जुङ्गति । जुजुङ्ग । जुङ्गिता । जुङ्गिष्यति । जुङ्गतु । अजुङ्गत् । जुङ्गेत् । जुङ्ग्यात् । अजुङ्गीत् । अजुङ्गिष्यत् ।

२७. वुगि—वर्जने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वुङ्गति । वुवुङ्ग । वुङ्गिता । वुङ्गिष्यति । वुङ्गतु । अवुङ्गत् । वुङ्गेत् । वुङ्ग्यात् । अवुङ्गीत । अवुङ्गिष्यत् ।

२८. मघि—मण्डने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मङ्घति । ममङ्घ । मङ्घिता । मङ्घिष्यति । मङ्घतु । अमङ्घत् । मङ्घेत् । मङ्घ्यात् । अमङ्घीत् । अमङ्घिष्यत् ।

२९. शिघि—आघ्राणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—शिङ्घति[1] । शिशिङ्घ । शिङ्घिता । शिङ्घिष्यति । शिङ्घतु । अशिङ्घत् । शिङ्घेत् । शिङ्घ्यात् । अशिङ्घीत् । अशिङ्घिष्यत् ।

३०. मन्थ—विलोडने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मन्थति । ममन्थ[2] । मन्थिता । मन्थिष्यति । मन्थतु । अमन्थत् । मन्थेत् । मथ्यात्[3] । अमन्थीत् । अमन्थिष्यत् ।

३१. अर्च—पूजायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	अर्चति	अर्चतः	अर्चन्ति
म० ,,	अर्चसि	अर्चथः	अर्चथ

---

1. 'नासामलं तु शिङ्घाणम्' इत्यमरः । सूँघना इसी धातु से है । सर्वत्र नुम्, अनुस्वार, परसवर्ण ।

2. उपधात्वाभावान्न वृद्धिः । संयोग से परे अपित् लिट् कित् नहीं होता, अत एव नलोप नहीं हुआ—ममन्थतुः ।

3. यह इदित् नहीं, अतः "अनिदिताम्—से उपधा के नकार का लोप हो गया ।

उ० ,,	अर्चामि	अर्चावः	अर्चामः

लिट्

प्र० पु०	आनर्च[1]	आनर्चतुः	आनर्चुः
म० ,,	आनर्चिथ	आनर्चथुः	आनर्च
उ० ,,	आनर्च	आनर्चिव	आनर्चिम

लुट्

प्र० पु०	अर्चिता	अर्चितारौ	अर्चितारः
म० ,,	अर्चितासि	अर्चितास्थः	अर्चितास्थ
उ० ,,	अर्चितास्मि	अर्चितास्वः	अर्चितास्मः

लृट्

प्र० पु०	अर्चिष्यति	अर्चिष्यतः	अर्चिष्यन्ति
म० ,,	अर्चिष्यसि	अर्चिष्यथः	अर्चिष्यथ
उ० ,,	अर्चिष्यामि	अर्चिष्यावः	अर्चिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	अर्चतु-तात्	अर्चताम्	अर्चन्तु
म० ,,	अर्च-तात्	अर्चतम्	अर्चत
उ० ,,	अर्चानि	अर्चाव	अर्चाम

लङ्

प्र० पु०	आर्चत्[2]	आर्चताम्	आर्चन्

1. द्वित्व, हलादिशेष, "अत आदेः"—आ + अर्च् + अ, "तस्मान्नुड् द्विहलः" से नुट् का आगम।

2. "आडजादीनाम्"। क्त—अर्चितः। क्त्वा—अर्चित्वा। तुमुन्—अर्चितुम्। तव्य—अर्चितव्यः। अनीय—अर्चनीयः। ल्युट्—अर्चनम्। णिच्—अर्चयति। सन्—अर्चिचिषति।

म० ,,	आर्चः	आर्चतम्	आर्चत
उ० ,,	आर्चम्	आर्चाव	आर्चाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	अर्चेत्	अर्चेताम्	अर्चेयुः
म० ,,	अर्चेः	अर्चेतम्	अर्चेत
उ० ,,	अर्चेयम्	अर्चेव	अर्चेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अर्च्यात्	अर्च्यास्ताम्	अर्च्यासुः
म० ,,	अर्च्याः	अर्च्यास्तम्	अर्च्यास्त
उ० ,,	अर्च्यासम्	अर्च्यास्व	अर्च्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	आर्चीत्	आर्चिष्टाम्	आर्चिषुः
म० ,,	आर्चीः	आर्चिष्टम्	आर्चिष्ट
उ० ,,	आर्चिषम्	आर्चिष्व	आर्चिष्म

लृङ्

प्र० पु०	आर्चिष्यत्	आर्चिष्यताम्	आर्चिष्यन्
म० ,,	आर्चिष्यः	आर्चिष्यतम्	आर्चिष्यत
उ० ,,	आर्चिष्यम्	आर्चिष्याव	आर्चिष्याम

३२. अर्द्[1] —गतौ याचने च। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—अर्दति। आनर्द। अर्दिता। अर्दिष्यति। अर्दतु। आर्दत्। अर्देत्। अर्द्यात्। आर्दीत्। आर्दिष्यत्।

३३. अति—बन्धने। परस्मै० सेट्।

दशलकारेषु—अन्तति। आनन्त[2]। अन्तिता। अन्तिष्यति। अन्ततु।

---

1. अर्च् की तरह नुट्—आट् आदि कार्य।

2. नुम् करने पर द्विहल् धातु होने से नुट्।

आन्तत् । अन्तेत् । अन्त्यात्[1] । आन्तीत्[2] । आन्तिष्यत् ।

३४ अदि—बन्धने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—अन्दति । आनन्द । अन्दिता । अन्दिष्यति । अन्दतु । आन्दत् । अन्देत् । अन्द्यात् । आन्दीत् । आन्दिष्यत् ।

३५ वन्—सम्भक्तौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वनति । ववान । ववनतुः[3] । वनिता । वनिष्यति । वनतु । अवनत् । वनेत् । वन्यात् । अवानीत्[4]-अवनीत् । अवनिष्यत् ।

लुङ्

वृद्धिपक्षे

प्र० पु०	अवानीत्	अवानिष्टाम्	अवानिषुः
म० ,,	अवानीः	अवानिष्टम्	अवानिष्ट
उ० ,,	अवानिषम्	अवानिष्व	अवानिष्म

वृद्ध्यभावे

प्र० पु०	अवनीत्	अवनिष्टाम्	अवनिषुः
म० ,,	अवनीः	अवनिष्टम्	अवनिष्ट
उ० ,,	अवनिषम्	अवनिष्व	अवनिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अवनिष्यत्	अवनिष्यताम्	अवनिष्यन्
म० ,,	अवनिष्यः	अवनिष्यतम्	अवनिष्यत
उ० ,,	अवनिष्यम्	अवनिष्याव	अवनिष्याम

---

1. इदित् होने से न लोप नहीं हुआ ।
2. आट् । "नेटि" से हलन्त लक्षणा वृद्धि नहीं हुई—मा भवान् अन्तीत् ।
3. "न शसददवादिगुणानाम्" से एत्वाभ्यासलोप का निषेध हो गया ।
4 "अतो हलादेर्लघोः" से विकल्प से वृद्धि ।

३६ षण—सम्भक्तौ । प० सेट् ।

दशलकारेषु—सनति । ससान । सनिता । सनिष्यति । सनतु । असनत् । सनेत् । सायात्[1]—सन्यात् । असानीत्[2] असनीत् । असनिष्यत् ।

३७ वज—गतौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वजति । ववाज-ववजतुः[3] । वजिता । वजिष्यति । वजतु । अवजत् । वजेत् । वज्यात् । अवाजीत्[4]—अवजीत् । अवजिष्यत् ।

३८ व्रज—गतौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—व्रजति । वव्राज[5] । व्रजिता । व्रजिष्यति । व्रजतु । अव्रजत् । व्रजेत् । व्रज्यात् । अव्राजीत्[6] । अव्रजिष्यत् ।

३९. कटे—वर्षावरणयोः । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कटति । चकाट, चकटतुः[7] । कटिता । कटिष्यति ।

---

1. "ये विभाषा" से आत्व विकल्प से ।

2. "अतो हलादेर्लघोः" से विकल्प से वृद्धि ।

3. "न शसददवादिगुणानाम्" से एत्वाभ्यास लोप का निषेध ।

4. "अतो हलादेर्लघोः" से विकल्प से वृद्धि ।

5. अतुस् आदि में—वव्रजतुः आदि । अकार संयुक्त हल्मध्यस्थ है, अतः एत्वाभ्यासलोप नहीं हुआ ।

6. "वदव्रजहलन्तस्याचः" से नित्य वृद्धि । परिव्राट्-परिव्राजक शब्द इसी से बनते हैं । क्त—व्रजितः । क्त्वा—व्रजित्वा । तुमुन्—व्रजितुम् । तव्य—व्रजितव्यम् । ण्वुल्—व्राजकः । णिच्—व्राजयति । सन्—विव्रजिषति । सन्नन्त से उ—विव्रजिषु । यङ्—वाव्रज्यते । परिव्रजति—संन्यास लेता है । अनुव्रज्या—पीछे जाना ।

7. स्मरण रखें—"कुहोश्चुः" का आदेश लिट् निमित्तक है, अतः यहां एत्वाभ्यासलोप नहीं होता ।

कटतु । अकटत । कटेत् । कट्यात् । अकटीत्[1] । अकटिष्यत् ।

४०. गुपू—रक्षणे । परस्मैपदी, सेट्[2] ।

लट्

प्र० पु०	गोपायति	गोपायतः	गोपायन्ति
म० ,,	गोपायसि	गोपायथः	गोपायथ
उ० ,,	गोपायामि	गोपायावः	गोपायामः

लिट्; आय् पक्षे

प्र० पु०	गोपायाञ्चकार	गोपायाञ्चक्रतुः	गोपायाञ्चक्रुः
म० ,,	गोपायाञ्चकर्थ[3]	गोपायाञ्चक्रथुः	गोपायाञ्चक्र
उ० ,,	गोपायाञ्चकार-कर	गोपायाञ्चकृव	गोपायाञ्चकृम

आय् अभावे[4]

प्र० पु०	जुगोप	जुगुपतुः	जुगुपुः
म० ,,	जुगोपिथ-जुगोप्थ	जुगुपथुः	जुगुप
उ० ,,	जुगोप	जुगुपिव, जुगुप्व	जुगुपिम, जुगुप्म

लुट्; आय् पक्षे

प्र० पु०	गोपायिता	गोपायितारौ	गोपायितारः
म० ,,	गोपायितासि	गोपायितास्थः	गोपायितास्थ

1. "ह्म्यन्त-क्षण-श्वस्—" से वृद्धिनिषेध । 'अतो हलादेर्लघोः' से वृद्धि प्राप्त थी । कटितः । कटित्वा । कटितुम् । णिच्-काटयति । सन्—चिकटिषति । यङ्—चाकट्यते ।

2 जहां आय् न होगा वहां अनिट् होने से "स्वरतिसूति—"से इट् विकल्प से होगा ।

3. "ऋतो भारद्वाजस्य" से इट् निषेध ।

4. "आयादय आर्धधातु के वा" से आर्धधातुक लकारों में विकल्प से आय होता है ।

उ० ,,	गोपायितास्मि	गोपायितास्वः	गोपायितास्मः

आय् अभावे

प्र० पु०	गोपिता[1], गोप्ता	गोपितारौ, गोप्तारौ	गोपितारः, गोप्तारः
म० ,,	गोपितासि, गोप्तासि	गोपितास्थः, गोप्तास्थः	गोपितास्थ, गोप्तास्थ
उ० ,,	गोपितास्मि, गोप्तास्मि	गोपितास्वः, गोप्तास्वः	गोपितास्मः, गोप्तास्मः

लृट्-आय् पक्षे

प्र० पु०	गोपायिष्यति	गोपायिष्यतः	गोपायिष्यन्ति
म० ,,	गोपायिष्यसि	गोपायिष्यथः	गोपायिष्यथ
उ० ,,	गोपायिष्यामि	गोपायिष्यावः	गोपायिष्यामः

आय् अभावे

प्र० पु०	गोपिष्यति, गोप्स्यति	गोपिष्यतः, गोप्स्यतः	गोपिष्यन्ति, गोप्स्यन्ति
म० ,,	गोपिष्यसि, गोप्स्यसि	गोपिष्यथः, गोप्स्यथः	गोपिष्यथ, गोप्स्यथ
उ० ,,	गोपिष्यामि, गोप्स्यामि	गोपिष्यावः, गोप्स्यावः	गोपिष्यामः, गोप्स्यावः

लोट्

प्र० पु०	गोपायतु-तात्	गोपायताम्	गोपायन्तु
म० ,,	गोपाय-तात्	गोपायतम्	गोपायत
उ० ,,	गोपायानि	गोपायाव	गोपायाम

लङ्

प्र० पु०	अगोपायत्	अगोपायताम्	अगोपायन्
म० ,,	अगोपायः	अगोपायतम्	अगोपायत
उ० ,,	अगोपायम्	अगोपायाव	अगोपायाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गोपायेत्	गोपायेताम्	गोपायेयुः

1. "स्वरति सूति—" इससे विकल्प से इट् ।

म० ,,	गोपायेः	गोपायेतम्	गोपायेत
उ० ,,	गोपायेयम्	गोपायेव	गोपायेम

आशीर्लिङ्—आयपक्षे

प्र० पु०	गोपाय्यात्[1]	गोपाय्यास्ताम्	गोपाय्यासुः
म० ,,	गोपाय्याः	गोपाय्यास्तम्	गोपाय्यास्त
उ० ,,	गोपाय्यासम्	गोपाय्यास्व	गोपाय्यास्म

आय् अभावे

प्र० पु०	गुप्यात्[2]	गुप्यास्ताम्	गुप्यासुः
म० ,,	गुप्याः	गुप्यास्तम्	गुप्यास्त
उ० ,,	गुप्यासम्	गुप्यास्व	गुप्यास्म

लुङ्—आयपक्षे

प्र० पु०	अगोपायीत्	अगोपायिष्टाम्	अगोपायिषुः
म० ,,	अगोपायीः	अगोपायिष्टम्	अगोपायिष्ट
उ० ,,	अगोपायिषम्	अगोपायिष्व	अगोपायिष्म

आय् अभावे इटि

प्र० पु०	अगोपीत्[3]	अगोपिष्टाम्	अगोपिषुः
म० ,,	अगोपीः	अगोपिष्टम्	अगोपिष्ट
उ० ,,	अगोपिषम्	अगोपिष्व	अगोपिष्म

---

१. गोपाय + यात्—"अतो लोपः" से अकार का लोप।

२. यासुट् के कित् होने से गुण का निषेध।

३. 'वद व्रज हलन्तस्याचः' से प्राप्त वृद्धि का "नेटि" से निषेध।

इडभावे

प्र० पु०	अगौप्सीत्	अगौप्ताम्[1]	अगौप्सुः
म० ,,	अगौप्सीः	अगौप्तम्	अगौप्त
उ० ,,	अगौप्सम्	अगौप्स्व	अगौप्स्म

लृङ् आयपक्षे

प्र० पु०	अगोपायिष्यत्	अगोपायिष्यताम्	अगोपायिष्यन्
म० ,,	अगोपायिष्यः	अगोपायिष्यतम्	अगोपायिष्यत
उ० ,,	अगोपायिष्यम्	अगोपायिष्याव	अगोपायिष्याम

आय् अभावे इटि

प्र० पु०	अगोपिष्यत्	अगोपिष्यताम्	अगोपिष्यन्
म० ,,	अगोपिष्यः	अगोपिष्यतम्	अगोपिष्यत
उ० ,,	अगोपिष्यम्	अगोपिष्याव	अगोपिष्याम

इट् अभावे

प्र० पु०	अगोप्स्यत्	अगोप्स्यताम्	अगोप्स्यन्
म० ,,	अगोप्स्यः	अगोप्स्यतम्	अगोप्स्यत
उ० ,,	अगोप्स्यम्	अगोप्स्याव	अगोप्स्याम

४१. क्षि-क्षये। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	क्षयति	क्षयतः	क्षयन्ति
म० ,,	क्षयसि	क्षयथः	क्षयथ
उ० ,,	क्षयामि	क्षयावः	क्षयामः

1. "वद व्रज"—से वृद्धि—अगौप् स् ताम्। "झलो झलि" से सकार का लोप। क्त—गोपितः, गोप्तः। क्त्वा—गोपित्वा, गोप्त्वा। तुमुन्—गोपितुम्, गोप्तुम्। तृच्—गोपिता, गोप्ता। णिच्—गोपाययति। कर्मवाच्य—गोपाय्यते सन्—जुगोपिषति, जुगोप्सति।

लिट्

प्र० पु०	चिक्षाय[1]	चिक्षियतुः[2]	चिक्षियुः
म० ,,	चिक्षयिथ-चिक्षेथ[3]	चिक्षियथुः	चिक्षिय
उ० ,,	चिक्षाय-चिक्षय	चिक्षियिव	चिक्षियिम

लुट्

प्र० पु०	क्षेता[4]	क्षेतारौ	क्षेतारः
म० ,,	क्षेतासि	क्षेतास्थः	क्षेतास्थ
उ० ,,	क्षेतास्मि	क्षेतास्वः	क्षेतास्मः

लृट्

प्र० पु०	क्षेष्यति	क्षेष्यतः	क्षेष्यन्ति
म० ,,	क्षेष्यसि	क्षेष्यथः	क्षेष्यथ
उ० ,,	क्षेष्यामि	क्षेष्यावः	क्षेष्यामः

लोट्

प्र० पु०	क्षयतु-तात्	क्षयताम्	क्षयन्तु
म० ,,	क्षय-तात्	क्षयतम्	क्षयत
उ० ,,	क्षयाणि[5]	क्षयाव[6]	क्षयाम

---

1. क्+ष से क्ष बनता है, अतः हलादिशेष से क् शेष रह कर 'कुहोश्चु' से चुत्व होगा। "अचोञ्णिति" से वृद्धि, आय्।

2. "अचिश्नु—से इयङ्।

3. भारद्वाज के मत से इट् विकल्प।

4. "एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्" इस सूत्र से यह अनिट् है।

5. "अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि" से न को ण।

6. आट् (पित्) है इस कारण यहाँ गुण हुआ है, अपित् होने पर तो अपित्सार्वधातुकं ङिद्वत् से ङिद्वत् होने से गुण का निषेध होता है।

लङ्

प्र० पु०	अक्षय	अक्षयताम्	अक्षयन्
म० ,,	अक्षयः	अक्षयतम्	अक्षयत
उ० ,,	अक्षयम्	अक्षयाव	अक्षयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्षयेत्	क्षयेताम्	क्षयेयुः
म० ,,	क्षयेः	क्षयेतम्	क्षयेत
उ० ,,	क्षयेयम्	क्षयेवहि	क्षयेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	क्षीयात्[1]	क्षीयास्ताम्	क्षीयासुः
म० ,,	क्षीयाः	क्षीयास्तम्	क्षीयास्त
उ० ,,	क्षीयासम्	क्षीयास्व	क्षीयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अक्षैषीत्[2]	अक्षैष्टाम्	अक्षैषुः
म० ,,	अक्षैषीः	अक्षैष्टम्	अक्षैष्ट
उ० ,,	अक्षैषम्	अक्षैष्व	अक्षैष्म

लृङ्

प्र० पु०	अक्षेष्यत्	अक्षेष्यताम्	अक्षेष्यन्
म० ,,	अक्षेष्यः	अक्षेष्यतम्	अक्षेष्यत
उ० ,,	अक्षेष्यम्	अक्षेष्याव	अक्षेष्याम

---

1. "अकृत्सार्वधातुकयोः" से दीर्घः ।

2. "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु" । क्त—क्षीणः [क्षियो दीर्घात् से णत्व] क्त्वा—क्षित्वा । तुमुन्—क्षेतुम् । तव्य—क्षेतव्यम् । णिच्—क्षाययति । सन्—चिक्षीषति । कर्मणि—क्षीयते । अच्—क्षयः ।

४२. तप्—सन्तापे। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	तपति	तपतः	तपन्ति
म० ,,	तपसि	तपथः	तपथ
उ० ,,	तपामि	तपावः	तपामः

लिट्

प्र० पु०	तताप	तेपतुः[1]	तेपुः
म० ,,	तेपिथ[2]-ततप्थ	तेपथुः	तेप
उ० ,,	तताप-ततप	तेपिव	तेपिम

लुट्

प्र० पु०	तप्ता	तप्तारौ	तप्तारः
म० ,,	तप्तासि	तप्तास्थः	तप्तास्थ
उ० ,,	तप्तास्मि	तप्तास्वः	तप्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	तप्स्यति	तप्स्यतः	तप्स्यन्ति
म० ,,	तप्स्यसि	तप्स्यथः	तप्स्यथ
उ० ,,	तप्स्यामि	तप्स्यावः	तप्स्यामः

लोट्

प्र० पु०	तपतु-तात्	तपताम्	तपन्तु
म० ,,	तप-तात्	तपतम्	तपत
उ० ,,	तपानि	तपाव	तपाम

लङ्

प्र० पु०	अतपत्	अतपताम्	अतपन्

1. एत्वाभ्यासलोप।

2. "थलि च सेटि" से भारद्वाज के मत से इट् विकल्प से।

म० ,,	अतपः	अतपतम्	अतपत
उ० ,,	अतपम्	अतपाव	अतपाम

विधिलिङ्

प्र० ,,	तपेत्	तपेताम्	तपेयुः
म० ,,	तपेः	तपेतम्	तपेत
उ० ,,	तपेयम्	तपेव	तपेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	तप्यात्	तप्यास्ताम्	तप्यासुः
म० ,,	तप्याः	तप्यास्तम्	तप्यास्त
उ० ,,	तप्यासम्	तप्यास्व	तप्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अताप्सीत्	अताप्ताम्[1]	अताप्सुः
म० ,,	अताप्सीः	अताप्तम्	अताप्त
उ० ,,	अताप्सम्	अताप्स्व	अताप्स्म

लृङ्

प्र० पु०	अतप्स्यत्	अतप्स्यताम्	अतप्स्यन्
म० ,,	अतप्स्यः	अतप्स्यतम्	अतप्स्यत
उ० ,,	अतप्स्यम्	अतप्स्याव	अतप्स्याम

४३. क्रमु[2] - पादविक्षेपे। परस्मैपदी, सेट्।

लट्—श्यन् पक्षे

---

1. "वद व्रज"—इति वृद्धि, झलो झलि" से सलोप। "निसस्त-पतावनासेवने" से षत्व–निवृत्ति। क्त–तप्तम्। क्त्वा–तप्त्वा। तुम्–तप्तुम्। तृच्–तप्ता। णिच्–तापयति। सन्–तितप्सति। घञ्–तापः। ल्युट्–तपनम्।

2. उकार की इत्संज्ञा होने से "उदितो वा" से इट् विकल्प से होता है।

प्र० पु०	क्राम्यति[1]	क्राम्यतः	क्राम्यन्ति
म० ,,	क्राम्यसि	क्राम्यथः	क्राम्यथ
उ० ,,	क्राम्यामि	क्राम्यावः	क्राम्यामः

श्यन् के अभाव में

प्र० पु०	क्रामति	क्रामतः	क्रामन्ति
म० ,,	क्रामसि	क्रामथः	क्रामथ
उ० ,,	क्रामामि	क्रामावः	क्रामामः

लिट्

प्र० पु०	चक्राम	चक्रमतुः	चक्रमुः
म० ,,	चक्रमिथ	चक्रमथुः	चक्रम
उ० ,,	चक्राम, चक्रम	चक्रमिव	चक्रमिम

लुट्

प्र० पु०	क्रमिता	क्रमितारौ	क्रमितारः
म० ,,	क्रमितासि	क्रमितास्थः	क्रमितास्थ
उ० ,,	क्रमितास्मि	क्रमितास्वः	क्रमितास्मः

लृट्

प्र० पु०	क्रमिष्यति	क्रमिष्यतः	क्रमिष्यन्ति
म० ,,	क्रमिष्यसि	क्रमिष्यथः	क्रमिष्यथ
उ० ,,	क्रमिष्यामि	क्रमिष्यावः	क्रमिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	क्राम्यतु—मतु	क्राम्यतात्—मतात्	क्राम्यन्तु—मन्तु
म० ,,	क्राम्य—म, तात्	क्राम्यतम्—मतम्	क्राम्यत—मत

1. "वाभ्राशभ्लाश"—से श्यन् विकल्प से होता है और "क्रमः परस्मैपदेषु" से दीर्घ होता है। दीर्घ शप् में भी होता है।

उ० ,,	क्राम्याणि—माणि	क्राम्याव—माव	क्राम्याम—माम

लङ्

प्र० पु०	अक्राम्यत्, अक्रामत्	अक्राम्यताम्, अक्रामताम्	अक्राम्यन्, अक्रामन्
म० ,,	अक्राम्यः, अक्रामः	अक्राम्यतम्, अक्रामतम्	अक्राम्यत, अक्रामत
उ० ,,	अक्राम्यम्, अक्रामम्	अक्राम्याव, अक्रामाव	अक्राम्याम, अक्रामाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्राम्येत्, क्रामेत्	क्राम्येताम्, क्रामेताम्	क्राम्येयुः, क्रामेयुः
म० ,,	क्राम्येः, क्रामेः	क्राम्येतम्, क्रामेतम्	क्राम्येत, क्रामेत
उ० ,,	क्राम्येयम्, क्रामेयम्	क्राम्येव, क्रामेव,	क्राम्येम, क्रामेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	क्रम्यात्	क्रम्यास्ताम्	क्रम्यासुः
म० ,,	क्रम्याः	क्रम्यास्तम्	क्रम्यास्त
उ० ,,	क्रम्यासम्	क्रम्यास्व	क्रम्यास्म

लुङ्[1]

प्र० पु०	अक्रमीत्	अक्रमिष्टाम्	अक्रमिषुः
म० ,,	अक्रमीः	अक्रमिष्टम्	अक्रमिष्ट
उ० ,,	अक्रमिषम्	अक्रमिष्व	अक्रमिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अक्रमिष्यत्	अक्रमिष्यताम्	अक्रमिष्यन्

---

1. उपक्रमते, प्रक्रमते—आरम्भ करता है ('प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्' से आत्मनेपद) संक्रमति—संक्रान्त होता है। आक्रमते—आक्रमण करता है। निष्क्रामति—निकलना है। अतिक्रामति—उल्लंघन करता है। उपक्रामति—हटता है। परिक्राम्यति—परिक्रमा करता है। आत्मनेपद में लृट्, लुङ् के रूप क्रंस्यते, अक्रंस्त इत्यादि होंगे क्योंकि क्रम को इट् परस्मैपद में ही होता है।

म० ,, अक्रमिष्यः अक्रमिष्यतम् अक्रमिष्यत

उ० ,, अक्रमिष्यम् अक्रमिष्याव अक्रमिष्याम

४४ चमु—अदने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—चमति। चचाम–चेमतुः। चमिता। चमिष्यति। चमतु। अचमत्। चमेत्। चम्यात्। अचमीत्[1]। अचमिष्यत्।

४५ छमु[2]—अदने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—छमति। चच्छाम[3]। छमिता। छमिष्यति। छमतु। अच्छमत्। छमेत्। छम्यात्। अच्छमीत्[4]। अच्छमिष्यत्।

४६ जमु—अदने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—जमति। जजाम[5]। जमिता। जमिष्यति। जमतु। अजमत्। जमेत्। जम्यात्। अजमीत्। अजमिष्यत्।

४७ झमु—अदने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—झमति। जझाम। झमिता। झमिष्यति। झमतु। अझमत्। झमेत्। झम्यात्। अझमीत्। अझमिष्यत्।

४८ स्खल्—संचलने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—स्खलति। चस्खाल। स्खलिता। स्खलिष्यति। स्खलतु।

---

1. "आङि चम इति वक्तव्यम्" से आङ् उपसर्ग होने शित् में दीर्घ हो कर–आचामति, आचामतु, आचामत्, आचामेत् इत्यादि रूप भी होंगे। अन्य उपसर्ग के होने पर दीर्घ नहीं होगा—विचमति।

2. उकार इत् है।

3. अतुस आदियों में—चच्छमतुः इत्यादि। लिट् निमित्तादेश होने से एत्वाभ्यासलोप न होंगे।

4. "ह्म्यन्त" इति न वृद्धिः।

5. अतुस् आदि में जेमतुः इत्यादि।

6. "ह्मन्त –" इति न वृद्धि।

अस्खलत् । स्खलेत् । स्खल्यात् । अस्खालीत्[1] । अस्खलिष्यत् ।

४९. त्सर—छद्मगतौ[2] । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—त्सरति । तत्सार[3] । त्सरिता । त्सरिष्यति । त्सरतु । अत्सरत । त्सरेत । त्सर्यात् । अत्सारीत्[4] । अत्सरिष्यत् ।

५०. पा—पाने । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	पिबति[5]	पिबतः	पिबन्ति
म० ,,	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उ० ,,	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लिट्

प्र० पु०	पपौ[6]	पपतुः[7]	पपुः
म० ,,	पपिथ[8]-पपाथ	पपथुः	पप
उ० ,,	पपौ	पपिव[9]	पपिम

---

1. "अतोल्रान्तस्य" इति वृद्धि ।

2. त्सर के सभी रूप स्खल् के समान हैं ।

3. अतुस् आदि में तत्सरतुः इत्यादि । अकार संयुक्त हल्मध्यस्थ है, अतः एत्वाभ्यासलोप नहीं होता है ।

4. "अतोल्रान्तस्य" से वृद्धि होती है ।

5. पिब आदेश अदन्त है अतः उपधागुण नहीं, पररूप ।

6. "आत औ णलः" । औकारादेश ।

7. "आतो लोप इटि च" से आकारलोप ।

8. "ऋतो भारद्वाजस्य" से इट्विकल्प से । 'आतो लोप इटि च' से आलोप ।

9. क्रादि नियम से इट् । आकारलोप ।

लुट्

प्र० पु.	पाता	पातारौ	पातारः
म. ,,	पातासि	पातास्थः	पातास्थ
उ. ,,	पातास्मि	पातास्वः	पातास्मः

लृट्

प्र. पु.	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
म. ,,	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उ. ,,	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट्

प्र. पु.	पिबतु-तात्	पिबताम्	पिबन्तु
म. ,,	पिब-तात्	पिबतम्	पिबत
उ. ,,	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ्

प्र. पु.	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
म. ,,	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उ. ,,	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ्

प्र. पु.	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
म. ,,	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उ. ,,	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

आशीर्लिङ्

प्र. पु.	पेयात्[1]	पेयास्ताम्	पेयासुः
म. ,,	पेयाः	पेयास्तम्	पेयास्त
उ. ,,	पेयासम्	पेयास्व	पेयास्म

1. "एर्लिङि" से आ को एत्व होता है ।

लुङ्

प्र. पु.	अपात्[1]	अपाताम्	अपुः[2]
म. ,,	अपाः	अपातम्	अपात
उ. ,,	अपाम्	अपाव	अपाम

लृङ्

प्र. ,,	अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्
म. ,,	अपास्यः	अपास्यतम्	अपास्यत
उ. ,,	अपास्यम्	अपास्याव	अपास्याम

५१. ग्लै—हर्षक्षये। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	ग्लायति[3]	ग्लायतः	ग्लायन्ति
म० ,,	ग्लायसि	ग्लायथः	ग्लायथ
उ० ,,	ग्लायामि	ग्लायावः	ग्लायामः

लिट्

प्र० पु०	जग्लौ[4]	जग्लतुः[5]	जग्लुः
म० ,,	जग्लिथ[6]–जग्लाथ	जग्लथुः	जग्ल

1. "गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु" से सिच् का लुक्।

2. सिच् का लुक् कर के "आतः" से झि को जुस्। "उस्यपदान्तात्" से पररूप। क्त्वा-पीत्वा। क्त-पीतम्। तुमुन्-पातुम्। ल्युट्-पानम्। णिच्-पाययति। सन्-पिपासति। सन्नन्त से उ-पिपासुः। सन्नन्त से अ-पिपासा।

3. ग्लै+अति, आय् आदेश।

4. 'आदेच उपदेशेऽशिति' से ऐ को आत्व, "आत औ णलः" से औ।

5. आकारलोप।

6. "ऋतो भारद्वाजस्य" से विकल्प से इट्, आकारलोप।

उ० ,,	जग्लौ	जग्लिव	जग्लिम

लुट्

प्र० पु०	ग्लाता[1]	ग्लातारौ	ग्लातारः
म० ,,	ग्लातासि	ग्लातास्थः	ग्लातास्थ
उ० ,,	ग्लातास्मि	ग्लातास्वः	ग्लातास्मः

लृट्

प्र० पु०	ग्लास्यति	ग्लास्यतः	ग्लास्यन्ति
म० ,,	ग्लास्यसि	ग्लास्यथः	ग्लास्यथ
उ० ,,	ग्लास्यामि	ग्लास्यावः	ग्लास्यामः

लोट्

प्र० पु०	ग्लायतु-तात्	ग्लायताम्	ग्लायन्तु
म० ,,	ग्लाय-तात्	ग्लायतम्	ग्लायत
उ० ,,	ग्लायानि	ग्लायाव	ग्लायाम

लङ्

प्र० पु०	अग्लायत्	अग्लायताम्	अग्लायन्
म० ,,	अग्लायः	अग्लायतम्	अग्लायत
उ० ,,	अग्लायम्	अग्लायाव	अग्लायाम

विधि लिङ्

प्र० पु०	ग्लायेत्	ग्लायेताम्	ग्लायेयुः
म० ,,	ग्लायेः	ग्लायेतम्	ग्लायेत
उ० ,,	ग्लायेयम्	ग्लायेव	ग्लायेम

विधिलिङ्, एत्त्वपक्षे

प्र० पु०	ग्लेयात्[2]	ग्लेयास्ताम्	ग्लेयासुः

1. सभी आर्धधातुकों में "आदेच उपदेशेऽशिति' से आत्व ।
2. 'वान्यस्य संयोगादेः" से एत्त्व विकल्प से हुआ ।

म० ,,	ग्लेयाः	ग्लेयास्तम्	ग्लेयास्त
उ० ,,	ग्लेयासम्	ग्लेयास्व	ग्लेयास्म

एत्त्वाभावे

प्र० पु०	ग्लायात्	ग्लायास्ताम्	ग्लायासुः
म० ,,	ग्लायाः	ग्लायास्तम्	ग्लायास्त
उ० ,,	ग्लायासम्	ग्लायास्व	ग्लायास्म

लुङ्

प्र० पु०	अग्लासीत्[1]	अग्लासिष्टाम्	अग्लासिषुः
म० ,,	अग्लासीः	अग्लासिष्टम्	अग्लासिष्ट
उ० ,,	अग्लासिषम्	अग्लासिस्व	अग्लासिस्म

लृङ्

प्र० पु०	अग्लास्यत्	अग्लास्यताम्	अग्लास्यन्
म० ,,	अग्लास्यः	अग्लास्यतम्	अग्लास्यत
उ० ,,	अग्लास्यम्	अग्लास्याव	अग्लास्याम

५२. म्लै[2]—हर्षक्षये, परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—म्लायति। मम्लौ। म्लाता। म्लास्यति। म्लायतु। अम्लायत्। म्लायेत्। म्लेयात्–म्लायात्। अम्लासीत्। अम्लास्यत्।

५३. धेट्—पाने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु धयति। दधौ[3]। धाता। धास्यति। धयतु। अधयत्।

---

1. "यमरमनमातां सक् च" से इट् और सक् आदेश।

2. म्लै के सभी रूप 'ग्लै' के समान हैं 'कुहोश्चुः' यहां नहीं लगता। क्त—ग्लानः। क्त्वा-ग्लात्वा। क्तवतु—ग्लानवान्। तुम्—ग्लातुम्। णिच्—ग्लापयति। सन्—जिग्लासति। एवं म्लै।

3. "आदेच उपदेशेऽशिति" से आत्व।

धयेत्। धेयात्[1] । अदधत्[2] —अधात्[3] —अधासीत् । अधास्यत् ।

५४. ध्यै न्यक्करणे । परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	ध्यायति	ध्यायतः	ध्यायन्ति
म० ,,	ध्यायसि	ध्यायथः	ध्यायथ
उ० ,,	ध्यायामि	ध्यायावः	ध्यायामः

लिट्

प्र० पु०	दध्यौ[5]	दध्यतुः	दध्युः
म० ,,	दध्यिथ-दध्याथ	दध्यथुः	दध्य
उ० ,,	दध्यौ	दध्यिव	दध्यिम

लुट्

प्र० पु०	ध्याता	ध्यातारौ	ध्यातारः
म० ,,	ध्यातासि	ध्यातास्थः	ध्यातास्थ
उ० ,,	ध्यातास्मि	ध्यातास्वः	ध्यातास्मः

लृट्

प्र० पु०	ध्यास्यति	ध्यास्यतः	ध्यास्यन्ति
म० ,,	ध्यास्यसि	ध्यास्यथः	ध्यास्यथ
उ० ,,	ध्यास्यामि	ध्यास्यावः	ध्यास्यामः

लोट्

प्र० पु०	ध्यायतु-तात्	ध्यायताम्	ध्यायन्तु

1. 'दाधाघ्वदाप् 'से घुसंज्ञा। 'एर्लिङि'' से एत्व।
2. ''विभाषा धेटश्व्योः'' से च्लि को चङ् हुआ। ''चङि'' से द्वित्व।
3. ''विभाषा घ्राधेट् शाच्छासः'' से सिच् लुक् विकल्प से।
4. ''यमरमनमातां सक् च'' से सक्।
5. ''आदेश उपदेशेऽशिति।'' ''आत औ णलः''।

म० ,,	ध्याय-तात्	ध्यायतम्	ध्यायत
उ० ,,	ध्यायम्	ध्यायाव	ध्यायाम

लङ्

प्र० पु०	अध्यायत्	अध्यायताम्	अध्यायन्
म० ,,	अध्यायः	अध्यायतम्	अध्यायत
उ० ,,	अध्यायम्	अध्यायाव	अध्यायाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	ध्यायेत्	ध्यायेताम्	ध्यायेयुः
म० ,,	ध्यायेः	ध्यायेतम्	ध्यायेत
उ० ,,	ध्यायेयम्	ध्यायेव	ध्यायेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ध्येयात्[1]	ध्येयास्ताम्	ध्येयासुः
म० ,,	ध्येयाः	ध्येयास्तम्	ध्येयास्त
उ० ,,	ध्येयासम्	ध्येयास्व	ध्येयास्म

एत्वाभाव में

प्र० पु०	ध्यायात्	ध्यायास्ताम्	ध्यायासुः
म० ,,	ध्यायाः	ध्यायास्तम्	ध्यायास्त
उ० ,,	ध्यायासम्	ध्यायास्व	ध्यायास्म

लुङ्

प्र० पु०	अध्यासीत्[2]	अध्यासिष्टाम्	अध्यासिषुः
म० ,,	अध्यासीः	अध्यासिष्टम्	अध्यासिष्ट

1. "वाऽन्यस्य संयोगादेः" से एत्व विकल्प से।

2. "यमरमन मातां सक् च"। क्त्वा—ध्यात्वा। क्त—ध्यातः। तुमुन्—ध्यातुम्। णिच्—ध्यापयति। सन्—दिध्यासति।

उ० ,,	अध्यासिषम्	अध्यासिष्व	अध्यासिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अध्यास्यत्	अध्यास्यताम्	अध्यास्यन्
म० ,,	अध्यास्यः	अध्यास्यतम्	अध्यास्यत
उ० ,,	अध्यास्यम्	अध्यास्याव	अध्यास्याम

५५. द्रै—स्वप्ने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—द्रायति । दद्रौ । द्राता । द्रास्यति । द्रायतु । अद्रायत् । द्रायेत् । द्रेयात्[1]—द्रायात् । अद्रासीत् । अद्रास्यत् ।

५६.ध्रै—तृप्तौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—ध्रायति । दध्रौ । ध्राता । ध्रास्यति । ध्रायतु । अध्रायत् । ध्रायेत् । ध्रेयात्—ध्रायात् । अध्रासीत् । अध्रास्यत् ।

५७. ध्यै—चिन्तायाम् । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—ध्यायति । दध्यौ । ध्याता । ध्यास्यति । ध्यायतु । अध्यायत् । ध्यायेत् । ध्येयात्—ध्यायात् । अध्यासीत् । अध्यास्यत् ।

५८. रै—शब्दे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—रायति । ररौ । राता । रास्यति । रायतु । अरायत् । रायेत् । रायात्[2] । अरासीत् । अरास्यत् ।

५९. स्त्यै—शब्दसंघातयोः । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—स्तायति । तस्त्यौ । स्त्यास्यति । स्त्यायतु । अस्त्यायत् । स्त्यायेत् । स्त्येयात्—स्त्यायात् । अस्त्यासीत् । अस्त्यास्यत ।

---

1. "वान्यस्य संयोगादेः" । इन सभी धातुओं में वही, आत्व होता है। लुङ् में इट् सक् समझो । हां, यदि संयोगादि धातु हो—तो आशीर्लिङ् में एत्वविकल्प का ध्यान रखो ।

2. ये धातु घुमास्थादि में नहीं और संयोगादि भी नहीं, अतः एत्व न होगा ।

६०. ष्ट्यै[1]—शब्दसंघातयोः। परस्मैपदी, अनिट्।

स्त्यैवत् सर्वाणि रूपाणि।

६१. खै—खदने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—खायति। चखौ। खाता। खास्यति। खायतु। अखायत्। खायेत्। खायात्। अखासीत्। अखास्यत्।

६२. क्षै—क्षये। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—क्षायति। चक्षौ। क्षाता। क्षास्यति। क्षायतु। अक्षायत्। क्षायेत्। क्षेयात्-क्षायात्। अक्षासीत्। अक्षास्यत्।

६३ जै—क्षये। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—जायति। जजौ। जाता। जास्यति। अजायत्। जायेत्। जायात्। अजासीत्। अजास्यत्।

६४ षै[2]—क्षये। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—सायति। ससौ। साता। सास्यति। सायतु। असायत्। सायेत्। सायात्[3]। असासीत्। असास्यात्।

६५ कै—शब्दे। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—कायति। चकौ। काता। कास्यति। कायतु। अकायत्। कायेत्। कायात्। अकासीत्। अकास्यत्।

---

1. यद्यपि स्त्यै, ष्ट्यै, धातुओं के रूप तुल्य हैं, तथापि ष्ट्यै षोपदेश है, इसका सकार आदेश का होने से षत्व होकर सन्नन्त में रूप 'तिष्ट्यासति' होगा और स्त्यै का सन्नन्त रूप 'तिस्त्यासति' होगा। आदेश का सकार न होने से षत्व न होगा।

2. "धात्वादेः षः सः"।

3. "घुमास्थागापाजहातिसां हलि" और "विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः" सूत्र में 'सा' से दिवादिगण के 'षोऽन्तकर्मणि' का ही ग्रहण है, अतः इस धातु को आशीर्लिङ् में एत्व और लुङ् में सिच् लुक् न होंगे।

६६. गै—शब्दे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—गायति । जगौ । गाता । गास्यति । गायतु । अगायत् गायेत् । गेयात्[1] । अगासीत्[2] । अगास्यत् ।

६७. शै—पाके । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—शायति । शशौ । शाता । शास्यति । शायतु । अशायत् । शायेत् । शायात् । अशासीत्[3] । अशास्यत् ।

६८. श्रै—पाके । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—श्रायति[4] । शश्रौ । श्राता । श्रास्यति । श्रायतु । अश्रायत् । श्रायेत् । श्रायात्[5]–श्रेयात् । अश्रासीत् । अश्रास्यत् ।

६९. पै—शोषणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—पायति । पपौ । पाता । पास्यति । पायतु । अपायत् । पायेत् । पायात् । अपासीत्[6] । अपास्यत् ।

---

1. घुसंज्ञक या संयोगादि आकारान्त नहीं ।

2. घुसंज्ञक होने से एत्व ।

3. "गातिस्था—" सूत्र में इण् के आदेश 'गा' का ग्रहण है, अतः यहां सिच् लुक् नहीं ।

4. "विभाषाघ्राधेट् शाच्छासः" में 'शा' से शो—तनूकरणे (दिवादि) का ग्रहण है, अतः यहां सिच् लुक् नहीं ।

5. क्ङ में आणः । "संयोगादे रातो धातोर्यण्वतः" से एत्व ।

6. "वाऽन्यस्य संयोगादेः" ।

7. "गातिस्थाघुपा—" में पा पाने का ग्रहण होने से यहां सिच् का लुक् नहीं होता ।

७०. ओवै[1]—शोषणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—वायति । ववौ । वाता । वास्यति । वायतु । अवायत् । वायेत् । वायात् । अवासीत् । अवास्यत् ।

७१. ष्टै[2]—वेष्टने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—स्तायति । तस्तौ । स्ताता । स्तास्यति । स्तायतु । अस्तायत् । स्तायेत् । स्तेयात्–स्तायात् । अस्तासीत् । अस्तास्यत् ।

७२. स्नै—वेष्टने, शोभायां वा । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—स्नायति । सस्नौ । स्नाता । स्नास्यति । स्नायतु । अस्नायत् । स्नायेत् । स्नायात्–स्नेयात् । अस्नासीत् । अस्नास्यत्[3] ।

७३. दैप्—शोधने । परस्मैपदी अनिट् ।

दशलकारेषु—दायति । ददौ । दाता । दास्यति । दायतु । अदायत् । दायेत् । दायात्[4] । अदासीत् । अदास्यत् ।

७४. घ्रा—गन्धोपादने । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	जिघ्रति[5]	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
म० ,,	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उ० ,,	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

---

1. ओकार इत् है । "ओदितश्च" से निष्ठा के नकार को नत्व होकर 'वानः' रूप होगा ।

2. "धात्वादेः षः सः" से षत्व की निवृत्ति होने पर ष्टुत्व की भी निवृत्ति हुई ।

3. णयन्त में—स्नापयति । सन्नन्त – सिस्नासति ।

4. दाप् दैप् की घुसंज्ञा नहीं, अतः एत्व सिच् लुक् नहीं ।

5. "पाघ्राध्मा—" से शप् परे होने से जिघ्र आदेश । आर्धधातुक में "आदेच उपदेशेऽशिति" ।

लिट्

प्र० पु०	जघ्रौ	जघ्रतुः	जघ्रुः
म० ,,	जघ्रिथ—जघ्राथ	जघ्रथुः	जघ्र
उ० ,,	जघ्रौ	जघ्रिव	जघ्रिम

लुट्

प्र० पु०	घ्राता	घ्रातारौ	घ्रातारः
म० ,,	घ्रातासि	घ्रातास्थः	घ्रातास्थ
उ० ,,	घ्रातास्मि	घ्रातास्वः	घ्रातास्मः

लृट्

प्र० पु०	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
म० ,,	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उ० ,,	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

लोट्

प्र० पु०	जिघ्रतु—तात्	जिघ्राताम	जिघ्रन्तु
म० ,,	जिघ्र—तात्	जिघ्रतम्	जिघ्रत
उ० ,,	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

लङ्

प्र० पु०	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
म० ,,	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उ० ,,	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जिघ्रेत	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
म० ,,	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उ० ,,	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	घ्रेयात्[1]	घ्रेयास्ताम्	घ्रेयासुः
म० ,,	घ्रेयाः	घ्रेयास्तम्	घ्रेयास्त
उ० ,,	घ्रेयासम्	घ्रेयास्व	घ्रेयास्म

एत्वाभावे

प्र० पु०	घ्रायात्	घ्रायास्ताम्	घ्रायासुः
म० ,,	घ्रायाः	घ्रायास्तम्	घ्रायास्त
उ० ,,	घ्रायासम्	घ्रायास्व	घ्रायास्म

लुङ्—सिच् लुकि

प्र० पु०	अघ्रात्[2]	अघ्राताम्	अघ्रुः[3]
म० ,,	अघ्राः	अघ्रातम्	अघ्रात
उ० ,,	अघ्राम्	अघ्राव	अघ्राम

पक्षे

प्र० पु०	अघ्रासीत्[1]	अघ्रासिष्टाम्	अघ्रासिषुः
म० ,,	अघ्रासीः	अघ्रासिष्टम्	अघ्रासिष्ट
उ० ,,	अघ्रासिषम्	अघ्रासिष्व	अघ्रासिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अघ्रास्यत्	अघ्रास्यताम्	अघ्रास्यन्

1. "वान्यस्य संयोगादेः"।

2. "विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः" से सिच् लुक्।

3. "उस्य पदान्तात्"।

4. "यमरमनमातां सक् च।" क्त—घ्रातम्, घ्राणः। क्त्वा—घ्रात्वा। क्तवतु—घ्रातवान्। णिच्—घ्रापयति। सन्—जिघ्रासति। यङ्—जेघ्रीयते। कर्मणि—घ्रायते।

म० ,,	अघ्रास्थः	अघ्रास्यतम्	अघ्रास्यत
उ० ,,	अघ्रास्यम्	अघ्रास्याव	अघ्रास्याम

७५. ध्मा–शब्दाग्निसंयोगयोः। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	धमति[1]	धमतः	धमन्ति
म० ,,	धमसि	धमथः	धमथ
उ० ,,	धमामि	धमावः	धमामः

लिट्

प्र० पु०	दध्मौ	दध्मतुः	दध्मुः
म० ,,	दध्मिथ-दध्माथ	दध्मथुः	दध्म
उ० ,,	दध्मौ	दध्मिव	दध्मिम

लुट्

प्र० पु०	ध्माता	ध्मातारौ	ध्मातारः
म० ,,	ध्मातासि	ध्मातास्थः	ध्मातास्थ
उ० ,,	ध्मातास्मि	ध्मातास्वः	ध्मातास्मः

लोट्

प्र० पु०	धमतु-तात्	धमताम्	धमन्तु
म० ,,	धम-तात्	धमतम्	धमत
उ० ,,	धमानि	धमाव	धमाम

लङ्

प्र० पु०	अधमत्	अधमताम्	अधमन्
म० ,,	अधमः	अधमतम्	अधमत
उ० ,,	अधमम्	अधमाव	अधमाम

1. "पाघ्राध्मा"—से शप् में धम आदेश।

विधिलिङ्

प्र० पु०	धमेत्	धमेताम्	धमेयुः
म० ,,	धमेः	धमेतम्	धमेत
उ० ,,	धमेयम्	धमेव	धमेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ध्मेयात्[1]	ध्मेयास्ताम्	ध्मेयासुः
म० ,,	ध्मेयाः	ध्मेयास्तम्	ध्मेयास्त
उ० ,,	ध्मेयासम्	ध्मेयास्व	ध्मेयास्म

एत्वाभावे

प्र० पु०	ध्मायात्	ध्मायास्ताम्	ध्मायासुः
म० ,,	ध्मायाः	ध्मायास्तम्	ध्मायास्त
उ० ,,	ध्मायासम्	ध्मायास्व	ध्मायास्म

लुङ्

प्र० पु०	अध्मासीत्	अध्मासिष्टाम्	अध्मासिषुः
म० ,,	अध्मासीः	अध्मासिष्टम्	अध्यासिष्ट
उ० ,,	अध्मासिषम्	अध्मासिष्व	अध्मासिष्म

७६ ष्ठा-गति निवृत्तौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र. पु.	तिष्ठति[2]	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति

1. "वान्यस्य संयोगादेः" । क्त—ध्मातम् । क्त्वा—ध्मात्वा । क्तवतु—ध्मातवान् । णिच्—ध्मापयति । सन्—दिध्मासति । कर्मणि—ध्मायते । यङ्—देध्मीयते । यत्—ध्मेयम् ।

2. शप् में "पाघ्राध्मास्था—" से तिष्ठ आदेश । "स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य" से षत्व-अधितष्ठौ । उपसर्गात्सुनोति—" से षत्व अधिष्ठाता ।

म. ,,	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ. ,,	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लिट्

प्र. पु.	तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः
म. ,,	तस्थिथ	तस्थथुः	तस्थ
उ. ,,	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

लुट्

प्र. पु.	स्थाता	स्थातारौ	स्थातारः
म. ,,	स्थातासि	स्थातास्थः	स्थातास्थ
उ. ,,	स्थातास्मि	स्थातास्वः	स्थातास्मः

लृट्

प्र. पु.	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
म. ,,	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ. ,,	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट्

प्र. पु.	तिष्ठतु-तात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म. ,,	तिष्ठ-तात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ. ,,	तिष्ठामि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्

प्र. पु.	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म. ,,	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ. ,,	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्

प्र. पु.	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म. ,,	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत

उ ,,	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

आशीर्लिङ्

प्र. पु.	स्थेयात्[1]	स्थेयास्ताम्	स्थेयासुः
म. ,,	स्थेयाः	स्थेयास्तम्	स्थेयास्त
उ. ,,	स्थेयासम्	स्थेयास्व	स्थेयास्म

लुङ्

प्र. पु.	अस्थात्[2]	अस्थाताम्	अस्थुः
म ,,	अस्थाः	अस्थातम्	अस्थात
उ. ,,	अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम

लृङ्

प्र. पु	अस्थास्यत्	अस्थास्यताम्	अस्थास्यन्
म. ,,	अस्थास्यः	अस्थास्यतम्	अस्थास्यत
उ ,,	अस्थास्यम्	अस्थास्याव	अस्थास्याम

७७. म्ना[3]—अभ्यासे। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र. पु.	मनति	मनतः	मनन्ति
म. ,,	मनसि	मनथः	मनथ
उ. ,,	मनामि	मनावः	मनामः

1. "घुमास्था—" से ईत्व।

2. "गातिस्था—" से सिच् लुक्। क्त-स्थितः। क्त्वा-स्थित्वा। तुमुन्-स्थातुम्। यत्-स्थेयम्। भाव-स्थीयते। णिच्-स्थापयति। सन्-तिष्ठासति। प्रतिष्ठते—जाता है। अनुतिष्ठति—करता है। सन्तिष्ठते-ठहरता है। उत्तिष्ठति-उठना है। उपतिष्ठते-उपस्थित होता है या देव पूजा करता है।

3. 'आम्नाय' (वेद) शब्द इसी धातु से बनता है।

लिट्

प्र. पु.	मम्नौ[1]	मम्नतु:[2]	मम्नु:
म. ,,	मम्निथ-मम्नाथ	मम्नथु:	मम्न
उ ,,	मम्नौ	मम्निव[3]	मम्निम

लुट्

प्र. पु.	म्नाता	म्नातारौ	म्नातार:
म. ,,	म्नातासि	म्नातास्थ:	म्नातास्थ
उ. ,,	म्नातास्मि	म्नातास्व:	म्नातास्म:

लृट्

प्र. पु.	म्नास्यति	म्नास्यत:	म्नास्यन्ति
म. ,,	म्नास्यसि	म्नास्यथः	म्नास्यथ
उ. ,,	म्नास्यामि	म्नास्यावः	म्नास्याम:

लोट्

प्र. पु.	मनतु-तात्	मनताम्	मनन्तु
म. ,,	मन-तात्	मनतम्	मनत
उ. ,,	मनामि	मनाव	मनाम

लङ्

प्र० पु०	अमनत्	अमनताम्	अमनन्
म० ,,	अमनः	अमनतम्	अमनत
उ० ,,	अमनम्	अमनाव	अमनाम

1. 'आत औ णल: से औ का आदेश।'
2. 'आतो लोप इटि च, से आ का लोप।'
3. क्राद्यन्यो लिटि सेड् भवेत्।

विधिलिङ्

प्र० पु०	म्नेत्	म्नेताम्	म्नेयुः
म० ,,	म्नेः	म्नेतम्	म्नेत
उ० ,,	म्नेयम्	म्नेव	म्नेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	म्नेयात्[1]	म्नेयास्ताम्	म्नेयासुः
म० ,,	म्नेयाः	म्नेयास्तम्	म्नेयास्त
उ० ,,	म्नेयासम्	म्नेयास्व	म्नेयास्म

एत्वाभावे

प्र० पु०	म्नायात्	म्नायास्ताम्	म्नायासुः
म० ,,	म्नायाः	म्नायास्तम्	म्नायास्त
उ० ,,	म्नायासम्	म्नायास्व	म्नायास्म

लुङ्

प्र० पु०	अम्नासीत्[2]	अम्नासिष्टाम्	अम्नासिषुः
म० ,,	अम्नासीः	अम्नासिष्टम्	अम्नासिष्ट
उ० ,,	अम्नासिषम्	अम्नासिष्व	अम्नासिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अम्नास्यत्	अम्नास्यताम्	अम्नास्यन्
म० ,,	अम्नास्यः	अम्नास्यतम्	अम्नास्यत
उ० ,,	अम्नास्यम्	अम्नास्याव	अम्नास्याम

७८. दाण्[3]—दाने । परस्मैपदी, अनिट् ।

1. "वाऽन्यस्य संयोगादेः" से एत्व विकल्प से ।

2. "यमरमनमातां सक् च" से सक् और इट् ।

3. णकार इत् है ।

लट्

प्र० पु०	यच्छति[1]	यच्छतः	यच्छन्ति
म० ,,	यच्छसि	यच्छथः	यच्छथ
उ० ,,	यच्छामि	यच्छावः	यच्छामः

लिट्

प्र० पु०	ददौ	ददतुः	ददुः
म० ,,	ददिथ, ददाथ	ददथुः	दद
उ० ,,	ददौ	ददिव	ददिम

लुट्

प्र० पु०	दाता	दातारौ	दातारः
म० ,,	दातासि	दातास्थः	दातास्थ
उ० ,,	दातास्मि	दातास्वः	दातास्मः

लृट्

प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० ,,	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० ,,	दास्यामि	दास्याव	दास्याम

लोट्

प्र० पु०	यच्छतु-तात्	यच्छताम्	यच्छन्तु
म० ,	यच्छ-तात्	यच्छतम्	यच्छत
उ० ,,	यच्छानि	यच्छाव	यच्छाम

लङ्

प्र० पु०	अयच्छत्	अयच्छताम्	अयच्छन्
म० ,,	अयच्छः	अयच्छतम्	अयच्छत

1. "पाघ्रा ध्मा—" से शित् में यच्छ आदेश।

उ० ,,	अयच्छम्	अयच्छाव	अयच्छाम

विधिलिङ

प्र० पु०	यच्छेत्	यच्छेताम्	यच्छेयुः
म० ,,	यच्छेः	यच्छेतम्	यच्छेत
उ० ,,	यच्छेयम्	यच्छेव	यच्छेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	देयात्[1]	देयास्ताम्	देयासुः
म० ,,	देयाः	देयास्तम्	देयास्त
उ० ,,	देयासम्	देयास्व	देयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अदात्[2]	अदाताम्	अदुः
म० ,,	अदाः	अदातम्	अदात
उ० ,,	अदाम्	अदाव	अदाम

लृङ्

प्र० पु०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्
म० ,,	अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत
उ० ,,	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम

७६ ह्वृ—कौटिल्ये। परस्मैपदी अनिट्।

लट्

प्र० पु०	ह्वरति	ह्वरतः	ह्वरन्ति

1. "र्लिङि" से एत्व। "नेर्गदनद—" से णत्व-प्रणियच्छति। क्त—दत्तम्। क्त्वा-दत्वा। तुमुन्-दातुम्। तव्य-दातव्य। अनीय-दानीयम्। अच्-देयः। णिच्-दापयति। सन्-दित्सति। कर्मणि-दीयते।

2. "गातिस्था घुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु" से सिच् का लुक्।

म० ,,	हरसि	हरथः	हरथ
उ० ,,	हरामि	हरावः	हरामः

लिट्

प्र० पु०	जहार[1]	जह्रतुः	जह्रुः
म० ,,	जहर्थ[2]	जह्रथुः	जह्र
उ० ,,	जहार—जहर	जह्रिव[3]	जह्रिम

लुट्

प्र० पु०	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
म० ,,	हर्तासि	हर्तास्थः	हर्तास्थ
उ० ,,	हर्तास्मि	हर्तास्वः	हर्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	हरिष्यति[4]	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
म० ,,	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उ० ,,	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	हरतु—तात्	हरताम्	हरन्तु
म० ,,	हर—तात्	हरतम्	हरत
उ० ,,	हराणि	हराव	हराम

लङ्

प्र० पु०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्

1. "ऋतश्चसंयोगादेर्गुणः" से गुण, उपधावृद्धि ।
2. "ऋतोभारद्वाजस्य" ऋदन्तादेव थलोनेट् ।
3. क्रादिनियम से नित्य इट् हुआ ।
4. "ऋद्धनोः स्ये" से नित्य इट् ।

म० ,,	अह्वरः	अह्वरतम्	अह्वरत
उ० ,,	अह्वरम्	अह्वराव	अह्वराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	ह्वरेत्	ह्वरेताम्	ह्वरेयुः
म० ,,	ह्वरेः	ह्वरेतम्	ह्वरेत
उ० ,,	ह्वरेयम्	ह्वरेव	ह्वरेम

आशीर्लिङ्

प्र. पु.	ह्वर्यात्[1]	ह्वर्यास्ताम्	ह्वर्यासुः
म. ,,	ह्वर्याः	ह्वर्यास्तम्	ह्वर्यास्त
उ. ,,	ह्वर्यासम्	ह्वर्यास्व	ह्वर्यास्म

लुङ्

प्र. पु.	अह्वार्षीत्[2]	अह्वार्ष्टाम्	अह्वार्षुः
म. ,,	अह्वार्षीः	अह्वार्ष्टम्	अह्वार्ष्ट
उ. ,,	अह्वार्षम्	अह्वार्ष्व	अह्वार्ष्म

लृङ्

प्र. पु.	अह्वरिष्यत्	अह्वरिष्यताम्	अह्वरिष्यन्
म. ,,	अह्वरिष्यः	अह्वरिष्यतम्	अह्वरिष्यत
उ. ,,	अह्वरिष्यम्	अह्वरिष्याव	अह्वरिष्याम

८० स्वृ—शब्दोपतापयोः। परस्मैपदी, वेट्।

लट्

प्र पु.	स्वरति	स्वरतः	स्वरन्ति
म. ,,	स्वरसि	स्वरथः	स्वरथ

1. "गुणोऽर्ति संयोगाद्योः" से गुण।
2. "सिचिवृद्धिः परस्मैपदेषु" से वृद्धि।

उ. ,,	स्वरामि	स्वराव:	स्वराम:

लिट्

प्र. पु.	सस्वार	सस्वरतु:[1]	सस्वरु:
म. ,,	सस्वरिथ[2]–सस्वर्थ	सस्वरथु:	सस्वर
उ. ,,	सस्वार–सस्वर	सस्वरिव[3]	सस्वरिम

लुट्

प्र. पु.	स्वरिता[4]	स्वरितारौ	स्वरितार:
म. ,,	स्वरितासि	स्वरितास्थ:	स्वरितास्थ
उ. ,,	स्वरितास्मि	स्वरितास्व:	स्वरितास्म:

इट् के अभाव में

प्र. पु.	स्वर्ता	स्वर्तारौ	स्वर्तार:
म. ,,	स्वर्तासि	स्वर्तास्थ:	स्वर्तास्थ
उ. ,,	स्वर्तास्मि	स्वर्तास्व:	स्वर्तास्म:

लृट्

प्र. पु.	स्वरिष्यति[5]	स्वरिष्यत:	स्वरिष्यन्ति
म. ,,	स्वरिष्यसि	स्वरिष्यथ:	स्वरिष्यथ
उ. ,,	स्वरिष्यामि	स्वरिष्याव:	स्वरिष्याम:

लोट्

प्र. पु.	स्वरतु–तात्	स्वरताम्	स्वरन्तु

1. "ऋतश्च संयोगादे गु`ण:" से गुण ।

2. "स्वरतिसूति—" से इट् विकल्प ।

3. ""स्वरति सूति—" के विकल्प को बाधकर "श्र्युक: किति" का निषेध प्राप्त हुआ, क्रादि नियम से नित्य इट् ।

4. "स्वरतिसूति—" से इट् विकल्प ।

5. "स्वरतिसूति—" के विकल्प को बाधकर "ऋद्धनो:स्ये" से नित्य इट ।

म. ,,	स्वर-तात्	स्वरतम्	स्वरत
उ. ,,	स्वराणि	स्वराव	स्वराम

लङ्

प्र पु.	अस्वरत्	अस्वरताम्	अस्वरन्
म. ,,	अस्वरः	अस्वरतम्	अस्वरत
उ. ,,	अस्वरम्	अस्वराव	अस्वराम

विधिलिङ्

प्र. पु.	स्वरेत्	स्वरेताम्	स्वरेयुः
म. ,,	स्वरेः	स्वरेतम्	स्वरेत
उ. ,,	स्वरेयम्	स्वरेव	स्वरेम

आशीर्लिङ्

प्र पु.	स्वर्यात्[1]	स्वर्यास्ताम्	स्वर्यासुः
म. ,,	स्वर्याः	स्वर्यास्तम्	स्वर्यास्त
उ. ,,	स्वर्यासम्	स्वर्यास्व	स्वर्यास्म

लुङ्

प्र. पु.	अस्वारीत्[2]	अस्वारिष्टाम्	अस्वारिषुः
म. ,,	अस्वारीः	अस्वारिष्टम्	अस्वारिष्ट
उ. ,,	अस्वारिषम्	अस्वारिष्व	अस्वारिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अस्वरिष्यत	अस्वरिष्यताम्	अस्वरिष्यन्
म० ,,	अस्वरिष्यः	अस्वरिष्यतम्	अस्वरिष्यत
उ० ,,	अस्वरिष्यम्	अस्वरिष्याव	अस्वरिष्याम

1. "गुणोऽर्ति संयोगाद्योः" से गुण।

2. "स्वरतिसूति–" से इट्, "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु" से वृद्धि-आर्।

८१. स्मृ – चिन्तायाम् । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म० ,,	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ० ,,	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लिट्

प्र० पु०	सस्मार[1]	सस्मरतुः[2]	सस्मरुः
म० ,,	सस्मर्थ[3]	सस्मरथुः	सस्मरथ
म० ,,	सस्मार-सस्मर	सस्मरिव[4]	सस्मरिम

लुट्

प्र० पु०	स्मर्ता	स्मर्तारौ	स्मर्तारः
म० ,,	स्मर्तासि	स्मर्तास्थः	स्मर्तास्थ
उ० ,,	स्मर्तास्मि	स्मर्तास्वः	स्मर्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	स्मरिष्यति[5]	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म० ,,	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ० ,,	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

---

1. "उरत्" से अत्, "अचो ञ्णिति" से वृद्धि ।

2. "ऋतश्च संयोगादे र्गुणः" से गुण, अन्यथा अपित् लिट् के कित् होने से गुण नहीं हो सकता था ।

3. ऋदन्तादेव थलो नेट् ।

4. क्राद्यन्यो लिटि सेड् भवेत् ।

5. "ऋद्धनोःस्ये: से इट् ।"

लोट्

प्र० पु०	स्मरतु-तात्	स्मरताम्	स्मरन्तु
म० ,,	स्मर-तात्	स्मरतम्	स्मरत
उ० ,,	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

लङ्

प्र० पु०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म० ,,	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ० ,,	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

विधिलिङ्

प्र. पु.	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म. ,,	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उ. ,,	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

आशीर्लिङ्

प्र. पु.	स्मर्यात्	स्मर्यास्ताम्	स्मर्यासुः
म. ,,	स्मर्याः	स्मर्यास्तम्	स्मर्यास्त
उ. ,,	स्मर्यासम्	स्मर्यास्व	स्मर्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अस्मार्षीत्[1]	अस्मार्ष्टाम्	अस्मार्षुः
म० ,,	अस्मार्षीः	अस्मार्ष्टम्	अस्मार्ष्ट
उ० ,,	अस्मार्षम्	अस्मार्ष्व	अस्मार्ष्म

---

1. "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ।" क्त—स्मृतः । क्त्वा—स्मृत्वा । तुमुन्—स्मर्तुम् । तव्य—स्मर्तव्यम् । अनीय—स्मरणीयः । णिच्—स्मारयति । कर्मणि—स्मर्यते । यङ्—सास्मर्यते । विस्मरति—भूलना है ।

लृङ्

प्र० पु०	अस्मरिष्यत्	अस्मरिष्यताम्	अस्मरिष्यन्
म० ,,	अस्मरिष्यः	अस्मरिष्यतम्	अस्मरिष्यत
उ० ,,	अस्मरिष्यम्	अस्मरिष्याव	अस्मरिष्याम

८२. ह्वृ—संवरणे। परस्मैपदी. अनिट्।

लट्

प्र० पु०	ह्वरति	ह्वरतः	ह्वरन्ति
म० ,,	ह्वरसि	ह्वरथः	ह्वरथ
उ० ,,	ह्वरामि	ह्वरावः	ह्वरामः

लिङ्

प्र० पु०	जह्वार[1]	जह्वरतुः	जह्वरुः
उ० ,,	जह्वर्थ	जह्वरथुः	जह्वर
उ० पु०	जह्वार	जह्वरिव	जह्वरिम

लुट्

प्र० पु०	ह्वर्ता	ह्वर्तारौ	ह्वर्तारः
म० ,,	ह्वर्तासि	ह्वर्तास्थः	ह्वर्तास्थ
उ० ,,	ह्वर्तास्मि	ह्वर्तास्वः	ह्वर्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	ह्वरिष्यति	ह्वरिष्यतः	ह्वरिष्यन्ति
म० ,,	ह्वरिष्यसि	ह्वरिष्यथः	ह्वरिष्यथ
उ० ,,	ह्वरिष्यामि	ह्वरिष्यावः	ह्वरिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	ह्वरतु—तात्	ह्वरताम्	ह्वरन्तु

1. "उरत्"। "कुहोश्चुः।"

म० ,,	ह्वर—तात्	ह्वरतम्	ह्वरत
उ० ,,	ह्वराणि	ह्वराव	ह्वराम

लङ्

प्र० पु०	अह्वरत	अह्वरताम्	अह्वरन्
म० ,,	अह्वरः	अह्वरतम्	अह्वरत
उ० ,,	अह्वरम्	अह्वराव	अह्वराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	ह्वरेत	ह्वरेताम्	ह्वरेयुः
म० ,,	ह्वरेः	ह्वरेतम्	ह्वरेत
उ० ,,	ह्वरेयम्	ह्वरेव	ह्वरेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ह्वर्यात्[1]	ह्वर्यास्ताम्	ह्वर्यासुः
म० ,,	ह्वर्याः	ह्वर्यास्तम्	ह्वर्यास्त
उ० ,,	ह्वर्यासम्	ह्वर्यास्व	ह्वर्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अह्वार्षीत्	अह्वार्ष्टाम्	अह्वार्षुः
म० ,,	अह्वार्षीः	अह्वार्ष्टम्	अह्वार्ष्ट
उ० ,,	अह्वार्षम्	अह्वार्ष्व	अह्वार्ष्म

लृङ्

प्र० पु०	अह्वरिष्यत	अह्वरिष्यताम्	अह्वरिष्यन्
म० ,,	अह्वरिष्यः	अह्वरिष्यतम्	अह्वरिष्यत
उ० ,,	अह्वरिष्यम्	अह्वरिष्याव	अह्वरिष्याम

1. "गुणोऽर्ति संयोगाद्योः" से गुण ।
2. "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु, से वृद्धि ।"

८३. सृ—गतौ। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	सरति	सरतः	सरन्ति
म० ,,	सरसि	सरथः	सरथ
उ० ,,	सरामि	सरावः	सरामः

लिट्

प्र० पु०	ससार	सस्रतुः[1]	सस्रुः
म० ,,	ससर्थ[2]	सस्रथुः	सस्र
उ० ,,	ससार-ससर	ससृव	ससृम

लुट्

प्र० पु०	सर्ता	सर्तारौ	सर्तारः
म० ,,	सर्तासि	सर्तास्थः	सर्तास्थ
उ० ,,	सर्तास्मि	सर्तास्वः	सर्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	सरिष्यति[3]	सरिष्यतः	सरिष्यन्ति
म० ,,	सरिष्यसि	सरिष्यथः	सरिष्यथ
उ० ,,	सरिष्यामि	सरिष्यावः	सरिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	सरतु-तात्	सरताम्	सरन्तु
म० ,,	सर-तात्	सरतम्	सरत
उ० ,,	सराणि	सराव	सराम

---

1. असंयोगाल्लिट् कित्" से कित् होने से गुण न हुआ।
2. "कृसृभृवृ" से इट् का निषेध।
3. ऋद्धनोः स्ये"।

लङ्

प्र० पु०	असरत्	असरताम्	असरन्
म० ,,	असरः	असरतम्	असरत
उ० ,,	असरम्	असराव	असराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	सरेत्	सरेताम्	सरेयुः
म० ,,	सरेः	सरेतम्	सरेत
उ० ,,	सरेयम्	सरेव	सरेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	स्रियात्[1]	स्रियास्ताम्	स्रियासुः
म० ,,	स्रियाः	स्रियास्तम्	स्रियास्त
उ० ,,	स्रियासम्	स्रियास्व	स्रियास्म

लुङ्

प्र० पु०	असार्षीत्	असार्ष्टाम्	असार्षुः
म० ,,	असार्षीः	असार्ष्टम्	असार्ष्ट
उ० ,,	असार्षम्	असार्ष्व	असार्ष्म

लृङ्

प्र० पु०	असरिष्यत्	असरिष्यताम्	असरिष्यन्
म० ,,	असरिष्यः	असरिष्यतम्	असरिष्यत
उ० ,,	असरिष्यम्	असरिष्याव	असरिष्याम

1. "रिङ् शयग् लिङ्क्षु" से रिङ्। रिङ् विधान सामर्थ्य से "अकृत्सार्वधातुकयोः" से दीर्घ न हुआ।

2. "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु"।

८४. सृ—शीघ्रगतौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्—धावति[1] । लोट्—धावतु । लङ्—अधावत् । विधिलिङ्—धावेत् । शेष आर्धधातुक लकारों में 'सृ' गतौ के तुल्य रूप होंगे ।

८५. गृ—सेचने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—गरति । जगार । गर्ता । गरिष्यति । गरतु । अगरत् । गरेत् । ग्रियात् । अगार्षीत् । अगरिष्यत् ।

८६ घृ—सेचने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—घरति । जघार । घर्ता । घरिष्यति । घरतु । अघरत् । घरेत् । घ्रियात् । अघार्षीत् । अघरिष्यत् ।

८७. ध्वृ—हूर्च्छने (कुटिली भावे) । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	ध्वरति	ध्वरतः	ध्वरन्ति
म० ,,	ध्वरसि	ध्वरथः	ध्वरथ
उ० ,,	ध्वरामि	ध्वरावः	ध्वरामः

लिट्

प्र० पु०	दध्वार	दध्वरतुः	दध्वरुः
म० ,,	दध्वर्थ[2]	दध्वरथुः[3]	दध्वर

---

1. "पाघ्राध्मास्था"—से धाव् आदेश । अपसरति—हटता है । उपसरति-पास जाता है । संसरति—फैलता है । अनुसरति पीछे चलता है । निःसरति—निकलता है । क्त—सृतः । क्त्वा—सृत्वा । तुमुन्—सर्तुम् । तव्य—सर्तव्यम् । अनीय—सरणीयम् । णिच्—सारयति । यङ्—सेस्रीयते । यङ् लुक्—सरीसर्ति । कर्मणि—स्रियते । एवं अन्य ऋकारान्तों में रूपरचना कर लेनी चाहिये ।

2. "ऋतो भारद्वाजस्य" ।

3. संयोग से परे अपित् लिट् कित् नहीं होता, अतः गुण हो गया ।

उ० ,,	दध्वार-दध्वर	दध्वरिव	दध्वरिम

लुट्

प्र० पु०	ध्वर्ता	ध्वर्तारौ	ध्वर्तारः
म० ,,	ध्वर्तासि	ध्वर्तास्थः	ध्वर्तास्थ
उ० ,,	ध्वर्तास्मि	ध्वर्तास्वः	ध्वर्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	ध्वरिष्यति	ध्वरिष्यतः	ध्वरिष्यन्ति
म० ,,	ध्वरिष्यसि	ध्वरिष्यथः	ध्वरिष्यथ
उ० ,,	ध्वरिष्यामि	ध्वरिष्यावः	ध्वरियामः

लोट्

प्र० पु०	ध्वरतु-तात्	ध्वरताम्	ध्वरन्तु
म० ,,	ध्वर-तात्	ध्वरतम्	ध्वरत
उ० ,,	ध्वराणि	ध्वराव	ध्वराम

लङ्

प्र० पु०	अध्वरत्	अध्वरताम्	अध्वरन्
म० ,,	अध्वरः	अध्वरतम्	अध्वरत
उ० ,,	अध्वरम्	अध्वराव	अध्वराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	ध्वरेत्	ध्वरेताम्	ध्वरेयुः
म० ,,	ध्वरेः	ध्वरेतम्	ध्वरेत
उ० ,,	ध्वरेयम्	ध्वरेव	ध्वरेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ध्वर्यात्[1]	ध्वर्यास्ताम्	ध्वर्यासुः
म० ,,	ध्वर्याः	ध्वर्यास्तम्	ध्वर्यास्त

1. "गुणोर्ति संयोगाद्योः" से गुण।

उ० ,,	ध्वर्यासम्	ध्वर्यास्व	ध्वर्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अध्वार्षीत्	अध्वार्ष्टाम्	अध्वार्षुः
म० ,,	अध्वार्षीः	अध्वार्ष्टम्	अध्वार्ष्ट
उ० ,,	अध्वार्षम्	अध्वार्ष्व	अध्वार्ष्म

लृङ्

प्र० पु०	अध्वरिष्यत्	अध्वरिष्यताम्	अध्वरिष्यन्
म० ,,	अध्वरिष्यः	अध्वरिष्यतम्	अध्वरिष्यत
उ० ,,	अध्वरिष्यम्	अध्वरिष्याव	अध्वरिष्याम

८७. दृशिर्[1]—प्रेक्षणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	पश्यति[2]	पश्यतः	पश्यन्ति
म० ,,	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० ,,	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लिट्

प्र० पु०	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
म० ,,	दद्रष्ठ-ददर्शिथ[3]	ददृशथुः	ददृश
उ० ,,	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम

लुट्

प्र० पु०	द्रष्टा[4]	द्रष्टारौ	द्रष्टारः

1. इर इत्संज्ञा वाच्या ।

2. सार्वधातुकों में दृश् को पश्य आदेश होगा ।

3. "विभाषा सृजिदृशोः" से इट् का विकल्प । इट् के अभाव में "सृजिदृशोर्झल्यमकिति" से अम् (अ) आगम ।

4. अम् आगम । "व्रश्च—" से ष्, "षढोः कः सि" से क्, "आदेशप्रत्यययोः" । यही क्रम लृट् में भी होगा ।

म० ,,	द्रष्टासि	द्रष्टास्थः	द्रष्टास्थ
उ० ,,	द्रष्टास्मि	द्रष्टास्वः	द्रष्टास्मः

लृट्

प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म० ,,	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ० ,,	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट्

प्र० पु०	पश्य-तात्	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० ,,	पश्य-तात्	पश्यतम्	पश्यत
उ० ,,	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्

प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० ,,	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० ,,	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म० ,,	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ० ,,	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	दृश्यात्[1]	दृश्यास्ताम्	दृश्यासुः
म० ,,	दृश्याः	दृश्यास्तम्	दृश्यास्त
उ० ,,	दृश्यासम्	दृश्यास्व	दृश्यास्म

1. यहां आर्धधातुक तो है, झलादि अकित् नहीं (किदादिरिति) अतः अम् आगम न हुआ ।

लुङ्—अङ् पक्ष में

प्र० पु०	अदर्शत्[1]	अदर्शताम्	अदर्शन्
म० ,,	अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत
उ० ,,	अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम

अङ् के अभाव में

प्र० पु०	अद्राक्षीत्[2]	अद्राष्टाम्[3]	अद्राक्षुः
म० ,,	अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
उ० ,,	अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म

लृङ्

प्र० पु०	अद्रक्ष्यत्	अद्रक्ष्यताम्	अद्रक्ष्यन्
म० ,,	अद्रक्ष्यः	अद्रक्ष्यतम्	अद्रक्ष्यत
उ० ,,	अद्रक्ष्यम्	अद्रक्ष्याव	अद्रक्ष्याम

८८. श्रु—श्रवणे। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	शृणोति[4]	शृणुतः[5]	शृण्वन्ति[6]

1. "इरितो वा" से च्लि को अङ्, "ऋदृशोऽङि गुणः" से गुण।

2. अदृश्+स् ई त, ऋकार से परे अम् (मिदचोऽन्त्यात्परः), हलन्तलक्षणावृद्धि, व्रश्चेति षः, कत्व, "आदेशप्रत्यययोः" से स को ष।

3. "झलो झलि" से सिच् के सकार का लोप। क्त—दृष्टः। क्त्वा—दृष्ट्वा। तुमुन्—द्रष्टुम्। तव्य—द्रष्टव्यः। अनीय—दर्शनीयः। णिच्—दर्शयति। यङ्—दरीदृश्यते। कर्म—दृश्यते। सन्—दिदृक्षते ("ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः" से आत्मनेपद) सन्नन्त से उ—दिदृक्षुः।

4. "श्रुवः शृ च" से श्रु को शृ आदेश। श्नु प्रत्यय अपित् सार्वधातुक होने से ङित् है, अतः इसके परे होते हुए धातु को गुण नहीं होता। पित् सार्वधातुकों में नु को गुण हो जायगा।

5. तस् आदि अपित् सार्वधातुक परे होते नु को गुण नहीं हुआ।

6. "अचिश्नु—" के उवङ् को बाधकर "हुश्नुवोः सार्वधातुके" से यण्।

म० ,,	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ० ,,	शृणोमि	शृणुवः—शृण्वः[1]	शृणुमः—शृण्मः

लिट्

प्र० पु०	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
म० ,,	शुश्रोथ[2]	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
उ० ,,	शुश्राव—शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम

लुट्

प्र० पु०	श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः
म० ,,	श्रोतासि	श्रोतास्थः	श्रोतास्थ
उ० ,,	श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोतास्मः

लृट्

प्र० म०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म० ,,	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० ,,	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

लोट्

प्र० पु०	शृणोतु—शृणुतात्	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० ,,	शृणु—तात्[3]	शृणुतम्	शृणुत
उ० ,,	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

लङ्

प्र० पु०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म० ,,	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ० ,,	अशृणवम्	अशृणुव—ण्व	अशृणुम—ण्म

1. "लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः" से उकार का विकल्प से लोप ।
2. "कृसृभृवृ—" से इट् का निषेध ।
3. 'उतश्च प्रत्ययादसंयोग पूर्वात्" से हि का पाक्षिक लोप ।

विधिलिङ्

प्र० पु०	शृणुयात्[1]	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म० ,,	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उ० ,,	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	श्रूयात्[2]	श्रूयास्ताम्	श्रूयासुः
म० ,,	श्रूयाः	श्रूयास्तम्	श्रूयास्त
उ० ,,	श्रूयासम्	श्रूयास्व	श्रूयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अश्रौषीत्[3]	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः
म० ,,	अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट
उ० ,,	अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म

लृङ्

प्र० पु०	अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्
म० ,,	अश्रोष्यः	अश्रोष्यतम्	अश्रोष्यत
उ० ,,	अश्रोष्यम्	अश्रोष्याव	अश्रोष्याम

1. यासुट् के ङित् होने से गुणाभाव ।

2. "अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः" से दीर्घ ।

3. "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु" से वृद्धि । क्त—श्रुतम् । क्त्वा—श्रुत्वा । तुमुन्—श्रोतुम् । तव्य—श्रोतव्य । अनीय—श्रवणीय । शतृ—शृण्वन् । णिच्—श्रावयति । सन्—शुश्रूषते (आत्मनेपद) । यङ्—शोश्रूयते । यङन्त से—शानच्—शोश्रूयमाणः । कर्म में—श्रूयते । प्रतिशृणोति—प्रतिज्ञा करता है । सन्नन्त से उ—शुश्रूषुः ।

८९. गम्लृ—गतौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म० ,,	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ० ,,	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लिट्

प्र० ,,	जगाम	जग्मतुः[1]	जग्मुः
म० ,,	जगमिथ-जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
उ० ,,	जगाम-जगम	जग्मिव[2]	जग्मिम

लुट्

प्र० पु०	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
म० ,,	गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ
उ० ,,	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	गमिष्यति[3]	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म० ,,	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ० ,,	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	गच्छतु-तात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० ,,	गच्छ-तात्	गच्छतम्	गच्छत
उ० ,,	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

1. अपित् लिट् के कित् होने से "गमहनजन—" से उपधालोप ।
2. क्रादि नियम से इट् ।
3. "गमे रिट् परस्मैपदेषु से इट् ।"

लङ्

प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० ,,	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० ,,	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म० ,,	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० ,,	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः
म० ,,	गम्याः	गम्यास्तम्	गम्यास्त
उ० ,,	गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अगमत्[1]	अगमताम्	अगमन्
म० ,,	अगमः	अगमतम्	अगमत
उ० ,,	अगमम्	अगमाव	अगमाम

---

1. "पुषादिद्युतादि—" से च्लि को अङ् । 'अनङि' पर्युदास से "गमहनजन—" का उपधालोप न हुआ । सङ्गच्छते—संगत होता है ('समो गम्यृच्छिभ्याम्' से आत्मनेपद) । उपगच्छति–पास जाता है । अनुगच्छति—पीछे जाता है । प्रतिगच्छति—लौटता है । आगच्छति—आता है । अभिगच्छति—जानता है । क्त–गतः । क्त्वा-गत्वा । तुमुन्–गन्तुम् । तव्य–गन्तव्यम् । अनीय—गमनीयम् । शतृ—गच्छन् । शानच्—संगच्छमानः । णिनि–गमयति । सन्—जिगमिषति । यङ्—जङ्गम्यते । यङ्लुक्—जङ्गमीति । कर्म से—गम्यते । सन्नन्त से उ—जिगमिषुः । सन्नन्त से अ—जिगमिषा ।

लृङ्

प्र० पु०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्
म० ,,	अगमिष्यः	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत
उ० ,,	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम

९०. सृप्लृ—गतौ। परस्मैपदी, अनिट्।

प्र० पु०	सर्पति	सर्पतः	सर्पन्ति
म० ,,	सर्पसि	सर्पथः	सर्पथ
उ० ,,	सर्पामि	सर्पावः	सर्पामः

लिट्

प्र० पु०	ससर्प	ससृपतुः	ससृपुः
म० ,,	ससर्पिथ	ससृपथुः	ससृप
उ० ,,	ससर्प	ससृपिव	ससृपिम

लुट्—अम् आगम

प्र० पु०	स्रप्ता[1]	स्रप्तारौ	स्रप्तारः
म० ,,	स्रप्तासि	स्रप्तास्थः	स्रप्तास्थ
उ० ,,	स्रप्तास्मि	स्रप्तास्वः	स्रप्तास्मः

अम् के अभाव में

प्र० पु०	सर्प्ता	सर्प्तारौ	सर्प्तारः
म० ,,	सर्प्तासि	सर्प्तास्थः	सर्प्तास्थ
उ० ,,	सर्प्तास्मि	सर्प्तास्वः	सर्प्तास्म

लृट्

प्र० पु०	स्रप्स्यति-सर्प्स्यति	स्रप्स्यतः, सर्प्स्यतः	स्रप्स्यन्ति, सर्प्स्यन्ति
म० ,,	स्रप्स्यसि, सर्प्स्यसि	स्रप्स्यथः, सर्प्स्यथः	स्रप्स्यथ, सर्प्स्यथ

1. "अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् ।" अम् आगम के अभाव में सर्वत्र उपधागुण होता जायगा ।

उ० ,,	स्रप्स्यामि, सर्प्स्यामि	स्रप्स्यावः, सर्प्स्यावः	स्रप्स्यामः, सर्प्स्यामः

लोट्

प्र० पु०	सर्पतु-तात्	सर्पताम्	सर्पन्तु
म० ,,	सर्प-तात्	सर्पतम्	सर्पत
उ० ,,	सर्पाणि	सर्पाव	सर्पाम

लङ्

प्र० पु०	असर्पत्	असर्पताम्	असर्पन्
म० ,,	असर्पः	असर्पतम्	असर्पत
उ० ,,	असर्पम्	असर्पाव	असर्पाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	सर्पेत्	सर्पेताम्	सर्पेयुः
म० ,,	सर्पेः	सर्पेतम्	सर्पेत
उ० ,,	सर्पेयम्	सर्पेव	सर्पेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	सृप्यात्[1]	सृप्यास्ताम्	सृप्यासुः
म० ,,	सृप्याः	सृप्यास्तम्	सृप्यास्त
उ० ,,	सृप्यासम्	सृप्यास्व	सृप्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	असृपत्	असृपताम्	असृपन्
म० ,,	असृपः	असृपतम्	असृपत
उ० ,,	असृपम्	असृपाव	असृपाम

लृङ्, अम् आगम

प्र० पु०	अस्रप्स्यत्	अस्रप्स्यताम्	अस्रप्स्यन्
म० ,,	अस्रप्स्यः	अस्रप्स्यतम्	अस्रप्स्यत

1. यासुट् कित् है, अतः उपधागुण नहीं ।

उ० ,,	अस्वप्स्यम्	अस्वप्स्याव	अस्वप्स्याम

६१. ञिक्ष्विदा[1]—अव्यक्ते शब्दे। परस्मैपदी, सेट्।

लट्

प्र० पु०	क्ष्वेदति	क्ष्वेदतः	क्ष्वेदन्ति
म० ,,	क्ष्वेदसि	क्ष्वेदथः	क्ष्वेदथ
उ० ,,	क्ष्वेदामि	क्ष्वेदावः	क्ष्वेदामः

लिट्

प्र० पु०	चिक्ष्वेद	चिक्ष्विदतुः	चिक्ष्विदुः
म० ,,	चिक्ष्वेदिथ	चिक्ष्विदथुः	चिक्ष्विद
उ० ,,	चिक्ष्वेद	चिक्ष्विदिव	चिक्ष्विदिम

लुट्

प्र० पु०	क्ष्वेदिता	क्ष्वेदितारौ	क्ष्वेदितारः
म० ,,	क्ष्वेदितासि	क्ष्वेदितास्थः	क्ष्वेदितास्थ
उ० ,,	क्ष्वेदितास्मि	क्ष्वेदितास्वः	क्ष्वेदितास्मः

लृट्

प्र० पु०	क्ष्वेदिष्यति	क्ष्वेदिष्यतः	क्ष्वेदिष्यन्ति
म० ,,	क्ष्वेदिष्यसि	क्ष्वेदिष्यथः	क्ष्वेदिष्यथ
उ० ,,	क्ष्वेदिष्यामि	क्ष्वेदिष्यावः	क्ष्वेदिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	क्ष्वेदतु-तात्	क्ष्वेदताम्	क्ष्वेदन्तु

1. ञि इत् "ञीतः क्तः" से वर्तमान में क्त करने के लिये है और 'आ' अनुबन्ध "आदितश्च" से निष्ठा में इट् निषेध के लिये है। क्त—क्ष्विण्णः। क्त्वा—क्ष्वेदित्वा। क्तवतु—क्ष्विण्णवान्। तुमुन्—क्ष्वेदितुम्। शतृ—क्ष्वेदन्। णिच्—क्ष्वेदयति। सन्—चिक्ष्वेदिषति। यङ्—चेक्ष्विद्यते। कर्मवाच्य—क्ष्विद्यते।

म० ,,	क्ष्वेद-तात्	क्ष्वेदतम्	क्ष्वेदत
उ० ,,	क्ष्वेदानि	क्ष्वेदाव	क्ष्वेदाम
		लङ्	
प्र० पु०	अक्ष्वेदत्	अक्ष्वेदताम्	अक्ष्वेदन्
म० ,,	अक्ष्वेदः	अक्ष्वेदतम्	अक्ष्वेदत
उ० ,,	अक्ष्वेदम्	अक्ष्वेदाव	अक्ष्वेदाम
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	क्ष्वेदेत्	क्ष्वेदेताम्	क्ष्वेदेयुः
म० ,,	क्ष्वेदेः	क्ष्वेदेतम्	क्ष्वेदेत
उ० ,,	क्ष्वेदेयम्	क्ष्वेदेव	क्ष्वेदेम
		आशीर्लिङ्	
प्र० पु०	क्ष्विद्यात्	क्ष्विद्यास्ताम्	क्ष्विद्यासुः
म० ,,	क्ष्विद्याः	क्ष्विद्यास्तम्	क्ष्विद्यास्त
उ० ,,	क्ष्विद्यासम्	क्ष्विद्यास्व	क्ष्विद्यास्म
		लुङ्	
प्र० पु०	अक्ष्वेदीत्[1]	अक्ष्वेदिष्टाम्	अक्ष्वेदिषुः
म० ,,	अक्ष्वेदीः	अक्ष्वेदिष्टम्	अक्ष्वेदिष्ट
उ० ,,	अक्ष्वेदिषम्	अक्ष्वेदिष्व	अक्ष्वेदिष्म
		लृङ्	
प्र० पु०	अक्ष्वेदिष्यत्	अक्ष्वेदिष्यताम्	अक्ष्वेदिष्यन्
म० ,,	अक्ष्वेदिष्यः	अक्ष्वेदिष्यतम्	अक्ष्वेदिष्यत
उ० ,,	अक्ष्वेदिष्यम्	अक्ष्वेदिष्याव	अक्ष्वेदिष्याम

९२. यभ—मैथुने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु:—यभति। ययाभ, येभतुः। यब्धा[2]। यप्स्यति[3]। यभतु।

1. 'ञिक्ष्विदा स्नेहनमोचनयोः' को अङ् होता है, इसे नहीं।
2. "झषस्तथोर्धोऽधः, से ध आदेश।
3. 'खरिच'से भ को प।

अयभत् । यमेत् । यम्यात् । अयांसीत्[1], अयाम्धाम् । अयंस्यत् ।

९३. णम्—प्रह्वत्वे, शब्दे च । पर० अनिट् ।

दशलकारेषु—नमति । ननाम, नेमतुः । नन्ता । नंस्यति । नमतु । अनमत् । नमेत् । नम्यात् । अनंसीत्[2] । अनंस्यत् ।

९४. त्यज्—हानौ । पर० अनिट् ।

दशलकारेषु—त्यजति । तत्याज, तत्यजतुः । त्यक्ता[3] । त्यक्ष्यति । अत्यजत् । त्यजेत् । त्यज्यात् । अत्याक्षीत्, अत्याक्ताम् । अत्यक्ष्यत्[4] ।

९५. अक्षू[5]—व्याप्तौ । परस्मैपदी, वेट् ।

लट्—(श्नु)

प्र० पु०	अक्ष्णोति[6]	अक्ष्णुतः	अक्ष्णुवन्ति
म० ,,	अक्ष्णोषि	अक्ष्णुथः	अक्ष्णुथ
उ० ,,	अक्ष्णोमि	अक्ष्णुवः	अक्ष्णुमः

1. "हलन्तलक्षण वृद्धि । झलो झलि" ।

2. "यमरमनमातां सक्च से सक् ।" क्त—नतः । क्त्वा—नत्वा । तुमुन्—नन्तुम् । शतृ—नमन् । तव्य—नन्तव्यः । अनीय—नमनीयः । णिच्—नामयति । सन्—निनंसति । यङ्—नंनम्यते । कर्मवाच्य नम्यते । "उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य" से णत्व—प्रणमति ।

3. चोः कुः । चर्त्व ।

4. हलन्त लक्षण वृद्धि, सिच् लोप, कुत्व, चर्त्व । क्त—त्यक्तः । क्त्वा—त्यक्त्वा । तुमुन्—त्यक्तुम् । तव्य—त्यक्तव्यः । अनीय—त्यजनीय । शतृ—त्यजन् । णिच्—त्याजयति । सन्—तित्यक्षति । यङ्—तात्यज्यते । कर्मवाच्य—त्यज्यते ।

5. ऊकार इत् "स्वरतिसूति" के इट् विकल्प के लिये है ।

6. "अक्षोऽन्यतरस्याम्" से सार्वधातुक में श्नु का विकल्प ।

(शप्)

प्र० पु०	अक्षति	अक्षतः	अक्षन्ति
म० ,,	अक्षसि	अक्षथः	अक्षथ
उ० ,,	अक्षामि	अक्षावः	अक्षामः

लिट्

प्र० पु०	आनक्ष[1]	आनक्षतुः	आनक्षुः
म० ,,	आनक्षिथ-आनष्ठ[2]	आनक्षथुः	आनक्ष
उ० ,,	आनक्ष	आनक्षिव[3]	आनक्षिम

लुट्—(इट् पक्ष में)

प्र० पु०	अक्षिता	अक्षितारौ	अक्षितारः
म० ,,	अक्षितासि	अक्षितास्थः	अक्षितास्थ
उ० ,,	अक्षितास्मि	अक्षितास्वः	अक्षितास्मः

(इट् अभाव में)

प्र० पु०	अष्टा[4]	अष्टारौ	अष्टारः
म० ,,	अष्टासि	अष्टास्थः	अष्टास्थ
उ० ,,	अष्टास्मि	अष्टास्वः	अष्टास्मः

लृट् (इट् पक्ष में)

प्र० पु०	अक्षिष्यति	अक्षिष्यतः	अक्षिष्यन्ति
म० ,,	अक्षिष्यसि	अक्षिष्यथः	अक्षिष्यथ
उ० ,,	अक्षिष्यामि	अक्षिष्यावः	अक्षिष्यामः

1. "अत आदेः" से दीर्घ। तस्मान्नुड् द्विहलः" से नुट्।

2. "स्कोः संयोगाद्योरन्ते च" से कलोप, ष्टुत्व। इसी तरह लुट् लृट् में भी इट् के अभाव में जानो।

3. क्रादिनियम से नित्य इट्।

4. "स्वरति···" से इट् का विकल्प।

(इट् अभाव में)

प्र० पु०	अक्ष्यति	अक्ष्यतः	अक्ष्यन्ति
म० ,,	अक्ष्यसि	अक्ष्यथः	अक्ष्यथ
उ० ,,	अक्ष्यामि	अक्ष्यावः	अक्ष्यामः

लोट् (श्नु)

प्र० पु०	अक्ष्णोतु-अक्ष्णुतात्	अक्ष्णुताम्	अक्ष्णुवन्तु
म० ,,	अक्ष्णुहि[1]-तात्	अक्ष्णुतम्	अक्ष्णुत
उ० ,,	अक्ष्णवानि	अक्ष्णवाव[2]	अक्ष्णवाम

(शप्)

प्र० पु०	अक्षतु-तात्	अक्षताम्	अक्षन्तु
म० ,,	अक्ष-तात्	अक्षतम्	अक्षत
उ० ,,	अक्षाणि	अक्षाव	अक्षाम

लङ् (श्नु)

प्र० पु०	आक्ष्णोत्	आक्ष्णुताम्	अक्ष्णुवन्
म० ,,	आक्ष्णोः	आक्ष्णुतम्	आक्ष्णुत
उ० ,,	आक्ष्णवम्	आक्ष्णुव	आक्ष्णुम

(शप्)

प्र० पु०	आक्षत्	आक्षताम्	आक्षन्
म० ,,	आक्षः	आक्षतम्	आक्षत
उ० ,,	आक्षम्	आक्षाव	आक्षाम

विधिलिङ् (श्नु)

प्र० पु०	अक्ष्णुयात्[3]	अक्ष्णुयाताम्	अक्ष्णुयुः

---

1. हि और तातङ् ङित् होते हैं, अतः इनके परे रहते गुण नहीं होता।

2. आट् के निमित्त से गुण है।

3. यासुट् के ङित् होने से गुण नहीं।

म० ,,	अक्ष्णुयाः	अक्ष्णुयातम्	अक्ष्णुयात
उ० ,,	अक्ष्णुयाम्	अक्ष्णुयाव	अक्ष्णुयाम

(शप्)

प्र० पु०	अक्षेत्	अक्षेताम्	अक्षेयुः
म० ,,	अक्षेः	अक्षेतम्	अक्षेत
उ० ,,	अक्षेयम्	अक्षेव	अक्षेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अक्ष्यात्	अक्ष्यास्ताम्	अक्ष्यासुः
म० ,,	अक्ष्याः	अक्ष्यास्तम्	अक्ष्यास्त
उ० ,,	अक्ष्यासम्	अक्ष्यास्व	अक्ष्यास्म

लुङ् (इट् पक्ष में)

प्र० पु०	आक्षीत्[1]	आक्षिष्टाम्	आक्षिषुः
म० ,,	आक्षीः	आक्षिष्टम्	आक्षिष्ट
उ० ,,	आक्षिषम्	आक्षिष्व	आक्षिष्म

(इट् अभाव में)

प्र० पु०	आक्षीत्[2]	आष्टाम्	आक्षुः
म० ,,	आक्षीः	आष्टम्	आष्ट
उ० ,,	आक्षम्	आक्ष्व	आक्ष्म

लृङ् (इट्)

प्र० पु०	आक्षिष्यत्	आक्षिष्यताम्	आक्षिष्यन्

1- यहां "आटश्च" की वृद्धि समझें। हलन्त लक्षण वृद्धि का तो "नेटि" से निषेध हो जायगा। इसी लिये माङ्योग में 'मा भवान् अक्षीत्' रूप होगा।

2. इट् के अभाव में जहां माङ्योग में आट् न होगा वहां हलन्त लक्षण वृद्धि से 'मा भवान् आक्षीत् ही रूप होगा।

म० ,,	आक्षिष्यः	आक्षिष्यतम्	आक्षिष्यत
उ० ,,	आक्षिष्यम्	आक्षिष्याव	आक्षिष्याम

(इट् अभाव में)

प्र० पु०	आक्ष्यत्	आक्ष्यताम्	आक्ष्यन्
म० ,,	आक्ष्यः	आक्ष्यतम्	आक्ष्यत
उ० ,,	आक्ष्यम्	आक्ष्याव	अक्ष्याम

६६. तक्ष्—तनूकरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

लट् (श्नु)

प्र० पु०	तक्ष्णोति[1]	तक्ष्णुतः	तक्ष्णुवन्ति
म० ,,	तक्ष्णोषि	तक्ष्णुथः	तक्ष्णुथ
उ० ,,	तक्ष्णोमि	तक्ष्णुवः	तक्ष्णुमः

(शप्)

प्र० पु०	तक्षति	तक्षतः	तक्षन्ति
म० ,,	तक्षसि	तक्षथः	तक्षथ
उ० ,,	तक्षामि	तक्षावः	तक्षामः

लिट्

प्र० पु०	ततक्ष	ततक्षतुः	ततक्षुः
म० ,,	ततक्षिथ-ततष्ठ	ततक्षथुः	ततक्ष
उ० ,,	ततक्ष	ततक्षिव	ततक्षिम

लुट् (इट्)

प्र० पु०	तक्षिता	तक्षितारौ	तक्षितारः

1. जहां ठीक ही किसी वस्तु को छील छाल कर पतला करना हो वहीं श्नु प्रत्यय होगा । अन्यथा 'वाग्भिः सन्तक्षति' (वाणी से छीलता है—अर्थात् झिड़कता है) यहां श्नु न होगा ।

म० ,,	तक्षितासि	तक्षितास्थः	तक्षितास्थ
उ० ,,	तक्षितास्मि	तक्षितास्वः	तक्षितास्मः
		(इट् अभाव में)	
प्र० पु०	तष्टा	तष्टारौ	तष्टारः
म० ,,	तष्टासि	तष्टास्थः	तष्टास्थ
उ० ,,	तष्टास्मि	तष्टास्वः	तष्टास्मः
		लृट् (इट्)	
प्र० पु०	तक्षिष्यति	तक्षिष्यतः	तक्षिष्यन्ति
म० ,,	तक्षिष्यसि	तक्षिष्यथः	तक्षिष्यथ
उ० ,,	तक्षिष्यामि	तक्षिष्यावः	तक्षिष्यामः
		(इट् अभाव में)	
प्र० पु०	तक्ष्यति	तक्ष्यतः	तक्ष्यन्ति
म० ,,	तक्ष्यसि	तक्ष्यथः	तक्ष्यथ
उ० ,,	तक्ष्यामि	तक्ष्यावः	तक्ष्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	तक्ष्णोतु-तक्ष्णुतात्	तक्ष्णुताम्	तक्ष्णुवन्तु[1]
म० ,,	तक्ष्णुहि[2]-तात्	तक्ष्णुतम्	तक्ष्णुत
उ० ,,	तक्ष्णवानि	तक्ष्णवाव	तक्ष्णवाम
		(शप्)	
प्र० पु०	तक्षतु-तात्	तक्षताम्	तक्षन्तु
म० ,,	तक्ष-तात्	तक्षतम्	तक्षत
उ० ,,	तक्षाणि	तक्षाव	तक्षाम

1. श्नु प्रत्ययान्त संयोगपूर्व है, अतः "हुश्नुवोः—" का यण् न हो कर "अचि श्नु—" से उवङ् हुआ।

2. यहां प्रत्यय का उकार संयोगपूर्व है, अतः हि का लुक् नहीं होगा।

लङ् (श्नु)

प्र० पु०	अतक्ष्णोत्	अतक्ष्णुताम्	अतक्ष्णुवन्
म० ,,	अतक्ष्णोः	अतक्ष्णुतम्	अतक्ष्णुत
उ० ,,	अतक्ष्णवम्	अतक्ष्णुव[1]	अतक्ष्णुम

(शप्)

प्र० पु०	अतक्षत्	अतक्षताम्	अतक्षन्
म० ,,	अतक्षः	अतक्षतम्	अतक्षत
उ० ,,	अतक्षम्	अतक्षाव	अतक्षाम

विधिलिङ् (श्नु)

प्र० पु०	तक्ष्णुयात्	तक्ष्णुयाताम्	तक्ष्णुयुः
म० ,,	तक्ष्णुयाः	तक्ष्णुयातम्	तक्ष्णुयात
उ० ,,	तक्ष्णुयाम्	तक्ष्णुयाव	तक्ष्णुयाम

(शप्)

प्र० पु०	तक्षेत्	तक्षेताम्	तक्षेयुः
म० ,,	तक्षेः	तक्षेतम्	तक्षेत
उ० ,,	तक्षेयम्	तक्षेव	तक्षेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	तक्ष्यात्	तक्ष्यास्ताम्	तक्ष्यासुः
म० ,,	तक्ष्याः	अक्ष्यास्तम्	तक्ष्यास्त
उ० ,,	तक्ष्यासम्	तक्ष्यास्व	तक्ष्यास्म

लुङ् (इट्)

प्र० पु०	अतक्षीत्[2]	अतक्षिष्टाम्	अतक्षिषुः

1. प्रत्यय का उकार संयोगपूर्व है, अतः "लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः" से उकारलोप न हुआ। यही बात अक्षू में भी स्मरण करें।

2. मा भवान् तक्षीत्। "नेटि" से वृद्धिनिषेध।

म० ,,	अतक्षीः	अतक्षिष्टम्	अतक्षिष्ट
उ० ,,	अतक्षिषम्	अतक्षिष्व	अतक्षिष्म

(इट् अभाव में)

प्र० पु०	अताक्षीत्[1]	अताष्टाम्	अताक्षुः
म० ,,	अताक्षीः	अताष्टम्	अताष्ट
उ० ,,	अताक्षम्	अताक्ष्व	अताक्ष्म

लृङ् (इट्)

प्र० पु०	अतक्षिष्यत्	अतक्षिष्यताम्	अतक्षिष्यन्
म० ,,	अतक्षिष्यः	अतक्षिष्यतम्	अतक्षिष्यत
उ० ,,	अतक्षिष्यम्	अतक्षिष्याव	अतक्षिष्याम

(इट् अभाव में)

प्र० पु०	अतक्ष्यत्	अतक्ष्यताम्	अतक्ष्यन्
म० ,,	अतक्ष्यः	अतक्ष्यतम्	अतक्ष्यत
उ० ,,	अतक्ष्यम्	अतक्ष्याव	अतक्ष्याम

६७. त्वक्षू[2]—तनूकरणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—त्वक्षति । तत्वक्ष । त्वक्षिता—त्वष्टा । त्वक्षिष्यति—त्वक्ष्यति । त्वक्षतु । अत्वक्षत् । त्वक्षेत् । त्वक्ष्यात् । अत्वक्षीत्—अत्वाक्षीत् । अत्वक्षिष्यत्—अत्वक्ष्यत् ।

६८. रक्ष—पालने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—रक्षति । ररक्ष । रक्षिता । रक्षिष्यति । रक्षतु ।

1. मा भवान् तक्षीत् । हलन्त लक्षणा वृद्धि ।

2. श्नु प्रत्यय के बिना त्वक्ष् के सभी रूप तक्ष् के समान होंगे। श्नु प्रत्यय तक्ष् को है, न कि त्वक्ष् को ।

अरक्षत् । रक्षेत् । रक्ष्यात् । अरक्षीत्[1] । अरक्षिष्यत् ।

९९. णिक्ष्—चुम्बने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—निक्षति । निनिक्ष । निक्षिता । निक्षिष्यति । निक्षतु । अनिक्षत् । निक्षेत् । निक्ष्यात् । अनिक्षीत् । अनिक्षिष्यत् ।

१००. वक्ष—रोषे संघाते वा । परस्मैपदी सेट् ।

दशलकारेषु—वक्षति । ववक्ष । वक्षिता । वक्षिष्यति । वक्षतु । अवक्षत् । वक्षेत् । वक्ष्यात् । अवक्षीत् । अवक्षिष्यत् ।

१०१. मृक्ष—संघाते । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मृक्षति । ममृक्ष । मृक्षिता । मृक्षिष्यति । मृक्षतु । अमृक्षत् । मृक्षेत् मृक्ष्यात् । अमृक्षीत् । अमृक्षिष्यत् ।

१०२. तक्ष—त्वचने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तक्षति । ततक्ष । तक्षिता । तक्षिष्यति । तक्षतु । अतक्षत् । तक्षेत्[2] । तक्ष्यात् । अतक्षीत् । अतक्षिष्यत् ।

१०३. पक्ष—परिग्रहे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पक्षति । पपक्ष । पक्षिता । पक्षिष्यति । पक्षतु । अपक्षत् । पक्षेत् । पक्ष्यात् । अपक्षीत् । अपक्षिष्यत् ।

१०४. सूर्क्ष—आदरे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—सूर्क्षति । सुसूर्क्ष । सूर्क्षिता । सूर्क्षिष्यति । सूर्क्षतु । असूर्क्षत् । सूर्क्षेत् । सूर्क्ष्यात् । असूर्क्षीत् । असूर्क्षिष्यत् ।

१०५. काङ्क्षि—काङ्क्षायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

1. रक्ष से सूर्क्ष तक सभी धातुओं के लुङ् लकार में 'नेटि' से वृद्धि निषेध है ।

2. उरत् ।

लट्

प्र० पु०	काङ्क्षति[1]	काङ्क्षतः	काङ्क्षन्ति
म० ,,	काङ्क्षसि	काङ्क्षथः	काङ्क्षथ
उ० ,,	काङ्क्षामि	काङ्क्षावः	काङ्क्षामः

लिट्

प्र० पु०	चकाङ्क्ष[2]	चकाङ्क्षतुः	चकाङ्क्षुः
म० ,,	चकाङ्क्षिथ	चकाङ्क्षथुः	चकाङ्क्ष
उ० ,,	चकाङ्क्ष	चकाङ्क्षिव	चकाङ्क्षिम

लुट्

प्र० पु०	काङ्क्षिता	काङ्क्षितारौ	काङ्क्षितारः
म० ,,	काङ्क्षितासि	काङ्क्षितास्थः	काङ्क्षितास्थ
उ० ,,	काङ्क्षितास्मि	काङ्क्षितास्वः	काङ्क्षितास्मः

लृट्

प्र० पु०	काङ्क्षिष्यति	काङ्क्षिष्यतः	काङ्क्षिष्यन्ति
म० ,,	काङ्क्षिष्यसि	काङ्क्षिष्यथः	काङ्क्षिष्यथ
उ० ,,	काङ्क्षिष्यामि	काङ्क्षिष्यावः	काङ्क्षिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	काङ्क्षतु–तात्	काङ्क्षताम्	काङ्क्षन्तु
म० ,,	काङ्क्ष–तात्	काङ्क्षतम्	काङ्क्षत
उ० ,,	काङ्क्षाणि	काङ्क्षाव	काङ्क्षाम

लङ्

प्र० पु०	अकाङ्क्षत्	अकाङ्क्षताम्	अकाङ्क्षन्

1. "इदितो नुम् धातोः"। "नश्चापदान्तस्य झलि" "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"।

2. "ह्रस्वः" "कुहोश्चुः"।

म० ,,	अकाङ्क्षः	अकाङ्क्षतम्	अकाङ्क्षत
उ० ,,	अकाङ्क्षम्	अकाङ्क्षाव	अकाङ्क्षाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	काङ्क्षेत्	काङ्क्षेताम्	काङ्क्षेयुः
म० ,,	काङ्क्षेः	काङ्क्षेतम्	काङ्क्षेत
उ० ,,	काङ्क्षेयम्	काङ्क्षेव	काङ्क्षेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	काङ्क्ष्यात्	काङ्क्ष्यास्ताम्	काङ्क्ष्यासुः
म० ,,	काङ्क्ष्याः	काङ्क्ष्यास्तम्	काङ्क्ष्यास्त
उ० ,,	काङ्क्ष्यासम्	काङ्क्ष्यास्व	काङ्क्ष्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अकाङ्क्षीत्	अकाङ्क्षिष्टाम्	अकाङ्क्षिषुः
म० ,,	अकाङ्क्षीः	अकाङ्क्षिष्टम्	अकाङ्क्षिष्ट
उ० ,,	अकाङ्क्षिषम्	अकाङ्क्षिष्व	अकाङ्क्षिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अकाङ्क्षिष्यत्	अकाङ्क्षिष्यताम्	अकाङ्क्षिष्यन्
म० ,,	अकाङ्क्षिष्यः	अकाङ्क्षिष्यतम्	अकाङ्क्षिष्यत
उ० ,,	अकाङ्क्षिष्यम्	अकाङ्क्षिष्याव	अकाङ्क्षिष्याम

१०६ वाक्षि—काङ्क्षायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वाङ्क्षति । ववाङ्क्ष । वाङ्क्षिता । वाङ्क्षिष्यति । वाङ्क्षतु । अवाङ्क्षत् । वाङ्क्षेत् । वाङ्क्ष्यात् । अवाङ्क्षीत् । अवाङ्क्षिष्यत् ।

१०७ माक्षि—काङ्क्षायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

---

1. यासुट् ङित् तो है परन्तु यहां नकार उपधा में नहीं है । तथा धातु इदित् है अतः 'अनिदितां हल उपाधायाः क्ङिति' से नकारलोप न होगा ।

दशलकारेषु—माङ्क्षति । ममाङ्क्ष । माङ्क्षिता । माङ्क्षिष्यति । माङ्क्षतु । अमाङ्क्षत् । माङ्क्षेत् । माङ्क्ष्यात् । अमाङ्क्षीत् । अमाङ्क्षिष्यत् ।

१०८ द्राक्षि—घोरवाशिते । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—द्राङ्क्षति । दद्राङ्क्ष । द्राङ्क्षिता । द्राङ्क्षिष्यति । द्राङ्क्षतु । अद्राङ्क्षत् । द्राङ्क्षेत् । द्राङ्क्ष्यात् । अद्राङ्क्षीत् । अद्राङ्क्षिष्यत् ।

१०९ ध्राक्षि—घोरवाशिते । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—ध्राङ्क्षति । दध्राङ्क्ष । ध्राङ्क्षिता । ध्राङ्क्षिष्यति । ध्राङ्क्षतु । अध्राङ्क्षत् । ध्राङ्क्षेत् । ध्राङ्क्ष्यात् । अध्राङ्क्षीत् । अध्राङ्क्षिष्यत् ।

११० ध्वाक्षि—घोरवाशिते । परस्मैपदी सेट् ।

दशलकारेषु—ध्वाङ्क्षति[1] । दध्वाङ्क्ष । ध्वाङ्क्षिता । ध्वाङ्क्षिष्यति । ध्वाङ्क्षतु । अध्वाङ्क्षत् । ध्वाङ्क्षेत् । ध्वाङ्क्ष्यात् । अध्वाङ्क्षीत् । अध्वाङ्क्षिष्यत् ।

१११ चूष पाने । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	चूषति	चूषतः	चूषन्ति
म० ,,	चूषसि	चूषथः	चूषथ
उ० ,,	चूषामि	चूषावः	चूषामः

लिट्

प्र० पु०	चुचूष	चुचूषतुः	चुचूषुः
म० ,,	चुचूषिथ	चुचूषथुः	चुचूष
उ० ,,	चुचूष	चचूषिव	चुचूषिम

लुट्

प्र० पु०	चूषिता	चूषितारौ	चूषितारः

1. क्त—ध्वाङ्क्षितः । क्त्वा—ध्वाङ्क्षित्वा । तुमुन्—ध्वाङ्क्षितुम् । शतृ—ध्वाङ्क्षन् । तव्य—ध्वाङ्क्षितव्य । अनीय—ध्वाङ्क्षणीय । णिच्—ध्वाङ्क्षयति । सन्—दिध्वाङ्क्षिषति । यङ्—दाध्वाङ्क्ष्यते ।

म० ,,	चूषितासि	चूषितास्थः	चूषितास्थ
उ० ,,	चूषितास्मि	चूषितास्वः	चूषितास्मः

लृट्

प्र० पु०	चूषिष्यति	चूषिष्यतः	चूषिष्यन्ति
म० ,,	चूषिष्यसि	चूषिष्यथः	चूषिष्यथः
उ० ,,	चूषिष्यामि	चूषिष्यावः	चूषिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	चूषतु-तात्	चूषताम्	चूषन्तु
म० ,,	चूष-तात्	चूषतम्	चूषत
उ० ,,	चूषाणि	चूषाव	चूषाम

लङ्

प्र० पु०	अचूषत्	अचूषताम्	अचूषन्
म० ,,	अचूषः	अचूषतम्	अचूषत
उ० ,,	अचूषम्	अचूषाव	अचूषाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	चूषेत्	चूषेताम्	चूषेयुः
म० ,,	चूषेः	चूषेतम्	चूषेत
उ० ,,	चूषेयम्	चूषेव	चूषेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	चूष्यात्	चूष्यास्ताम्	चूष्यासुः
म० ,,	चूष्याः	चूष्यास्तम्	चूष्यास्त
उ० ,,	चूष्यासम्	चूष्यास्व	चूष्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अचूषीत्[1]	अचूषिष्टाम्	अचूषिषुः

1. "नेटि"। चूसना इसी धातु का विकृत रूप है।

म० ,,	अचूषीः	अचूषिष्टम्	अचूषिष्ट
उ० ,,	अचूषिषम्	अचूषिष्व	अचूषिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अचूषिष्यत्	अचूषिष्यताम्	अचूषिष्यन्
म० ,,	अचूषिष्यः	अचूषिष्यतम्	अचूषिष्यत
उ० ,,	अचूषिष्यम्	अचूषिष्याव	अचूषिष्याम

११२. तूष—तुष्टौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तूषति । तुतूष । तूषिता । तूषिष्यति । तूषतु । अतूषत् । तूषेत् । तूष्यात् । अतूषीत् । अतूषिष्यत् ।

११३. पूष—वृद्धौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पूषति । पुपूष । पूषिता । पूषिष्यति । पूषतु । अपूषत । पूषेत् । पूष्यात् । अपूषीत्[1] अपूषिष्यत् ।

११४. मूष—स्तेये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मूषति । मुमूष । मूषिता । मूषिष्यति । मूषतु । अमूषत् । मूषेत् । मूष्यात् । अमूषीत् । अमूषिष्यत् ।

११५. रूष—भूषायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—रूषति । रुरूष । रूषिता । रूषिष्यति । रूषतु अरूषत् । रूषेत् । रूष्यात् । अरूषीत् । अरूषिष्यत् ।

११६. लूष—भूषायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—लूषति । लुलूष । लूषिता । लूषिष्यति । लूषतु । अलूषत् । लूषेत् । लूष्यात् । अलूषीत् । अलूषिष्यत् ।

११७. शूष - प्रसवे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—शूषति । शुशूष । शूषिता । शूषिष्यति । शूषतु ।

1. इन सभी धातुओं में "नेटि" से वृद्धि निषेध समझें ।

अशूषत् । शूषेत । शूष्यात् । अशूषीत् । अशूषिष्यत् ।

११८. यूष—हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—यूषति । युयूष । यूषिता । यूषिष्यति । यूषतु । अयूषत् । यूषेत् । यूष्यात् । अयूषीत् । अयूषिष्यत् ।

११९. जूष—हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—जूषति । जुजूष । जूषिता । जूषिष्यति । जूषतु । अजूषत् । जूषेत् । जूष्यात् । अजूषीत् । अजूषिष्यत् ।

१२०. भूष[1]—अलङ्कारे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भूषति । बुभूष[2] । भूषिता । भूषिष्यति । भूषतु । अभूषत् । भूषेत् । भूष्यात् । अभूषीत् । अभूषिष्यत् ।

१२१. जि—जये । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	जयति	जयतः	जयन्ति
म० ,,	जयसि	जयथः	जयथ
उ० ,,	जयामि	जयावः	जयामः

लिट्

प्र० पु०	जिगाय[3]	जिग्यतुः	जिग्युः
म० ,,	जिगयिथ, जिगेथ[4]	जिग्यथुः	जिग्य
उ० ,,	जिगाय-जिगय	जिग्यिव[5]	जिग्यिम

1. 'भूष' धातु चुरादि गण का भी है, उसका रूप 'भूषयति' बनता है ।
2. "अभ्यासे चर्च्च" ।
3. "संल्लिटोर्जेः" से कुत्व ।
4. भारद्वाज मत से इट् विकल्प से ।
5. 'क्राद्यन्यो लिटि सेड् भवेत्' ।

लुट्

प्र० पु०	जेता	जेतारौ	जेतारः
म० ,,	जेतासि	जेतास्थः	जेतास्थ
उ० ,,	जेतास्मि	जेतास्वः	जेतास्मः

लृट्

प्र० पु०	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
म० ,,	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उ० ,,	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

लोट्

प्र० पु०	जयतु-तात्	जयताम्	जयन्तु
म० ,,	जय-तात्	जयतम्	जयत
उ० ,,	जयानि	जयाव	जयाम

लङ्

प्र० पु०	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
म० ,,	अजयः	अजयतम्	अजयत
उ० ,,	अजयम्	अजयाव	अजयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
म० ,,	जयेः	जयेतम्	जयेत
उ० ,,	जयेयम्	जयेव	जयेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	जीयात्[1]	जीयास्ताम्	जीयासुः
म० ,,	जीयाः	जीयास्तम्	जीयास्त

1. "अकृत्सार्वधातुकयो दीर्घः" से दीर्घ ।

उ० ,,	जीयासम्	जीयास्व	जीयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अजैषीत्[1]	अजैष्टाम्	अजैषुः[2]
म० ,,	अजैषीः	अजैष्टम्	अजैष्ट
उ० ,,	अजैषम्	अजैष्व	अजैष्म

लृङ्

प्र० पु०	अजेष्यत्	अजेष्यताम्	अजेष्यन्
म० ,,	अजेष्यः	अजेष्यतम्	अजेष्यत
उ० ,,	अजेष्यम्	अजेष्याव	अजेष्याम

१२२. जीव—प्राणधारणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—जीवति । जिजीव । जीविता । जीविष्यति । जीवतु । अजीवत् । जीवेत् । जीव्यात् । अजीवीत् । अजीविष्यत् ।

१२३. पीव—स्थौल्ये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पीवति । पिपीव । पीविता । पीविष्यति । पीवतु । अपीवत् । पीवेत् । पीव्यात् । अपीवीत् । अपीविष्यत् ।

१२४. मीव—स्थौल्ये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मीवति । मिमीव । मीविता । मीविष्यति । मीवतु । अमीवत् । मीवेत् । मीव्यात् । अमीवीत् । अमीविष्यत् ।

---

1. "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु" से वृद्धि ।

2. "सिजभ्यस्त विदिभ्यश्च" से झि को जुस् । विजयते—जीतता है (आत्मनेपद) । पराजयते—हारता है (आ. पा.) । क्त—जितः । क्त्वा—जित्वा । तुम्—जेतुम् । शतृ - जयन् । तव्य - जेतव्यः । अनीय—जयनीयः । णिच्—जापयति । सन्—जिगीषति । सन्नन्त से उ—जिगीषुः । सन्नन्त से अ—जिगीषा ।

१२५. तीव—स्थौल्ये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तीवति । तितीव । तीविता । तीविष्यति । तीवतु । अतीवत् । तीवेत् । तीव्यात् । अतीवीत् । अतीविष्यत् ।

१२६. णीव[1]—स्थौल्ये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—नीवति । निनीव । नीविता । नीविष्यति । नीवतु । अनीवत् । नीवेत् । नीव्यात् । अनीवीत् । अनीविष्यत् ।

१२७. मुर्वी—बन्धने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मूर्वति[2] । मुमूर्व । मूर्विता । मूर्विष्यति । मूर्वतु । अमूर्वत् । मूर्वेत् । मूर्व्यात् । अमूर्वीत् । अमूर्विष्यत् ।

१२८. पूर्व—पूरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पूर्वति । पुपूर्व । पूर्विता । पूर्विष्यति । पूर्वतु । अपूर्वत् । पूर्वेत् । पूर्व्यात् । अपूर्वीत् । अपूर्विष्यत् ।

१२९. पर्व—पूरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पर्वति । पपर्व । पर्विता । पर्विष्यति । पर्वतु । अपर्वत् । पर्वेत् । पर्व्यात् । अपर्वीत् । अपर्विष्यत् ।

१३०. मर्व—पूरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मर्वति । ममर्व । मर्विता । मर्विष्यति । मर्वतु । अमर्वत् । मर्वेत् । मर्व्यात् । अमर्वीत् । अमर्विष्यत् ।

१३१. चर्व—पूरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—चर्वति । चचर्व । चर्विता । चर्विष्यति । चर्वतु । अचर्वत् । चर्वेत् । चर्व्यात् । अचर्वीत् । अचर्विष्यत् ।

१३२. कष—हिंसायाम् । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—कषति । चकाष । कषिता । कषिष्यति । कषतु । अकषत् ।

---

1. "णो नः" ।

2. "उपधायां च" से दीर्घ ।

कषेत् । कष्यात् । अकषीत् । अकषिष्यत् ।

१३३. खष—हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—खषति । चखाष । खषिता । खषिष्यति । खषतु । अखषत् । खषेत् । खष्यात् । अखषीत् । अखषिष्यत् ।

१३४. शिष—हिंसायाम् । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	शेषति	शेषतः	शेषन्ति
म० ,,	शेषसि	शेषथः	शेषथ
उ० ,,	शेषामि	शेषावः	शेषामः

लिट्

प्र० पु०	शिशेष	शिशिषतुः	शिशिषुः
म० ,,	शिशेषिथ-शिशेष्ठ	शिशिषथुः	शिशिष
उ० ,,	शिशेष	शिशिषिव	शिशिषिम

लुट्

प्र० पु०	शेष्टा[1]	शेष्टारौ	शेष्टारः
म० ,,	शेष्टासि	शेष्टास्थः	शेष्टास्थ
उ० ,,	शेष्टास्मि	शेष्टास्वः	शेष्टास्मः

लृट्

प्र० पु०	शेक्ष्यति[2]	शेक्ष्यतः	शेक्ष्यन्ति
म० ,,	शेक्ष्यसि	शेक्ष्यथः	शेक्ष्यथ
उ० ,,	शेक्ष्यामि	शेक्ष्यावः	शेक्ष्यामः

लोट्

प्र० पु०	शेषतु—तात्	शेषताम्	शेषन्तु

1. ष्टुत्व ।

2. शेष्+स्यति, "षढोः कः सि" "आदेशप्रत्यययोः" 'कषसंयोगे क्षः' ।

म० ,,	शेष—तात्	शेषतम्	शेषत
उ० ,,	शेषाणि	शेषाव	शेषाम

लङ्

प्र० पु०	अशेषत्	अशेषताम्	अशेषन्
म० ,,	अशेषः	अशेषतम्	अशेषत
उ० ,,	अशेषम्	अशेषाव	अशेषाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शेषेत्	शेषेताम्	शेषेयुः
म० ,,	शेषेः	शेषेतम्	शेषेत
उ० ,,	शेषेयम्	शेषेव	शेषेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्यासुः
म० ,,	शिष्याः	शिष्यास्तम्	शिष्यास्त
उ० ,,	शिष्यासम्	शिष्यास्व	शिष्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अशिक्षत्[1]	अशिक्षताम्	अशिक्षन्
म० ,,	अशिक्षः	अशिक्षतम्	अशिक्षत
उ० ,,	अशिक्षम्	अशिक्षाव	अशिक्षाम

लृङ्

प्र० पु०	अशेक्ष्यत्	अशेक्ष्यताम्	अशेक्ष्यन्
म० ,,	अशेक्ष्यः	अशेक्ष्यतम्	अशेक्ष्यत
उ० ,,	अशेक्ष्यम्	अशेक्ष्याव	अशेक्ष्याम

१३५. जष—हिंसायाम्। परस्मैपदी सेट्।

1. "शल इगुपधादनिटः क्सः"। क्स के कित् होने से लघूपध-गुणाभाव।

दशलकारेषु जषति । जजाष — जेषतु[1]ः—जेषुः । जषिता । जषिष्यति । जषतु । अजषत् । जषेत् । जष्यात् । अजाषीत् अजषीत् । अजषिष्यत् ।

१३६. झष — हिंसायाम् । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—झषति । जझाष-जझषतुः[2]-जझषुः । झषिता । झषिष्यति । झषतु । अझषत् । झषेत् । झष्यात् । अझाषीत्[3]-अझषीत् ।

१३७—शष—हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—शषति । शशाष-शषतुः-शेषुः । शषिता । शषिष्यति । शषतु । अशषत् । शषेत् । शष्यात् । अशाषीत्-अशषीत् । अशषिष्यत् ।

१३८. वष — हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु —वषति । ववाष-ववषतुः[4]-ववषुः । वषिता । वषिष्यति । वषतु । अवषत् । वषेत् । वष्यात् । अवाषीत् —अवषीत् । अवषिष्यत् ।

१३९. मष — हिंसायाम् । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु —मषति । ममाष-मेषतुः-मेषुः । मषिता । मषिष्यति । मषतु । अमषत् । मषेत् । मष्यात् । अमषीत्-अमाषीत् । अमषिष्यत् ।

१४०. रुष — हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु —रोषति । रुरोष । रोषिता[5]-रोष्टा । रोषिष्यति । रोषतु । अरोषत् । रोषेत् । रुष्यात् । अरोषीत् । अरोषिष्यत् ।

१४१. रिष—हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—रेषति । रिरेष । रेष्टः-रेषिता । रेषिष्यति ।

---

1. एत्वाभ्यासलोप ।
2. लिट् निमित्तादेश होने से एत्वाभ्यासलोप नहीं होगा ।
3. "अतो हलादेर्लघोः" से वृद्धि विकल्प से ।
4. "न शसददवादि गुणानाम्" से एत्वाभ्यासलोप निषेध ।
5. "तीषसहलुभरुषरिषः" से इट्विकल्प से, नेटि ।

रेषिष्यति । रेषतु । अरेषत् । रेषेत् । रिष्यात् । अरेषीत् । अरेषिष्यत् ।

१४२ पुष—पुष्टौ । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	पोषति	पोषतः	पोषन्ति
म० ,,	पोषसि	पोषथः	पोषथ
उ० ,,	पोषामि	पोषावः	पोषामः

लिट्

प्र० पु०	पुपोष	पुपुषतुः	पुपुषुः
म० ,,	पुपोषिथ	पुपुषथुः	पुपुष
उ० ,,	पुपोष	पुपुषिव	पुपुषिम

लुट्

प्र० पु०	पोषिता[1]	पोषितारौ	पोषितारः
म० ,,	पोषितासि	पोषितास्थः	पोषितास्थ
उ० ,,	पोषितास्मि	पोषितास्वः	पोषितास्मः

लृट्

प्र० पु०	पोषिष्यति	पोषिष्यतः	पोषिष्यन्ति
म० ,,	पोषिष्यसि	पोषिष्यथः	पोषिष्यथ
उ० ,,	पोषिष्यामि	पोषिष्यावः	पोषिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	पोषतु-तात्	पोषताम्	पोषन्तु
म० ,,	पोष-तात्	पोषतम्	पोषत
उ० ,,	पोषाणि	पोषाव	पोषाम

लङ्

प्र० पु०	अपोषत्	अपोषताम्	अपोषन्

1. दिवादिगण का पुष धातु अनिट् है, भ्वादिगण का नहीं ।

म० ,,	अपोषः	अपोषतम्	अपोषत
उ० ,,	अपोषम्	अपोषाव	अपोषाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पोषेत्	पोषेताम्	पोषेयुः
म० ,,	पोषेः	पोषेतम्	पोषेत
उ० ,,	पोषेयम्	पोषेव	पोषेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	पुष्यात्	पुष्यास्ताम्	पुष्यासुः
म० ,,	पुष्याः	पुष्यास्तम्	पुष्यास्त
उ० ,,	पुष्यासम्	पुष्यास्व	पुष्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अपोषीत्[1]	अपोषिष्टाम्	अपोषिषुः
म० ,,	अपोषीः	अपोषिष्टम्	अपोषिष्ट
उ० ,,	अपोषिषम्	अपोषिष्व	अपोषिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अपोषिष्यत्	अपोषिष्यताम्	अपोषिष्यन्
म० ,,	अपोषिष्यः	अपोषिष्यतम्	अपोषिष्यत
उ० ,,	अपोषिष्यम्	अपोषिष्याव	अपोषिष्याम

१४६. श्रिषु—दाहे । परस्मैपदी सेट् ।

दशलकारेषु—श्रेषति । शिश्रेष । श्रेषिता । श्रेषिष्यति । श्रेषतु । अश्रेषत् । श्रेषेत् । श्रिष्यात् । अश्रेषीत् । अश्रेषिष्यत् ।

१४७. श्लिषु—दाहे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—श्लेषति । शिश्लेष । श्लेषिता[2] । श्लेषिष्यति । श्लेषतु ।

---

1. 'नोट' । दिवादिगण के पुष् धातु को 'अङ्' होता है, भ्वादि के पुष् को नहीं ।

2. दिवादि का श्लिष् अनिट् है ।

अश्लेषत् । श्लेषेत् । श्लिष्यात् । अश्लेषीत्[1] । अश्लेषिष्यत् ।

१४५. प्रुषु—दाहे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—प्रोषति । पुप्रोष । प्रोषिता । प्रोषिष्यति । प्रोषतु । अप्रोषत् । प्रोषेत् । प्रुष्यात् । अप्रोषीत् । अप्रोषिष्यत् ।

१४६. प्लुषु—दाहे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—प्लोषति । पुप्लोष । प्लोषिता । प्लोषिष्यति । प्लोषतु । अप्लोषत् । प्लोषेत् । प्लुष्यात् । अप्लोषीत् । अप्लोषिष्यत् ।

इति परस्मैपदिधातवः ।

अथात्मनेपदिधातवः ।

लट्

प्र० पु०	एधते	एधेते	एधन्ते
म० ,,	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उ० ,,	एधे	एधावहे	एधामहे

लिट् (कृ)

प्र० पु०	एधाञ्चक्रे[2]	एधाञ्चक्राते	एधाञ्चक्रिरे
म० ,,	एधाञ्चकृषे	एधाञ्चक्राथे	एधाञ्चकृढ्वे
उ० ,,	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चकृवहे	एधाञ्चकृमहे

(भू)

प्र० पु०	एधाम्बभूव	एधाम्बभूवतुः	एधाम्बभूवुः
म० ,,	एधाम्बभूविथ	एधाम्बभूवथुः	एधाम्बभूव
उ० ,,	एधाम्बभूव	एधाम्बभूविव	एधाम्बभूविम

1. यहाँ च्लि अनिट् नहीं, अतः क्स नहीं होगा।

2. अनुप्रयुज्यमान कृ को ही प्रकृतितुल्य आत्मनेपद होता है, भू अस् को नहीं।

(अस्)

प्र० पु०	एधामास	एधामासतुः	एधामासुः
म० ,,	एधामासिथ	एधामासथुः	एधामास
उ० ,,	एधामास	एधामासिव	एधामासिम

लुट्

प्र० पु०	एधिता	एधितारौ	एधितारः
म० ,,	एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे[1]
उ० ,,	एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे

लृट्

प्र० पु०	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
म० ,,	एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
उ० ,,	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
म० ,,	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उ० ,,	एधै	एधावहै	एधामहै

लङ्

प्र० पु०	ऐधत[2]	ऐधेताम्	ऐधन्त
म० ,,	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ० ,,	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्

1. "धि च" से सलोप।
2. "आडजादीनाम्" "आटश्च"।

म० ,,	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उ० ,,	एधेय	एधेवहि	एधेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
म० ,,	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उ० ,,	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
म० ,,	ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्[1]
उ० ,,	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

लृङ्

प्र० पु०	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
म० ,,	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
उ० ,,	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

१४८. कमु—कान्तौ। आत्मनेपदी, सेट्।

लट्

प्र० पु०	कामयते[2]	कामयेते	कामयन्ते
म० ,,	कामयसे	कामयेथे	कामयध्वे
उ० ,,	कामये	कामयावहे	कामयामहे

लिट् (णिङ्)

प्र० पु०	कामयाञ्चक्रे	कामयाञ्चक्राते	कामयाञ्चक्रिरे
म० ,,	कामयाञ्चकृषे	कामयाञ्चक्राथे	कामयाञ्चकृढ्वे
उ० ,,	कामयाञ्चक्रे	कामयाञ्चकृवहे	कामयाञ्चकृमहे

1. "इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्" से धकार को ढकार।
2. "कमेर्णिङ्" से णिङ्।

णिङ् के अभाव में

प्र० पु०	चकमे[1]	चकमाते	चकमिरे
म० ,,	चकमिषे	चकमाथे	चकमिध्वे
उ० ,,	चकमे	चकमिवहे	चकमिमहे

लुट् (णिङ्)

प्र० पु०	कामयिता	कामयितारौ	कामयितारः
म० ,,	कामयितासे	कामयितासाथे	कामयिताध्वे
उ० ,,	कामयिताहे	कामयितास्वहे	कामयितास्महे

णिङ् के अभाव में

प्र० पु०	कमिता	कमितारौ	कमितारः
म० ,,	कमितासे	कमितासाथे	कमिताध्वे
उ० ,,	कमिताहे	कमितास्वहे	कमितास्महे

लृट् (णिङ्)

प्र० पु०	कामयिष्यते	कामयिष्येते	कामयिष्यन्ते
म० ,,	कामयिष्यसे	कामयिष्येथे	कामयिष्यध्वे
उ० ,,	कामयिष्ये	कामयिष्यावहे	कामयिष्यामहे

णिङ् के अभाव में

प्र० पु०	कमिष्यते	कमिष्येते	कमिष्यन्ते
म० ,,	कमिष्यसे	कमिष्येथे	कमिष्यध्वे
उ० ,,	कमिष्ये	कमिष्यावहे	कमिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	कामयताम्	कामयेताम्	कामयन्ताम्
म० ,,	कामयस्व	कामयेथाम्	कामयध्वम्

1. "आयादय आर्धधातुके वा" से विकल्पसे आय् ईयङ्, णिङ् प्रत्यय।

उ० ,,	कामयै	कामयावहै	कामयामहै

लङ्

प्र० पु०	अकामयत	अकामयेताम्	अकामयन्त
म० ,,	अकामयथाः	अकामयेथाम्	अकामयध्वम्
उ० ,,	अकामये	अकामयावहि	अकामयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	कामयेत	कामयेयाताम्	कामयेरन्
म० ,,	कामयेथाः	कामयेयाथाम्	कामयेध्वम्
उ० ,,	कामयेय	कामयेवहि	कामयेमहि

आशीर्लिङ् (कमिषीष्ट)

प्र० पु०	कामयिषीष्ट	कामयिषीयास्ताम्	कामयिषीरन्
म० ,,	कामयिषीष्ठाः	कामयिषीयास्थाम्	कामयिषीध्वम्
उ० ,,	कामयिषीय	कामयिषीवहि	कामयिषीमहि

लुङ् (णिङ्)

प्र० पु०	अचीकमत[1]	अचीकमेताम्	अचीकमन्त
म० ,,	अचीकमथाः	अचीकमेथाम्	अचीकमध्वम्
उ० ,,	अचीकमे	अचीकमावहि	अचीकमामहि

(णिङ् के अभाव में)

प्र० पु०	अचकमत[2]	अचकमेताम्	अचकमन्त
म० ,,	अचकमथाः	अचकमेथाम्	अचकमध्वम्
उ० ,,	अचकमे	अचकमावहि	अचकमामहि

लृङ् (णिङ्)

प्र० पु०	अकामयिष्यत	अकामयिष्येताम्	अकामयिष्यन्त

1. "णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्त्तरिचङ्" से चङ्। "चङि" से द्वित्व।
2. "कमेश्च्लेश्चङ् वाच्यः।"

म० ,,	अकामयिष्यथाः	अकामयिष्येथाम्	अकामयिष्यध्वम्
उ० ,,	अकामयिष्ये	अकामयिष्यावहि	अकामयिष्यामहि

णिङ् के अभाव में

प्र० पु०	अकमिष्यत[1]	अकमिष्येताम्	अकमिष्यन्त
म० ,,	अकमिष्यथाः	अकमिष्येथाम्	अकमिष्यध्वम्
उ० ,,	अकमिष्ये	अकमिष्यावहि	अकमिष्यामहि

१४९ भाम-क्रोधे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भामते । बभामे । भामिता । भामिष्यते । भामताम् । अभामत । भामेत । भामिषीष्ट । अभामिष्ट । अभामिष्यत ।

१५० क्षमूष्[2]-सहने । आत्मनेपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	क्षमते	क्षमेते	क्षमन्ते
म० ,,	क्षमसे	क्षमेथे	क्षमध्वे
उ० ,,	क्षमे	क्षमावहे	क्षमामहे

लिट्

प्र० पु०	चक्षमे	चक्षमाते	चक्षमिरे
म० ,,	चक्षमिषे-चक्षंसे	चक्षमाथे	चक्षमिध्वे-चक्षंध्वे
उ० ,,	चक्षमे	चक्षमिवहे-चक्षण्वहे	चक्षमिमहे-चक्षण्महे

लुट् (इट्)

प्र० पु०	क्षमिता	क्षमितारौ	क्षमितारः

1. क्त-कामयितः, कमितः । क्त्वा-कामयित्वा, कमित्वा । तुम्-कामयितुम्, कमितुम् । तव्य-कामयितव्यः, कमितव्यः । अनीय—कमनीयः । णिच् कामयते । सन्-चिकामयिषते, चिकमिषते । कर्मवाच्य-काम्यते ।

2. ऊदित् होने से इट् का विकल्प होगा । षित् होने से "षिद्भिदादिभ्योऽङ्" से अङ् प्रत्यय हो कर 'क्षमा' शब्द बनता है ।

म० ,,	क्षमितासे	क्षमितासाथे	क्षमिताध्वे
उ० ,,	क्षमिताहे	क्षमितास्वहे	क्षमितास्महे

इट् अभाव

प्र० पु०	क्षन्ता	क्षन्तारौ	क्षन्तारः
म० ,,	क्षन्तासे	क्षन्तासाथे	क्षन्ताध्वे
उ० ,,	क्षन्ताहे	क्षन्तास्वहे	क्षन्तास्महे

लृट् (इट्)

प्र० पु०	क्षमिष्यते	क्षमिष्येते	क्षमिष्यन्ते
म० ,,	क्षमिष्यसे	क्षमिष्येथे	क्षमिष्यध्वे
उ० ,,	क्षमिष्ये	क्षमिष्यावहे	क्षमिष्यामहे

(इट् अभाव में)

प्र० पु०	क्षंस्यते[1]	क्षंस्येते	क्षंस्यन्ते
म० ,,	क्षंस्यसे	क्षंस्येथे	क्षंस्यध्वे
उ० ,,	क्षंस्ये	क्षंस्यावहे	क्षंस्यामहे

लोट्

प्र० ,,	क्षमताम्	क्षमेताम्	क्षमन्ताम्
म० ,,	क्षमस्व	क्षमेथाम्	क्षमध्वम्
उ० ,,	क्षमै	क्षमावहै	क्षमामहै

लङ्

प्र० पु०	अक्षमत	अक्षमेताम्	अक्षमन्त
म० ,,	अक्षमथाः	अक्षमेथाम्	अक्षमध्वम्
उ० ,,	अक्षमे	अक्षमावहि	अक्षमामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्षमेत	क्षमेयाताम्	क्षमेरन्

1. "स्वरतसूति—" से इट् विकल्प। नश्चापदान्तस्य झलि" से अनुस्वार।

म० ,,	क्षमेथाः	क्षमेयाथाम्	क्षमेध्वम्
उ० ,,	क्षमेय	क्षमेवहि	क्षमेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	क्षमिषीष्ट	क्षमिषीयास्ताम्	क्षमिषीरन्
म० ,,	क्षमिषीष्ठाः	क्षमिषीयास्थाम्	क्षमिषीध्वम्
उ० ,,	क्षमिषीय	क्षमिषीवहि	क्षमिषीमहि

इट् अभाव में

प्र० पु०	क्षंसीष्ट	क्षंसीयास्ताम्	क्षंसीरन्
म० ,,	क्षंसीष्ठाः	क्षंसीयास्थाम्	क्षंसीध्वम्
उ० ,,	क्षंसीय	क्षंसीवहि	क्षंसीमहि

लुङ् (इट्)

प्र० पु०	अक्षमिष्ट	अक्षमिषाताम्	अक्षमिषत
म० ,,	अक्षमिष्ठाः	अक्षमिषाथाम्	अक्षमिध्वम्
उ० ,,	अक्षमिषि	अक्षमिष्वहि	अक्षमिष्महि

इट् अभाव में

प्र० पु०	अक्षंस्त	अक्षंसाताम्	अक्षंसन्त
म० ,,	अक्षंस्थाः	अक्षंसाथाम्	अक्षंस्ध्वम्
उ० ,,	अक्षंसि	अक्षंस्वहि	अक्षंस्महि

लृङ्

प्र० ,,	अक्षमिष्यत	अक्षमिष्येताम्	अक्षमिष्यन्त
म० ,,	अक्षमिष्यथाः	अक्षमिष्येथाम्	अक्षमिष्यध्वम्
उ० ,,	अक्षमिष्ये	अक्षमिष्यावहि	अक्षमिष्यामहि

इट् अभाव में

प्र० पु०	अक्षंस्यत	अक्षंस्येताम्	अक्षंस्यन्त
म० ,,	अक्षंस्यथाः	अक्षंस्येथाम्	अक्षंस्यध्वम्

उ० ,, अत्र्स्ये अत्र्स्यावहि अत्र्स्यामहि

१५१. गाधृ[1] — प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च। आत्मनेपदी सेट्।

दशलकारेषु—गाधते। जगाधे। गाधिता। गाधिष्यते। गाधताम्। अगाधत। गाधेत। गाधिषीष्ट। अगाधिष्ट। अगाधिष्यत।

१५२. बाधृ—लोडने। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—बाधते। बबाधे। बाधिता। बाधिष्यते। बाधताम्। अबाधत। बाधेत। बाधीषीष्ट। अबाधिष्ट। अबाधिष्यत।

१५३. नाथृ — याच्ञोपतापैश्वर्याशीःषु। आत्मनेपदी सेट्।

दशलकारेषु—नाथते। ननाथे। नाथिता। नाथिष्यते। नाथताम्। अनाथत। नाथेत। नाथिषीष्ट। अनाथिष्ट। अनाथिष्यत।

परस्मैपद में[2]—

दशलकारेषु — नाथति। ननाथ। नाथिता। नाथिष्यति। नाथतु। अनाथत्। नाथेत्। नाथ्यात्। अनाथीत्। अनाथिष्यत्।

१५४. नाधृ— याच्ञोपतापैश्वर्याशीःषु। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु— नाधते। ननाधे। नाधिता। नाधिष्यते। नाधताम्। अनाधत। नाधेत। नाधिषीष्ट। अनाधिष्यत।

१५५. दध—धारणे। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु दधते। ददधे[3]। दधिता। दधिष्यते। दधताम्।

1. ऋ इत् "नाग्लोपि शास्वृदिताम् के लिये है, अजगाधत।

2. "आशिषि नाथ इति वाच्यम्" से आशीर्वाद अर्थ में परस्मैपद होगा। क्त—नाथितः। क्तवत्—नाथितवान्। क्त्वा—नाथित्वा। तुम्—नाथितुम्। तव्य—नाथितव्यम्। णिच्—नाथयति। सन्—निनाथिषति। यङ्—नानाथ्यते। यङ्लुक्—नानाथीति। इसी तरह— गाध् बाध् धातुओं के रूप हो सकेंगे।

3. "न शसददवादि गुणानाम्" से एत्वाभ्यास लोप निषेध।

अदधत । दधेत । दधिषीष्ट । अदधिष्ट । अदधिष्यत ।

१५६. स्कुदि—आप्रवणे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—स्कुन्दते[1] । चुस्कुन्दे[2] । स्कुन्दिता । स्कुन्दिष्यते । अस्कुन्दत । स्कुन्देत । स्कुन्दिषीष्ट । अस्कुन्दिष्ट । अस्कुन्दिष्यत ।

१५७ श्विदि-श्वैत्ये । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—श्विन्दते । शिश्विन्दे । श्विन्दिता । श्विन्दिष्यते । श्विन्दताम् । अश्विन्दत । श्विन्देत । श्विन्दिषीष्ट । अश्विन्दिष्ट । अश्विन्दिष्यत ।

१५८ वदि[3] अभिवादनस्तुत्योः । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वन्दते । ववन्दे । वन्दिता । वन्दिष्यते । वन्दताम् । अवन्दत । वन्देत । वन्दिषीष्ट । अवन्दिष्ट । अवन्दिष्यत ।

१५९ भदि-कल्याणे, सुखे च । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भन्दते । बभन्दे । भन्दिता । भन्दिष्यते । भन्दताम् । अभन्दत । भन्देत । भन्दिषीष्ट । अभन्दिष्ट । अभन्दिष्यत ।

१६० मन्दि-स्तुति मोद मद स्वप्न कान्ति गतिषु । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—मन्दते । ममन्दे । मन्दिता । मन्दिष्यते । मन्दताम् । अमन्दत । मन्देत । मन्दिषीष्ट । अमन्दिष्ट । अमन्दिष्यत ।

१६१ स्पदि-किञ्चिच्चलने । आ. प. से. ।

दशलकारेषु—स्पन्दते[4] । पस्पन्दे । स्पन्दिता । स्पन्दिष्यते । स्पन्दताम् ।

---

1. "इदितो नुम् धातोः" से नुम् ।

2. "शर्पूर्वाः खयः" खर् लोप ।

3. क्त-वन्दितः । क्त्वा-वन्दित्वा । तुमुन्-वन्दितुम् । तव्य-वन्दितव्यः । अनीय-वन्दनीयः । णिच्-वन्दयति । सन्-विवन्दिषति । कर्मवाच्य-वन्द्यते । एवं शेष धातुओं की रूपरचना हो सकेगी ।

4. "शर्पूर्वाः खयः" ।

अस्पन्दत। स्पन्देत। स्पन्दिषीष्ट। अस्पन्दिष्ट। अस्पन्दिष्यत।

१६२ मुद-हर्षे। आत्म० सेट्।

दशलकारेषु—मोदते। मुमुदे। मोदिता[1]। मोदिष्यते। मोदताम्। अमोदत। मोदेत। मोदिषीष्ट। अमोदिष्ट। अमोदिष्यत।

१६३ ऊर्द-माने, क्रीडायाम् च। आ. प. सेट्।

दशलकारेषु—ऊर्दते[2]। ऊर्दाञ्चक्रे[3]। ऊर्दिता। ऊर्दिष्यते। ऊर्दताम्। और्दत[4]। ऊर्देत। ऊर्दिषीष्ट। और्दिष्ट। और्दिष्यत।

१६४ कुर्द-क्रीडायामेव। आ. प. सेट्।

दशलकारेषु-कूर्दते। चकूर्दे। कूर्दिष्यते। कूर्दताम्। अकूर्दत। कूर्देत।। कूर्दिषीष्ट। अकूर्दिष्ट। अकूर्दिष्यत।

१६५ खुर्द-क्रीडायामेव। आ. प. से०।

दशलकारेषु-खूर्दते। चुखूर्दे। खूर्दिता। खूर्दिष्यते। खूर्दताम्। अखूर्दत। खूर्दिषीष्ट। अखूर्दिष्ट। अखूर्दिष्यत।

१६६ गुर्द-क्रीडायामेव। आ. प. से०।

दशलकारेषु गूर्दते। जुगूर्दे। गूर्दिता। गूर्दिष्यते। गूर्दताम्। अगूर्दत। गूर्देत। गूर्दिषीष्ट। अगूर्दिष्ट। अगूर्दिष्यत।

१६७ गुद—क्रीडायामेव। आ. प. से.।

दशलकारेषु—गोदते। जुगुदे। गोदिता। गोदिष्यते। गोदताम्।

1. "पुगन्तलघूपधस्य च" से गुण। क्त-मुदितः। क्त्वा-मुदित्वा, मोदित्वा। तुमुन्-मोदितुम्। शानच् मोदमानः। णिच्-मोदयते। सन्-मुमुदिषते, मुमोदिषते। यङ्-मोमुद्यते। यङ्लुक्-मोमुदीति. मोमोत्ति।

2. "उपधायाञ्च" से दीर्घ होता जायगा।

3. "इजादेश्चगुरुमतोऽनृच्छः" से आम्, कृञ् का अनुप्रयोग। अस् भू का अनुप्रयोग भी होगा।

4. "आडजादीनाम्।"

अगोदत। गोदेत। गोदिषीष्ट। अगोदिष्ट। अगोदिष्यत।

१६८ षूद[1]-क्षरणे। आ. प सेट्।

दशलकारेषु – सूदते। सुषूदे[2]। सूदिता। सूदिष्यते। सूदताम्। असूदत। सूदेत। सूदिषीष्ट। असूदिष्ट। असूदिष्यत।

१६९ ह्लाद-अव्यक्ते शब्दे। आ. प. सेट्।

दशलकारेषु—ह्लादते। जह्लादे। ह्लादिता। ह्लादिष्यते। ह्लादताम्। अह्लादत। ह्लादेत। ह्लादिषीष्ट। अह्लादिष्ट। अह्लादिष्यत।

१७० ह्लादी[3]-अव्यक्ते शब्दे, सुखे। आ. प. सेट।

ह्लाद के समान रूप होंगे।

१७१ स्वाद-आस्वादने। आ. प. सेट्।

दशलकारेषु—स्वादते। सस्वादे। स्वादिता। स्वादिष्यते। स्वादताम्। अस्वादत। स्वादेत। स्वादिषीष्ट। अस्वादिष्ट। अस्वादिष्यत।

१७२. पर्द—कुत्सिते शब्दे। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—पर्दते। पपर्दे। पर्दिता। पर्दिष्यते। पर्दताम्। अपर्दत। पर्देत। पर्दिषीष्ट। अपर्दिष्ट। अपर्दिष्यत।

१७३. यती—प्रयत्ने। आत्म०—सेट्।

दशलकारेषु—यतते। येते। यतिता। यतिष्यते। यतताम्। अयतत। यतेत। यतिषीष्ट। अयतिष्ट। अयतिष्यत[4]।

---

1. "धात्वादेः षः सः।"

2. "आदेश प्रत्यययोः।"

3. रूप तो इस के ह्लाद के समान होंगे परन्तु ईदित् होने से निष्ठा में इसे इट् न होगा। ह्लन्नः।

4. क्त—यत्तम्। क्त्वा—यतित्वा। तुमुन्—यतितुम्। क्तवतु—यत्तवान्। तव्य—यतितव्यम्। अनीय—यतनीयम्। सन्—यियतिषते। यङ्—यायत्यते। कर्मवाच्य—यत्यते।

१७४. श्रथि—शैथिल्ये । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—श्रन्थते । शश्रन्थे[1] । श्रन्थिता । श्रन्थिष्यते । श्रन्थताम् । अश्रन्थत । श्रन्थेत । श्रन्थिषीष्ट । अश्रन्थिष्ट । अश्रन्थिष्यत ।

१७५. ग्रथि—कौटिल्ये । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—ग्रन्थते । जग्रन्थे । ग्रन्थिता । ग्रन्थिष्यते । ग्रन्थताम् । अग्रन्थत । ग्रन्थेत । ग्रन्थिषीष्ट । अग्रन्थिष्ट । अग्रन्थिष्यत ।

१७६. कत्थ—श्लाघायाम् । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—कत्थते । चकत्थे । कत्थिता । कत्थिष्यते । कत्थताम् । अकत्थत । कत्थेत । कत्थिषीष्ट । अकत्थिष्ट । अकत्थिष्यत ।

१७७. श्लोकृ[2]—संघाते । आ. प. सेट् ।

लट्

प्र० पु०	श्लोकते	श्लोकेते	श्लोकन्ते
म० ,,	श्लोकसे	श्लोकेथे	श्लोकध्वे
उ० ,,	श्लोके	श्लोकावहे	श्लोकामहे

लिट्

प्र० पु०	शुश्लोके[3]	शुश्लोकाते	शुश्लोकिरे
म० ,,	शुश्लोकिषे	शुश्लोकाथे	शुश्लोकिध्वे

1. इदित होने से नुम् संयोग से अपित् लिट् कित् नहीं होता, अतः न लोप न हुआ ।

2. ऋकार अनुबन्ध है, अतः एव ण्यन्त 'अशुश्लोकत्' में उपधा ह्रस्व न हुआ, "नाग्लोपि" ।

3. "ह्रस्वः" "एच इग्घ्रस्वादेशे ।" इसी धातु से घञ् (अ) प्रत्यय लाकर श्लोक शब्द बनता है । क्त—श्लोकितः । क्त्वा—श्लोकित्वा—तुमुन्—श्लोकितुम् । तव्य—श्लोकितव्य । णिच्—श्लोकयति । सन्—श्लोकिषते । यङ्—श्लोक्यते । उपश्लोकते—स्तुति करता है ।

उ० ,,	शुश्लोके	शुश्लोकिवहे	शुश्लोकिमहे

लुट्

प्र० पु०	श्लोकिता	श्लोकितारौ	श्लोकितारः
म० ,,	श्लोकितासे	श्लोकितासाथे	श्लोकिताध्वे
उ० ,,	श्लोकिताहे	श्लोकितास्वहे	श्लोकितास्महे

लृट्

प्र० पु०	श्लोकिष्यते	श्लोकिष्येते	श्लोकिष्यन्ते
म० ,,	श्लोकिष्यसे	श्लोकिष्येथे	श्लोकिष्यध्वे
उ० ,,	श्लोकिष्ये	श्लोकिष्यावहे	श्लोकिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	श्लोकताम्	श्लोकेताम्	श्लोकन्ताम्
म० ,,	श्लोकस्व	श्लोकेथाम्	श्लोकध्वम्
उ० ,,	श्लोकै	श्लोकावहै	श्लोकामहै

लङ्

प्र० पु०	अश्लोकत	अश्लोकेताम्	अश्लोकन्त
म० ,,	अश्लोकथाः	अश्लोकेथाम्	अश्लोकध्वम्
उ० ,,	अश्लोके	अश्लोकावहि	अश्लोकामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	श्लोकेत	श्लोकेयाताम्	श्लोकेरन्
म० ,,	श्लोकेथाः	श्लोकेयाथाम्	श्लोकेध्वम्
उ० ,,	श्लोकेय	श्लोकेवहि	श्लोकेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	श्लोकिषीष्ट	श्लोकिषीयास्ताम्	श्लोकिषीरन्
म० ,,	श्लोकिपीष्ठाः	श्लोकिषीयास्थाम्	श्लोकिषीध्वम्
उ० ,,	श्लोकिषीय	श्लोकिपीवहि	श्लोकिषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	अश्लोकिष्ट	अश्लोकिषाताम्	अश्लोकिषत
म० ,,	अश्लोकिष्ठाः	अश्लोकिषाथाम्	अश्लोकिध्वम्
उ० ,,	अश्लोकिषि	अश्लोकिष्वहि	अश्लोकिष्महि

लृङ्

प्र० पु०	अश्लोकिष्यत	अश्लोकिष्येताम्	अश्लोकिष्यन्त
म० ,,	अश्लोकिष्यथाः	अश्लोकिष्येथाम्	अश्लोकिष्यध्वम्
उ० ,,	अश्लोकिष्ये	अश्लोकिष्यावहि	अश्लोकिष्यामहि

१७८. शकि—शङ्कायाम् । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—शङ्कते । शशङ्के । शङ्किता । शङ्किष्यते । शङ्कताम् । अशङ्कत । शङ्केत । शङ्किषीष्ट । अशङ्किष्ट । अशङ्किष्यत[1] ।

१७९. अकि—लक्षणे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—अङ्कते । आनङ्के[2] । अङ्किता । अङ्किष्यते । अङ्कताम् । आङ्कत । अङ्केत । अङ्किषीष्ट । आङ्किष्ट । आङ्किष्यत ।

१८०. ककि—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कङ्कते । चकङ्के । कङ्किता । कङ्किष्यते । कङ्कताम् । अकङ्कत । कङ्केत । कङ्किषीष्ट । अकङ्किष्ट । अकङ्किष्यत ।

१८१. वकि—गत्यर्थे । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—वङ्कते । ववङ्के । वङ्किता । वङ्किष्यते । वङ्कताम् । अवङ्कत ।

---

1. क्त—शङ्कितः । क्त्वा—शङ्कित्वा । तुमुन्—शंकितुम् । तव्य—शङ्कितव्यम् । अनीय—शंकनीयम् । शानच्—शङ्कमानः । णिच्—शङ्कयते । सन्—शिशंकिषते । यङ्—शाशङ्क्यते । कर्मवा०—शङ्क्यते । शङ्का शब्द इसी से बनता है (गुरोश्च हलः) ।

2. द्वित्व, हलादिशेष, "अत आदेः" "तस्मान्नुड् द्विहलः से नुट् ।"

वङ्केत । वङ्किषीष्ट । अवङ्किष्ट । अवङ्किष्यत ।

१८२. श्वकि गत्यर्थे । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—श्वङ्कते । शश्वङ्के । श्वङ्किता । श्वङ्किष्यते । श्वङ्कताम् । अश्वङ्कत । श्वङ्केत । श्वङ्किषीष्ट । अश्वङ्किष्ट । अश्वङ्किष्यत ।

१८३. त्रकि—गत्यर्थे । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—त्रङ्कते । तत्रङ्के । त्रङ्किता । त्रङ्किष्यते । त्रङ्कताम् । अत्रङ्कत । त्रङ्केत । त्रङ्किषीष्ट । अत्रङ्किष्ट । अत्रङ्किष्यत ।

१८४. ढौकृ[1]—गत्यर्थे । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—ढौकते । डढौके । ढौकिता । ढौकिष्यते । ढौकताम् । अढौकत । ढौकेत । ढौकिषीष्ट । अढौकिष्ट । अढौकिष्यत ।

१८५. त्रौकृ—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—त्रौकते । तुत्रौके । त्रौकिता । त्रौकिष्यते । त्रौकताम् । अत्रौकत । त्रौकेत । त्रौकिषीष्ट । अत्रौकिष्ट । अत्रौकिष्यत[2] ।

१८६. ष्वष्क—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—ष्वष्कते[3] । पष्वष्के । ष्वष्किता । ष्वष्किष्यते । ष्वष्कताम् । अष्वष्कत । ष्वष्केत । ष्वष्किषीष्ट । अष्वष्किष्ट । अष्वष्किष्यत ।

एवम्

१८७. वस्क—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट्—पूर्ववत् ।

१८८. मस्क—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट्—पूर्ववत् ।

१८९ टिकृ—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—टेकते । टिटेके । टेकिता । टेकिष्यते । टेकताम् । अटेकत ।

1. ऋकार अनुबन्ध है, "नाग्लोपिशास्वृदिताम्" से णिच् में उपधा-ह्रस्व न होगा—अडुढौकत् ।

2. णयन्त से लुङ् में—अतुत्रौकत् ।

3. "सुब्धातुष्ठिवुष्वष्कतीनां सत्वप्रतिषेधो वाच्यः" वार्तिक से सत्वनिषेध ।

टेकेत । टेकिषीष्ट । अटेकिष्ट । अटेकिष्यत ।

१६०. टीकृ—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—टीकते । टिटीके । टीकिता । टीकिष्यते । टीकताम् । अटीकत । टीकेत । टीकिषीष्ट । अटीकिष्ट । अटीकिष्यत ।

१६१. तिकृ—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तेकते । तितेके । तेकिता । तेकिष्यते । तेकताम् । अतेकत । तेकेत । तेकिषीष्ट । अतेकिष्ट । अतेकिष्यत ।

१६२. तीकृ[1]—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तीकते । तितीके । तीकिता । तीकिष्यते । तीकताम् । अतीकत । तीकेत । तीकिषीष्ट । अतीकिष्ट । अतिकिष्यत ।

१६३. रघि—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—रङ्घते[2] । ररङ्घे । रङ्घिता । रङ्घिष्यते । रङ्घताम् । अरङ्घत । रङ्घेत । रङ्घिषीष्ट । अरङ्घिष्ट । अरङ्घिष्यत ।

१६४. लघि[3]—गत्यर्थे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—लङ्घते । ललङ्घे । लङ्घिता । लङ्घिष्यते ।

---

1. आदित् होने से ण्यन्त लुङ् में—'अतितीकत्' होगा । क्त—तीकितः । क्त्वा—तीकित्वा । तुमुन्—तीकितुम् । णिच्—तीकयति । सन्—तितीकिषते । यङ्—तेतीक्यते । शानच्—तीकमानः । लघूपध न होने से इसे उपधागुण नहीं होगा ।

2. "इदितो नुम् धातोः" "नश्चापदान्तस्य झलि" "अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः" ।

3. उल्लङ्घते—उलाँघता है, टालता है । क्तः—लङ्घितः । क्त्वा—लङ्घित्वा । तुम्—लङ्घितुम् । तव्य—लङ्घितव्यः । शानच्—लङ्घमानः । ण्यन्त—लङ्घयति । ण्यन्त लुङ्—अललङ्घत् । सन्—लिलङ्घिषते । कर्मवाच्य—लङ्घ्यते ।

लङ्घताम् । अलङ्घत । लङ्घेत । लङ्घिषीष्ट । अलङ्घिष्ट । अलङ्घिष्यत ।

१९५. श्लाघृ—कत्थने । आत्म-सेट ।

दशलकारेषु—श्लाघते[1] । शश्लाघे । श्लाघिता । श्लाघिष्यते । श्लाघताम् । अश्लाघत । श्लाघेत । श्लाघिषीष्ट । अश्लाघिष्ट । अश्लाघिष्यत ।

१९६ पचि—व्यक्तिकरणे । आत्म-सेट् ।

दशलकारेषु—पञ्चते । पपञ्चे । पञ्चिता । पञ्चिष्यते । पञ्चताम् । अपञ्चत । पञ्चेत । पञ्चिषीष्ट । अपञ्चिष्ट । अपञ्चिष्यत[2] ।

१९७. ऋज—गति स्थानार्जनोपार्जनेषु । आ. प. सेट् ।

लट्

प्र० पु०	अर्जते[3]	अर्जेते	अर्जन्ते
म० ,,	अर्जसे	अर्जेथे	अर्जध्वे
उ० ,,	अर्जे	अर्जावहे	अर्जामहे

लिट्

प्र० पु०	आनृजे[4]	आनृजाते	आनृजिरे

1. 'श्लाघा' शब्द इसी से बनता है । क्त—श्लाघितः । क्त्वा—श्लाघित्वा । तुमुन्—श्लाघितुम् । तव्य—श्लाघितव्यः । शानच्—श्लाघमानः । णिच्—श्लाघयते । सन्—शिश्लाघिषते । कर्मवा०—श्लाघ्यते । ण्यन्त से लुङ्—अशश्लाघत । "नाग्लोपिशास्वृदिताम्" से उपधाह्रस्व का निषेध ।

2. 'प्रपञ्च' शब्द इसी धातु से ही है । क्त—पञ्चितः । क्त्वा—पञ्चित्वा । तुमुन्—पञ्चितुम् । तव्य—पञ्चितव्यम् । शानच्—पञ्चमानः । णिच्—पञ्चयते । लुङ्—अपपञ्चत । सन्—पिपञ्चिषते । यङ्—पापञ्चयते ।

3. लघूपध गुण ।

4. ऋज् ऋज्+ए, "उरत्" "हलादिः शेषः" "अत आदेः" ऋकारादेश रेफ को दूसरा हल् मान कर "तस्मान्नुड् द्विहलः" से नुट् का आगम । "असंयोगाल्लिट् कित्" से अभ्यासोत्तरवर्ती ऋकार को गुणाभाव ।

म० ,,	आनृजिषे	आनृजाथे	आनृजिध्वे
उ० ,,	आनृजे	आनृजिवहे	आनृजिमहे

लुट्

प्र० पु०	अर्जिता	अर्जितारौ	अर्जितारः
म० ,,	अर्जितासे	अर्जितासाथे	अर्जिताध्वे
उ० ,,	अर्जिताहे	अर्जितास्वहे	अर्जितास्महे

लृट्

प्र० पु०	अर्जिष्यते	अर्जिष्येते	अर्जिष्यन्ते
म० ,,	अर्जिष्यसे	अर्जिष्येथे	अर्जिष्यध्वे
उ० ,,	अर्जिष्ये	अर्जिष्यावहे	अर्जिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	अर्जताम्	अर्जेताम्	अर्जन्ताम्
म० ,,	अर्जस्व	अर्जेथाम्	अर्जध्वम्
उ० ,,	अर्जै	अर्जावहै	अर्जामहै

लङ्

प्र० पु०	आर्जत[1]	आर्जेताम्	आर्जन्त
म० ,,	आर्जथाः	आर्जेथाम्	आर्जध्वम्
उ० ,,	आर्जे	आर्जावहि	आर्जामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	अर्जेत	अर्जेयाताम्	अर्जेरन्
म० ,,	अर्जेथाः	अर्जेयाथाम	अर्जेध्वम्
उ० ,,	अर्जेय	अर्जेवहि	अर्जेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अर्जिषीष्ट	अर्जिषीयास्ताम्	अर्जिषीरन्

1. "आडजादीनाम्" "आटश्च"। एवं लुङ् में तथा लृङ् में भी होगा।

म० ,,	आर्जिषीष्ठाः	आर्जिषीयास्थाम	आर्जिषीध्वम्
उ० ,,	आर्जिषीय	आर्जिषीवहि	आर्जिषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	आर्जिष्ट	आर्जिषाताम्	आर्जिषत
म० ,,	आर्जिष्ठाः	आर्जिषाथाम्	आर्जिध्वम्
उ० ,,	आर्जिषि	आर्जिष्वहि	आर्जिष्महि

लृङ्

प्र० पु०	आर्जिष्यत	आर्जिष्येताम्	आर्जिष्यन्त
म० ,,	आर्जिष्यथाः	आर्जिष्येथाम्	आर्जिष्यध्वम्
उ० ,,	आर्जिष्ये	आर्जिष्यावहि	आर्जिष्यामहि

१९८. ऋजि—भर्जने। आत्मनेपदी सेट्।

लट्

प्र० पु०	ऋञ्जते[1]	ऋञ्जेते	ऋञ्जन्ते
म० ,,	ऋञ्जसे	ऋञ्जेथे	ऋञ्जध्वे
उ० ,,	ऋञ्जे	ऋञ्जावहे	ऋञ्जामहे

लिङ्

प्र० पु०	ऋञ्जाञ्चक्रे[2]	ऋञ्जाञ्चक्राते	ऋञ्जाञ्चक्रिरे
म० ,,	ऋञ्जाञ्चकृषे	ऋञ्जाञ्चक्राथे	ऋञ्जाञ्चकृध्वे
उ० ,,	ऋञ्जाञ्चक्रे	ऋञ्जाञ्चकृवहे	ऋञ्जाञ्चकृमहे

लुट्

प्र० पु०	ऋञ्जिता	ऋञ्जितारौ	ऋञ्जितारः

1. इदित् होने से नुम् अनुस्वार परसवर्ण, उपधा में लघु न होने से गुणाभाव।

2. संयोगपरक होने से ऋकार गुरु है, अतः "इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः" से आम्, कृ का अनुप्रयोग।

म० ,,	ऋञ्जितासे	ऋञ्जितासाथे	ऋञ्जिताध्वे
उ० ,,	ऋञ्जिताहे	ऋञ्जितास्वहे	ऋञ्जितास्महे
		लृट्	
प्र० पु०	ऋञ्जिष्यते	ऋञ्जिष्येते	ऋञ्जिष्यन्ते
म० ,,	ऋञ्जिष्यसे	ऋञ्जिष्येथे	ऋञ्जिष्यध्वे
उ० ,,	ऋञ्जिष्ये	ऋञ्जिष्यावहे	ऋञ्जिष्यामहे
		लोट्	
प्र० पु०	ऋञ्जताम	ऋञ्जेताम्	ऋञ्जन्ताम्
म० ,,	ऋञ्जस्व	ऋञ्जेथाम्	ऋञ्जध्वम्
उ० ,,	ऋञ्जै	ऋञ्जावहै	ऋञ्जामहै
		लङ्	
प्र० पु०	आर्ञ्जत	आर्ञ्जेताम्	आर्ञ्जन्त
म० ,,	आर्ञ्जथाः	आर्ञ्जेथाम्	आर्ञ्जध्वम्
उ० ,,	आर्ञ्जे	आर्ञ्जावहि	आर्ञ्जामहि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	ऋञ्जेत	ऋञ्जेयाताम्	ऋञ्जेरन्
म० ,,	ऋञ्जेथाः	ऋञ्जेयाथाम्	ऋञ्जेध्वम्
उ० ,,	ऋञ्जेय	ऋञ्जेवहि	ऋञ्जेमहि
		आशीर्लिङ्	
प्र० पु०	ऋञ्जिषीष्ट	ऋञ्जिषीयास्ताम्	ऋञ्जिषीरन्
म० ,,	ऋञ्जिषीष्ठाः	ऋञ्जिषीयास्थाम्	ऋञ्जिषीध्वम्
उ० ,,	ऋञ्जिषीय	ऋञ्जिषीवहि	ऋञ्जिषीमहि
		लुङ्	
प्र० पु०	आर्ञ्जिष्ट[1]	आर्ञ्जिषाताम्	आर्ञ्जिषत

1. "आडजादीनाम्" "आटश्च" ।

म० ,,	आञ्जिष्ठाः	आञ्जिषाथाम्	आञ्जिध्वम्
उ० ,,	आञ्जिषि	आञ्जिष्वहि	आञ्जिष्महि

लृङ्

प्र० पु०	आञ्जिष्यत	आञ्जिष्येताम्	आञ्जिष्यन्त
म० ,,	आञ्जिष्यथाः	आञ्जिष्येथाम्	आञ्जिष्यध्वम्
उ० ,,	आञ्जिष्ये	आञ्जिष्यावहि	आञ्जिष्यामहि

१९९. भृजो—भर्जने। आ. प. सेट्।

दशलकारेषु—भर्जते। बभृजे। भर्जिता। भर्जिष्यते। भर्जताम्। अभर्जत। भर्जेत। भर्जिषीष्ट। अभर्जिष्ट। अभर्जिष्यत।

२००. एजृ—दीप्तौ। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—एजते। एजाञ्चक्रे। एजिता। एजिष्यते। एजताम्। ऐजत। एजेत। एजिषीष्ट। ऐजिष्ट। ऐजिष्यत।

२०१. भ्रेजृ—दीप्तौ। आ. प. सेट्।

दशलकारेषु—भ्रेजते। बिभ्रेजे। भ्रेजिता। भ्रेजिष्यते। भ्रेजताम्। अभ्रेजत। भ्रेजेत।। भ्रेजिषीष्ट। अभ्रेजिष्ट। अभ्रेजिष्यत्।

२०२. भ्राजृ[1]—दीप्तौ। आ. प. सेट्।

दशलकारेषु—भ्राजते। बभ्राजे। भ्राजिता। भ्राजिष्यते। भ्राजताम्। अभ्राजत। भ्राजेत। भ्राजिषीष्ट। अभ्राजिष्ट। अभ्राजिष्यत।

२०३. वेष्ट—वेष्टने। आत्म० सेट्।

दशलकारेषु—वेष्टते। विवेष्ट। वेष्टिता। वेष्टिष्यते। वेष्टताम्।

1. "इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः" से आम्।

2. क्त—भ्राजितः। क्तवतु—भ्राजितवान्। क्त्वा—भ्राजित्वा। तुमुन्—भ्राजितुम्। णिच्—भ्राजयते। सन्—बिभ्राजिषते। यङ्—बाभ्राज्यते। क्विप्—भ्राट्।

अवेष्टत । वेष्टेत । वेष्टिषीष्ट । अवेष्टिष्ट । अवेष्टिष्यत[1] ।

२०४. चेष्ट—चेष्टायाम् । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु चेष्टते । चिचेष्टे । चेष्टिता । चेष्टिष्यते । चेष्टताम् । अचेष्टत । चेष्टेत । चेष्टिषीष्ट । अचेष्टिष्ट । अचेष्टिष्यत ।

२०५. स्फुट—विकसने । आत्म. सेट् ।

दशलकारेषु—स्फोटते । पुस्फुटे । स्फोटिता । स्फोटिष्यते । स्फोटताम् । अस्फोटत । स्फोटेत । स्फोटिषीष्ट । अस्फोटिष्ट । अस्फोटिष्यत[2] ।

२०६. टुवेपृ[3]—कम्पने । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वेपते । विवेपे[4] । वेपिता । वेपिष्यते । वेपताम् । अवेपत । वेपेत । वेपिषीष्ट । अवेपिष्ट । अवेपिष्यत ।

२०७. कपि—चलने । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कम्पते[5] । चकम्पे । कम्पिता । कम्पिष्यते । कम्पताम् । अकम्पत । कम्पेत । कम्पिषीष्ट । अकम्पिष्ट । अकम्पिष्यत ।

---

1. क्त—वेष्टितः । क्त्वा—वेष्टित्वा । तुमुन्—वेष्टितुम् । तव्य—वेष्टितव्य । अनीय—वेष्टनीयम् । शानच्—वेष्टमानः । णिच्—वेष्टयति । लुङ्—अविवेष्टत । सन्—विवेष्टिषते । यङ्—वेवेष्ट्यते ।

2. क्त—स्फुटितः । क्त्वा—स्फुटित्वा । तुमुन्—स्फोटितुम् । तव्य—स्फोटितव्यम् । शानच्—स्फुटमानः । णिच्—स्फोटयति, लुङ्—अपुस्फुटत । सन्—पुस्फोटिषते । यङ्—पोस्फुट्यते ।

3. टु अनुबन्ध अथुच् प्रत्यय के लिये है—वेपथुः (ट्वितोऽथुच्) ।

4. "ह्रस्वः" एच इग्घ्रस्वादेशे" ।

5. "इदितो नुम् धातोः" । क्त—कम्पितः । क्त्वा—कम्पित्वा । तुमुन्—कम्पितुम् । तव्य—कम्पितव्यम् । शानच्—कम्पमानः । णिच्—कम्पयति । लुङ्—अचकम्पत । सन्—चिकम्पिषते ।

२०८. भिक्ष - भिक्षायामलाभे लाभे च। आ० प० सेट्।

दशलकारेषु — भिक्षते। बिभिक्षे। भिक्षिता। भिक्षिष्यते। भिक्षताम्। अभिक्षत। भिक्षेत। भिक्षिषीष्ट। अभिक्षिष्ट। अभिक्षिष्यत।

२०९. दीक्ष—मौण्ड्येज्योपनयन नियमव्रतादेशेषु। आ. प. सेट्।

दशलकारेषु—दीक्षते। दिदीक्षे। दीक्षिता। दीक्षिष्यते। दीक्षताम्। अदीक्षत। दीक्षेत। दीक्षिषीष्ट। अदीक्षिष्ट। अदीक्षिष्यत।

२१०. भाष[1]—व्यक्तायां वाचि। आ० प० सेट्।

दशलकारेषु—भाषते। बभाषे। भाषिता। भाषिष्यते। भाषताम्। अभाषत। भाषेत। भाषिषीष्ट। अभाषिष्ट। अभाषिष्यत।

२११. वर्ष—स्नेहने। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—वर्षते। ववर्षे। वर्षिता। वर्षिष्यते। वर्षताम्। अवर्षत्। वर्षेत। वर्षिषीष्ट। अवर्षिष्ट। अवर्षिष्यत।

२१२. ईह—चेष्टायाम्। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—ईहते। ईहाञ्चक्रे[2]। ईहिता। ईहिष्यते। ईहताम्। ऐहत। ईहेत। ईहिषीष्ट। ऐहिष्ट। ऐहिष्यत।

२१३. गर्ह—कुत्सायाम्[3]। आ० प० सेट्।

दशलकारेषु—गर्हते। जगर्हे। गर्हिता। गर्हिष्यते। गर्हताम्। अगर्हत[4]।

---

1. क्त—भाषितम्। क्त्वा—भाषित्वा। तुमुन्—भाषितुम्। ल्युट्—भाषणम्। तव्य—भाषितव्यम्। शानच्—भाषमाणः। णिच्—भाषयति। सन्—बिभाषिषते। यङ्—बाभाष्यते। कर्मवा०—भाष्यते। 'भाषा' शब्द भी इसी से है।

2. इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः" से आम्।

3. कुत्सा—निन्दा।

4. क्त—गर्हितः। क्त्वा—गर्हित्वा। तुमुन्—गर्हितुम्। तव्य—गर्हितव्यः। अनीय—गर्हणीयः। शानच्—गर्हमाणः। णिच्—गर्हयते। लुङ्—अजगर्हत। सन्—जिगर्हिषते। यङ्—जागर्ह्यते। कर्मवा०—गर्ह्यते। स्त्रियां भावे—गर्हा।

गर्हेत । गर्हिषीष्ट । अगर्हिष्ट । अगर्हिष्यत ।

२१४. गल्ह—कुत्सायाम । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—गल्हते । जगल्हे । गल्हिता । गल्हिष्यते । गल्हताम् । अगल्हत । गल्हेत । गल्हिषीष्ट । अगल्हिष्ट । अगल्हिष्यत ।

२१५. काशृ—दीप्तौ । आ० सेट् ।

दशलकारेषु—काशते । चकाशे । काशिता । काशिष्यते । काशताम् । अकाशत । काशेत । काशिषीष्ट । अकाशिष्ट । अकाशिष्यत[1] ।

२१६. ऊह—वितर्के । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—ऊहते । ऊहाञ्चक्रे । ऊहिता । ऊहिष्यते । ऊहताम् । औहत । ऊहेत । ऊहिषीष्ट । औहिष्ट । औहिष्यत ।

२१७. अय—गतौ । आ० प० सेट् ।

लट्

प्र० पु०	अयते	अयेते	अयन्ते
म० ,,	अयसे	अयेथे	अयध्वे
उ० ,,	अये	अयावहे	अयामहे

लिट्

प्र० पु०	अयाञ्चक्रे[2]	अयाञ्चक्राते	अयाञ्चक्रिरे
म० ,,	अयाञ्चकृषे	अयाञ्चक्राथे	अयाञ्चकृध्वे
उ० ,,	अयाञ्चक्रे	अयाञ्चकृवहे	अयाञ्चकृमहे

लुट्

प्र० पु०	अयिता	अयितारौ	अयितारः

1. क्त—काशितः । क्त्वा—काशित्वा । तुमुन्—काशितुम् । तव्य—काशितव्यम् । अनीय—काशनीयम् । शानच्—काशमानः । णिच्—काशयते, लुङ्—अचकाशत । सन्—चिकाशिषते । प्रकाशः (घञ्) ।

2. "दयायासश्च" से आम् । "उपसर्गस्यायतौ" से र को ल प्लायते ।

म० ,,	अयितासे	अयितासाथे	अयिताध्वे
उ० ,,	अयिताहे	अयितास्वहे	अयितास्महे

लृट्

प्र० पु०	अयिष्यते	अयिष्येते	अयिष्यन्ते
म० ,,	अयिष्यसे	अयिष्येथे	अयिष्यध्वे
उ० ,,	अयिष्ये	अयिष्यावहे	अयिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	अयताम्	अयेताम्	अयन्ताम्
म० ,,	अयस्व	अयेथाम्	अयध्वम्
उ० ,,	अयै	अयावहै	अयामहै

लङ्

प्र० पु०	आयत	आयेताम्	आयन्त
म० ,,	आयथाः	आयेथाम्	आयध्वम्
उ० ,,	आये	आयावहि	आयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	अयेत	अयेयाताम्	अयेरन्
म० ,,	अयेथाः	अयेयाथाम्	अयेध्वम्
उ० ,,	अयेय	अयेवहि	अयेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अयिषीष्ट	आयिषीयास्ताम्	अयिषीरन्
म० ,,	अयिषीष्ठाः	अयिषीयास्थाम्	अयिषढ्वम्–ध्वम्
उ० ,,	अयिषीय	अयिषीवहि	अयिषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	आयिष्ट	आयिषाताम्	आयिषत

म० ,,	आयिष्ठाः	आयिषाथाम्	आयिढ्वम्–ध्वम्
उ० ,,	आयिषि	आयिष्वहि	आयिष्महि

लृङ्

प्र० पु०	आयिष्यत	आयिष्येताम्	आयिष्यन्त
म० ,,	आयिष्यथाः	आयिष्येथाम्	आयिष्यध्वम्
उ० ,,	आयिष्ये	आयिष्यावहि	आयिष्यामहि

२१८. द्युत—दीप्तौ । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—द्योतते । दिद्युते । द्योतिता । द्योतिष्यते । द्योतताम् । अद्योतत । द्योतेत । द्योतिषीष्ट । अद्युतत्[1] अद्योतिष्ट । अद्योतिष्यत ।

२१९. श्विता—वर्णे । आ० प० सेट ।

दशलकारेषु—श्वेतते । शिश्विते । श्वेतिता । श्वेतिष्यते । श्वेतताम् । अश्वेतत । श्वेतेत । श्वेतिषीष्ट । अश्वितत्-अश्वेतिष्ट । अश्वेतिष्यत ।

२२०. ञिमिदा[2]—स्नेहने । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—मेदते । मिमिदे । मेदिता । मेदिष्यते । मेदताम् । अमेदत । मेदेत । मेदिषीष्ट । अमिदत्[3]-अमेदिष्ट । अमेदिष्यत ।

२२१. ञिष्विदा—स्नेहनमोचनयोः । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—स्वेदते । सिष्विदे । स्वेदिता । स्वेदिष्यते । स्वेदताम् ।

---

1. "द्युद्भ्यो लुङि" विकल्प से परस्मैपद । पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु" च्लि को अङ्, अङ् के ङित् होने से गुणाभाव ।

2. "आदिर्ञिटुडवः"से ञि इत् । आकार भी इत् है । आकार इत् होने से निष्ठा में इट् निषेध होगा तथा ञि इत् होने से "ञीतः क्तः" से क्त में नत्व होगा, मिन्नः, स्विन्नः, क्ष्विण्णः रूप होंगे ।

3. कृप् सामर्थ्ये तक सभी धातुओं में लुङ् में विकल्प से परस्मैपद और अङ् होता जायगा ।

अस्वेदत । स्वेदेत । स्वेदिषीष्ट । अस्विदत्-अस्वेदिष्ट । अस्वेदिष्यत ।

२२२. ञिक्ष्विदा—स्नेहनमोचनयोः । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—क्ष्वेदते । चिक्ष्विदे । क्ष्वेदिता । क्ष्वेदिष्यते । क्ष्वेदताम् । अक्ष्वेदत । क्ष्वेदेत । क्ष्वेदिषीष्ट । अक्ष्विदत्-अक्ष्वेदिष्ट । अक्ष्वेदिष्यत ।

२२३. घुट—परिवर्तने । आत्म० सेट् ।

दशलकारेषु—घोटते । जुघुटे । घोटिता । घोटिष्यते । घोटताम् । अघोटत । घोटेत । घोटिषीष्ट । अघुटत्—अघोटिष्ट । अघोटिष्यत[1] ।

२२४. क्षुभ—संचलने । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—क्षोभते । चुक्षुभे । क्षोभिता । क्षोभिष्यते । क्षोभताम् । अक्षोभत । क्षोभेत । क्षोभिषीष्ट । अक्षुभत्-अक्षोभिष्ट । अक्षोभिष्यत ।

२२५. णभ—हिंसायाम् । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—नभते । नेभे[2] । नभिता । नभिष्यते । नभताम् । अनभत । नभेत । नभिषीष्ट । अनभिष्ट । अनभिष्यत ।

२२६. तुभ—हिंसायाम् । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—तोभते । तुतुभे । तोभिता । तोभिष्यते । तोभताम् । अतोभत । तोभेत । तोभिषीष्ट । अतुभत्—अतोभिष्ट । अतोभिष्यत् ।

२२७. स्रंसु—अवस्रंसने । आत्मनेपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	स्रंसते	स्रंसेते	स्रंसन्ते
म० ,,	स्रंससे	स्रंसेथे	स्रंसध्वे
उ० ,,	स्रंसे	स्रंसावहे	स्रंसामहे

1. क्त—घुटितः । क्त्वा—घोटित्वा । णिच्—घोटयेते । सन्—जुघोटिषते । यङ्—जोघोट्यते । णिच् लुङ्—अजूघटत् ।

2. "अतः एक हल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि" से एत्व और अभ्यास लोप ।

लिट्

प्र० पु०	सस्रंसे	सस्रंसाते	सस्रंसिरे
म० ,,	सस्रंसिषे	सस्रंसाथे	सस्रंसिध्वे
उ० ,,	सस्रंसे	सस्रंसिवहे	सस्रंसिमहे

लुट्

प्र० पु०	स्रंसिता	स्रंसितारौ	स्रंसितारः
म० ,,	स्रंसितासे	स्रंसितासाथे	स्रंसिताध्वे
उ० ,,	स्रंसिताहे	स्रंसितास्वहे	स्रंसितास्महे

लृट्

प्र० पु०	स्रंसिष्यते	स्रंसिष्येते	स्रंसिष्यन्ते
म० ,,	स्रंसिष्यसे	स्रंसिष्येथे	स्रंसिष्यध्वे
उ० ,,	स्रंसिष्ये	स्रंसिष्यावहे	स्रंसिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	स्रंसताम्	स्रंसेताम्	स्रंसन्ताम्
म० ,,	स्रंसस्व	स्रंसेथाम्	स्रंसध्वम्
उ० ,,	स्रंसै	स्रंसावहै	स्रंसामहै

लङ्

प्र० पु०	अस्रंसत	अस्रंसेताम्	अस्रंसन्त
म० ,,	अस्रंसथाः	अस्रंसेथाम्	अस्रंसध्वम्
उ० ,,	अस्रंसे	अस्रंसावहि	अस्रंसामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्रंसेत	स्रंसेयाताम्	स्रंसेरन्
म० ,,	स्रंसेथाः	स्रंसेयाथाम्	स्रंसेध्वम्
उ० ,,	स्रंसेय	स्रंसेवहि	स्रंसेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	स्रंसिषीष्ट	स्रंसिषीयास्ताम्	स्रंसिषीरन्

म० ,,	सृंसिषीष्ठाः	सृंसिषीयास्थाम्	सृंसिषीध्वम्
उ० ,,	सृंसिषीय	सृंसिषीवहि	सृंसिषीमहि

लुङ् (परस्मैपद)

प्र० पु०	असृसत्[1]	असृसताम्	असृसन्
म० ,,	असृसः	असृसतम्	असृसत
उ० ,,	असृसम्	असृसाव	असृसाम

आत्मनेपद

प्र० पु०	असंसिष्ट	असंसिषाताम्	असंसिषत
म० ,,	असंसिष्ठाः	असंसिषाथाम्	असंसिध्वम्
उ० ,,	असंसिषि	असंसिष्वहि	असंसिष्महि

लृङ्

प्र० पु०	असंसिष्यत	असंसिष्येताम्	असंसिष्यन्त
म० ,,	असंसिष्यथाः	असंसिष्येथाम्	असंसिष्यध्वम्
उ० ,,	असंसिष्ये	असंसिष्यावहि	असंसिष्यामहि

२२८. ध्वंसु—अवस्रंसने। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—ध्वंसते। दध्वंसे। ध्वंसिता। ध्वंसिष्यते। ध्वंसताम्। अध्वंसत। ध्वंसेत। ध्वंसिषीष्ट। अध्वसत्-अध्वंसिष्ट। अध्वंसिष्यत।

२२९. भ्रंसु—अवस्रंसने। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु - भ्रंसते। बभ्रंसे। भ्रंसिता। भ्रंसिष्यते। भ्रंसताम्। अभ्रंसत। भ्रंसेत। भ्रंसिषीष्ट। अभ्रसत्-अभ्रंसिष्ट। अभ्रंसिष्यत।

२३०. स्रम्भु—विश्वासे। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु स्रम्भते। सस्रम्भे। स्रम्भिता। स्रम्भिष्यते। स्रम्भताम्।

1. च्लि को अङ् करने पर अङ् के ङित होने से "अनिदिताम्—" से उपधा के नकार का लोप।

असृम्भत । सृम्भेत् । सृम्भिषीष्ट । असृभत्[1]-असृम्भिष्ट । असृम्भिष्यत ।

२३१. वृतु—वर्तने । आत्मनेपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	वर्तते[2]	वर्तेते	वर्तन्ते
म० ,,	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उ० ,,	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लिट्

प्र० पु०	ववृते	ववृताते	ववृतिरे
म० ,,	ववृतिषे	ववृताथे	ववृतिध्वे
उ० ,,	ववृते	ववृतिवहे	ववृतिमहे

लुट्

प्र० पु०	वर्तिता	वर्तितारौ	वर्तितारः
म० ,,	वर्तितासे	वर्तितासाथे	वर्तिताध्वे
उ० ,,	वर्तिताहे	वर्तितास्वहे	वर्तितास्महे

लृट् (परस्मैपद)

प्र० पु०	वर्त्स्यति[3]	वर्त्स्यतः	वर्त्स्यन्ति
म० ,,	वर्त्स्यसि	वर्त्स्यथः	वर्त्स्यथ
उ० ,,	वर्त्स्यामि	वर्त्स्यावः	वर्त्स्यामः

आत्मनेपद

प्र० पु०	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
म० ,,	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उ० ,,	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

1. परस्मैपद, अङ्, नकारलोप ।

2. लघूपधगुण ।

3. "वृद्भ्यः स्यसनोः" से परस्मैपद का विकल्प, परस्मैपद में "न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः" से इट् का निषेध ।

लोट्

प्र० पु०	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
म० ,,	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उ० ,,	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

लङ्

प्र० पु०	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
म० ,,	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उ० ,,	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
म० ,,	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उ० ,,	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	वर्तिषीष्ट	वर्तिषीयास्ताम्	वर्तिषीरन्
म० ,,	वर्तिषीष्ठाः	वर्तिषीयास्थाम्	वर्तिषीध्वम्
उ० ,,	वर्तिषीय	वर्तिषीवहि	वर्तिषीमहि

लुङ् परस्मैपद

प्र० पु०	अवृतत्[1]	अवृतताम	अवृतन्
म० ,,	अवृतः	अवृततम्	अवृतत
उ० ,,	अवृतम्	अवृताव	अवृताम

1. परस्मैपद, च्लि को अङ्, गुणाभाव। प्रवर्तते—काम में लगता है। अनुवर्तते—अनुसरण करता है। दुर्वर्तते—दुराचरण करता है। आवर्तते—बार बार होता है। निवर्तते—लौटता है। विवर्तते—अनेक रूपों में प्रकट होता है। तुमुन्—वर्तितुम्। क्तिन्—वृत्ति। तव्य—वर्तनीयम्। णिच्—वर्तयते। सन्—विवर्तिषते, विवृत्सति। यङ—वरीवृत्यते। शानच्—वर्तमानः।

आत्मनेपद

प्र० पु०	अवर्तिष्ट	अवर्तिषाताम्	अवर्तिषत
म० ,,	अवर्तिष्ठाः	अवर्तिषाथाम्	अवर्तिध्वम्
उ० ,,	अवर्तिषि	अवर्तिष्वहि	अवर्तिष्महि

लृङ् परस्मैपद

प्र० पु०	अवर्त्स्यत्	अवर्त्स्यताम्	अवर्त्स्यन्
म० ,,	अवर्त्स्यः	अवर्त्स्यतम्	अवर्त्स्यत
उ० ,,	अवर्त्स्यम्	अवर्त्स्याव	अवर्त्स्याम

आत्मनेपद

प्र० पु०	अवर्तिष्यत	अवर्तिष्येताम्	अवर्तिष्यन्त
म० ,,	अवर्तिष्यथाः	अवर्तिष्येथाम्	अवर्तिष्यध्वम्
उ० ,,	अवर्तिष्ये	अवर्तिष्यावहि	अवर्तिष्यामहि

२३२. वृधु—वृद्धौ । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वर्धते । ववृधे । वर्धिता । वर्त्स्यति, वर्धिष्यते । वर्धताम् । अवर्धत । वर्धेत । वर्धिषीष्ट । अवृधत्-अवर्धिष्ट । अवर्धिष्यत ।

२३३. शृधु—शब्दकुत्सायाम् । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—शर्धते । शशृधे । शर्धिता । शर्त्स्यति । शर्धिष्यते । शर्धताम् । अशर्धत । शर्धेत । शर्धिषीष्ट । अशृधत्—अशर्धिष्ट । अशर्त्स्यत्—अशर्धिष्यत ।

२३४. स्यन्दू—प्रस्रवणे । आत्म० सेट् ।

दशलकारेषु—स्यन्दते । सस्यन्दे । स्यन्दिता-स्यन्ता । स्यन्दिष्यते-स्यन्त्स्यते । स्यन्दताम् । अस्यन्दत[1] । स्यन्देत । स्यन्दिषीष्ट-स्यन्त्सीष्ट ।

---

1. च्लि को अङ् "अनिदिताम् हल उपधायाः क्ङिति" से न लोप ।

अस्यन्दिष्ट-अस्यन्त । अस्यन्त्स्यत्[1], अस्यन्दिष्यत-असन्त्स्यत ।

७३५. कृपू[2]—सामर्थ्ये । आत्मनेपदी, सेट् ।

प्र० पु०	कल्पते[3]	कल्पेते	कल्पन्ते
म० ,,	कल्पसे	कल्पेथे	कल्पध्वे
उ० ,,	कल्पे	कल्पावहे	कल्पामहे

लिट्

प्र० पु०	चक्लृपे	चक्लृपाते	चक्लृपिरे
म० ,,	चक्लृपिषे, चक्लृप्से	चक्लृपाथे	चक्लृपिध्वे
उ० ,,	चक्लृपे	चक्लृपिवहे[4]-चक्लृप्वहे	चक्लृपिमहे-चक्लृप्महे

लुट् परस्मैपद

प्र० पु०	कल्प्ता[5]	कल्प्तारौ	कल्प्तारः
म० ,,	कल्प्तासि	कल्प्तास्थः	कल्प्तास्थ
उ० ,,	कल्प्तास्मि	कल्प्तास्वः	कल्प्तास्मः

लुट् आत्मनेपद (इट्)

प्र० पु०	कल्पिता	कल्पितारौ	कल्पितारः
म० ,,	कल्पितासे	कल्पितासाथे	कल्पिताध्वे

1. "वृद्भ्यः स्यसनोः" "न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः" ऊदिल्लक्षणमन्तरङ्गमपि विकल्पं बाधित्वा न वृद्भ्यश्चतुर्भ्य इत्यत्र चतुर्ग्रहणसामर्थ्यात् न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः, इति निषेधः । "अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु" से षत्व—अनुष्यन्दते, अनुस्यन्दते वा अलम् ।

2. ऊकार अनुबन्ध "स्वरतिसूति"—के इट् विकल्प के लिये है ।

3. "कृपो रोलः" से रेफ को लत्व ।

4. "स्वरतिसूति"—से इट् विकल्प ।

5. "लुटि च क्लृपः" से परस्मैपद, "तासि च क्लृपः" से इट् का निषेध ।

उ० ,,	कल्पिताहे	कल्पितास्वहे	कल्पितास्महे

(इट् अभाव)

प्र० पु०	कल्प्ता	कल्प्तारौ	कल्प्तारः
म० ,,	कल्प्तासे	कल्प्तासाथे	कल्प्ताध्वे
उ० ,,	कल्प्ताहे	कल्प्तास्वहे	कल्प्तास्महे

लृट् परस्मैपद

प्र० पु०	कल्प्स्यति	कल्प्स्यतः	कल्प्स्यन्ति
म० ,,	कल्प्स्यसि	कल्प्स्यथः	कल्प्स्यथ
उ० ,,	कल्प्स्यामि	कल्प्स्यावः	कल्प्स्यामः

लृट् आत्मनेपद (इट्)

प्र० पु०	कल्पिष्यते	कल्पिष्येते	कल्पिष्यन्ते
म० ,,	कल्पिष्यसे	कल्पिष्येथे	कल्पिष्यध्वे
उ० ,,	कल्पिष्ये	कल्पिष्यावहे	कल्पिष्यामहे

(इट् अभाव)

प्र० पु०	कल्प्स्यते	कल्प्स्येते	कल्प्स्यन्ते
म० ,,	कल्प्स्यसे	कल्प्स्येथे	कल्प्स्यध्वे
उ० ,,	कल्प्स्ये	कल्प्स्यावहे	कल्प्स्यामहे

लोट्

प्र० पु०	कल्पताम्	कल्पेताम्	कल्पन्ताम्
म० ,,	कल्पस्व	कल्पेथाम्	कल्पध्वम्
उ० ,,	कल्पै	कल्पावहै	कल्पामहै

लङ्

प्र० पु०	अकल्पत	अकल्पेताम्	अकल्पन्त
म० ,,	अकल्पथाः	अकल्पेथाम्	अकल्पध्वम्
उ० ,,	अकल्पे	अकल्पावहि	अकल्पामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	कल्पेत	कल्पेयाताम्	कल्पेरन्
म० ,,	कल्पेथाः	कल्पेयाथाम्	कल्पेध्वम्
उ० ,,	कल्पेय	कल्पेवहि	कल्पेमहि

आशीर्लिङ् (इट्)

प्र० पु०	कल्पिषीष्ट	कल्पिषीयास्ताम्	कल्पिषीरन्
म० ,,	कल्पिषीष्ठाः	कल्पिषीयास्थाम्	कल्पिषीध्वम्
उ० ,,	कल्पिषीय	कल्पिषीवहि	कल्पिषीमहि

(इट् अभाव)

प्र० पु०	क्लृप्सीष्ट[1]	क्लृप्सीयास्ताम्	क्लृप्सीरन्
म० ,,	क्लृप्सीष्ठाः	क्लृप्सीयास्थाम्	क्लृप्सीध्वम्
उ० ,,	क्लृप्सीय	क्लृप्सीवहि	क्लृप्सीमहि

लुङ् (इट्)

प्र० पु०	अकल्पिष्ट	अकल्पिषाताम्	अकल्पिषत
म० ,,	अकल्पिष्ठाः	अकल्पिषाथाम्	अकल्पिध्वम्
उ० ,,	अकल्पिषि	अकल्पिष्वहि	अकल्पिष्महि

(इट् अभाव)

प्र० पु०	अक्लृप्त[2]	अक्लृप्साताम्	अक्लृप्सन्त
म० ,,	अक्लृप्थाः	अक्लृप्साथाम्	अक्लृप्ध्वम्
उ० ,,	अक्लृप्सि	अक्लृप्स्वहि	अक्लृप्स्महि

लृङ् परस्मैपद

प्र० पु०	अकल्प्स्यत्	अकल्प्स्यताम्	अकल्प्स्यन्

1. "लिङ् सिचावात्मनेपदेषु" सीयुट् के कित् होने से गुण न हुआ। एवं लुङ् में भी समझें।

2. "झलो झलि" से सलोप, सिच् के कित् होने से गुणाभाव।

म० ,,	अकल्प्स्यः	अकल्प्स्यतम्	अकल्प्स्यत
उ० ,,	अकल्प्स्यम्	अकल्प्स्याव	अकल्प्स्याम

आत्मनेपद (इट्)

प्र० पु०	अकल्पिष्यत	अकल्पिष्येताम्	अकल्पिष्यन्त
म० ,,	अकल्पिष्यथाः	अकल्पिष्येथाम्	अकल्पिष्यध्वम्
उ० ,,	अकल्पिष्ये	अकल्पिष्यावहि	अकल्पिष्यामहि

(इट् अभाव)

प्र० पु०	अकल्प्स्यत[1]	अकल्प्स्येताम्	अकल्प्स्यन्त
म० ,,	अकल्प्स्यथाः	अकल्प्स्येथाम्	अकल्प्स्यध्वम्
उ० ,,	अकल्प्स्ये	अकल्प्स्यावहि	अकल्प्स्यामहि

२३६. दद—दाने। आत्मनेपदी, सेट्

दशलकारेषु—ददते। ददे[2]। ददिता। ददिष्यते। ददताम्। अददत। ददेत। ददिषीष्ट। अददिष्ट। अददिष्यत।

२३७. त्रपूष्—लज्जायाम्। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—त्रपते। त्रेपे[3]। त्रपिता-त्रप्ता[4]। त्रपिष्यते-त्रप्स्यते। त्रपताम्। अत्रपत। त्रपेत। त्रपिषीष्ट-त्रप्सीष्ट। अत्रपिष्ट-अत्रप्त[5]। अत्रपिष्यत-अत्रप्स्यत।

२३८. घट—चेष्टायाम्। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—घटते। जघटे। घटिता। घटिष्यते। घटताम्। अघटत।

---

1. क्त—कल्पितः, क्लृप्तः। यङ्—चलीक्लृप्यते।

2. "नशसदद वादि गुणानाम्।

3. "तृफल भजत्रपश्च" से एत्वाभ्यासलोप।

4. "स्वरतिसूति—" से इट् का विकल्प। षित् होने से "षिद्भिदादिभ्योऽङ्" से अङ् होकर 'त्रपा' शब्द बनता है।

5. "झलोझलि" से सलोप। अत्रप्साताम्।

घटेत । घटिषीष्ट । अघटिष्ट । अघटिष्यत ।

२३९. व्यथ—भयसञ्चलनयोः । आ० सेट् ।

दशलकारेषु—व्यथते[1] । विव्यथे[2] । व्यथिता । व्यथिष्यते । व्यथताम् । अव्यथत । व्यथेत । व्यथिषीष्ट । अव्यथिष्ट । अव्यथिष्यत ।

२४०. प्रथ—प्रख्याने । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—प्रथते । पप्रथे । प्रथिता । प्रथिष्यते । प्रथताम् । अप्रथत । प्रथेत । प्रथिषीष्ट । अप्रथिष्ट । अप्रथिष्यत[3] ।

२४१. प्रस—विस्तारे । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—प्रसते । पप्रसे । प्रसिता । प्रसिष्यते । प्रसताम् । अप्रसत । प्रसेत । प्रसिषीष्ट । अप्रसिष्ट । अप्रसिष्यत ।

२४२. म्रद—मर्दने । आत्मनेपद, सेट् ।

दशलकारेषु—म्रदते । मम्रदे । म्रदिता । म्रदिष्यते । म्रदताम् । अम्रदत । म्रदेत । म्रदिषीष्ट । अम्रदिष्ट । अम्रदिष्यत ।

२४३. स्खद—स्खदने । आ० प० सेट् ।

दशलकारेषु—स्खदते । चस्खदे[4] । स्खदिता । स्खदिष्यते । स्खदताम् । अस्खदत । स्खदेत । स्खदिषीष्ट । अस्खदिष्ट । अस्खदिष्यत ।

२४४. क्रप—कृपायां गतौ च । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—क्रपते । चक्रपे । क्रपिता । क्रपिष्यते । क्रपताम् । अक्रपत । क्रपेत । क्रपिषीष्ट । अक्रपिष्ट । अक्रपिष्यत ।

---

1. क्तः—व्यथितः । क्त्वा—व्यथित्वा । तुमुन्—व्यथितुम् । तव्य—व्यथितव्यम् । णिच्—व्यथयते । सन्—विव्यथिषते । शानच्—व्यथमानः । व्यथा शब्द इसी से है ।

2. "व्यथो लिटि" से सम्प्रसारण ।

3. 'प्रथा' शब्द इसी से है ।

4. "शर्पूर्वाः खयः" ।

२३५. ञित्वरा—सम्भ्रमे । आत्म-सेट् ।

दशलकारेषु—त्वरते । तत्वरे । त्वरिता । त्वरिष्यते । त्वरताम् । अत्वरत । त्वरेत । त्वरिषीष्ट । अत्वरिष्ट । अत्वरिष्यत[1] ।

२३६. टुभ्राजृ[2]—दीप्तौ । आत्मनेपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	भ्राजते	भ्राजेते	भ्राजन्ते
म० ,,	भ्राजसे	भ्राजेथे	भ्राजध्वे
उ० ,,	भ्राजे	भ्राजावहे	भ्राजामहे

लिट्

प्र० पु०	बभ्राजे	बभ्राजाते	बभ्राजिरे
म० ,,	बभ्राजिषे	बभ्राजाथे	बभ्राजिध्वे
उ० ,,	बभ्राजे	बभ्राजिवहे	बभ्राजिमहे

लुट्

प्र० पु०	भ्राजिता	भ्राजितारौ	भ्राजितारः
म० ,,	भ्राजितासे	भ्राजितासाथे	भ्राजिताध्वे
उ० ,,	भ्राजिताहे	भ्राजितास्वहे	भ्राजितास्महे

लृट्

प्र० पु०	भ्राजिष्यते	भ्राजिष्येते	भ्राजिष्यन्ते
म० ,,	भ्राजिष्यसे	भ्राजिष्येथे	भ्राजिष्यध्वे
उ० ,,	भ्राजिष्ये	भ्राजिष्यावहे	भ्राजिष्यामहे

1. क्त—तूर्णः ('आदितश्च' से इट् निषेध) । क्तवतु—तूर्णवान् । तुमुन्—त्वरितुम् । तव्य—त्वरितव्यम् । णिच्—त्वरयते । सन्—तित्वरिषते ।

2. टु अनुबन्ध 'ट्वितोऽथुच्' से अथुच् प्रत्यय के लिये है—भ्राजथुः । ऋदित् होने से णयन्त लुङ् में उपधाह्रस्व न होगा—अबभ्राजत ।

लोट्

प्र० पु०	भ्राजताम्	भ्राजेताम्	भ्राजन्ताम्
म० ,,	भ्राजस्व	भ्राजेथाम्	भ्राजध्वम्
उ० ,,	भ्राजै	भ्राजावहै	भ्राजामहै

लङ्

प्र० पु०	अभ्राजत	अभ्राजेताम्	अभ्राजन्त
म० ,,	अभ्राजथाः	अभ्राजेथाम्	अभ्राजध्वम्
उ० ,,	अभ्राजे	अभ्राजावहि	अभ्राजामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	भ्राजेत	भ्राजेयाताम्	भ्राजेरन्
म० ,,	भ्राजेथाः	भ्राजेयाथाम्	भ्राजेध्वम्
उ० ,,	भ्राजेय	भ्राजावहि	भ्राजामहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भ्राजिषीष्ट	भ्राजिषीयास्ताम्	भ्राजिषीरन्
म० ,,	भ्राजिषीष्ठाः	भ्राजिषीयास्थाम्	भ्राजिषीरध्वम्
उ० ,,	भ्राजिषीय	भ्राजिषीवहि	भ्राजिषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	अभ्राजिष्ट	अभ्राजिषाताम्	अभ्राजिषत
म० ,,	अभ्राजिष्ठाः	अभ्राजिषाथाम्	अभ्राजिध्वम्
उ० ,,	अभ्राजिषि	अभ्राजिष्वहि	अभ्राजिष्महि

लृङ्

प्र० पु०	अभ्राजिष्यत[1]	अभ्राजिष्येताम्	अभ्राजिष्यन्त

1. भ्राज, भ्राश्, भ्लाश् धातुओं के लिट् में 'फणां सप्तानाम्' से एत्वाभ्यासलोप होकर भ्रेजे, भ्रेशे, भ्लेशे वैकल्पिक रूप भी होंगे। क्त— भ्राजितः। क्त्वा—भ्राजित्वा। तुमुन्—भ्राजितुम्। शानच्—भ्राजमानः। क्विप्—भ्राट्। णिच्—भ्राजयते। सन्—बिभ्राजिषते।

म० ,,	अभ्राजिष्यथाः	अभ्राजिष्येथाम्	अभ्राजिष्यध्वम्
उ० ,,	अभ्राजिष्ये	अभ्राजिष्यावहि	अभ्राजिष्यामहि

२४७. टुभ्राशृ—दीप्तौ । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भ्राशते[1] । भ्रेशे-बभ्राशे । भ्राशिता । भ्राशिष्यते । भ्राशताम् । अभ्राशत । भ्राशेत । भ्राशिषीष्ट । अभ्राशिष्यत ।

२४८. टुभ्लाशृ—दीप्तौ । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भ्लाशते । भ्लेशे-बभ्लाशे । भ्लाशिता । भ्लाशिष्यते भ्लाशताम् । अभ्लाशत । भ्लाशेत । भ्लाशिषीष्ट । अभ्लाशिष्ट । अभ्लाशिष्यत ।

२४९. रमु—क्रीडायाम् । आत्मनेपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	रमते	रमेते	रमन्ते
म० ,,	रमसे	रमेथे	रमध्वे
उ० ,,	रमे	रमावहे	रमामहे

लिट्

प्र० पु०	रेमे[2]	रेमाते	रेमिरे
म० ,,	रेमिषे	रेमाथे	रेमिध्वे
उ० ,,	रेमे	रेमिवहे	रेमिमहे

लुट्

प्र० पु०	रन्ता[2]	रन्तारौ	रन्तारः
म० ,,	रन्तासे	रन्तासाथे	रन्ताध्वे
उ० ,,	रन्ताहे	रन्तास्वहे	रन्तास्महे

लृट्

प्र० पु०	रंस्यते	रंस्येते	रंस्यन्ते

1. एत्वाभ्यास लोप ।

2. अनुस्वार, परसवर्ण ।

म० ,,	रंस्यसे	रंस्येथे	रंस्यध्वे
उ० ,,	रंस्ये	रंस्यावहे	रंस्यामहे

लोट्

प्र० पु०	रमताम्	रमेताम्	रमन्ताम्
म० ,,	रमस्व	रमेथाम्	रमध्वम्
उ० ,,	रमै	रमावहै	रमामहै

लङ्

प्र० पु०	अरमत	अरमेताम्	अरमन्त
म० ,,	अरमथाः	अरमेथाम्	अरमध्वम्
उ० ,,	अरमे	अरमावहि	अरमामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	रमेत	रमेयाताम्	रमेरन्
म० ,,	रमेथाः	रमेयाथाम्	रमेध्वम्
उ० ,,	रमेय	रमेवहि	रमेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	रंसीष्ट	रंसीयास्थाम्	रंसीरन्
म० ,,	रंसीष्ठाः	रंसीयास्थाम्	रंसीध्वम्
उ० ,,	रंसीय	रंसीवहि	रंसीमहि

लुङ्

प्र० पु०	अरंस्त	अरंसाताम्	अरंसत
म० ,,	अरंस्थाः	अरंसाथाम्	अरन्ध्वम्
उ० ,,	अरंसि	अरंस्वहि	अरंस्महि

1. विरमति-विराम करता है ('व्याङ् परिभ्यो रम' से परस्मैपद ; परस्मैपद लुङ्—व्यरंसीत् (सक्) ।

लृङ्

प्र० पु०	अरंस्यत[1]	अरंस्येताम्	अरंस्यन्त
म० ,,	अरंस्यथाः	अरंस्येथाम्	अरंस्यध्वम्
उ० ,,	अरंस्ये	अरंस्यावहि	अरंस्यामहि

२५०. जभी—गात्रविनामे । आ० सेट् ।

दशलकारेषु—जम्भते । जजम्भे । जम्भिता[1] । जम्भिष्यते । जम्भताम् । अजम्भत । जम्भेत । जम्भिषीष्ट । अजम्भिष्ट । अजम्भिष्यत ।

२५१. जृभि—गात्रविनामे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—जृम्भते । जजृम्भे । जृम्भिता । जृम्भिष्यते । जृम्भताम् । अजृम्भत । जृम्भेत । जृम्भिषीष्ट । अजृम्भिष्ट । अजृम्भिष्यत ।

२५२. श्रिञ् सेवायाम् । उभयपदी, सेट् ।

लट् आ० प्र०

प्र० पु०	श्रयते	श्रयेते	श्रयन्ते
म० ,,	श्रयसे	श्रयेथे	श्रयध्वे
उ० ,,	श्रये	श्रयावहे	श्रयामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	श्रयति	श्रयतः	श्रयन्ति
म० ,,	श्रयसि	श्रयथः	श्रयथ
उ० ,,	श्रयामि	श्रयावः	श्रयामः

लिट आत्मनेपद

प्र० पु०	शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियिरे
म० ,,	शिश्रियिषे	शिश्रियाथे	शिश्रियिध्वे
उ० ,,	शिश्रिये	शिश्रियिवहे	शिश्रियिमहे

1. "रधिजभोरचि" से नुम् ।

परस्मैपद

प्र० पु०	शिश्राय	शिश्रियतु:	शिश्रियु:
म० ,,	शिश्रयिथ	शिश्रियथु:	शिश्रिय
उ० ,,	शिश्राय-शिश्रय	शिश्रियिव	शिश्रियिम

लुट् आ० प०

प्र० पु०	श्रयिता	श्रयितारौ	श्रयितार:
म० ,,	श्रयितासे	श्रयितासाथे	श्रयिताध्वे
उ० ,,	श्रयिताहे	श्रयितास्वहे	श्रयितास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	श्रयिता	श्रयितारौ	श्रयितार:
म० ,,	श्रयितासि	श्रयितास्थ:	श्रयितास्थ
उ० ,,	श्रयितास्मि	श्रयितास्व:	श्रयितास्म:

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	श्रयिष्यते	श्रयिष्येते	श्रयिष्यन्ते
म० ,,	श्रयिष्यसे	श्रयिष्येथे	श्रयिष्यध्वे
उ० ,,	श्रयिष्ये	श्रयिष्यावहे	श्रयिष्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	श्रयिष्यति	श्रयिष्यत:	श्रयिष्यन्ति
म० ,,	श्रयिष्यसि	श्रयिष्यथ:	श्रयिष्यथ
उ० ,,	श्रयिष्यामि	श्रयिष्याव:	श्रयिष्याम:

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	श्रयताम्	श्रयेताम्	श्रयन्ताम्
म० ,,	श्रयस्व	श्रयेथाम्	श्रयध्वम्
उ० ,,	श्रयै	श्रयावहै	श्रयामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	श्रयतु—तात्	श्रयताम्	श्रयन्तु

म० ,,	श्रय—तात्	श्रयतम्	श्रयत
उ० ,,	श्रयाणि	श्रयाव	श्रयाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अश्रयत	अश्रयेताम्	अश्रयन्त
म० ,,	अश्रयथाः	अश्रयेथाम्	अश्रयध्वम्
उ० ,,	अश्रये	अश्रयावहि	अश्रयामहि

परस्मैपद-

प्र० पु०	अश्रयत्	अश्रयताम्	अश्रयन्
म० ,,	अश्रयः	अश्रयतम्	अश्रयत
उ० ,,	अश्रयम्	अश्रयाव	अश्रयाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	श्रयेत	श्रयेयाताम्	श्रयेरन्
म० ,,	श्रयेथाः	श्रयेयाथाम्	श्रयेध्वम्
उ० ,,	श्रयेय	श्रयेवहि	श्रयेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	श्रयेत्	श्रयेताम्	श्रयेयुः
म० ,,	श्रयेः	श्रयेतम्	श्रयेत
उ० ,,	श्रयेयम्	श्रयेव	श्रयेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	श्रयिषीष्ट	श्रयिषीयास्ताम्	श्रयिषीरन्
म० ,,	श्रयिषीष्ठाः	श्रयिषीयास्थाम्	श्रयिषीध्वम्
उ० ,,	श्रयिषीय	श्रयिषीवहि	श्रयिषीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	श्रीयात्[1]	श्रीयास्ताम्	श्रीयासुः

1. 'अकृत्सार्वधातुकयोःदीर्घः' से दीर्घ।

म० ,,	श्रीयाः	श्रीयास्तम्	श्रीयास्त
उ० ,,	श्रीयासम्	श्रीयास्व	श्रीयास्म

लुङ् परस्मैपद

प्र० पु०	अशिश्रियत्[1]	अशिश्रियताम्	अशिश्रियन्
म० ,,	अशिश्रियः	अशिश्रियतम्	अशिश्रियत
उ० ,,	अशिश्रियम्	अशिश्रियाव	अशिश्रियाम

आत्मनेपद

प्र० पु०	अशिश्रियत	अशिश्रियेताम्	अशिश्रियन्त
म० ,,	अशिश्रियथाः	अशिश्रियेथाम्	अशिश्रियध्वम्
उ० ,,	अशिश्रिये	अशिश्रियावहि	अशिश्रियामहि

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अश्रयिष्यत	अश्रयिष्येताम्	अश्रयिष्यन्त
म० ,,	अश्रयिष्यथाः	अश्रयिष्येथाम्	अश्रयिष्यध्वम्
उ० ,,	अश्रयिष्ये	अश्रयिष्यावहि	अश्रयिष्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अश्रयिष्यत्	अश्रयिष्यताम्	अश्रयिष्यन्
म० ,,	अश्रयिष्यः	अश्रयिष्यतम्	अश्रयिष्यत
उ० ,,	अश्रयिष्यम्	अश्रयिष्याव	अश्रयिष्याम

२५३. भृञ् - भरणे। उ० प० अनिट्।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	भरते	भरेते	भरन्ते
म० ,,	भरसे	भरेथे	भरध्वे
उ० ,,	भरे	भरावहे	भरामहे

1. "णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्" "चङि से द्वित्व, इयङ्।"

परस्मैपद

प्र० पु०	भरति	भरतः	भरन्ति
म० ,,	भरसि	भरथः	भरथ
उ० ,,	भरामि	भरावः	भरामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे
म० ,,	बभृषे[1]	बभ्राथे	बभृध्वे
उ० ,,	बभ्रे	बभृवहे	बभृमहे

परस्मैपद

प्र० ,,	बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः
म० ,,	बभर्थ	बभ्रथुः	बभ्र
उ० ,,	बभार—बभर	बभृव	बभृम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
म० ,,	भर्तासे	भर्तासाथे	भर्ताध्वे
उ० ,,	भर्ताहे	भर्तास्वहे	भर्तास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
म० ,,	भर्तासि	भर्तास्थः	भर्तास्थ
उ० ,,	भर्तास्मि	भर्तास्वः	भर्तास्मः

लृट् परस्मैपद

प्र० पु०	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति
म० ,,	भरिष्यसि	भरिष्यथः	भरिष्यथ

1. "कृसभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि" से इट् निषेध ।

उ० ,,	भरिष्यामि	भरिष्यावः	भरिष्यामः

आत्मनेपद

प्र० पु०	भरिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते
म० ,,	भरिष्यसे	भरिष्येथे	भरिष्यध्वे
उ० ,,	भरिष्ये	भरिष्यावहे	भरिष्यामहे

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	भरताम्	भरेताम्	भरन्ताम्
म० ,,	भरस्व	भरेथाम्	भरध्वम्
उ० ,,	भरै	भरावहै	भरामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	भरतु-तात्	भरताम्	भरन्तु
म० ,,	भर-तात्	भरतम्	भरत
उ० ,,	भराणि	भराव	भराम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अभरत	अभरेताम्	अभरन्त
म० ,,	अभरथाः	अभरेथाम्	अभरध्वम्
उ० ,,	अभरे	अभरावहि	अभरामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अभरत्	अभरताम्	अभरन्
म० ,,	अभरः	अभरतम्	अभरत
उ० ,,	अभरम्	अभराव	अभराम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	भरेत	भरेयाताम्	भरेरन्
म० ,,	भरेथाः	भरेयाथाम्	भरेध्वम्
उ० ,,	भरेय	भरेवहि	भरेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	भरेत्	भरेताम्	भरेयुः
म० ,,	भरेः	भरेतम्	भरेत
उ० ,,	भरेयम्	भरेव	भरेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	भृषीष्ट[1]	भृषीयास्ताम्	भृषीरन्
म० ,,	भृषीष्ठाः	भृषीयास्थाम्	भृषीध्वम्
उ० ,,	भृषीय	भृषीवहि	भृषीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	भ्रियात्[2]	भ्रियास्ताम्	भ्रियासुः
म० ,,	भ्रियाः	भ्रियास्तम्	भ्रियास्त
उ० ,,	भ्रियासम्	भ्रियास्व	भ्रियास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अभृत[3]	अभृषाताम्	अभृषत
म० ,,	अभृथाः	अभृषाथाम्	अभृध्वम्
उ० ,,	अभृषि	अभृष्वहि	अभृष्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अभार्षीत्[4]	अभार्ष्टाम्	अभार्षुः
म० ,,	अभार्षीः	अभार्ष्टम्	अभार्ष्ट
उ० ,,	अभार्षम्	अभार्ष्व	अभार्ष्म

1. "उश्च" से सीयुट् कित् होने से गुण नहीं हुआ।
2. "रिङ् शयग्लिङ्क्षु" से रिङ्।
3. "ह्रस्वादङ्गात्" से सिच्लोप।
4. "सिचिवृद्धिः परस्मैपदेषु" से वृद्धि।

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अभरिष्यत	अभरिष्येताम	अभरिष्यन्त
म० ,,	अभरिष्यथाः	अभरिष्येथाम्	अभरिष्यध्वम्
उ० ,,	अभरिष्ये	अभरिष्यावहि	अभरिष्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अभरिष्यत्	अभरिष्यताम्	अभरिष्यन्
म० ,,	अभरिष्यः	अभरिष्यतम्	अभरिष्यत
उ० ,,	अभरिष्यम्	अभरिष्याव	अभरिष्याम

२५४. हृञ्—हरणे। उ. पदी, अनिट्।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	हरते	हरेते	हरन्ते
म० ,,	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उ० ,,	हरे	हरावहे	हरामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	हरति	हरतः	हरन्ति
म० ,,	हरसि	हरथः	हरथ
उ० ,,	हरामि	हरावः	हरामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	जह्रे	जह्राते	जह्रिरे
म० ,,	जह्रिषे[1]	जह्राथे	जह्रिध्वे
उ० ,,	जह्रे	जह्रिवहे	जह्रिमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	जहार	जह्रतुः	जह्रुः

1. क्राद्यन्यो लिटि सेट भवेत्।

म० ,,	जहर्थ[1]	जह्रथुः	जह्र
उ० ,,	जहार-जहर	जह्रिव	जह्रिम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
म० ,,	हर्तासे	हर्तासाथे	हर्ताध्वे
उ० ,,	हर्ताहे	हर्तास्वहे	हर्तास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
म० ,,	हर्तासि	हर्तास्थः	हर्तास्थ
उ० ,,	हर्तास्मि	हर्तास्वः	हर्तास्मः

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	हरिष्यते[2]	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
म० ,,	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उ० ,,	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
म० ,,	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उ० ,,	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
म० ,,	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उ० ,,	हरै	हरावहै	हरामहै

1. ऋदन्तादेव थलो नेट् ।
2. "ऋद्धनोः स्ये"।

परस्मैपद

प्र० पु०	हरतु-तात्	हरताम्	हरन्तु
म० ,,	हर-तात्	हरतम्	हरत
उ० ,,	हराणि	हराव	हराम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
म० ,,	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उ० ,,	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
म० ,,	अहरः	अहरतम्	अहरत
उ० ,,	अहरम्	अहराव	अहराम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
म० ,,	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उ० ,,	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
म० ,,	हरेः	हरेतम्	हरेत
उ० ,,	हरेयम्	हरेव	हरेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	हृषीष्ट[1]	हृषीयास्ताम्	हृषीरन्
म० ,,	हृषीष्ठाः	हृषीयास्थाम्	हृषीध्वम्
उ० ,,	हृषीय	हृषीवहि	हृषीमहि

1. "उश्च" से सीयुट् कित होने से गुणाभाव ।

परस्मैपद

प्र० पु०	ह्रियात्[1]	ह्रियास्ताम्	ह्रियासुः
म० ,,	ह्रियाः	ह्रियास्तम्	ह्रियास्त
उ० ,,	ह्रियासम्	ह्रियास्व	ह्रियास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अहृत[2]	अहृषाताम्	अहृषत
म० ,,	अहृथाः	अहृषाथाम्	अहृढ्वम्
उ० ,,	अहृषि	अहृष्वहि	अहृष्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अहार्षीत्[3]	अहार्ष्टाम्	अहार्षुः
म० ,,	अहार्षीः	अहार्ष्टम्	अहार्ष्ट
उ० ,,	अहार्षम्	अहार्ष्व	अहार्ष्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अहरिष्यत	अहरिष्येताम्	अहरिष्यन्त
म० ,,	अहरिष्यथाः	अहरिष्येथाम्	अहरिष्यध्वम्
उ० ,,	अहरिष्ये	अहरिष्यावहि	अहरिष्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अहरिष्यत्	अहरिष्यताम्	अहरिष्यन्

1. रिङ् ।

2. ह्रस्वादङ्गात् ।

3. "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु" से वृद्धि । उपहरति-भेंट करता है । संहरति नाश करता है । अपहरति-चुराता है, छीनता है । अनुहरति-नकल करता है । आहरति-निकालता है । प्रतिहरति-समेटता है । क्त-हृतः । क्त्वा-हृत्वा । तुमुन्-हर्तुम् । तव्य-हर्तव्यम् । अनीय-हरणीय । शतृ-हरन् । ण्वुल्-हारकः । तृच्-हर्ता । णिच्-हारयति । सन्-जिहीर्षति । सन्नन्त से उ-जिहीर्षुः । कर्म० वा०-ह्रियते ।

म० ,,	अहरिष्यः	अहरिष्यतम्	अहरिष्यत
उ० ,,	अहरिष्यम्	अहरिष्याव	अहरिष्याम

२५५. धृञ्—धारणे । उ० पदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—धरति, धरते । दधार-दध्रे । धर्तासि-धर्तासे । धरिष्यति-धरिष्यते । धरतु-धरताम् । अधरत्-अधरत । धरेत्-धरेत । ध्रियात्-धृषीष्ट । अधार्षीत्-अधृत । अधरिष्यत्-अधरिष्यत ।

२५६. णीञ्[1]—प्रापणे । उभयपदी, अनिट् ।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	नयते	नयेते	नयन्ते
म० ,,	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० ,,	नये	नयावहे	नयामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	नयति	नयतः	नयन्ति
म० ,,	नयसि	नयथः	नयथ
उ० ,,	नयामि	नयावः	नयामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
म० ,,	निन्यिषे[2]	निन्याथे	निन्यिध्वे-ढ्वे
उ० ,,	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	निनाय	निन्यतुः	निन्युः

1. "णोनः" से ण को न ।

2. क्राद्यन्योलिटि सेट् भवेत् ।

म० ,,	निनयिथ[1]-निनेथ	निन्यथुः	निन्य
उ० ,,	निनाय	निन्यिव	निन्यिम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	नेता	नेतारौ	नेतारः
म० ,,	नेतासे	नेतासाथे	नेताध्वे
उ० ,,	नेताहे	नेतास्वहे	नेतास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	नेता	नेतारौ	नेतारः
म० ,,	नेतासि	नेतास्थः	नेतास्थ
उ० ,,	नेतास्मि	नेतास्वः	नेतास्मः

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म० ,,	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ० ,,	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म० ,,	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उ० ,,	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

1. "ऋतो भारद्वाजस्य" । प्रणयति—बनाता है । परिणयति-व्याहता है । उपनयति-पास ले जाता है । अपनयति-हटाता है । अनुनयति-खुशामद करता है । विनयति-सिखाता है । आनयति-लाता है । क्त-नीतः क्त्वा-नीत्वा । तुमुन्-नेतुम् । तव्य-नेतव्यः । अनीय-नयनीयः ।ण्वुल्-नायकः । तृच्-नेता । शतृ-नयन् । शानच्-नयमानः । णिच्-नाययति । सन्-निनीषति-ते । यङ्-नेनीयते । कर्म वा०-नीयते ।

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म० ,,	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ० ,,	नयै	नयावहै	नयामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	नयतु-तात्	नयताम्	नयन्तु
म० ,,	नय-तात्	नयतम्	नयत
उ० ,,	नयानि	नयाव	नयाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म० ,,	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ० ,,	अनये	अनयावहि	अनयामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
म० ,,	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ० ,,	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म० ,,	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ० ,,	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म० ,,	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ० ,,	नयेयम्	नयेव	नयेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	नेषीष्ट	नेषीयास्ताम्	नेषीरन्
म० ,,	नेषीष्ठाः	नेषीयास्थाम्	नेषीध्वम्
उ० ,,	नेषीय	नेषीवहि	नेषीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	नीयात्	नीयास्ताम्	नीयासुः
म० ,,	नीयाः	नीयास्तम्	नीयास्त
उ० ,,	नीयासम्	नीयास्व	नीयास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अनेष्ट	अनेषाताम्	अनेषत
म० ,,	अनेष्ठाः	अनेषाथाम्	अनेध्वम्
उ० ,,	अनेषि	अनेष्वहि	अनेष्महि

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अनेष्यत	अनेष्येताम्	अनेष्यन्त
म० ,,	अनेष्यथाः	अनेष्येथाम्	अनेष्यध्वम्
उ० ,,	अनेष्ये	अनेष्यावहि	अनेष्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अनेष्यत्	अनेष्यताम्	अनेष्यन्
म० ,,	अनेष्यः	अनेष्यतम्	अनेष्यत
उ० ,,	अनेष्यम्	अनेष्याव	अनेष्याम

२४७ डुपचष्[1]-पाके । उभयपदी, अनिट् ।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	पचते	पचेते	पचन्ते

1. डु अनुबन्ध "ड्वितः क्त्रिः" क्त्रि प्रत्यय लाकर 'पक्त्रिमम्' रूप के लिये है ।

म० ,,	पचसे	पचेथे	पचध्वे
उ० ,,	पचे	पचावहे	पचामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	पचति	पचतः	पचन्ति
म० ,,	पचसि	पचथः	पचथ
उ० ,,	पचामि	पचावः	पचामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	पेचे[1]	पेचाते	पेचिरे
म० ,,	पेचिषे	पेचाथे	पेचिध्वे
उ० ,,	पेचे	पेचिवहे	पेचिमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	पपाच	पेचतुः	पेचुः
म० ,,	पेचिथ-पपक्थ,[2]	पेचथुः	पेच
उ० ,,	पपाच-पपच	पेचिव	पेचिम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	पक्ता[3]	पक्तारौ	पक्तारः
म० ,,	पक्तासे	पक्तासाथे	पक्ताध्वे
उ० ,,	पक्ताहे	पक्तास्वहे	पक्तास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	पक्ता	पक्तारौ	पक्तारः
म० ,,	पक्तासि	पक्तास्थः	पक्तास्थ
उ० ,,	पक्तास्मि	पक्तास्वः	पक्तास्मः

1. एत्वाभ्यास लोप ।
2. "ऋतो भारद्वाजस्य ।"
3. पच्+ता, "चोः कुः" से कुत्व ।

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	पचताम्	पचेताम्	पचन्ताम्
म० ,,	पचस्व	पचेथाम्	पचध्वम्
उ० ,,	पचै	पचावहै	पचामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	पचतु-तात्	पचताम्	पचन्तु
म० ,,	पच-तात्	पचतम्	पचत
उ० ,,	पचानि	पचाव	पचाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अपचत	अपचेताम्	अपचन्त
म० ,,	अपचथाः	अपचेथाम्	अपचध्वम्
उ० ,,	अपचे	अपचावहि	अपचामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
म० ,,	अपचः	अपचतम्	अपचत
उ० ,,	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	पचेत	पचेयाताम्	पचेरन्
म० ,,	पचेथाः	पचेयाथाम्	पचेध्वम्
उ० ,,	पचेय	पचेवहि	पचेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
म० ,,	पचेः	पचेतम्	पचेत
उ० ,,	पचेयम्	पचेव	पचेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	पक्षीष्ट[1]	पक्षीयास्ताम्	पक्षीरन्
म० ,,	पक्षीष्ठाः	पक्षीयास्थाम्	पक्षीध्वम्
उ० ,,	पक्षीय	पक्षीवहि	पक्षीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	पच्यात्	पच्यास्ताम्	पच्यासुः
म० ,,	पच्याः	पच्यास्तम्	पच्यास्त
उ० ,,	पच्यासम्	पच्यास्व	पच्यास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अपक्त[2]	अपक्षाताम्	अपक्षत
म० ,,	अपक्थाः	अपक्षाथाम्	अपग्ध्वम्
उ० ,,	अपक्षि	अपक्ष्वहि	अपक्ष्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अपाक्षीत्	अपाक्ताम्	अपाक्षुः
म० ,,	अपाक्षीः	अपाक्तम्	अपाक्त
उ० ,,	अपाक्षम्	अपाक्ष्व	अपाक्ष्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अपक्ष्यत	अपक्ष्येताम्	अपक्ष्यन्त
म० ,,	अपक्ष्यथाः	अपक्ष्येथाम्	अपक्ष्यध्वम्
उ० ,,	अपक्ष्ये	अपक्ष्यावहि	अपक्ष्यामहि

1. "चोः कुः" से कुत्व ।
2. "झलो झलि" से सलोप ।

परस्मैपद

प्र० पु०	अपक्ष्यत्[1]	अपक्ष्यताम्	अपक्ष्यन्
म० ,,	अपक्ष्यः	अपक्ष्यतम्	अपक्ष्यत
उ० ,,	अपक्ष्यम्	अपक्ष्याव	अपक्ष्याम

२५८. भज—सेवायाम्। उ. पदी, अनिट्।

दशलकारेषु—भजति-भजते। बभाज—भेजे[2]। भक्तासि, भक्तासे। भक्ष्यति, भक्ष्यते। भजतु-भजताम्। अभजत्-अभजत। भजेत-भजेत। भज्यात्-भक्षीष्ट। अभाक्षीत्—अभक्त। अभक्ष्यत्—अभक्ष्यत।

२५९. यज—देवपूजा-सङ्गतिकरणदानेषु। उ प. अनिट्।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	यजते	यजेते	यजन्ते
म० ,,	यजसे	यजेथे	यजध्वे
उ० ,,	यजे	यजावहे	यजामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	यजति	यजतः	यजन्ति
म० ,,	यजसि	यजथः	यजथ
उ० ,,	यजामि	यजावः	यजामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	ईजे[3]	ईजाते	ईजिरे

1. क्त-पक्तः। क्त्वा-पक्त्वा। तुमुन्-पक्तुम्। तव्य-पक्तव्यः। शतृ-पचन्। शानच्-पचमानः। ण्वुल्-पाचकः। णिच्-पाचयति। सन्-पिपक्षति। यङ्-पापच्यते।

2. "तॄफलभजत्रपश्च" से एत्वाभ्यास लोप।

3. "वचि स्वपि यजादीनां किति" से सम्प्रसरण।

म० ,,	ईजिषे	ईजाथे[1]	ईजिध्वे
उ० ,,	ईजे	ईजिवहे	ईजिमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	इयाज[2]	ईजतुः	ईजुः
म० ,,	इयजिथ-इयष्ठ[3]	ईजथुः	ईज
उ० ,,	इयाज-इयज	ईजिव[4]	ईजिम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	यष्टा	यष्टारौ	यष्टारः
म० ,,	यष्टासे	यष्टासाथे	यष्टाध्वे
उ० ,,	यष्टाहे	यष्टास्वहे	यष्टास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	यष्टा	यष्टारौ	यष्टारः
म० ,,	यष्टासि	यष्टास्थः	यष्टास्थ
उ० ,,	यष्टास्मि	यष्टास्वः	यष्टास्मः

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	यक्ष्यते[5]	यक्ष्येते	यक्ष्यन्ते
म० ,,	यक्ष्यसे	यक्ष्येथे	यक्ष्यध्वे

1. क्राद्यन्यो लिटि सेट् ।

2. "लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्" से द्वित्व के बाद सम्प्रसारण ।

3. इट् के अभाव में "व्रश्च—" से षत्व, ष्टुत्व ।

4. सम्प्रसारण के बाद द्वित्व, क्रादिनियम से इट् ।

5. "व्रश्च—" से षत्व, "षढोः कः सि" । क्त-इष्टः । क्त्वा-इष्ट्वा । तुमुन्-यष्टुम् । तव्य-यष्टव्यम् । अनीय-यजनीय । ण्वुल्-याजकः । क्तिन्-इष्टि । णिच्-याजयति । सन्-यियक्षति । सन्नन्त से उ- यियक्षुः । कर्मवाच्य-इज्यते ।

उ० ,,	यक्ष्ये	यक्ष्यावहे	यक्ष्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	यक्ष्यति	यक्ष्यतः	यक्ष्यन्ति
म० ,,	यक्ष्यसि	यक्ष्यथः	यक्ष्यथ
उ० ,,	यक्ष्यामि	यक्ष्यावः	यक्ष्यामः

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	यजताम्	यजेताम्	यजन्ताम्
म० ,,	यजस्व	यजेतम्	यजध्वम्
उ० ,,	यजै	यजावहै	यजामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	यजतु-तात्	यजताम्	यजन्तु
म० ,,	यज-तात्	यजतम्	यजत
उ० ,,	यजानि	यजाव	यजाम

ल ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अयजत	अयजेताम्	अयजन्त
म० ,,	अयजथाः	अयजेथाम्	अयजध्वम्
उ० ,,	अयजे	अयजावहि	अयजामहि

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	यजेत	यजेयाताम्	यजेरन्
म० ,,	यजेथाः	यजेयाथाम्	यजेध्वम्
उ० ,,	यजेय	यजेवहि	यजेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	यजेत्	यजेताम्	यजेयुः
म० ,,	यजेः	यजेतम्	यजेत
उ० ,,	यजेयम्	यजेव	यजेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	यक्षीष्ट[1]	यक्षीयास्ताम्	यक्षीरन्
म० ,,	यक्षीष्ठाः	यक्षीयास्थाम्	यक्षीध्वम्
उ० ,,	यक्षीय	यक्षीवहि	यक्षीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	इज्यात्[2]	इज्यास्ताम्	इज्यासुः
म० ,,	इज्याः	इज्यास्तम्	इज्यास्त
उ० ,,	इज्यासम्	इज्यास्व	इज्यास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अयष्ट	अयक्षाताम्	अयक्षत
म० ,,	अयष्ठाः	अयक्षाथाम्	अयड्ढ्वम्
उ० ,,	अयक्षि	अयक्ष्वहि	अयक्ष्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अयाक्षीत्	अयाष्टाम्[3]	अयाक्षुः
म० ,,	अयाक्षीः	अयाष्टम्	अयाष्ट
उ० ,,	अयाक्षम्	अयाक्ष्व	अयाक्ष्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अयक्ष्यत	अयक्ष्येताम्	अयक्ष्यन्त
म० ,,	अयक्ष्यथाः	अयक्ष्येथाम्	अयक्ष्यध्वम्
उ० ,,	अयक्ष्ये	अयक्ष्यावहि	अयक्ष्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अयक्ष्यत	अयक्ष्यताम्	अयक्ष्यन्

1. व्रश्चेति षः, कत्व, षत्व।
2. "किदाशिषि" "वचिस्वपि—"।
3. "वद व्रज—"। "झलो झलि"।

म० ,,	अयक्ष्यः	अयक्ष्यतम्	अयक्ष्यत
उ० ,,	अयक्ष्यम्	अयक्ष्याव	अयक्ष्याम

२६० वह्-प्रापणे । उ. प. अनिट् ।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वहते	वहेते	वहन्ते
म० ,,	वहसे	वहेथे	वहध्वे
उ० ,,	वहे	वहावहे	वहामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	वहति	वहतः	वहन्ति
म० ,,	वहसि	वहथः	वहथ
उ० ,,	वहामि	वहावः	वहामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	ऊहे[1]	ऊहाते	ऊहिरे
म० ,,	ऊहिषे	ऊहाथे	ऊहिध्वे
उ० ,,	ऊहे	ऊहिवहे	ऊहिमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	उवाह[2]	ऊहतुः	ऊहुः
म० ,,	उवहिथ-उवोढ	ऊहथुः	ऊह
उ० ,,	उवाह-उवह	ऊहिव	ऊहिम

लुट् परस्मैपद

प्र० पु०	वोढा[3]	वोढारौ	वोढारः
म० ,,	वोढासि	वोढास्थः	वोढास्थ

1. कित् लिट् में सम्प्रसारण के बाद द्वित्व ।
2. पित् लिट् में द्वित्व के बाद सम्प्रसारण ।
3. "हो ढः" ष्टुत्व, ढलोप, "सहिवहोरोदवर्णस्य" से ओत् ।

उ० ,,	वोढास्मि	वोढास्वः	वोढास्मः

आत्मनेपद

प्र० पु०	वोढा	वोढारौ	वोढारः
म० ,,	वोढासे	वोढासाथे	वोढाध्वे
उ० ,,	वोढाहे	वोढास्वहे	वोढास्महे

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वक्ष्यते[1]	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
म० ,,	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उ० ,,	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
म० ,,	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उ० ,,	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वहताम्	वहेताम्	वहन्ताम्
म० ,,	वहस्व	वहेथाम्	वहध्वम्
उ० ,,	वहै	वहावहै	वहामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	वहतु-तात्	वहताम्	वहन्तु
म० ,,	वह-तात्	वहतम्	वहत
उ० ,,	वहानि	वहाव	वहाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अवहत	अवहेताम्	अवहन्त
म० ,,	अवहथाः	अवहेथाम्	अवहध्वम्

1. "षढोः कः" सि से क ।

उ० ,,	अवहे	अवहावहि	अवहामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अवहत्	अवहताम्	अवहन्
म० ,,	अवह	अवहतम्	अवहत
उ० ,,	अवहम्	अवहाव	अवहाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	वहेत	वहेयाताम्	वहेरन्
म० ,,	वहेथाः	वहेयाथाम्	वहेध्वम्
उ० ,,	वहेय	वहेवहि	वहेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	वहेत्	वहेताम्	वहेयुः
म० ,,	वहेः	वहेतम्	वहेत
उ० ,,	वहेयम्	वहेव	वहेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	वक्षीष्ट[1]	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
म० ,,	वक्षीष्ठाः	वक्षीयास्थाम्	वक्षीध्वम्
उ० ,,	वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	उह्यात्[2]	उह्यास्ताम्	उह्यासुः

---

1. वह्+सीष्ट, ढत्व, कत्व, षत्व ।

2. "वचिस्वपियजादीनां किति" । क्त-ऊढः । क्त्वा-ऊढ्वा । क्तवतु-ऊढवान् । तुमुन्-वोढुम् । तव्य-वोढव्य । अनीय-वहनीयः । ण्वुल्-वाहकः । शतृ-वहन् । शानच्-वहमानः । क्तिन्-ऊढिः । णिच्-वाहयति । सन्-विवक्षति । कर्मवा०-उह्यते । उद्वहति-ब्याहता है । घञ्-उद्वहः ।

म० ,,	उह्याः	उह्यास्तम्	उह्यास्त
उ० ,,	उह्यासम्	उह्यास्व	उह्यास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अवोढ़	अवक्षाताम्	अवक्षत
म० ,,	अवोढ़ाः[1]	अवक्षाथाम्	अवोढ्वम्
उ० ,,	अवक्षि	अवक्ष्वहि	अवक्ष्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अवाक्षीत्	अवोढ़ाम्	अवाक्षुः
म० ,,	अवाक्षीः	अवोढ़म्	अवोढ़
उ० ,,	अवाक्षम्	अवाक्ष्व	अवाक्ष्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त
म० ,,	अवक्ष्यथाः	अवक्ष्येथाम्	अवक्ष्यध्वम्
उ० ,,	अवक्ष्ये	अवक्ष्यावहि	अवक्ष्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्
म० ,,	अवक्ष्यः	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत
उ० ,,	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम

२६१. डुवप्—बीजसन्ताने । उभयपदी, अनिट् ।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वपते	वपेते	वपन्ते
म० ,,	वपसे	वपेथे	वपध्वे
उ० ,,	वपे	वपावहे	वपामहे

1. होढः, झषस्तथोर्धोऽधः, ढ लोप, "सहिवहोरोद वर्णस्य" से ओत् ।

परस्मैपद

प्र० पु०	वपति	वपतः	वपन्ति
म० ,,	वपसि	वपथः	वपथ
उ० ,,	वपामि	वपावः	वपामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	ऊपे[1]	ऊपाते	ऊपिरे
म० ,,	ऊपिषे	ऊपाथे	ऊपिध्वे
उ० ,,	ऊपे	ऊपिवहे	ऊपिमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	उवाप[2]	ऊपतुः	ऊपुः
म० ,,	उवपिथ-उवप्थ	ऊपथुः	ऊप
उ० ,,	उवाप-उवप	ऊपिव	ऊपिम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वप्ता	वप्तारौ	वप्तारः
म० ,,	वप्तासे	वप्तासाथे	वप्ताध्वे
उ० ,,	वप्ताहे	वप्तास्वहे	वप्तास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	वप्ता	वप्तारौ	वप्तारः
म० ,,	वप्तासि	वप्तास्थः	वप्तास्थ
उ० ,,	वप्तास्मि	वप्तास्वः	वप्तास्मः

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वप्स्यते	वप्स्येते	वप्स्यन्ते

1. कित् लिट् में "वचिस्वपि" से सम्प्रसारण के बाद द्वित्व ।

2. पित् लिट् में द्वित्व के बाद "लिटयभ्यासस्योभयेषाम्" से अभ्यास को द्वित्व ।

म० ,,	वप्स्यसे	वप्स्येथे	वप्स्यध्वे
उ० ,,	वप्स्ये	वप्स्यावहे	वप्स्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	वप्स्यति	वप्स्यतः	वप्स्यन्ति
म० ,,	वप्स्यसि	वप्स्यथः	वप्स्यथ
उ० ,,	वप्स्यामि	वप्स्यावः	वप्स्यामः

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वपताम्	वपेताम्	वपन्ताम्
म० ,,	वपस्व	वपेथाम्	वपध्वम्
उ० ,,	वपै	वपावहै	वपामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	वपतु-तात्	वपताम्	वपन्तु
म० ,,	वप-तात्	वपतम्	वपत
उ० ,,	वपानि	वपाव	वपाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अवपत्	अवपेताम्	अवपन्त
म० ,,	अवपथाः	अवपेथाम्	अवपध्वम्
उ० ,,	अवपे	अवपावहि	अवपामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अवपत्	अवपताम्	अवपन्
म० ,,	अवपः	अवपतम्	अवपत
उ० ,,	अवपम्	अवपाव	अवपाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	वपेत	वपेयाताम्	वपेरन्
म० ,,	वपेथाः	वपेयाथाम्	वपेध्वम्

उ० ,,	वपेय	वपेवहि	वपेमहि
		परस्मैपद	
प्र० पु०	वपेत्	वपेताम्	वपेयुः
म० ,,	वपेः	वपेतम्	वपेत
उ० ,,	वपेयम्	वपेव	वपेम
		आशीर्लिङ् आत्मनेपद	
प्र० पु०	वप्सीष्ट	वप्सीयास्ताम्	वप्सीरन्
म० ,,	वप्सीष्ठाः	वप्सीयास्थाम्	वप्सीध्वम्
उ० ,,	वप्सीय	वप्सीवहि	वप्सीमहि
		परस्मैपद	
प्र० पु०	उप्यात्[1]	उप्यास्ताम्	उप्यासुः
म० ,,	उप्याः	उप्यास्तम्	उप्यास्त
उ० ,,	उप्यासम्	उप्यास्व	उप्यास्म
		लुङ् आत्मनेपद	
प्र० पु०	अवप्त[2]	अवप्साताम्	अवप्सत
म० ,,	अवप्थाः	अवप्साथाम्	अवप्ध्वम्
उ० ,,	अवप्सि	अवप्स्वहि	अवप्स्महि
		परस्मैपद	
प्र० पु०	अवाप्सीत्[3]	अवाप्ताम्	अवाप्सुः

1. यासुट् कित् होने से "वचि स्वपि " से सम्प्रसारण।

2. "झलो झलि" सलोप।

3. "वदव्रजहलन्तस्याचः" से वृद्धि। वप् धातु का अर्थ छेदन भी है—केशान् वपति। "नेगदनद " से णत्व—प्रण्यवाप्सीत्। क्त—उप्तः। क्त्वा—उप्त्वा। तुमुन्—वप्तुम्। तव्यत—वप्तव्यम्। शतृ—वपन्। शानच्—वपमानः। ण्वुल्—वापकः। तृच्—वप्ता। क्तिन्—उप्तिः। घञ्—वापः। णिच्—वापयति।

म० ,,	अवाप्सीः	अवाप्तम्	अवाप्त
उ० ,,	अवाप्सम्	अवाप्स्व	अवाप्स्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अवप्स्यत	अवप्स्येताम्	अवप्स्यन्त
म० ,,	अवप्स्यथाः	अवप्स्येथाम्	अवप्स्यध्वम्
उ० ,,	अवप्स्ये	अवप्स्यावहि	अवप्स्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अवप्स्यत्	अवप्स्यताम्	अवप्स्यन्
म० ,,	अवप्स्यः	अवप्स्यतम्	अवप्स्यत
उ० ,,	अवप्स्यम्	अवप्स्याव	अवप्स्याम

२६२. वेञ्—तन्तुसन्ताने । उ० प० अनिट् ।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वयते	वयेते	वयन्ते
म० ,,	वयसे	वयेथे	वयध्वे
उ० ,,	वये	वयावहे	वयामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	वयति	वयतः	वयन्ति
म० ,,	वयसि	वयथः	वयथ
उ० ,,	वयानि	वयावः	वयामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	ऊये-ऊवे[1]	ऊयाते-ऊवाते	ऊयिरे-ऊविरे

1. "वेञो वयिः" से वय् आदेश। "ग्रहिज्या—" से सम्प्रसारण प्राप्त होने पर "लिटि वयो यः" से सम्प्रसारण निषेध।"वश्चा— से व के यकार को वकार विकल्प से"।

म० ,,	ऊयिषे-ऊविषे	ऊयाथे-ऊवाथे	ऊयिध्वे-ऊविध्वे
उ० ,,	ऊये-ऊवे	ऊयिवहे-ऊविवहे	ऊयिमहे-ऊविमहे

सम्प्रसारण के अभाव में

प्र० पु०	ववे[1]	ववाते	वविरे
म० ,,	वविषे	ववाथे	वविध्वे
उ० ,,	ववे	वविवहे	वविमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	उवाय	ऊयतुः-ऊवतुः	ऊयुः-ऊवुः
म० ,,	उवयिथ-उवेथ	ऊयथुः-ऊवथुः	ऊय-ऊव
उ० ,,	उवाय-उवय	ऊयिव-ऊविव	ऊयिम-ऊविम

सम्प्रसारण के अभाव में

प्र० पु०	ववौ[2]	ववतुः[3]	ववुः
म० ,,	वविथ-ववाथ	ववथुः	वव
उ० ,,	ववौ	वविव	वविम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वाता	वातारौ	वातारः
म० ,,	वातासे	वातासाथे	वाताध्वे
उ० ,,	वाताहे	वातास्वहे	वातास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	वाता	वातारौ	वातारः
म० ,,	वातासि	वातास्थः	वातास्थ
उ० ,,	वातास्मि	वातास्वः	वातास्मः

1. 'वेञः'' से सम्प्रसारण निषेध।
2. 'आत औ णलः''।
3. ''आतो लोप इटि च'' से आकारलोप।

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वास्यते	वास्येते	वास्यन्ते
म० ,,	वास्यसे	वास्येथे	वास्यध्वे
उ० ,,	वास्ये	वास्यावहे	वास्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	वास्यति	वास्यतः	वास्यन्ति
म० ,,	वास्यसि	वास्यथः	वास्यथ
उ० ,,	वास्यामि	वास्यावः	वास्यामः

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	वयताम्	वयेताम्	वयन्ताम्
म० ,,	वयस्व	वयेथाम्	वयध्वम्
उ० ,,	वयै	वयावहै	वयामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	वयतु-तात्	वयताम्	वयन्तु
म० ,,	वय-तात्	वयतम्	वयत
उ० ,,	वयानि	वयाव	वयाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अवयत	अवयेताम्	अवयन्त
म० ,,	अवयथाः	अवयेथाम्	अवयध्वम्
उ० ,,	अवये	अवयावहि	अवयामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अवयत्	अवयताम्	अवयन्
म० ,,	अवयः	अवयतम्	अवयत
उ० ,,	अवयम्	अवयाव	अवयाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	वयेत	वयेयाताम्	वयेरन्
म० ,,	वयेथाः	वयेयाथाम्	वयेध्वम्
उ० ,,	वयेय	वयेवहि	वयेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	वयेत्[1]	वयेताम्	वयेयुः
म० ,,	वयेः	वयेतम्	वयेत
उ० ,,	वयेयम्	वयेव	वयेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	वासीष्ट[2]	वासीयास्ताम्	वासीरन्
म० ,,	वासीष्ठाः	वासीयास्थाम्	वासीध्वम्
उ० ,,	वासीय	वासीवहि	वासीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	ऊयात्	ऊयास्ताम्	ऊयासुः
म० ,,	ऊयाः	ऊयास्तम्	ऊयास्त
उ० ,,	ऊयासम्	ऊयास्व	ऊयास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अवास्त	अवासाताम्	अवासत
म० ,,	अवास्थाः	अवासाथाम्	अवाध्वम्
उ० ,,	अवासि	अवास्वहि	अवास्महि

1. क्त-उतम् । क्त्वा-उत्वा । तुमुन्-वातुम् । तव्य-वातव्यम् । अनीय-वानीयम् । तृच्-वाता । ण्वुल्-वायकः । णिच्-वाययति (युक्) ।

2. "आदेश उपदेशेऽशिति ।"

परस्मैपद

प्र० पु०	अवासीत्[1]	अवासिष्टाम्	अवासिषुः
म० ,,	अवासीः	अवासिष्टम्	अवासिष्ट
उ० ,,	अवासिषम्	अवासिष्व	अवासिष्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अवास्यत	अवास्येताम्	अवास्यन्त
म० ,,	अवास्यथाः	अवास्येथाम्	अवास्यध्वम्
उ० ,,	अवास्ये	अवास्यावहि	अवास्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अवास्यत्	अवास्यताम्	अवास्यन्
म० ,,	अवास्यः	अवास्यतम्	अवास्यत
उ० ,,	अवास्यम्	अवास्याव	अवास्याम

२६३ व्येञ्-सम्वरणे । उ० प० अनिट् ।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्ययते	व्ययेते	व्ययन्ते
म० ,,	व्ययसे	व्ययेथे	व्ययध्वे
उ० ,,	व्यये	व्ययावहे	व्ययामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	व्ययति	व्ययतः	व्ययन्ति
म० ,,	व्ययसि	व्ययथः	व्ययथ
उ० ,,	व्ययामि	व्ययावः	व्ययामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	विव्ये[2]	विव्याते	विव्यिरे

1. आत्व करके "यमरमनमातां सक च" से सक् ।

2. "न व्यो लिटि" से आत्वनिषेध । कित् लिट् में हलादि शेष का बाधकर सम्प्रसारण के बाद द्वित्व ।

म० ,,	विव्यिषे	विव्याथे	विव्यिध्वे
उ० ,,	विव्ये	विव्यिवहे	विव्यिमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	विव्याय[1]	विव्यतुः	विव्युः
म० ,,	विव्ययिथ[2]	विव्यथुः	विव्य
उ० ,,	विव्याय-विव्यय	विव्यिव	विव्यिम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्याता	व्यातारौ	व्यातारः
म० ,,	व्यातासे	व्यातासाथे	व्याताध्वे
उ० ,,	व्याताहे	व्यातास्वहे	व्यातास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	व्याता	व्यातारौ	व्यातारः
म० ,,	व्यातासि	व्यातास्थः	व्यातास्थ
उ० ,,	व्यातास्मि	व्यातास्वः	व्यातास्मः

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्यास्यते	व्यास्येते	व्यास्यन्ते
म० ,,	व्यास्यसे	व्यास्येथे	व्यास्यध्वे
उ० ,,	व्यास्ये	व्यास्यावहे	व्यास्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	व्यास्यति	व्यास्यतः	व्यास्यन्ति
म० ,,	व्यास्यसि	व्यास्यथ	व्यास्यथ
उ० ,,	व्यास्यामि	व्यास्यावः	व्यास्यामः

1. अकित् लिट् में द्वित्व के बाद अभ्यास को सम्प्रसारण ।
2. "इडत्यर्ति व्ययतीनाम्" से नित्य इट् ।

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अव्ययत	अव्ययेताम्	अव्ययन्त
म० ,,	अव्ययथाः	अव्ययेथाम्	अव्ययध्वम्
उ० ,,	अव्यये	अव्ययावहि	अव्ययामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अव्ययत्	अव्ययताम्	अव्ययन्
म० ,,	अव्ययः	अव्ययतम्	अव्ययत
उ० ,,	अव्ययम्	अव्ययाव	अव्ययाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्ययेत	व्ययेयाताम्	व्ययेरन्
म० ,,	व्ययेथाः	व्ययेयाथाम्	व्ययेध्वम्
उ० ,,	व्ययेय	व्ययेवहि	व्ययेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	व्ययेत्	व्ययेताम्	व्ययेयुः
म० ,,	व्ययेः	व्ययेतम्	व्ययेत
उ० ,,	व्ययेयम्	व्ययेव	व्ययेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्यासीष्ट	व्यासीयास्ताम्	व्यासीरन्
म० ,,	व्यासीष्ठाः	व्यासीयास्थाम्	व्यासीध्वम्
उ० ,,	व्यासीय	व्यासीवहि	व्यासीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	वीयात्[1]	वीयास्ताम्	वीयासुः
म० ,,	वीयाः	वीयास्तम्	वीयास्त

1. 'ग्रहिज्या' से सम्प्रसारण, "अकृत्सार्वधातुकयोः" से दीर्घ।

उ० ,,	वीयास्म	वीयास्व	वीयास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अव्यास्त	अव्यासाताम्	अव्यासत
म० ,,	अव्यास्थाः	अव्यासाथाम्	अव्यास्ध्वम्
उ० ,,	अव्यासि	अव्यास्वहि	अव्यास्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अव्यासीत्	अव्यासिष्टाम्	अव्यासिषुः
म० ,,	अव्यासीः	अव्यासिष्टम्	अव्यासिष्ट
उ० ,,	अव्यासिषम्	अव्यासिष्व	अव्यासिष्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अव्यास्यत	अव्यास्येताम्	अव्यास्यन्त
म० ,,	अव्यास्यथाः	अव्यास्येथाम्	अव्यास्यध्वम्
उ० ,,	अव्यास्ये	अव्यास्यावहि	अव्यास्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अव्यास्यत्	अव्यास्यताम्	अव्यास्यन्
म० ,,	अव्यास्यः	अव्यास्यतम्	अव्यास्यत
उ० ,,	अव्यास्यम्	अव्यास्याव	अव्यास्याम

२६४. ह्वेञ्—स्पर्धायां शब्दे च। उ. प. अनिट्।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	ह्वयते	ह्वयेते	ह्वयन्ते
म० ,,	ह्वयसे	ह्वयेथे	ह्वयध्वे
उ० ,,	ह्वये	ह्वयावहे	ह्वयामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	ह्वयति	ह्वयतः	ह्वयन्ति
म० ,,	ह्वयसि	ह्वयथः	ह्वयथ

उ० ,,	ह्वयामि	ह्वयावः	ह्वयामः

लिट् परस्मैपद

प्र० पु०	जुहाव[1]	जुहुवतुः[2]	जुहुवुः
म० ,,	जुहुविथ	जुहुवथुः	जुहुव
उ० ,,	जुहाव-जुहव	जुहुविव	जुहुविम

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	जुहुवे	जुहुवाते	जुहुविरे
म० ,,	जुहुविषे	जुहुवाथे	जुहुविध्वे
उ० ,,	जुहुवे	जुहुविवहे	जुहुविमहे

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	ह्वाता	ह्वातारौ	ह्वातारः
म० ,,	ह्वातासे	ह्वातासाथे	ह्वाताध्वे
उ० ,,	ह्वाताहे	ह्वातास्वहे	ह्वातास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	ह्वाता	ह्वातारौ	ह्वातारः
म० ,,	ह्वातासि	ह्वातास्थः	ह्वातास्थ
उ० ,,	ह्वातास्मि	ह्वातास्वः	ह्वातास्मः

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	ह्वास्यते	ह्वास्येते	ह्वास्यन्ते
म० ,,	ह्वास्यसे	ह्वास्येथे	ह्वास्यध्वे
उ० ,,	ह्वास्ये	ह्वास्यावहे	ह्वास्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	ह्वास्यति	ह्वास्यतः	ह्वास्यन्ति

1. "अभ्यस्तस्य च" से सम्प्रसारण के बाद द्वित्व ।

2. उवङ् ।

म० ,,	ह्वास्यसि	ह्वास्यथः	ह्वास्यथ
उ० ,,	ह्वास्यामि	ह्वास्यावः	ह्वास्यामः

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	ह्वयताम्	ह्वयेताम्	ह्वयन्ताम्
म० ,,	ह्वयस्व	ह्वयेथाम्	ह्वयध्वम्
उ० ,,	ह्वये	ह्वयावहि	ह्वयामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	ह्वयतु-तात्	ह्वयताम्	ह्वयन्तु
म० ,,	ह्वयथ-तात्	ह्वयतम्	ह्वयत
उ० ,,	ह्वयानि	ह्वयाव	ह्वयाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अह्वयत	अह्वयेताम्	अह्वयन्त
म० ,,	अह्वयथाः	अह्वयेथाम्	अह्वयध्वम्
उ० ,,	अह्वये	अह्वयावहि	अह्वयामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अह्वयत्	अह्वयताम्	अह्वयन्
म० ,,	अह्वयः	अह्वयतम्	अह्वयत
उ० ,,	अह्वयम्	अह्वयाव	अह्वयाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	ह्वयेत	ह्वयेयाताम्	ह्वयेरन्
म० ,,	ह्वयेथाः	ह्वयेयाथाम्	ह्वयेध्वम्
उ० ,,	ह्वयेय	ह्वयेवहि	ह्वयेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	ह्वयेत्	ह्वयेताम्	ह्वयेयुः

म० ,,	ह्वयेः	ह्वयेतम्	ह्वयेत
उ० ,,	ह्वयेम्	ह्वयेव	ह्वयेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	ह्वासीष्ट	ह्वासीयास्ताम्	ह्वासीरन्
म० ,,	ह्वासीष्ठाः	ह्वासीयास्थाम्	ह्वासीध्वम्
उ० ,,	ह्वासीय	ह्वासीवहि	ह्वासीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	हूयात्[1]	हूयास्ताम्	हूयासुः
म० ,,	हूयाः	हूयास्तम्	हूयास्त
उ० ,,	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म

लुङ् आत्मनेपद (अङ्)

प्र० पु०	अह्वत[2]	अह्वेताम्	अह्वन्त
म० ,,	अह्वथाः	अह्वेथाम्	अह्वध्वम्
उ० ,,	अह्वे	अह्वावहि	अह्वामहि

अङ् के अभाव में

प्र० पु०	अह्वस्त[3]	अह्वासाताम्	अह्वासत
म० ,,	अह्वास्थाः	अह्वासाथाम्	अह्वाध्वम्
उ० ,,	अह्वासि	अह्वास्वहि	अह्वास्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अह्वत्	अह्वताम्	अह्वन्

1. यासुट् के कित् होने से "ग्रहिज्या"—से सम्प्रसारण, "अकृत्सार्वधातुकयोः" से दीर्घ।

2. "लिपि सिचिह्वश्च" से च्लि को अङ्, आकारलोप।

3. "यमरमनमातां सक् च" की प्रवृत्ति आत्मनेपद में नहीं होती"।

म० ,,	अह्वः	अह्वतम्	अह्व
उ० ,,	अह्वम्	अह्वाव	अह्वाम

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अह्वास्यत	अह्वास्येताम्	अह्वास्यन्त
म० ,,	अह्वास्यथाः	अह्वास्येथाम्	अह्वास्यध्वम्
उ० ,,	अह्वास्ये	अह्वास्यावहि	अह्वास्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अह्वास्यत्	अह्वास्यताम्	अह्वास्यन्
म० ,,	अह्वास्यः	अह्वास्यतम्	अह्वास्यत
उ० ,,	अह्वास्यम्	अह्वास्याव	अह्वास्याम

२६५. राजृ[1]—दीप्तौ । उभयपदी, सेट् ।

प्र० पु०	राजते	राजेते	राजन्ते
म० ,,	राजसे	राजेथे	राजध्वे
उ० ,,	राजे	राजावहे	राजामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	राजति	राजतः	राजन्ति
म० ,,	राजसि	राजथः	राजथ
उ० ,,	राजामि	राजावः	राजामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	रेजे[2]	रेजाते	रेजिरे
म० ,,	रेजिषे	रेजाथे	रेजिध्वे

---

1. ऋदित् होने से ण्यन्तलुङ् में उपधा ह्रस्व होगा—अरराजत ।

2. "फणां च सप्तानाम्" से कित् लिट् और सेट् थल में विकल्प से एत्वाभ्यास लोप ।

उ० ,,	रेजे	रेजिवहे	रेजिमहे

पक्षे

प्र० पु०	रराजे	रराजाते	रराजिरे
म० ,,	रराजिषे	रराजाथे	रराजिध्वे
उ० ,,	रराजे	रराजिवहे	रराजिमहे

परस्मैपद

प्र० पु०	रराज	रराजतुः-रेजतुः	रराजुः-रेजुः
म० ,,	रराजिथ-रेजिथ	रराजथुः-रेजथुः	रराज-रेज
उ० ,,	रराज	रराजिव-रेजिव	रराजिम-रेजिम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	राजिता	राजितारौ	राजितारः
म० ,,	राजितासे	राजितासाथे	राजिताध्वे
उ० ,,	राजिताहे	राजितास्वहे	राजितास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	राजिता	राजितारौ	राजितारः
म० ,,	राजितासि	राजितास्थः	राजितास्थ
उ० ,,	राजितास्मि	राजितास्वः	राजितास्मः

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	राजताम्	राजेताम्	राजन्ताम्
म० ,,	राजस्व	राजेथाम्	राजध्वम्
उ० ,,	राजै	राजावहै	राजामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	राजतु-तात्	राजताम्	राजन्तु
म० ,,	राज-तात्	राजतम्	राजत
उ० ,,	राजानि	राजाव	राजाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अराजत	अराजेताम्	अराजन्त
म० ,,	अराजथाः	अराजेथाम्	अराजध्वम्
उ० ,,	अराजे	अराजावहि	अराजामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अराजत्	अराजताम्	अराजन्
म० ,,	अराजः	अराजतम्	अराजत
उ० ,,	अराजम्	अराजाव	अराजाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	राजेत	राजेयाताम्	राजेरन्
म० ,,	राजेथाः	राजेयाथाम्	राजेध्वम्
उ० ,,	राजेय	राजेवहि	राजेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	राजेत्	राजेताम्	राजेयुः
म० ,,	राजेः	राजेतम्	राजेत
उ० ,,	राजेयम्	राजेव	राजेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	राजिषीष्ट	राजिषीयास्ताम्	राजिषीरन्
म० ,,	राजिषीष्ठाः	राजिषीयास्थाम्	राजिषीध्वम्
उ० ,,	राजिषीय	राजिषीवहि	राजिषीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	राज्यात्	राज्यास्ताम्	राज्यासुः
म० ,,	राज्याः	राज्यास्तम्	राज्यास्त
उ० ,,	राज्यासम्	राज्यास्व	राज्यास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अराजिष्ट	अराजिषाताम्	अराजिषत
म० ,,	अराजिष्ठाः	अराजिषाथाम्	अराजिध्वम्
उ० ,,	अराजिषि	अराजिष्वहि	अराजिष्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अराजीत्	अराजिष्टाम्	अराजिषुः
म० ,,	अराजीः	अराजिष्टम्	अराजिष्ट
उ० ,,	अराजिषम्	अराजिष्व	अराजिष्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अराजिष्यत	अराजिष्येताम्	अराजिष्यन्त
म० ,,	अराजिष्यथाः	अराजिष्येथाम्	अराजिष्यध्वम्
उ० ,,	अराजिष्ये	अराजिष्यावहि	अराजिष्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अराजिष्यत्	अराजिष्यताम्	अराजिष्यन्
म० ,,	अराजिष्यः	अराजिष्यतम्	अराजिष्यत
उ० ,,	अराजिष्यम्	अराजिष्याव	अराजिष्याम

२६६ हिक्क-अव्यक्ते शब्दे । उ० प० सेट् ।

लट् आत्मनेपद

दशलकारेषु—हिक्कति-हिक्कते । जिहिक्क-जिहिक्के । हिक्कितासि-हिक्कितासे । हिक्किष्यति-हिक्किष्यते । हिक्कतु-हिक्कताम् । अहिक्कत्-अहिक्कत हिक्केत्-हिक्केत । हिक्क्यात्-हिक्किषीष्ट[1] । अहिक्कीत्-अहिक्किष्ट । अहिक्किष्यत्-अहिक्किष्यत ।

२६७ अञ्चु-गतौ, याचने च । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—अञ्चति-अञ्चते । आनञ्च-आनञ्चे[2] । अञ्चितासि-

1. "नेटि" से वृद्धिनिषेध ।

2. "अत आदेः" तस्मान्नुड्द्विहलः" ।

अञ्चितासे। अञ्चिष्यति-अञ्चिष्यते। अञ्चतु-अञ्चताम्। आञ्चत्-आञ्चत। अञ्चेत-अञ्चेत। अच्यात्[1]-अञ्चिषीष्ट। आञ्चीत्[2]-आञ्चिष्ट। आञ्चिष्यत्-आञ्चिष्यत।

२६८ टुयाचृ[3]-याच्ञायाम्। उभयपदी, सेट्।

दशलकारेषु—याचति-याचते। ययाच-ययाचे। याचितासि-याचितासे। याचिष्यति-याचिष्यते। याचतु-याचताम्। अयाचत्-अयाचत। याचेत्-याचेत। याच्यात्-याचिषीष्ट। अयाचीत्-अयाचिष्ट। अयाचिष्यत्-अयाचिष्यत।

२६९. बुधिर्=बोधने। उभयपदी, सेट्।

दशलकारेषु—बोधति-बोधते। बुबोध-बुबुधे। बोधितासि-बोधितासे। बोधिष्यति-बोधिष्यते। बोधतु-बोधताम्। अबोधत्-अबोधत। बोधेत्-बोधेत। बुध्यात्-बोधिषीष्ट। अबुधत्[4], अबोधीत्-अबोधिष्ट। अबोधिष्यत्-अबोधिष्यत।

२७०. खनु—अवदारणे। उभयपदी, सेट्।

दशलकारेषु—खनति-खनते। चखान-चख्ने[5]। खनितासि-खनितासे। खनिष्यति-ते। खनतु-खनताम्। अखनत्-त। खनेत्-त। खायात्-खन्यात्, खनिषीष्ट। अखानीत्[6]-अखनीत्, अखनिष्ट। अखनिष्यत्-त।

---

1. "अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति" से नलोप।

2. नेटि से हलन्त लक्षण वृद्धिनिषेध। "आडजादीनाम्" से वृद्धि। आट् के अभाव में-मा भवान् अञ्चीत्।

3. टु इत् होने से "ट्वितोऽथुच्" से अथुच् प्रत्यय होकर 'याचथुः' शब्द होगा तथा नङ् प्रत्यय से याच्ञा शब्द होगा। क्त—याचितः। क्त्वा—याचित्वा। तुमुन्-याचितुम्। तव्य-याचितव्यम्। णिच्-याचयते। सन्-यियाचिचिषते।

4. "इरितोवा" से परस्मैपद में अङ् विकल्प से होगा।

5. कित् लिट् में "गम हनजनखनघसां लोपः—" से उपधालोप।

6. "अतो हलादेर्लघोः"।

२७१. चीवृ—आदानसम्वरणयोः । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—चीवति-चीवते । चिचीव-चिचीवे । चीवितासि-चीवितासे । चीविष्यति-चीविष्यते । चीवतु-चीवताम् । अचीवत्-अचीवत । चीवेत्-चीवेत । चीव्यात्-चीविषीष्ट । अचीवीत्-अचीविष्ट । अचीविष्यत्-अचीविष्यत ।

२७२. चायृ—पूजानिशामनयोः । उ० भ० सेट् ।

दशलकारेषु—चायति-चायते । चचाय-चचाये । चायितासि-चायितासे । चायिष्यति-चायिष्यते । चायतु-चायताम् । अचायत्-अचायत । चायेत्-चायेत । चाय्यात्-चायिषीष्ट, अचायीत्-अचायिष्ट । अचायिष्यत्-अचायिष्यत ।

२७३. व्यय—गतौ । उभयपदी, सेट् ।

लट् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्ययते	व्ययेते	व्ययन्ते
म० ,,	व्ययसे	व्ययेथे	व्ययध्वे
उ० ,,	व्यये	व्ययावहे	व्ययामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	व्ययति	व्ययतः	व्ययन्ति
म० ,,	व्ययसि	व्ययथः	व्ययथ
उ० ,,	व्ययामि	व्ययावः	व्ययामः

लिट् आत्मनेपद

प्र० पु०	विव्यये	विव्ययाते	विव्ययिरे
म० ,,	विव्ययिषे	विव्ययाथे	विव्ययिध्वे
उ० ,,	विव्यये	विव्ययिवहे	विव्ययिमहे

परस्मैपद

प्र० ,,	विव्याय	विव्ययतुः	विव्ययुः

म० ,,	विव्ययिथ	विव्ययथुः	विव्यय
उ० ,,	विव्याय-विव्यय	विव्ययिव	विव्ययिम

लुट् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्ययिता	व्ययितारौ	व्ययितारः
म० ,,	व्ययितासे	व्ययितासाथे	व्ययिताध्वे
उ० ,,	व्ययिताहे	व्ययितास्वहे	व्ययितास्महे

परस्मैपद

प्र० पु०	व्ययिता	व्ययितारौ	व्ययितारः
म० ,,	व्ययितासि	व्ययितास्थः	व्ययितास्थ
उ० ,,	व्ययितास्मि	व्ययितास्वः	व्ययितास्मः

लृट् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्ययिष्यते	व्ययिष्येते	व्ययिष्यन्ते
म० ,,	व्ययिष्यसे	व्ययिष्येथे	व्ययिष्यध्वे
उ० ,,	व्ययिष्ये	व्ययिष्यावहे	व्ययिष्यामहे

परस्मैपद

प्र० पु०	व्ययिष्यति	व्ययिष्यतः	व्ययिष्यन्ति
म० ,,	व्ययिष्यसि	व्ययिष्यथः	व्ययिष्यथ
उ० ,,	व्ययिष्यामि	व्ययिष्यावः	व्ययिष्यामः

लोट् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्ययताम्	व्ययेताम्	व्ययन्ताम्
म० ,,	व्ययस्व	व्ययेथाम्	व्ययध्वम्
उ० ,,	व्ययै	व्ययावहै	व्ययामहै

परस्मैपद

प्र० पु०	व्ययतु-तात्	व्ययताम्	व्ययन्तु
म० ,,	व्यय-तात्	व्ययतम्	व्ययत

उ० ,,	व्ययानि	व्ययाव	व्ययाम

लङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अव्ययत	अव्ययेताम्	अव्ययन्त
म० ,,	अव्ययथाः	अव्ययेथाम्	अव्ययध्वम्
उ० ,,	अव्यये	अव्ययावहि	अव्ययामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अव्ययत्	अव्ययताम्	अव्ययन्
म० ,,	अव्ययः	अव्ययतम्	अव्ययत
उ० ,,	अव्ययम्	अव्ययाव	अव्ययाम

विधिलिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्ययेत	व्ययेयाताम्	व्ययेरन्
म० ,,	व्ययेथाः	व्ययेयाथाम्	व्ययेध्वम्
उ० ,,	व्ययेय	व्ययेवहि	व्ययेमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	व्ययेत्	व्ययेताम्	व्ययेयुः
म० ,,	व्ययेः	व्ययेतम्	व्ययेत
उ० ,,	व्ययेयम्	व्ययेव	व्ययेम

आशीर्लिङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	व्ययिषीष्ट	व्ययिषीयास्ताम्	व्ययिषीरन्
म० ,,	व्ययिषीष्ठाः	व्ययिषीयास्थाम्	व्ययिषीध्वम्
उ० ,,	व्ययिषीय	व्ययिषीवहि	व्ययिषीमहि

परस्मैपद

प्र० पु०	वीयात्[1]	वीयास्ताम्	वीयासुः

1. सम्प्रसारण, "अकृत्सार्वधातुकयोः" से दीर्घ ।

म० ,,	वीयाः	वीयास्तम्	वीयास्त
उ० ,,	वीयासम्	वीयास्व	वीयास्म

लुङ् आत्मनेपद

प्र० पु०	अव्ययिष्ट	अव्ययिषाताम्	अव्ययिषत
म० ,,	अव्ययिष्ठाः	अव्ययिषाथाम्	अव्ययिध्वम्
उ० ,,	अव्ययिषि	अव्ययिष्वहि	अव्ययिष्महि

परस्मैपद

प्र० पु०	अव्ययीत्[1]	अव्ययिष्टाम्	अव्ययिषुः
म० ,,	अव्ययीः	अव्ययिष्टम्	अव्ययिष्ट
उ० ,,	अव्ययिषम्	अव्ययिष्व	अव्ययिष्म

लृङ् आत्मनेपद

प्र० म०	अव्ययिष्यत	अव्ययिष्येताम्	अव्ययिष्यन्त
म० ,,	अव्ययिष्यथाः	अव्ययिष्येथाम्	अव्ययिष्यध्वम्
उ० ,,	अव्ययिष्ये	अव्ययिष्यावहि	अव्ययिष्यामहि

परस्मैपद

प्र० पु०	अव्ययिष्यत्	अव्ययिष्यताम्	अव्ययिष्यन्
म० ,,	अव्ययिष्यः	अव्ययिष्यतम्	अव्ययिष्यत
उ० ,,	अव्ययिष्यम्	अव्ययिष्याव	अव्ययिष्याम

२७४. दाश्—दाने । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—दाशति-दाशते । ददाश-ददाशे । दाशितासि-दाशितासे । दाशिष्यति-दाशिष्यते । दाशतु-दाशताम् । अदाशत्-अदाशत । दाशेत्-दाशेत । दाश्यात्-दाशिषीष्ट । अदाशीत्-अदाशिष्ट । अदाशिष्यत्-अदाशिष्यत ।

1. ह्म्यन्त क्षण श्वस —'' से वृद्धि निषेध ।

२७५. भेषृ—भये । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भेषति-भेषते । बिभेष-बिभेषे । भेषितासि-भेषितासे । भेषिष्यति-भेषिष्यते । भेषतु-भेषताम् । अभेषत्-अभेषत । भेषेत्-भेषेत । भेष्यात्-भेषिषीष्ट । अभेषीत्-अभेषिष्ट । अभेषिष्यत्-अभेषिष्यत ।

२७६ असु-गति दीप्त्यादानेषु । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—असति-असते । आस-आसे । असितासि-असितासे । असिष्यति-असिष्यते । असतु-असताम् । आसत्-आसत । असेत्-असेत । अस्यात्-असिषीष्ट । आसीत्-आसिष्ट । आसिष्यत्-आसिष्यत ।

२७७ स्पश-बाधन स्पर्शनयोः । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—स्पशति-स्पशते । पस्पाश-पस्पशे । स्पशिता-स्पशितासे । स्पशिष्यति-स्पशिष्यते । स्पशतु-स्पशताम् । अस्पशत्-अस्पशत । स्पशेत्-स्पशेत । स्पश्यात्-स्पशिषीष्ट । अस्पशीत्-अस्पशिष्ट । अस्पशिष्यत्-अस्पशिष्यत ।

२७८ लष—कान्तौ । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु - लष्यति-लषति, लष्यते-लषते । ललाष-लेषे । लषितासि-लषितासे । लषिष्यति-लषिष्यते । लष्यतु-लषतु लष्यताम्-लषताम् । अलष्यत्-अलषत्, अलष्यत-अलषत । लष्येत्-लषेत्, लष्येत-लषेत । लष्यात्-लषिषीष्ट । अलाषीत्-अलषीत्-अलषिष्ट । अलषिष्यत्-अलषिष्यत ।

२७९. चष्—भक्षणे । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—चषति-चषते । चचाष-चेषे । चषितासि-चषितासे । चषिष्यति-चषिष्यते । चषतु-चषताम् । अचषत्-अचषत । चषेत्-चषेत । चष्यात्-चषिषीष्ट । अचाषीत्[2], अचषीत्-अचषिष्ट । । अचषिष्यत्-अचषिष्यत ।

---

1. "वा भ्राश भ्लाश भ्रमु"—से सार्वधातुकों में विकल्प से श्यन्, पक्षे शप् ।

2. "अतो हलादे र्लघोः" ।

२८०. झप आदानसम्वरणयो. । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—झपति-झपते । जझाप-जझपे । झपितासि-झपितासे । झपिष्यति-झपिष्यते । झपतु-झपताम् । अझपत्-अझपत । झपेत्-झपेत । झप्यात्-झपिषीष्ट । अझापीत्-अझपीत् अझपिष्ट । अझपिष्यत्-अझपिष्यत ।

२८१. दासृ—दाने । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—दासति-दासते । ददास-ददासे । दासितासि-दासितासे । दासिष्यति-दासिष्यते दासतु-दासताम् । अदासत्-अदासत । दासेत्-दासेत । दास्यात्-दासिषीष्ट । अदासीत्-अदासिष्ट । अदासिष्यत्-अदासिष्यत ।

२८२. धावु—गतिशुद्ध्योः । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—धावति-धावते । दधाव-दधावे । धावितासि-धावितासे । धाविष्यति-धाविष्यते । धावतु-धावताम् । अधावत्-अधावत । धावेत्-धावेत । धाव्यात्-धाविषीष्ट । अधावीत्-अधाविष्ट । अधाविष्यत्-अधाविष्यत ।

इति भ्वादिगणः

अथ अदादि प्रकरणम्

१. ऋति—जुगुप्सायाम्, कृपायाञ्च, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	ऋतीयते[1]	ऋतीयेते	ऋतीयन्ते
म० ,,	ऋतीयसे	ऋतीयेथे	ऋतीयध्वे
उ० ,,	ऋतीये	ऋतीयावहे	ऋतीयामहे

लिट्

प्र० पु०	ऋतीयाञ्चक्रे	ऋतीयाञ्चक्राते	ऋतीयाञ्चक्रिरे
म० ,,	ऋतीयाञ्चकृषे	ऋतीयञ्चक्राथे	ऋतीयाञ्चकृध्वे
उ० ,,	ऋतीयाञ्चक्रे	ऋतीयाञ्चकृवहे	ऋतीयाञ्चकृमहे

पक्ष

प्र० पु०	आनर्त[2]	आनृततुः	आनृतुः
म० ,,	आनर्तिथ	आनृतथुः	आनृत
उ० ,,	आनर्त	आनृतिव	आनृतिम

लुट्

प्र० पु०	ऋतीयिता	ऋतीयितारौ	ऋतीयितारः
म० ,,	ऋतीयितासे	ऋतीयितासाथे	ऋतीयिताध्वे
उ० ,,	ऋतीये	ऋतीयिवहे	ऋतीयिमहे

---

1. "ऋतेरीयङ्" से ईयङ् प्रत्यय। "सनाद्यन्ता धातवः" से धातु सञ्ज्ञा। ईयङ् प्रत्यय ङित है, अतः आत्मनेपद होगा"। आयादय आर्ध-धातुके वा" से ईयङ् न होने पर परस्मैपद होगा।

पक्षे

प्र० पु०	अर्तिता	अर्तितारौ	अर्तितारः
म० ,,	अर्तितासि	अर्तितास्थः	अर्तितास्थ
उ० ,,	अर्तितास्मि	अर्तितास्वः	अर्तितास्मः

लृट्

प्र० पु०	ऋतीयिष्यते	ऋतीयिष्येते	ऋतीयिष्यन्ते
म० ,,	ऋतीयिष्यसे	ऋतीयिष्येथे	ऋतीयिष्यध्वे
उ० ,,	ऋतीयिष्ये	ऋतीयिष्यावहे	ऋतीयिष्यामहे

पक्षे

प्र० पु०	अर्तिष्यति	अर्तिष्यतः	अर्तिष्यन्ति
म० ,,	अर्तिष्यसि	अर्तिष्यथः	अर्तिष्यथ
उ० ,,	अर्तिष्यामि	अर्तिष्यावः	अर्तिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	ऋतीयाम्	ऋतीयेताम्	ऋतीयन्ताम्
म० ,,	ऋतीयस्व	ऋतीयेथाम्	ऋतीयध्वम
उ० ,,	ऋतीयै	ऋतीयावहै	ऋतीयामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	ऋतीयेत	ऋतीयेयाताम्	ऋतीयेरन्
म० ,,	ऋतीयेथाः	ऋतीयेयाथाम्	ऋतीयेध्वम्
उ० ,,	ऋतीयेय	ऋतीयेवहि	ऋतीयेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ऋतीयिषीष्ट	ऋतीयिषीयास्ताम्	ऋतीयिषीरन्
म० ,,	ऋतीयिषीष्ठाः	ऋतीयिषीयास्थाम्	ऋतीयिषीध्वम्
उ० ,,	ऋतीयिषीय	ऋतीयिषीवहि	ऋतीयिषीमहि

पक्षे

प्र० पु०	अत्यात्	अत्यास्ताम्	अत्यासुः
म० ,,	अत्याः	अत्यर्यास्तम्	अत्यास्त
उ० ,,	अत्यासम्	अत्यास्व	अत्यास्म

लुङ

प्र० पु०	आर्तीयिष्ट	आर्तीयिषाताम्	आर्तीयिषत
म० ,,	आर्तीयिष्ठाः	आर्तीयिषाथाम्	आर्तीयिध्वम्
उ० ,,	आर्तीयिषि	आर्तीयिष्वहि	आर्तीयिष्महि

पक्षे

प्र० पु०	आर्तीत्	आर्तिष्टाम्	आर्तिषुः
म० ,,	आर्तीः	आर्तिष्टम्	आर्तिष्ट
उ० ,,	आर्तिषम्	आर्तिष्व	आर्तिष्म

लृङ्

प्र० पु०	आर्तीयिष्यत	आर्तीयिष्येताम्	आर्तीयिष्यन्त
म० ,,	आर्तीयिष्यथाः	आर्तीयिष्येथाम्	आर्तीयिष्यध्वम्
उ० ,,	आर्तीयिष्ये	आर्तीयिष्यावहि	आर्तीयिष्यामहि

पक्षे

प्र० पु०	आर्तिष्यत्	आर्तिष्यताम्	आर्तिष्यन्
म० ,,	आर्तिष्यः	आर्तिष्यतम्	आर्तिष्यत
उ० ,,	आर्तिष्यम्	आर्तिष्याव	आर्तिष्याम

२. अद् - भक्षणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	अत्ति[1]	अत्तः	अदन्ति

1. अदादि में शप् का लुक् होताहै ।

म० ,,	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ० ,,	अद्मि[1]	अद्वः	अद्मः

लिट्

प्र० पु०	जघास[2]	जक्षतुः[3]	जक्षुः
म० ,,	जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष
उ० ,,	जघास-जघस	जक्षिव	जक्षिम

पक्षे

प्र० पु०	आद	आदतुः	आदुः
म० ,,	आदिथ[4]	आदथुः	आद
उ० ,,	आद	आदिव	आदिम

लुट्

प्र० पु०	अत्ता[5]	अत्तारौ	अत्तारः
म० ,,	अत्तासि	अत्तास्थः	अत्तास्थ
उ० ,,	अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म० ,,	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ

---

1. दकार पदान्त में नहीं, अतः "यरः पदान्तस्यानुनासिको वा" से अनुनासिक नहीं होगा।

2. "लिट्यन्यतरस्याम्" से वैकल्पिक 'घस्' आदेश।

3. जघस्+अतुस्, "शासिवसिघसीनाञ्च" से उपधालोप, चर्त्व, षत्व।

4. "इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम्" से इट्।

5. "खरि च"।

उ० ,,	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	अत्तु-त्तात्	अत्ताम्	अदन्तु
म० ,,	अद्धि[1]-त्तात्	अत्तम्	अत्त
उ० ,,	अदानि	अदाव	अदाम
		लङ्	
प्र० पु०	आदत्[2]	आत्ताम्	आदन्
म० ,,	आदः	आत्तम्	आत्त
उ० ,,	आदम्	आद्व	आद्म
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म० ,,	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ० ,,	अद्याम्	अद्याव	अद्याम
		आशीर्लिङ्	
प्र० पु०	अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासुः
म० ,,	अद्याः	अद्यास्तम्	अद्यास्त
उ० ,,	अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म
		लुङ्	
प्र० पु०	अघसत्[3]	अघसताम्	अघसन्
म० ,,	अघसः	अघसतम्	अघसत
उ० ,,	अघसम्	अघसाव	अघसाम

1. "हुझल्भ्योहेर्धिः" से हि आदेश ।

2. "अदः सर्वेषाम्" से अपृक्त हल् को अट् ।

3. "लुङ्सनोर्घस्लृ" लृदित् होने से अङ्, "गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि" से उपधालोप अङ् परे होने नहीं होगा ।

लृङ्

प्र० पु०	आत्स्यत्[1]	आत्स्यताम्	आत्स्यन्
म० ,,	आत्स्यः	आत्स्यतम्	आत्स्यत
उ० ,,	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

३. हन्—हिंसागत्योः । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	हन्ति	हतः[2]	घ्नन्ति[3]
म० ,,	हंसि	हथः	हथ
उ० ,,	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लिट्

प्र० पु०	जघान[4]	जघ्नतुः	जघ्नुः
म० ,,	जघनिथ-जघन्थ	जघ्नथुः	जघ्न
उ० ,,	जघान-जघन	जघ्निव	जघ्निम

लुट्

प्र० ,,	हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः
म० ,,	हन्तासि	हन्तास्थः	हन्तास्थ
उ० ,,	हन्तास्मि	हन्तास्वः	हन्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	हनिष्यति[6]	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति

1. आट् । क्त—जग्धम् । क्त्वा – जग्ध्वा । तुमुन्—अत्तुम् । तव्य-अत्तव्य । तृच्—अत्ता । शतृ—अदन् । णिच्—आदयति । सन्—जिघत्सति ।

2. "अनुदात्तोपदेश—" से अनुनासिकलोप ।

3. उपधालोप, "हो हन्ते र्ञ्णिन्नेषु" से कुत्व ।

4. "अभ्यासाच्च" से कुत्व ।

5. उपधालोप, कुत्व ।

6. "ऋद्धनोः स्ये" से इट् ।

म० ,,	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० ,,	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	हन्तु-हतात्	हताम्	घ्नन्तु
म० ,,	जहि[1]-हतात्	हतम्	हत
उ० ,,	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्

प्र० पु०	अहन्[2]	अहताम्	अघ्नन्
म० ,,	अहन्	अहतम्	अहत
उ० ,,	अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० ,,	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० ,,	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	वध्यात्[3]	वध्यास्ताम्	वध्यासुः
म० ,,	वध्याः	वध्यास्तम्	वध्यास्त
उ० ,,	वध्यासम्	वध्यास्व	वध्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः
म० ,,	अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट
उ० ,,	अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म

1. "हन्तेर्जः" से ज आदेश।
2. "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्—" से अपृक्त हल् का लोप।
3. हनो वध लिङि। "लुङि च" से वध आदेश।

लृङ्

प्र० पु०	अहनिष्यत्	अहनिष्यताम्	अहनिष्यन्
म० ,,	अहनिष्यः	अहनिष्यतम्	अहनिष्यत
उ० ,,	अहनिष्यम्	अहनिष्याव	अहनिष्याम

यु—मिश्रणामिश्रणयोः। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	यौति[1]	युतः[2]	युवन्ति
म० ,,	यौषि	युथः	युथ
उ० ,,	यौमि	युवः	युमः

लिट्

प्र० पु०	युयाव	युयुवतुः[3]	युयुवुः
म० ,,	युयविथ	युयुवथुः	युयुव
उ० ,,	युयाव-युयव	युयुविव	युयुविम

लुट्

प्र० पु०	यविता	यवितारौ	यवितारः
म० ,,	यवितासि	यवितास्थः	यवितास्थ
उ० ,,	यवितास्मि	यवितास्वः	यवितास्मः

लृट्

प्र० पु०	यविष्यति	यविष्यतः	यविष्यन्ति
म० ,,	यविष्यसि	यविष्यथः	यविष्यथ
उ० ,,	यविष्यामि	यविष्यावः	यविष्यामः

लोट्

प्र० पु०	यौतु-युतात्	युताम्	युवन्तु

1. पित् सार्वधातुक में "उतो वृद्धि लुकि हलि" से वृद्धि।
2. अपित्सार्वधातुकं ङित्।
3. "अचिश्नु—" से उवङ।

म० ,,	युहि[1]-युतात्[2]	युतम्	युत
उ० ,,	यवानि	यवाव[3]	यवाम

लङ्

प्र० पु०	अयौत्	अयुताम्	अयुवन्
म० ,,	अयौः	अयुतम्	अयुत
उ० ,,	अयवम्	अयुव	अयुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	युयात्[4]	युयाताम्	युयुः
म० ,,	युयाः	युयातम्	युयात
उ० ,,	युयाम्	युयाव	युयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	यूयात्[5]	यूयास्ताम्	यूयासुः
म० ,,	यूयाः	यूयास्तम्	यूयास्त
उ० ,,	यूयासम्	यूयास्व	यूयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अयावीत्[6]	अयाविष्टाम्	अयाविषुः
म० ,,	अयावीः	अयाविष्टम्	अयाविष्ट
उ० ,,	अयाविषम्	अयाविष्व	अयाविष्म

1. हि अपित् है, अतः वृद्धि नहीं होगी।
2. तातङ् ङित् है, अतः वृद्धि न हुई।
3. आट् परे होने से गुण होगा।
4. यासुट् ङित् होने से पित् नहीं रहा अतः वृद्धि नहीं हुई।
5. "अकृत्सार्वधातुकयोः" से दीर्घ।
6. "सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु" से वृद्धि।

लृङ्

प्र० पु०	अयविष्यत्	अयविष्यताम्	अयविष्यन्
म० ,,	अयविष्यः	अयविष्यतम्	अयविष्यत
उ० ,,	अयविष्यम्	अयविष्याव	अयविष्याम

५. या—प्रापणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	याति	यातः	यान्ति
म० ,,	यासि	याथः	याथ
उ० ,,	यामि	यावः	यामः

लिट्

प्र० पु०	ययौ[1]	ययतुः[2]	ययुः
म० ,,	ययिथ-ययाथ[3]	ययथुः	यय
उ० ,,	ययौ	ययिव	ययिम

लुट्

प्र० पु०	याता	यातारौ	यातारः
म० ,,	यातासि	यातास्थः	यातास्थ
उ० ,,	यातास्मि	यातास्वः	यातास्मः

लृट्

प्र० पु०	यास्यति	यास्यतः	यास्यन्ति
म० ,,	यास्यसि	यास्यथः	यास्यथ
उ० ,,	यास्यामि	यास्यावः	यास्यामः

---

1. "आत औ णलः" से औ ।
2. "आतो लोप इटि च" से आ का लोप ।
3. "ऋतो भारद्वाजस्य" ।

लोट्

प्र० पु०	यातु-तात्	याताम्	यान्तु
म० ,,	याहि-तात्	यातम्	यात
उ० ,,	यानि	याव	याम

लङ्

प्र० पु०	अयात्	अयाताम्	अयुः-अयान्[1]
म० ,,	अयाः	अयातम्	अयात
उ० ,,	अयाम्	अयाव	अयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	यायात्	यायाताम्	यायुः
म० ,,	यायाः	यायातम्	यायात
उ० ,,	यायाम्	यायाव	यायाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	यायात्	यायास्ताम्	यायासुः
म० ,,	यायाः	यायास्तम्	यायास्त
उ० ,,	यायासम्	यायास्व	यायास्म

लुङ्

प्र० पु०	अयासीत्[2]	अयासिष्टाम्	अयासिषुः
म० ,,	अयासीः	अयासिष्टम्	अयासिष्ट
उ० ,,	अयासिषम्	अयासिष्व	अयासिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अयास्यत्	अयास्यताम्	अयास्यन्

1. ''लङः शाकटायनस्यैव'' से वैकल्पिक जुस् आदेश। "इतश्च" से इकारलोप, संयोगान्त लोप।

2. ''यमरमनमातां सक् च'' से सक्।

म० ,,	अयास्यः	अयास्यतम्	अयास्यत
उ० ,,	अयास्यम्	अयास्याव	अयास्याम

६ वा[1]-गतिगन्धनयोः । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—वाति । ववौ । वाता । वास्यति । वातु । अवात । वायात् । वायात् । अवासीत् । अवास्यत् ।

७ भा-दीप्तौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—भाति । बभौ । भाता । भास्यति । भातु । अभात् । भायात् । भायात् । अभासीत् । अभास्यत् ।

८ ष्णा[2]-शौचे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—स्नाति । सस्नौ । स्नाता । स्नास्यति । स्नातु । अस्नात । स्नायात् । स्नायात्[3]-स्नेयात् । अस्नासीत् । अस्नासिष्यत् ।

९ श्रा[4]-पाके । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—श्राति । शश्रौ । श्राता । श्रास्यति । श्रातु । अश्रात । श्रायात् । श्रायात्-श्रेयात् । अश्रासीत् । अश्रास्यत् ।

१० द्रा[5]-कुत्सायां गतौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—द्राति । दद्रौ । द्राता । द्रास्यति । द्रातु । अद्रात । द्रायात् । द्रेयात्-द्रायात् । अद्रासीत् । अद्रास्यत् ।

---

1. वा, भा धातुओं के रूप या के समान हैं । क्त-यातः । क्त्वा-यात्वा । तुमुन्-यातुम् । तव्य-यातव्यम् । शतृ-यान् । णिच्-यापयति । सन्-यियासति ।

2. धात्वादेः षः सः । षट्त्विवर्गस्तवर्गजः । निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

3. "वाऽन्यस्य संयोगादेः" से एत्व विकल्प ।

4. क्त-श्राणः "(संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः" नत्व) क्त्वा-श्रात्वा । तुमुन्-श्रातुम् । क्तवतु-श्राणवान् । णिच्-श्रपयति । सन्-शिश्रासति ।

5. क्त-द्राणः । शेष रूप श्रा के समान ।

११ प्सा-भक्षणे। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—प्साति। पप्सौ। प्साता। प्सास्यति। प्सातु। अप्सात्। प्सायात्। प्सेयात्-प्सायात्। अप्सासीत्। अप्सास्यत्।

१२ पा-रक्षणे। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु— पाति। पपौ। पाता। पास्यति। पातु। अपात्। पायात्। पायात्[1]। अपासीत्[2]। अपास्यत्।

१३ रा-दाने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—राति। ररौ। राता। रास्यति। रातु। अरात्। रायात्। रायात्। अरासीत्। अरास्यत्।

१४ ला-आदाने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—लाति। ललौ। लाता। लास्यति। लातु। अलात्। लायात्। लायात्। अलासीत्। अलास्यत्।

१५ दाप्-लवने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—दाति। ददौ। दाता। दास्यति। दातु। अदात्। दायात्[3]। दायात्। अदासीत्। अदास्यत्।

१६ ख्या[4]-प्रकथने। परस्मैपदी, अनिट्

लट्

प्र० पु०	ख्याति	ख्यातः	ख्यान्ति

1. "गुर्लिङि:" से या से पा-पाने का ग्रहण है, अतः पा-रक्षणे को एत्त्व नहीं होगा।

2. "गातिस्था"-में भी पा-पाने का ग्रहण है, अतः पा-रक्षणे को सिच्-लुक् नहीं होगा।

3. दाप्-दैप् की घुसंज्ञा नहीं अतः आशीर्लिङ् में एत्त्व और लुङ् में सिच् लुक् नहीं होगा।

4. ख्या का प्रयोग आर्धधातुकलकारों में नहीं होगा।

म० ,,	ख्यासि	ख्याथः	ख्याथ
उ० ,,	ख्यामि	ख्यावः	ख्यामः

लोट्

प्र० पु०	ख्यातु-तात्	ख्याताम्	ख्यान्तु
म० ,,	ख्याहि-तात्	ख्यातम्	ख्यात
उ० ,,	ख्यानि	ख्याव	ख्याम

लङ्

प्र० पु०	अख्यात्	अख्याताम्	अख्युः-अख्यान्
म० ,,	अख्याः	अख्यातम्	अख्यात
उ० ,,	अख्याम्	अख्याव	अख्याम

विधि लिङ्

प्र० पु०	ख्यायात्	ख्यायाताम्	ख्यायुः
म० ,,	ख्यायाः	ख्यायातम्	ख्यायात
उ० ,,	ख्यायाम्	ख्यायाव	ख्यायाम

१७ विद्-ज्ञाने । परस्मैपदी, अनिट्

लट्

प्र० पु०	वेद[1]	विदतुः	विदुः
म० ,,	वेत्थ	विदथुः	विद
उ० ,,	वेद	विद्व	विद्म

पक्षे

प्र० पु०	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
म० ,,	वेत्सि	वित्थः	वित्थ
उ० ,,	वेद्मि	विद्वः	विद्मः

1. "विदो लटो वा" से विकल्प से णल् आदेश ।

लिट्

प्र० पु०	विदाञ्चकार[1]	विदाञ्चक्रतुः	विदाञ्चक्रुः
म० ,,	विदाञ्चकर्थ	विदाञ्चक्रथुः	विदाञ्चक्र
उ० ,,	विदाञ्चकार-कर	विदाञ्चकृव	विदाञ्चकृम

पक्षे

प्र० पु०	विवेद	विविदतुः	विविदुः
म० ,,	विवेदिथ	विविदथुः	विविद
उ० ,,	विवेद	विविदिव	विविदिम

लुट्

प्र० पु०	वेदिता	वेदितारौ	वेदितारः
म० ,,	वेदितासि	वेदितास्थः	वेदितास्थ
उ० ,,	वेदितास्मि	वेदितास्वः	वेदितास्मः

लृट्

प्र० पु०	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
म० ,,	वेदिष्यसि	वेदिष्यथः	वेदिष्यथ
उ० ,,	वेदिष्यामि	वेदिष्यावः	वेदिष्यामः

लोट्

प्र० म०	विदाङ्करोतु विदाङ्कुरुतात्[2]	विदाङ्कुरुताम्	विदाङ्कुर्वन्तु
म० ,,	विदाङ्कुरु-कुरुतात्	विदाङ्कुरुतम्	विदाङ्कुरुत
उ० ,,	विदाङ्करवाणि	विदाङ्करवाव	विदाङ्करवाम

1. "उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्" से वैकल्पिक आम्, कृ का अनुप्रयोग। विद् धातु अदन्त है, अतः उपधागुण नहीं होगा।

2. "विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्" से आम्, कृ का अनुप्रयोग।

पक्षे

प्र० पु०	वेत्तु-वित्तात्	वित्ताम्	विदन्तु
म० ,,	विद्धि[1]-वित्तात्	वित्तम्	वित्त
उ० ,,	वेदानि	वेदाव[2]	वेदाम

लङ्

प्र० पु०	अवेत्	अवित्ताम्	अविदुः
म० ,,	अवेः[3]-अवेत्	अवित्तम्	अवित्त
उ० ,,	अवेदम्	अविद्व	अविद्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
म० ,,	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
उ० ,,	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	विद्यात्	विद्यास्ताम्	विद्यासुः
म० ,,	विद्याः	विद्यास्तम्	विद्यास्त
उ० ,,	विद्यासम्	विद्यास्व	विद्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अवेदीत्	अवेदिष्टाम्	अवेदिषुः
म० ,,	अवेदीः	अवेदिष्टम्	अवेदिष्ट
उ० ,,	अवेदिषम्	अवेदिष्व	अवेदिष्म

1. "हुझल्भ्यो हेर्धिः" से हि।

2. आट् के निमित्त से उपधागुण।

3. "दश्च" से द् को रु। क्त—विदितः। क्त्वा—विदित्वा तुमुन्—वेदितुम्। तव्य—वेदितव्यम्। शतृ—विदन्। अनीय—वेदनीयः णिच्—वेदयति। सन्—विविदिषति। विविदिषा, विविदिषुः।

लृङ्

प्र० पु०	अवेदिष्यत्	अवेदिष्यताम्	अवेदिष्यन्
म० ,,	अवेदिष्यः	अवेदिष्यतम्	अवेदिष्यत
उ० ,,	अवेदिष्यम्	अवेदिष्याव	अवेदिष्याम

१८ अस्–भुवि। परस्मैपदी, सेट्।

लट्

प्र० पु०	अस्ति[1]	स्तः[2]	सन्ति
म० ,,	असि	स्थः	स्थ
उ० ,,	अस्मि	स्वः	स्मः

लोट्

प्र० पु०	अस्तु-स्तात्	स्ताम्	सन्तु
म० ,,	एधि[4]-स्तात्	स्तम्	स्त
उ० ,,	असानि	असाव[5]	असाम

लङ्

प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० ,,	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० ,,	आसम्	आस्व	आस्म

1. सार्वधातुकों में अस् के रूप 'भू' के समान होने से नहीं लिखे।

2. "श्नसोरल्लोपः" से अल् का लोप।

3. "तासस्त्योर्लोपः"।

4. "ध्वसोरेद्धावभ्यास लोपश्च"। एत्व को आभीयत्वेन असिद्ध मान कर हि को धि।

5. आट् के पित् होने से अल्लोप न हुआ।

6. "अस्तिसिचोऽपृक्ते" से ईट्।

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्यात्[1]	स्याताम्	स्युः
म० ,,	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० ,,	स्याम्	स्याव	स्याम

१६. रु—शब्दे । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	रवीति[2]-रौति	रुवीतः-रुतः	रुवन्ति
म० ,,	रवीषि-रौषि	रुवीथः-रुथः	रुथ
उ० ,,	रवीमि-रौमि	रुवीवः-रुवः	रुवीमः-रुमः

लिट्

प्र० पु०	रुराव	रुरुवतुः	रुरुवुः
म० ,,	रुरविथ	रुरुवथुः	रुरुव
उ० ,,	रुराव-रुरव	रुरुविव	रुरुविम

लुट्

प्र० पु०	रविता	रवितारौ	रवितारः
म० ,,	रवितासि	रवितास्थः	रवितास्थ
उ० ,,	रवितास्मि	रवितास्वः	रवितास्मः

लृट्

प्र० पु०	रविष्यति	रविष्यतः	रविष्यन्ति
म० ,,	रविष्यसि	रविष्यथः	रविष्यथ
उ० ,,	रविष्यामि	रविष्यावः	रविष्यामः

लोट्

प्र० पु०	रवीतु-रौतु, रुवीतात्-रुतात्	रुताम्-रुवीताम्	रुवन्तु

1. यासुट् के ङित् होने से अल्लोप ।
2. "तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके" से ईट् का विकल्प ।

म० ,,	रुवीहि-रुतात्	रुवीतम्-रुतम्	रुवीत-रुत
उ० ,,	रवाणि	रवाव	रवाम

लङ्

प्र० पु०	अरवीत्-अरौत्	अरुवीताम्-अरुताम्	अरुवन्
म० ,,	अरवीः-अरौः	अरुवीतम्-अरुतम्	अरुत
उ० ,,	अरवम्	अरुवीव-अरुव	अरुवीम-अरुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुवीयात्-रुयात्	रुवीयाताम्-रुयाताम्	रुवीयुः-रुयुः
म० ,,	रुवीयाः-रुयाः	रुवीयातम्-रुयातम्	रुवीयात-रुयात
उ० ,,	रुवीयम्-रुयम्	रुवीयाव-रुयाव	रुवीयाम-रुयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	रूयात्[1]	रूयास्ताम्	रूयासुः
म० ,,	रूयाः	रूयास्तम्	रूयास्त
उ० ,,	रूयासम्	रूयास्व	रूयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अरावीत्	अराविष्टाम्	अराविषुः
म० ,,	अरावीः	अराविष्टम्	अराविष्ट
उ० ,,	अराविषम्	अराविष्व	अराविष्म

लृङ्

प्र० पु०	अरविष्यत्	अरविष्यताम्	अरविष्यन्
म० ,,	अरविष्यः	अरविष्यतम्	अरविष्यत
उ० ,,	अरविष्यम्	अरविष्याव	अरविष्याम

७०. तु—गति वृद्धि हिंसासु। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—तवीति-तौति। तुताव। तोता। तोष्यति। तौतु-तवीतु। अतवीत्-अतौत्। तुवीयात्-तुयात्। तूयात्। अतौषीत्। अतोष्यत्।

---

1. "अकृत्सार्वधातुकयोः दीर्घः" से दीर्घ।

२१. णु[1]–स्तुतौ । परस्मैपदी सेट् ।

दशलकारेषु—नौति । नुनाव । नविता । नविष्यति । नौतु । नुयात् । नूयात् । अनावीत् । अनविष्यत् ।

२२. टु क्षु–शब्दे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—क्षौति । चुक्षाव । क्षविता । क्षविष्यति । क्षौतु । अक्षौत् । क्षुयात् । क्षूयात् । अक्षावीत् । अक्षविष्यत् ।

२३. ष्णु[2]–प्रस्रवणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—स्नौति । सुस्नाव । स्नविता । स्नविष्यति । स्नौतु । स्नुयात् । स्नूयात् । अस्नावीत् । अस्नविष्यत् ।

२४. षु–प्रसवैश्वर्ययोः । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—सौति । सुषाव । सोता । सोष्यति । सौतु । असौत् । सुयात् । सूयात् । असौषीत् । असोष्यत् ।

२५. कु–शब्दे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—कौति । चुकाव । कोता । कोष्यति । कौतु । अकौत् । कुयात् । कूयात् । अकौषीत् । अकोष्यत् ।

२६. इण–गतौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	एति	इतः	यन्ति[3]
म० ,,	एषि	इथः	इथ
उ० ,,	एमि	इवः	इमः

---

1. णोनः ।

2. "धात्वादेः षः सः" निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः ।

3. इणो यण् ।

लिट्

प्र० पु०	इयाय[1]	ईयतुः[2]	ईयुः
म० ,,	इययिथ-इयेथ	ईयथुः	ईय
उ० ,,	इयाय-इयय	ईयिव	ईयिम

लुट्

प्र० पु०	एता	एतारौ	एतारः
म० ,,	एतासि	एतास्थः	एतास्थ
उ० ,,	एतास्मि	एतास्वः	एतास्मः

लृट्

प्र० पु०	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
म० ,,	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
उ० ,,	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

लोट्

प्र० पु०	एतु-इतात्	इताम्	यन्तु
म० ,,	इहि-इतात्	इतम्	इत
उ० ,,	एमि	इवः	इमः

लङ्

प्र० पु०	ऐत्[3]	ऐताम्	आयन्[4]
म० ,,	ऐः[5]	ऐतम्	ऐत
उ० ,,	आयम्	ऐव	ऐम

1. "अभ्यासस्याऽसवर्णे" से इयङ्।

2. "दीर्घ इणः किति" से दीर्घ।

3. आ+इत्—"आटश्च" की वृद्धि।

4. वृद्धि, आय्।

5. सन्ध्यावन्दन वेलायां तं तडागं द्विजोत्तमैः, यहाँ द्विजोत्तम—ऐः सन्धिच्छेद है और 'ऐः' क्रियापद है।

विधि लिङ्

प्र० पु०	इयात्[1]	इयाताम्	इयुः
म० ,,	इयाः	इयातम्	इयात
उ० ,,	इयाम्	इयाव	इयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ईयात्	ईयास्ताम्	ईयासुः
म० ,,	ईयाः	ईयास्तम्	ईयास्त
उ० ,,	ईयासम्	ईयास्व	ईयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अगात्[2]	अगाताम्	अगुः
म० ,,	अगाः	अगातम्	अगात
उ० ,,	अगाम्	अगाव	अगाम

लृङ्

प्र० पु०	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्
म० ,,	ऐष्यः	ऐष्यतम्	ऐष्यत
उ० ,,	ऐष्यम्	ऐष्याव	ऐष्याम

२७ इक्[3]-स्मरणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	अध्येति	अधीतः	अधियन्ति[4]

---

1. प्रत्येति-विश्वास करता है। उपैति-पास जाता है । अन्वेति-पीछे जाता है। अवैति-जानता है। अत्येति-व्यतीत होता है। क्त-इतः । क्त्वा-इत्वा। तुमुन्-एतुम् । तव्य-एतव्य । अनीय-अयनीय । णिच्-आययति। सन्-इपिप्रिपति । कर्मवाच्य-ईयते ।

2. "इणो गा लुङि" से गा आदेश। गातिस्था—" से सिच लुक ।

3. इस का प्रयोग अधि उपसर्ग सहित होगा।

4. "इणवदिक इति वक्तव्यम्" से इण् धातु की तरह इक् धातु में भी वही कार्य होंगे।

म० ,,	अध्येषि	अधीथः	अधीथ
उ० ,,	अध्येमि	अधीवः	अधीमः

लिट्

प्र० पु०	अधीयाय	अधीयतुः	अधीयुः
म० ,,	अधीययिथ अधीयेथ	अधीयथुः	अधीय
उ० ,,	अधीयाय अधीयय	अधीयिव	अधीयिम

लुट्

प्र० पु०	अध्येता	अध्येतारौ	अध्येतारः
म० ,,	अध्येतासि	अध्येतास्थः	अध्येतास्थ
उ० ,,	अध्येतास्मि	अध्येतास्वः	अध्येतास्मः

लृट्

प्र० पु०	अध्येष्यति	अध्येष्यतः	अध्येष्यन्ति
म० ,,	अध्येष्यसि	अध्येष्यथः	अध्येष्यथ
उ० ,,	अध्येष्यामि	अध्येष्यावः	अध्येष्यामः

लोट्

प्र० पु०	अध्येतु-अधीतात्	अधीताम्	अधियन्तु
म० ,,	अधीहि-अधीतात्	अधीतम्	अधीत
उ० ,,	अध्ययानि	अध्ययाव	अध्ययाम

लङ्

प्र० पु०	अध्यैत्	अध्यैताम्	अध्यायन्
म० ,,	अध्यैः	अध्यैतम्	अध्यैत
उ० ,,	अध्यायम्	अध्यैव	अध्यैम

विधिलिङ्

प्र० पु०	अधीयात्	अधीयाताम्	अधीयुः
म० ,,	अधीयाः	अधीयातम्	अधीयात
उ० ,,	अधीयाम्	अधीयाव	अधीयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अधीयात्	अधीयास्ताम्	अधीयासुः
म० ,,	अधीयाः	अधीयास्तम्	अधीयास्त
उ० ,,	अधीयासम्	अधीयास्व	अधीयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अध्यगात्	अध्यगाताम्	अध्यगुः
म० ,,	अध्यगाः	अध्यगातम्	अध्यगात
उ० ,,	अध्यगाम्	अध्यगाव	अध्यगाम

लृङ्

प्र० पु०	अध्येष्यत्	अध्येष्यताम्	अध्येष्यन्
म० ,,	अध्येष्यः	अध्येष्यतम्	अध्येष्यत
उ० ,,	अध्येष्यम्	अध्येष्याव	अध्येष्याम

२८ वच[1]-परिभाषणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—वक्ति । उवाच । वक्ता । वक्ष्यति । वक्तु[2] । अवक् । वच्यात् । उच्यात्[3] । अवोचत्[4] । अवक्ष्यत् ।

२९ मृजू-शुद्धौ । परस्मैपदी, वेट् ।

---

1. इस का प्रयोग वचन में न होगा, ऐसा कहते हैं ।
2. मध्यमपुरुष में-वग्धि ।
3. "वचि स्वपि—" से सम्प्रसारण ।
4. "अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्" "वच उम्" ।

लट्

प्र० पु०	मार्ष्टि[1]	मृष्टः	मार्जन्ति[2], मृजन्ति
म० ,,	मार्क्षि[3]	मृष्ठः	मृष्ठ
उ० ,,	मार्ज्मि	मृज्वः	मृज्मः

लिट्

प्र० पु०	ममार्ज	ममार्जतुः-ममृजतुः	ममार्जुः-ममृजुः
म० ,,	ममार्जिथ-ममार्ष्ठ[4]	ममार्जथुः-ममृजथुः	ममृज-ममार्ज
उ० ,,	ममार्ज	ममर्जिव-ममृजिव	ममार्जिम-ममृजिम

लुट्

प्र० पु०	मार्जिता	मार्जितारौ	मार्जितारः
म० ,,	मार्जितासि	मार्जितास्थः	मार्जितास्थ
उ० ,,	मार्जितास्मि	मार्जितास्वः	मार्जितास्मः

पक्षे

प्र० पु०	मार्ष्टा[5]	मार्ष्टारौ	मार्ष्टारः
म० ,,	मार्ष्टासि	मार्ष्टास्थः	मार्ष्टास्थ
उ० ,,	मार्ष्टास्मि	मार्ष्टास्वः	मार्ष्टास्मः

लृट्

प्र० पु०	मार्जिष्यति	मार्जिष्यतः	मार्जिष्यन्ति
म० ,,	मार्जिष्यसि	मार्जिष्यथः	मार्जिष्यथ

1. "मृजेर्वृद्धिः" ।
2. क्ङित्यजादौ वेष्यते" ।
3. व्रश्च से षत्व, "षढोः कः सि" से क ।
4. "स्वरति—" से इट् ।
5. "व्रश्च—" से षत्व, ष्टुत्व ।

३१. ञिष्वप[1]—शये। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
म० ,,	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
उ० ,,	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

लिट्

प्र० पु०	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
म० ,,	सुष्वपिथ-सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुषुप
उ० ,,	सुष्वाप-सुष्वप	सुषुपिव	सुषुपिम

लुट्

प्र० पु०	स्वप्ता	स्वप्तारौ	स्वप्तारः
म० ,,	स्वप्तासि	स्वप्तास्थः	स्वप्तास्थ
उ० ,,	स्वप्तास्मि	स्वप्तास्वः	स्वप्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
म० ,,	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उ० ,,	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

लोट्

प्र० पु०	स्वपितु-स्वपितात्	स्वपिताम्	स्वपन्तु
म० ,,	स्वपिहि-तात्	स्वपितम्	स्वपित
उ० ,,	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

1. ञि इत्। "धात्वादेः षः सः" से ष को स।
2. "रुदादिभ्यः सार्वधातुके"।

लङ्

प्र० पु०	अस्वपीत्[1]-अस्वपत्[2]	अस्वपिताम्	अस्वपन्
म० ,,	अस्वपीः-अस्वपः	अस्वपितम्	अस्वपित
उ० ,,	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
म० ,,	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उ० ,,	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	सुप्यात्[3]	सुप्यास्ताम्	सुप्यासुः
म० ,,	सुप्याः	सुप्यास्तम्	सुप्यास्त
उ० ,,	सुप्यासम्	सुप्यास्व	सुप्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अस्वाप्सीत्	अस्वाप्ताम्[4]	अस्वाप्सुः
म० ,,	अस्वाप्सीः	अस्वाप्तम्	अस्वाप्त
उ० ,,	अस्वाप्सम्	अस्वाप्स्व	अस्वाप्स्म

लृङ्

प्र० पु०	अस्वप्स्यत्	अस्वप्स्यताम्	अस्वप्स्यन्

1. "रुदश्च पंचभ्यः" से ईट्।

2. "अड् गार्ग्यगालवयोः"।

3. "किदाशिषि" "वचिस्वपियजादीनां किति"।

4. हलन्तलक्षण वृद्धि, 'झलो झलि" से सलोप। क्त्वा-सुप्त्वा। क्त-सुप्तः। तुमुन्-स्वपितुम्। तव्य-स्वपितम्। णिच्-स्वापयति। यङ्-सोषुप्यते। यङ्लुक्-सास्वपीति। सन्-सुषुप्सति। सुषुप्सा।

म० ,,	अस्वप्स्यः	अस्वप्स्यतम्	अस्वप्स्यत
उ० ,,	अस्वप्स्यम्	अस्वप्स्याव	अस्वप्स्याम

३२. श्वस्—प्राणने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—श्वसिति। शश्वास। श्वसिता। श्वसिष्यति। श्वसितु। अश्वसीत्-अश्वसत्। श्वस्यात्। श्वस्यात्। अश्वसीत्[1]। अश्वसिष्यत्।

३३. अन—प्राणने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—अनिति। आन। अनिता। अनिष्यति। अनितु। आनीत्-आनत्। अन्यात्। अन्यात्। आनीत्। आनिष्यत्।

३४. जक्ष—भक्षहसनयोः। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—जक्षिति। जजक्ष। जक्षिता। जक्षिष्यति। जक्षितु। अजक्षीत्-अजक्षत्। जक्ष्यात्। जक्ष्यात्। अजक्षीत्। अजक्षिष्यत्।

३५. जागृ—निद्राक्षये। परस्मैपदी, सेट्।

लट्

प्र० पु०	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति
म० ,,	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
उ० ,,	जागर्मि	जागृवः	जागृमः

लिट्

प्र० पु०	जागराञ्चकार[2]	जागराञ्चक्रतुः	जागराञ्चक्रुः
म० ,,	जागराञ्चकर्थ	जागराञ्चक्रथुः	जागराञ्चक्र
उ० ,,	जागराञ्चकर	जागराञ्चकृव	जागराञ्चकृम

पक्षे

प्र० पु०	जजागार	जजागरतुः[3]	जजागरुः

1. 'ह्म्यन्त—' से वृद्धि नहीं हुई।
2. "उषविद जागृभ्योऽन्यतरस्याम्"।
3. "जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु" से गुण।

म० ,,	जजागरिथ	जजागरथुः	जजागर
उ० ,,	जजागार-गर	जजागरिव	जजागरिम
		लुट्	
प्र० पु०	जागरिता	जागरितारौ	जागरितारः
म० ,,	जागरितासि	जागरितास्थः	जागरितास्थ
उ० ,,	जागरितास्मि	जागरितास्वः	जागरितास्मः
		लृट्	
प्र० पु०	जागरिष्यति	जागरिष्यतः	जागरिष्यन्ति
म० ,,	जागरिष्यसि	जागरिष्यथः	जागरिष्यथ
उ० ,,	जागरिष्यामि	जागरिष्यावः	जागरिष्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	जागर्तु-जागृतात्	जागृताम्	जाग्रतु
म० ,,	जागृहि-तात्	जागृतम्	जागृत
उ० ,,	जागराणि	जागराव	जागराम
		लङ्	
प्र० पु०	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
म० ,,	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
उ० ,,	अजागरम्	अजागृव	अजागृम
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
म० ,,	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उ० ,,	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम
		आशीर्लिङ्	
प्र० पु०	जागर्यात्[1]	जागर्यास्ताम्	जागर्यासुः

1. "जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु" । क्त-जागरितः । क्त्वा-जागरित्वा । तुमुन्-जागरितुम् । तव्य-जागरितव्यम् । क्तिन्-जागर्तिः ('जागृति' प्रयोग अशुद्ध है)। णिच्-जागरयति । सन्-जिजागरिषति ।

म० ,,	जागर्याः	जागर्यास्तम्	जागर्यास्त
उ० ,,	जागर्यासम्	जागर्यास्व	जागर्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अजागरीत्	अजागरिष्टाम्	अजागरिषुः
म० ,,	अजागरीः	अजागरिष्टम्	अजागरिष्ट
उ० ,,	अजागरिषम्	अजागरिष्व	अजागरिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अजागरिष्यत्	अजागरिष्यताम्	अजागरिष्यन्
म० ,,	अजागरिष्यः	अजागरिष्यतम्	अजागरिष्यत
उ० ,,	अजागरिष्यम्	अजागरिष्याव	अजागरिष्याम

३६. दरिद्रा—दुर्गतौ। परस्मैपदी, सेट्।

लट्

प्र० पु०	दरिद्राति	दरिद्रितः[1]	दरिद्रति[2]
म० ,,	दरिद्रासि	दरिद्रिथः	दरिद्रिथ
उ० ,,	दरिद्रामि	दरिद्रिवः	दरिद्रिमः

लिट्

प्र० पु०	दरिद्राञ्चकार[3]	दरिद्राञ्चक्रतुः	दरिद्राञ्चक्रुः
म० ,,	दरिद्राञ्चकर्थ	दरिद्राञ्चक्रथुः	दरिद्राञ्चक्र
उ० ,,	दरिद्राञ्चकार-कर	दरिद्राञ्चकृव	दरिद्राञ्चकृम

लुट्

प्र० पु०	दरिद्रिता[4]	दरिद्रितारौ	दरिद्रितारः

1. "इद् दरिद्रस्य"।
2. "अदभ्यस्तात्"।
3. अनेकाच् होने से आम। मतान्तर से ददरिद्रौ।
4. आर्धधातुक विवक्षा में आकारलोप।

म० ,,	दरिद्रितासि	दरिद्रितास्थः	दरिद्रितास्थ
उ० ,,	दरिद्रितास्मि	दरिद्रितास्वः	दरिद्रितास्मः

लृट्

प्र० पु०	दरिद्रिष्यति	दरिद्रिष्यतः	दरिद्रिष्यन्ति
म० ,,	दरिद्रिष्यसि	दरिद्रिष्यथः	दरिद्रिष्यथ
उ० ,,	दरिद्रिष्यामि	दरिद्रिष्यावः	दरिद्रिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	दरिद्रातु-दरिद्रितात्	दरिद्रिताम्	दरिद्रतु[1]
म० ,,	दरिद्रिहि-दरिद्रितात्	दरिद्रितम्	दरिद्रित
उ० ,,	दरिद्राणि	दरिद्राव	दरिद्राम

लङ्

प्र० पु०	अदरिद्रात्	अदरिद्रिताम्	अदरिद्रुः[2]
म० ,,	अदरिद्राः	अदरिद्रितम्	अदरिद्रित
उ० ,,	अदरिद्राम्	अदरिद्रिव	अदरिद्रिम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दरिद्रियात्	दरिद्रियाताम्	दरिद्रियुः
म० ,,	दरिद्रियाः	दरिद्रियातम्	दरिद्रियात
उ० ,,	दरिद्रियाम्	दरिद्रियाव	दरिद्रियाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	दरिद्र्यात्	दरिद्र्यास्ताम्	दरिद्र्यासुः
म० ,,	दरिद्र्याः	दरिद्र्यास्तम्	दरिद्र्यास्त
उ० ,,	दरिद्र्यासम्	दरिद्र्यास्व	दरिद्र्यास्म

1. "अदभ्यस्तात्" ।
2. झि को जुस्, पर रूप ।

लुङ्

प्र० पु०	अदरिद्रीत्	अदरिद्रिष्टाम्	अदरिद्रिषुः
म० ,,	अदरिद्रीः	अदरिद्रिष्टम्	अदरिद्रिष्ट
उ० ,,	अदरिद्रिषम्	अदरिद्रिष्व	अदरिद्रिष्म

पक्षे

प्र० पु०	अदरिद्रासीत्	अदरिद्रासिष्टाम्	अदरिद्रासिषुः
म० ,,	अदरिद्रासीः	अदरिद्रासिष्टम्	अदरिद्रासिष्ट
उ० ,,	अदरिद्रासिषम्	अदरिद्रासिष्व	अदरिद्रासिष्म

लृङ्

अदरिद्रिष्यत् इत्यादि ।

३७. चकासृ–दीप्तौ । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	चकास्ति	चकास्तः	चकासति
म० ,,	चकास्सि	चकास्थः	चकास्थ
उ० ,,	चकास्मि	चकास्वः	चकास्मः

लिट्

प्र० पु०	चकासाञ्चकार[2]	चकासाञ्चक्रतुः	चकासाञ्चक्रुः
म० ,,	चकासाञ्चकर्थ	चकासाञ्चक्रथुः	चकासाञ्चक्र
उ० ,,	चकासाञ्चकार-कर	चकासाञ्चकृव	चकासाञ्चकृम

लुट्

प्र० पु०	चकासिता	चकासितारौ	चकासितारः
म० ,,	चकासितासि	चकासितास्थः	चकासितास्थ
उ० ,,	चकासितास्मि	चकासितास्वः	चकासितास्मः

1. लुङ् में आकारलोप विकल्प से होता है, अतः यहां इट् और सक् ।

2. कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः ।

लृट्

प्र० पु०	चकासिष्यति	चकासिष्यतः	चकासिष्यन्ति
म० ,,	चकासिष्यसि	चकासिष्यथः	चकासिष्यथ
उ० ,,	चकासिष्यामि	चकासिष्यावः	चकासिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	चकास्तु-चकास्तात्	चकास्ताम्	चकासतु
म० ,,	चकाधि-चकास्तात्[1]	चकास्तम्	चकास्त
उ० ,,	चकासानि	चकासाव	चकासाम

लङ्

प्र० पु०	अचकात्[2]-द्	अचकास्ताम्	अचकासुः
म० ,,	अचकाः-अचकात्[3]	अचकास्तम्	अचकास्त
उ० ,,	अचकासम्	अचकास्व	अचकास्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	चकास्यात्	चकास्याताम्	चकास्युः
म० ,,	चकास्याः	चकास्यातम्	चकास्यात
उ० ,,	चकास्याम्	चकास्याव	चकास्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	चकास्यात्	चकास्यास्ताम्	चकास्यासुः
म० ,,	चकास्याः	चकास्यास्तम्	चकास्यास्त
उ० ,,	चकास्यासम्	चकास्यास्व	चकास्यास्म

1. "धि च" से सलोप। कई सिच् का सलोप ही मानते हैं, उन के मत में 'चकाद्धि' होगा।

2. "तिप्यनस्तेः" से स को द्।

3. "सिपि धातो रुर्वा" से विकल्प से स।

लुङ्

प्र० पु०	अचकासीत्	अचकासिष्टाम्	अचकासिषुः
म० ,,	अचकासीः	अचकासिष्टम्	अचकासिष्ट
उ० ,,	अचकासिषम्	अचकासिष्व	अचकासिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अचकासिष्यत्	अचकासिष्यताम्	अचकासिष्यन्
म० ,,	अचकासिष्यः	अचकासिष्यतम्	अचकासिष्यत
उ० ,,	अचकासिष्यम्	अचकासिष्याव	अचकासिष्याम

३८. शासु—अनुशिष्टौ । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	शास्ति	शिष्टः[1]	शासति
म० ,,	शास्सि	शिष्ठः	शिष्ठ
उ० ,,	शास्मि	शिष्वः	शिष्मः

लिट्

प्र० पु०	शशास	शशासतुः	शशासुः
म० ,,	शशासिथ	शशासथुः	शशास
उ० ,,	शशास	शशासिव	शशासिम

लुट्

प्र० ,,	शासिता	शासितारौ	शासितारः
म० ,,	शासितासि	शासितास्थः	शासितास्थ
उ० ,,	शासितास्मि	शासितास्वः	शासितास्मः

लृट्

प्र० पु०	शासिष्यति	शासिष्यतः	शासिष्यन्ति

1. 'शास इदङ्हलोः" से उपधा को इकार, "शासिवसिघसीनाञ्च" से षत्व ।

म० ,,	शासिष्यसि	शासिष्यथः	शासिष्यथ
उ० ,,	शासिष्यामि	शासिष्यावः	शासिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	शास्तु-शिष्टात्	शिष्टाम्	शासतु
म० ,,	शाधि[1]-शिष्टात्	शिष्टम्	शिष्ट
उ० ,,	शासानि	शासाव	शासाव

लङ्

प्र० पु०	अशात्[2]	अशिष्टाम्	अशासुः
म० ,,	अशाः[3]-अशात	अशिष्टम्	अशिष्ट
उ० ,,	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	शिष्यात्[4]	शिष्याताम्	शिष्युः
म० ,,	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात
उ० ,,	शिष्याम	शिष्याव	शिष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्यासुः
म० ,,	शिष्याः	शिष्यास्तम्	शिष्यास्त
उ० ,,	शिष्यासम्	शिष्यास्व	शिष्यास्म

1. "शाहौ" से शा आदेश, वह आभीयत्वेन असिद्ध है अतः हि को धि।

2. "तिप्यनस्तेः"।

3. "सिपि धातोः रुर्वा" से विकल्प से रु।

4. "शास इदङ्हलोः" से इत्व।

लुङ्

प्र० पु०	अशिषत्[1]	अशिषताम्	अशिषुः
म० ,,	अशिषः	अशिषतम्	अशिषत
उ० ,,	अशिषम्	अशिषाव	अशिषाम

लृङ्

अशासिष्यत्—इत्यादि । इति परस्मैपदिनः धातवः ।

अथात्मनेपदिनः ।

३६. शीङ्—स्वप्ने । आत्मनेपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	शेते	शयाते[2]	शेरते[3]
म० ,,	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ० ,,	शये	शेवहे	शेमहे

लिट्

प्र० पु०	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
म० ,,	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिध्वे
उ० ,,	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे

लुट्

प्र० पु०	शयिता	शयितारौ	शयितारः
म० ,,	शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे
उ० ,,	शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे

1. "सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च" से च्लि को अङ्, "शासिवसि"—से षत्व ।

2. "शीङः सार्वधातुके" से गुण ।

3. "शीङो रुट्" से रुट् ।

लृट्

प्र० पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म० ,,	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ० ,,	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्[1]
म० ,,	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ० ,,	शयै	शयावहै	शयामहै

लङ्

प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म० ,,	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ० ,,	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	शयीत[2]	शयीयाताम्	शयीरन्[3]
म० ,,	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ० ,,	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	शयिषीष्ट	शयिषीयास्ताम्	शयिषीरन्
म० ,,	शयिषीष्ठाः	शयिषीयास्थाम्	शयिषीध्वम्
उ० ,,	शयिषीय	शयिषीवहि	शयिषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत

1. रुट्।
2. "लिङः सीयुट्" "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य"।
3. शयीय्+रन्, "लोपो व्योर्वलि" से यकार लोप।

म० ,,	अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्
उ० ,,	अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि

लृङ्

प्र० पु०	अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यन्त
म० ,,	अशयिष्यथाः	अशयिष्येथाम्	अशयिष्यध्वम्
उ० ,,	अशयिष्ये	अशयिष्यावहि	अशयिष्यामहि

४०. इङ्[1]—अध्ययने। आत्मनेपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	अधीते	अधीयाते	अधीयते
म० ,,	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
उ० ,,	अधीये	अधीवहे	अधीमहे

लिट्

प्र० पु०	अधिजगे[2]	अधिजगाते	अधिजगिरे
म० ,,	अधिजगिषे	अधिजगाथे	अधिजगिध्वे
उ० ,,	अधिजगे	अधिजगिवहे	अधिजगिमहे

लुट्

प्र० पु०	अध्येता	अध्येतारौ	अध्येतारः
म० ,,	अध्येतासे	अध्येतासाथे	अध्येताध्वे
उ० ,,	अध्येताहे	अध्येतास्वहे	अध्येतास्महे

लृट्

प्र० पु०	अध्येष्यते	अध्येष्येते	अध्येष्यन्ते
म० ,,	अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे
उ० ,,	अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यामहे

---

1. इङिकावध्युपसर्गतो न व्यभिचरतः।
2. "गाङ् लिटि" से इङ् को गाङ् आदेश।

लोट्

प्र० पु०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
म० ,,	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
उ० ,,	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

लङ्

प्र० पु०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
म० ,,	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
उ० ,,	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
म० ,,	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
उ० ,,	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अध्येषीष्ट	अध्येषीयास्ताम्	अध्येषीरन्
म० ,,	अध्येषीष्ठाः	अध्येषीयास्थाम्	अध्येषीध्वम्
उ० ,,	अध्येषीय	अध्येषीवहि	अध्येषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	अध्यगीष्ट[1]	अध्यगीषाताम्	अध्यगीषत
म० ,,	अध्यगीष्ठाः	अध्यगीषाथाम्	अध्यगीध्वम्
उ० ,,	अध्यगीषि	अध्यगीष्वहि	अध्यगीष्महि

1. "विभाषा लुङ्लृङोः" से गा् आदेश विकल्प से। "गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्" से ङिद्भाव। "घुमास्था गापा—" से आकार को ईत्।

पक्षे

प्र० पु०	अध्यैष्ट[1]	अध्यैषाताम्	अध्यैषत
म० ,,	अध्यैष्ठाः	अध्यैषाथाम्	अध्यैढ्वम्
उ० ,,	अध्यैषि	अध्यैष्वहि	अध्यैष्महि

लृङ्

प्र० पु०	अध्यगीष्यत	अध्यगीष्येताम्	अध्यगीष्यन्त
म० ,,	अध्यगीष्यथाः	अध्यगीष्येथाम्	अध्यगीष्यध्वम्
उ० ,,	अध्यगीष्ये	अध्यगीष्यावहि	अध्यगीष्यामहि

पक्षे

प्र० पु०	अध्यैष्यत	अध्यैष्येताम्	अध्यैष्यन्त
म० ,,	अध्यैष्यथाः	अध्यैष्येथाम्	अध्यैष्यध्वम्
उ० ,,	अध्यैष्ये	अध्यैष्यावहि	अध्यैष्यामहि

४१ ईर-गतौ, कम्पने च। आत्मनेपदी सेट्।

दशलकारेषु—ईर्ते। ईराञ्चक्रे[2]। ईरिता। ईरिष्यते। ईर्ताम्। ऐर्त। ईरीत। ईरिषीष्ट। ऐरिष्ट। ऐरिष्यत।

४२ कश-गतिशासनयोः। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—कष्टे। चकशे। कशिता। कशिष्यते। कष्टाम्। अकष्ट। कशीत। कशिषीष्ट। अकशिष्ट। अकशिष्यत।

४३ ईड्-स्तुतौ। आत्मनेपदी, सेट्।

लट्

प्र० पु०	ईट्टे	ईडाते	ईडते

---

1. आट्, "आटश्च" से वृद्धि। क्त-अधीतः। क्त्वा-अधीत्य। तुमुन्-अध्येतुम्। तृच्-अध्येता। ल्युट्-अध्ययनम्। णिच्-अध्यापयति। सन्-अधिजिगांसते।

2. "इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः।

म० ,,	ईडिषे[1]	ईडाथे	ईडिध्वे[2]
उ० ,,	ईडे	ईड्वहे	ईड्महे

लिट्

प्र० पु०	ईडाञ्चक्रे	ईडाञ्चक्राते	ईडाञ्चक्रिरे
म० ,,	ईडाञ्चकृषे	ईडाञ्चक्राथे	ईडाञ्चकृढ्वे
उ० ,,	ईडाञ्चक्रे	ईडाञ्चकृवहे	ईडाञ्चकृमहे

लुट्-ईडिता। लृट्-ईडिष्यते। लोट्-ईट्टाम्। लङ्-ऐट्ट। विधिलिङ्-ईडीत। आ० लिङ्-ईडिषीष्ट। लुङ्-ऐडिष्ट। लृङ्-ऐडिष्यत।

४४ आस-उपवेशने। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—आस्ते[3]। आसाञ्चक्रे। आसिता। आसिष्यते। आस्ताम्। आस्त। आसीत। आसिषीष्ट। आसिष्ट। आसिष्यत।

४५ (आङः) शासु[4]-इच्छायाम्। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—आशास्ते[5]। आशशासे। आशासिता। आशासिष्यते। आशास्ताम्। आशास्त। आशासीत। आशासिषीष्ट। आशासिष्ट। आशासिष्यत।

४६ वस[6]-अच्छादने। आत्मनेपदी, सेट्।

---

1. "ईशः से" से इट्।

2. ईड्जनोर्ध्वे च" से इट्।

3. मध्यमपुरुष-आस्से, आसाथे, आध्वे। सलोप। एवं लङ् लोट में भी।

4. प्रायः आङ् उपसर्ग पूर्व रहता है।

5. मध्यमपुरुष-आशास्से, आशासाथे, आशाध्वे। लोट् लङ् में भी सलोप का ध्यान रखें।

6. वस्त्र शब्द इसी से है।

दशलकारेषु—वस्ते[1] । ववसे[2] । वसिता । वसिष्यते । वस्ताम् । अवस्त । वसीत । वसिषीष्ट । अवसिष्ट । अवसिष्यत ।

४७ णिसि[3]-चुम्बने । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—निंस्ते[4] । निनिंसे । निंसिता । निंसिष्यते । निंस्ताम् । अनिंस्त । निंसीत । निंसिषीष्ट । अनिंसिष्ट । अनिंसिष्यत ।

४८ णिजि-शुद्धौ । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—निङ्क्ते[5] । निनिञ्जे । निञ्जिता । निञ्जिष्यते । निङ्क्ताम् । अनिङ्क्त । निञ्जीत । निञ्जिषीष्ट । अनिञ्जिष्ट । अनिञ्जिष्यत ।

४९ वृजी-वर्जने आत्मनेपदी, सेट्

लट्-वृक्ते, वृजाते, वृजते । वृक्षे, वृजाथे, वृग्ध्वे ; लिट्-ववृजे । लुट्-वर्जिता । लृट्-वर्जिष्यते । लोट्-वृक्ताम् । लङ्-अवृक्त । वि. लि-वृजीत । आ० लि०-वर्जिषीष्ट । लुङ्-अवर्जिष्ट । लृङ्-अवर्जिष्यत ।

५० पृची-सम्पर्चने । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पृक्ते[6] । पपृचे । पर्चिता । पर्चिष्यते । पृक्ताम् । अपृक्त । पृचीत । पर्चिषीष्ट । अपर्चिष्ट । अपर्चिष्यत ।

५१ षूङ्-प्राणिगर्भविमोचने । आत्मनेपदी, वेट् ।

दशलकारेषु - सूते । सुषुवे । सविता[7]-सोता । सविष्यते, सोष्यते ।

---

1. मध्यमपुरुष-वस्से, वसाथे, वध्वे ।

2. न शसददवादिगुणानाम्" । एत्वाभ्यासलोप निषेध ।

3. "णो नः" "इदितो नुम्धातोः" "नश्चापदान्तस्य झलि" ।

4. मध्यमपुरुष-निंसे, निंसाथे, निंध्वे ।

5. मध्यमपुरुष-निङ्क्षे, निञ्जाथे, निङ्ग्ध्वे ।

6. धातु इदित् नहीं, अतः नुम् न हुआ । मध्यमपुरुष में-पृक्षे, पृचाथे, पृग्ध्वे ।

7. "स्वरतिसूति" से वेट् ।

सूताम्[1] । असूत । सुवीत । सविषीष्ट, सोषीष्ट । असविष्ट, असोष्ट । असविष्यत-असोष्यत ।

५२. चक्षिङ्-व्यक्तायां वाचि । आत्मनेपदी ।

दशलकारेषु—लट्-चष्टे । लिट्. चचक्षे[2], चख्यौ, चख्ये, चक्शौ, चक्शे । लोट्-ख्याता, क्शाता । लृट्-ख्यास्यति, ख्यास्यते, क्शास्यति, क्शास्यते । लोट्. चष्टाम्[3] । लङ्-अचष्ट । विधिलिङ्-चक्षीत । आ. लि.-ख्यायात्-ख्येयात्, क्शायात्-क्शेयात्, ख्यासीष्ट, क्शासीष्ट । लुङ्-अख्यत्[4]-अख्यत, अक्शासीत्-अक्शास्त । लृङ्-अख्यास्यत्-अख्यास्यत, अक्शास्यत्-अक्शास्यत ॥ इत्यात्मनेपदप्रक्रिया ॥

अथोभयपदिनः ।

५३. द्विष-अप्रीतौ । उभयपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	द्वेष्टि	द्विष्टः	द्विषन्ति
म० ,,	द्वेक्षि[5]	द्विष्ठः[6]	द्विष्ठ
उ० ,,	द्वेष्मि	द्विष्वः	द्विष्मः

आ. प.

प्र० पु०	द्विष्टे	द्विषाते	द्विषन्ते

1. उत्तमपुरुष एकवचन में-'सुवै' । "भूसुवोस्तिङि" से गुण निषेध । एवं लङ् में समझो ।

2. लिट् में ख्याञ् आदेश विकल्प से, शेष आर्धधातुक में नित्य । ख्याञ् के स्थान पर 'क्शाञ्' ऐसा भी माना है । ये आदेश ञित्वात् उभयपदी होंगे । फलतः लिड्वर्जं आर्धधातुक में चार २ रूप होंगे ।

3. मध्यमपुरुष-चक्ष्व, चक्षाथाम्, चड्ढ्वम् ।

4. "अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्" ।

5. द्वेष + सि, "षढोः कः सि" 'आदेशप्रत्यययोः' ।

6. ष्टुत्वेन थस्य ढः ।

म० ,,	द्विक्षे	द्विषाथे	द्विड्ढ्वे[1]
उ० ,,	द्विषे	द्विष्वहे	द्विष्महे

लिट्—पर०

प्र० पु०	दिद्वेष	दिद्विषतुः	दिद्विषुः
म० ,,	दिद्वेषिथ-दिद्विष्ट	दिद्विषथुः	दिद्विष
उ० ,,	दिद्वेष	दिद्विषिव	दिद्विषिम

आ. प.

प्र० पु०	दिद्विषे	दिद्विषाते	दिद्विषिरे
म० ,,	दिद्विषिषे[2]	दिद्विषाथे	दिद्विषिध्वे
उ० ,,	दिद्विषे	दिद्विषिवहे	दिद्विषिमहे

लुट्—पर०

प्र० पु०	द्वेष्टा	द्वेष्टारौ	द्वेष्टारः
म० ,,	द्वेष्टासि	द्वेष्टास्थः	द्वेष्टास्थ
उ० ,,	द्वेष्टास्मि	द्वेष्टास्वः	द्वेष्टास्मः

आ. प.

प्र० पु०	द्वेष्टा	द्वेष्टारौ	द्वेष्टारः
म० ,,	द्वेष्टासे	द्वेष्टासाथे	द्वेष्टाध्वे
उ० ,,	द्वेष्टाहे	द्वेष्टास्वहे	द्वेष्टास्महे

लोट्-पर०

प्र० पु०	द्वेष्टु-द्विष्टात्	द्विष्टाम्	द्विषन्तु
म० ,,	द्विड्ढि[3]-द्विष्टात्	द्विष्टम्	द्विष्ट
उ० ,,	द्वेषाणि	द्वेषाव[4]	द्वेषाम

1. जशत्व, ष्टुत्व।
2 क्रादिनियम से इट्।
3. 'हुझल्भ्यो हेर्धिः।
4. आट् के निमित्त से गुण।

आ. प.

प्र० पु०	द्विष्टाम्	द्विषाताम्	द्विषन्ताम्
म० ,,	द्विड्ढ्व	द्विषाथाम्	द्विड्ढ्वम्
उ० ,,	द्वेषै	द्वेषावहै	द्वेषामहै

लङ्-पर०

प्र० पु०	अद्वेट्-ड्[1]	अद्विष्टाम्	अद्विषुः-अद्विषन्
म० ,,	,,	अद्विष्टम्	अद्विष्ट
उ० ,,	अद्वेषम्	अद्विष्व	अद्विष्म

आ. प

प्र० पु०	अद्विष्ट	अद्विषाताम्	अद्विषत
म० ,,	अद्विष्ठाः	अद्विषाथाम्	अद्विड्ढ्वम्
उ० ,,	अद्विषि	अद्विष्वहि	अद्विष्महि

विधिलिङ्-पर०

प्र० पु०	द्विष्यात्	द्विष्याताम्	द्विष्युः
म० ,,	द्विष्याः	द्विष्यातम्	द्विष्यात
उ० ,,	द्विष्याम्	द्विष्याव	द्विष्याम

आ. प.

प्र० पु०	द्विषीत	द्विषीयाताम्	द्विषीरन्
म० ,,	द्विषीथाः	द्विषीयाथाम्	द्विषीध्वम्
उ० ,,	द्विषीय	द्विषीवहि	द्विषीमहि

आशीर्लिङ्-पर०

प्र० पु०	द्विष्यात्	द्विष्यास्ताम्	द्विष्यासुः
म० ,,	द्विष्याः	द्विष्यास्तम्	द्विष्यास्त
उ० ,,	द्विष्यासम्	द्विष्यास्व	द्विष्यास्म

1. हल्ङ्यादि लोप, जश्त्व, चर्त्व ।

आ. प.

अ० पु०	द्विक्षीष्ट[1]	द्विक्षीयास्ताम्	द्विक्षीरन्
म० ,,	द्विक्षीष्ठाः	द्विक्षीयास्थाम्	द्विक्षीध्वम्
उ० ,,	द्विक्षीय	द्विक्षीवहि	द्विक्षीमहि

लुङ् पर.

अ० पु०	अद्विक्षत्[2]	अद्विक्षताम्	अद्विक्षन्[3]
म० ,,	अद्विक्षः	अद्विक्षतम्	अद्विक्षत
उ० ,,	अद्विक्षम्	अद्विक्षाव	अद्विक्षाम

आ. प.

अद्विक्षत—अद्विक्षाताम् इत्यादि ।

लृङ्

अद्वेक्ष्यत्—अद्वेक्ष्यत[4] इत्यादि ।

५४. दुह—प्रपूरणे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—दोग्धि[5]-दुग्धे[6] । दुदोह-दुदुहे । दोग्धासि-दोग्धासे । धोक्ष्यति[7]-धोक्ष्यते । दोग्धु-दुग्धाम् । अधोक्-ग्-अदुग्ध । दुह्यात्-दुहीत ।

---

1. "लिङ् सिचावात्मने पदेषु" लिङ् कित् होने से गुणाभाव ।

2. "शल इगुपधादनिटः क्सः" ।

3. "क्सस्याचि" अकारलोप ।

4. क्त-द्विष्ट । क्त्वा-द्विष्ट्वा । तुमुन्-द्वेष्टुम् । तव्य-द्वेष्टव्यम् । शतृ-द्विषन् । णिच्-द्वेषयति । सन्-दिद्विक्षति । घञ्-द्वेषः ।

5. मध्यमैकवचन- धोक्षि ।

6. दादेर्धातो र्घः । स्त । झषस्तथो र्धोऽधः ।

7. "एकाचो बशो भष्—" से भष ।

दुह्यात्-धुक्षीष्ट[1]। अधुक्षत्-अधुक्षत, अदुग्ध[2]। अधोक्ष्यत्-अधोक्ष्यत।

५५. दिह्—उपचये। दुहधातुवत् रूपाणि।

५६. लिह्—आस्वादने। उभयपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—लेढि[3]-लीढे। लिलेह-लिलिहे। लेढासि-लेढासे। लेक्ष्यति-लेक्ष्यते। लेढु-लीढाम्। अलेट्-अलीढ। लिह्यात्-लिहीत। लिह्यात्-लिक्षीष्ट। अलिक्षत्-अलिक्षत, अलीढ। अलेक्ष्यत्, अलेक्ष्यत।

५८. ब्रूञ्—व्यक्तायां वाचि। उभयपदी, अनिट्।

लट्—पर०

प्र० पु०	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति
म० ,,	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ
उ० ,,	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

आ० प०

प्र० पु०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म० ,,	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उ० ,,	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लिट् प०

प्र० पु०	उवाच[4]	ऊचतुः[5]	ऊचुः

1. ह को घ, भष्भाव, "लिङ्सिचावात्मनेपदेषु" कित्वात् गुणाभाव।

2. क्स। "लुग्वादुहदिह—" से क्सलोप। क्त-दुग्धम्। क्त्वा-दुग्ध्वा। तुमुन्-दोग्धुम्। शतृ-दुहन्। णिच्-दोहयति। सन्-दुधुक्षति। कर्मवा०-दुह्यते। घञ्-दोहः।

3. "हो ढः" "ढो ढे लोपः"। क्त-लीढः। क्त्वा-लीढ्वा। तुमुन्-लेढुम्। शतृ-लिहन्। शानच्-लिहमानः। तव्य-लेढव्यम्। णिच्-लेहयति। सन्-लिलिक्षति। यङ्-लेलिह्यते। घञ्-लेहः। अवलेहः-चटनी।

4. आह-आहतुः-आहुः। आत्थ, आहथुः ये पांच रूप भी होते हैं।

5. "वचिस्वपि—" से सम्प्रसारण करके द्वित्व।

म० ,,	उवचिथ-उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
उ० ,,	उवाच-उवच	ऊचिव	ऊचिम

आ० प०

प्र० पु०	ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
म० ,,	ऊचिषे[1]	ऊचाथे	ऊचिध्वे
उ० ,,	ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे

लुट्—पर०

प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
म० ,,	वक्तासि	वक्तास्थः	वक्तास्थ
उ० ,,	वक्तास्मि	वक्तास्वः	वक्तास्मः

आ० प०

प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
म० ,,	वक्तासे	वक्तासाथे	वक्ताध्वे
उ० ,,	वक्ताहे	वक्तास्वहे	वक्तास्महे

लृट्—पर०

प्र० पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
म० ,,	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उ० ,,	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

आ० प०

प्र० पु०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
म० ,,	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उ० ,,	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

लोट्-पर०

प्र० पु०	ब्रवीतु-ब्रूतात्	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु

1. "ब्रुवो वचिः" क्रादिनियम से इट्।

म० ,,	ब्रूहि-ब्रूतात्	ब्रूतम्	ब्रूत
उ० ,,	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

आ० प०

प्र० पु०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म० ,,	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ० ,,	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

लङ्-पर०

प्र० पु०	अब्रवीत्[1]	अब्रूताम्	अब्रुवन्
म० ,,	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ० ,,	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

आ० प०

प्र० पु०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म० ,,	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ० ,,	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

विधिलिङ् पर०

प्र० पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म० ,,	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ० ,,	ब्रूयाम	ब्रूयाव	ब्रूयाम

आ. प.

प्र० पु०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म० ,,	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ० ,,	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

आशीर्लिङ् पर०

प्र० पु०	उच्यात्[2]	उच्यास्ताम्	उच्यासुः

1. "ब्रुव ईट्" ।

2. "वचिस्वपियजादीनां किति" ।

म० ,,	उच्याः	उच्यास्तम्	उच्यास्त
उ० ,,	उच्यासम्	उच्यास्व	उच्यास्म

आ० प०

प्र० पु०	वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
म० ,,	वक्षीष्ठाः	वक्षीयास्थाम्	वक्षीध्वम्
उ० ,,	वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि

लुङ् पर०

प्र० पु०	अवोचत्[1]	अवोचताम्	अवोचन्
म० ,,	अवोचः	अवोचतम्	अवोचत
उ० ,,	अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम

आ. प.

प्र० पु०	अवोचत	अवोचेताम्	अवोचन्त
म० ,,	अवोचथाः	अवोचेथाम्	अवोचध्वम्
उ० ,,	अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि

लृङ् पर०, आ०

अवक्ष्यत्—अवक्ष्यत इत्यादि ।

५८. ऊर्णुञ्—आच्छादने । उभयपदी, सेट् ।

लट् पर०

प्र० पु०	ऊर्णौति[2]-ऊर्णोति	ऊर्णुतः[3]	ऊर्णुवन्ति[4]
म० ,,	ऊर्णौषि-ऊर्णोषि	ऊर्णुथः	ऊर्णुथ

1. "अस्यति वक्ति ख्यातिभ्योऽङ्" "वच उम्" ।

2. "ऊर्णोतेर्विभाषा" से वृद्धि विकल्प से ।

3. "सार्वधातुकमपित्" ।

4. उवङ् ।

उ० ,,	ऊर्णौमि-ऊर्णोमि	ऊर्णुवः	ऊर्णुमः

आ० प०

प्र० पु०	ऊर्णुते	ऊर्णुवाते	ऊर्णुवते
म० ,,	ऊर्णुषे	ऊर्णुवाथे	ऊर्णुध्वे
उ० ,,	ऊर्णुवे	ऊर्णुवहे	ऊर्णुमहे

लिट् पर०

प्र० पु०	ऊर्णुनाव[1]	ऊर्णुनुवतुः	ऊर्णुनुवुः
म० ,,	ऊर्णुनविथ[2]-ऊर्णुनुविथ	ऊर्णुनुवथुः	ऊर्णुनुव
उ० ,,	ऊर्णुनाव-नव	ऊर्णुनविव-नुविव	ऊर्णुनविम-नुविम

आ० प०

प्र० पु०	ऊर्णुनुवे	ऊर्णुनुवाते	ऊर्णुनुविरे
म० ,,	ऊर्णुनविषे-नुविषे	ऊर्णुनुवाथे	ऊर्णुनविध्वे-नुविध्वे
उ० ,,	ऊर्णुनुवे	ऊर्णुनविवहे-नुविवहे	ऊर्णुनविमहे-नुविमहे

लुट् पर०, आ० प०

ऊर्णवितासि—ऊर्णुवितासि। ऊर्णवितासे, ऊर्णुवितासे इत्यादि।

लृट् पर०, आ० प०

ऊर्णविष्यति, ऊर्णुविष्यति। ऊर्णविष्यते, ऊर्णुविष्यते इत्यादि।

लोट्—पर०

प्र० पु०	ऊर्णौतु-ऊर्णोतु-ऊर्णुतात्	ऊर्णुताम्	ऊर्णुवन्तु
म० ,,	ऊर्णुहि-ऊर्णुतात्	ऊर्णुतम्	ऊर्णुत
उ० ,,	ऊर्णवानि	ऊर्णवाव	ऊर्णवाम

आ० प०

प्र० पु०	ऊर्णुताम्	ऊर्णुवाताम्	ऊर्णुवताम्

1. "ऊर्णोते राम नेति वक्तव्यम्," नु शब्द को द्वित्व।
2. "विभाषोर्णोः" से इडादि प्रत्यय विकल्प से ङिद्वत्।

म० ,,	ऊर्णुष्व	ऊर्णुवाथाम्	ऊर्णुध्वम्
उ० ,,	ऊर्णवै	ऊर्णवावहै	ऊर्णवामहै

लङ् पर०

प्र० पु०	और्णोत्[1]	और्णुताम्	और्णुवन्
म० ,,	और्णोः	और्णुतम्	और्णुत
उ० ,,	और्णवम्	और्णुव	और्णुम

आ० प०

प्र० पु०	और्णुत	और्णुवाताम्	और्णुवत
म० ,,	और्णुथाः	और्णुवाथाम्	और्णुध्वम्
उ० ,,	और्णुवि	और्णुवहि	और्णुमहि

विधिलिङ् पर०

प्र० पु०	ऊर्णुयात्	ऊर्णुयाताम्	ऊर्णुयुः
म० ,,	ऊर्णुयाः	ऊर्णुयातम्	ऊर्णुयात
उ० ,,	ऊर्णुयाम्	ऊर्णुयाव	ऊर्णुयाम

आ. प.

प्र० पु०	ऊर्णुवीत	ऊर्णुवीयाताम्	ऊर्णुवीरन्
म० ,,	ऊर्णुवीथाः	ऊर्णुवीयाथाम्	ऊर्णुवीध्वम्
उ० ,,	ऊर्णुवीय	ऊर्णुवीवहि	ऊर्णुवीमहि

आशीर्लिङ् पर.

प्र० पु०	ऊर्णूयात्[2]	ऊर्णूयास्ताम्	ऊर्णूयासुः
म० ,,	ऊर्णूयाः	ऊर्णूयास्तम्	ऊर्णूयास्त
उ० ,,	ऊर्णूयासम्	ऊर्णूयास्व	ऊर्णूयास्म

1. गुणोऽपृक्ते'' से वृद्धि का अपवाद, गुण ।
2. "अकृत्सार्वधातुकयोः" ।

आ० प०

प्र० पु०	ऊर्णु-र्णविषीष्ट[1]	ऊर्णु-र्णविषीयास्ताम्	ऊर्णु-र्णविषीरन्
म० ,,	ऊर्णु-र्णविषीष्ठाः	ऊर्णु-र्णविषीयास्थाम्	ऊर्णु-र्णविषीध्वम्
उ० ,,	ऊर्णु-र्णविषीय	ऊर्णु-र्णविषीवहि	ऊर्णु-र्णविषीमहि

लुङ् पर०

प्र० पु०	और्णुवीत्	और्णुविष्टाम्	और्णुविषुः
म० ,,	और्णुवीः	और्णुविष्टम्	और्णुविष्ट
उ० ,,	और्णुविषम्	और्णुविष्व	और्णुविष्म

आ. प.

प्र० पु०	और्णु-र्णविष्ट	और्णु-र्णविषाताम्	और्णु-र्णविषत
म० ,,	और्णु-र्णविष्ठाः	और्णु-र्णविषाथाम्	और्णु-र्णविध्वम्
उ० ,,	और्णु-र्णविषि	और्णु-र्णविष्वहि	और्णु-र्णविष्महि

लृङ्—पर., आ. प.

और्णुविष्यत् - और्णविष्यत । और्णुविष्यत–और्णविष्यत इत्यादि ।

इत्यदादयः

---

1. उच्चारण इस प्रकार होगा—ऊर्णुविषीष्ट-ऊर्णविषीष्ट इत्यादि ।

2. ङिद्वद्भाव में उवङ्, पक्षे—"ऊर्णोते र्विभाषा" से वृद्धि करके और्णावीत् तथा वृद्धि के अभाव में गुण करके और्णवीत् ये दो रूप भी होंगे। इसी प्रकार आत्मनेपद लुङ् तथा लृङ् में गुण और उवङ् से दो २ रूप होंगे।

अथ जुहोत्यादि प्रकरणम्

१. हु—दानादनयोः । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति[1]
म० ,,	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उ० ,,	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

लिट्

प्र० पु०	जुहवाञ्चकार[2]	जुहवाञ्चक्रतुः	जुहवाञ्चक्रुः
म० ,,	जुहवाञ्चकर्थ	जुहवाञ्चक्रथुः	जुहवाञ्चक्र
उ० ,,	जुहवाञ्चकार-कर	जुहवाञ्चकृव	जुहवाञ्चकृम

पक्षे

प्र० पु०	जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः
म० ,,	जुहविथ[3]-जुहोथ	जुहुवथुः	जुहुव
उ० ,,	जुहाव-जुहव	जुहुविव	जुहुविम

लुट्

होता, होतारौ, होतारः इत्यादि ।

लृट्

होष्यति इत्यादि ।

लोट्

प्र० पु०	जुहोतु-जुहुतात्	जुहुताम्	जुह्वतु

---

1. "अदभ्यस्तात्" से झ को अत् ।
2. "भी ह्रीभृहुवां श्लुवच्च" से आम् और द्वित्व ।
3. भरद्वाजमत से इट् ।

म० ,,	जुहुधि[1]-जुहुतात्	जुहुतम्	जुहुत
उ० ,,	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

लङ्

प्र० पु०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः[2]
म० ,,	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० ,,	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० ,,	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उ० ,,	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः
म० ,,	हूयाः	हूयास्ताम्	हूयास्त
उ० ,,	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषुः
म० ,,	अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट
उ० ,,	अहौषम्	अहौष्व	अहौष्व

लृङ्

अहोष्यत् इत्यादि ।

२. ञिभी-भये । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	बिभेति	बिभितः भीतः[3]	बिभ्यति[4]

1. "हुझल्भ्यो हेर्धिः ।"
2. "सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ।" "जुसि च" से गुण ।
3. "भियोऽन्यतरस्याम्" से इकार का विकल्प ।
4. "एरनेकाचोऽसंयोग पूर्वस्य" से यण ।

म० ,,	बिभेषि	बिभिथः-भीथः	बिभिथ-भीथ
उ० ,,	बिभेमि	बिभिवः-भीवः	बिभिमः-भीमः

लिट्

प्र० पु०	बिभयाञ्चकार	बिभयाञ्चक्रतुः	बिभयाञ्चक्रुः
म० ,,	बिभयाञ्चकर्थ	बिभयाञ्चक्रथुः	बिभयाञ्चक्र
उ० ,,	बिभयाञ्चकार-कर	बिभयाञ्चकृव	बिभयाञ्चकृम

पक्षे

प्र० पु०	बिभाय	बिभ्यतुः	बिभ्युः
म० ,,	बिभयिथ-बिभेथ	बिभ्यथुः	बिभ्य
उ० ,,	बिभाय-बिभय	बिभ्यिव	बिभ्यिम

लुट्—भेता इत्यादि । लृट्—भेष्यति इत्यादि ।

लोट्

प्र० पु०	बिभेतु-बिभितात्-भीतात	बिभिताम्-भीताम्	बिभ्यतु
म० ,,	बिभिहि-भीहि-बिभितात्-भीतात्	बिभितम्-भीतम्	बिभित-भीत
उ० ,,	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लङ्

प्र० पु०	अबिभेत्	अबिभिताम्-भीताम्	अबिभयुः
म० ,,	अबिभेः	अबिभितम्-भीतम्	अबिभित-भीत
उ० ,,	अबिभयम्	अबिभिव-भीव	अबिभिम-भीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	बिभियात्-भीयात्	बिभियाताम्-भीयाताम्	बिभियुः-भीयुः
म० ,,	बिभियाः-भीयाः	बिभियातम्-भीयातम्	बिभियात-भीयात
उ० ,,	बिभियम्-भीयम्	बिभियाव-भीयाव	बिभियाम-भीयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भीयात्	भीयास्ताम्	भीयासुः

म० ,,	भीयाः	भीयास्तम्	भीयास्त
उ० ,,	भीयासम्	भीयास्व	भीयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषुः
म० ,,	अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट
उ० ,,	अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म

लृङ्—अभेष्यत् इत्यादि[1]।

३. ह्री-लज्जायाम्। परस्मैपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	जिह्रेति	जिह्रीतः	जिह्रियति[2]
म० ,,	जिह्रेषि	जिह्रीथः	जिह्रीथ
उ० ,,	जिह्रेमि	जिह्रीवः	जिह्रीमः

लिट्

प्र० पु०	जिह्रयाञ्चकार	जिह्रयाञ्चक्रतुः	जिह्रयाञ्चक्रुः
म० ,,	जिह्रयाञ्चकर्थ	जिह्रयाञ्चक्रथुः	जिह्रयाञ्चक्र
उ० ,,	जिह्रयाञ्चकार-कर	जिह्रयाञ्चकृव	जिह्रयाञ्चकृम

पक्षे

प्र० पु०	जिह्राय	जिह्रियतुः	जिह्रियुः
म० ,,	जिह्रयिथ-जिह्रेथ	जिह्रियथुः	जिह्रिय
उ० ,,	जिह्राय-जिह्रय	जिह्रियिव	जिह्रियिम

लुट्—ह्रेता इत्यादि। लृट्—ह्रेष्यति इत्यादि।

---

1. क्त-भीतः। क्त्वा-भीत्वा। तुमुन्-भेतुम्। तव्य- भेतव्यम्। णिच्-भापयते, भीषयते। सन्-बिभीषति।

2. "अचिश्नु—" से इयङ्।

लोट्

प्र० पु०	जिह्रेतु-जिह्रीतात्	जिह्रीताम्	जिह्रियतुः
म० ,,	जिह्रीहि— ,,	जिह्रीतम्	जिह्रीत
उ० ,,	जिह्रयाणि	जिह्रयाव	जिह्रयाम

लङ्

प्र० पु०	अजिह्रेत्	अजिह्रीताम्	अजिह्रयुः
म० ,,	अजिह्रेः	अजिह्रीतम्	अजिह्रीत
उ० ,,	अजिह्रयम्	अजिह्रीव	अजिह्रीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जिह्रीयात्	जिह्रीयाताम्	जिह्रीयुः
म० ,,	जिह्रीयाः	जिह्रीयातम्	जिह्रीयात
उ० ,,	जिह्रीयाम्	जिह्रीयाव	जिह्रीयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ह्रीयात्	ह्रीयास्ताम्	ह्रीयासुः
म० ,,	ह्रीयाः	ह्रीयास्तम्	ह्रीयास्त
उ० ,,	ह्रीयासम्	ह्रीयास्व	ह्रीयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अह्रैषीत्[1]	अह्रैष्टाम्	अह्रैषुः
म० ,,	अह्रैषीः	अह्रैष्टम्	अह्रैष्ट
उ० ,,	अह्रैषम्	अह्रैष्व	अह्रैष्म

लृङ्

अह्रेष्यत् इत्यादि ।

---

1. "सिचि वृद्धिः" । क्त—ह्रीणः, ह्रीतः । क्त्वा—ह्रीत्वा ।

४. पॄ—पालन पूरणयोः । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	पिपर्ति[1]	पिपूर्तः[2]	पिपुरति
म० ,,	पिपर्षि	पिपूर्थः	पिपूर्थ
उ० ,,	पिपर्मि	पिपूर्वः	पिपूर्मः

लिट्

प्र० पु०	पपार	पपरतुः[3]-पप्रतुः	पपरुः-पप्रुः
म० ,,	पपरिथ	पपरथुः-पप्रथुः	पपर-पप्र
उ० ,,	पपार-पपर	पपरिव[4]-पप्रिव	पपरिम-पप्रिम

लुट्

प्र० पु०	परिता-रीता[5]	परि-रीतारौ	परि-रीतारः
म० ,,	परि-रीतासि	परि-रीतास्थः	परि-रीतास्थ
उ० ,,	परि-रीतास्मि	परि-रीतास्वः	परि-रीतास्मः

लृट्

परिष्यति-परीष्यति इत्यादि ।

लोट्

प्र० पु०	पिपर्तु[6]-पिपूर्तात्	पिपूर्ताम्	पिपुरतु
म० ,,	पिपूर्हि-पिपूर्तात्	पिपूर्तम्	पिपूर्त

---

1. "अर्तिपिपर्त्योश्च" से अभ्यास को इकार ।
2. "उदोष्ठ्यपूर्वस्य" से उत्, "हलि च" से दीर्घ ।
3. "शृदॄप्रां ह्रस्वो वा" से ह्रस्वाभाव में "ऋच्छत्यृताम्" से गुण ।
4. "वृतो वा" से इट् लिट् में नहीं होता ।
5. "वॄतो वा" ।

उ० ,,	पिपराणि	पिपराव	पिपराम

लङ्

प्र० पु०	अपिपः[1]	अपिपूर्ताम्	अपिपरुः
म० ,,	अपिपः	अपिपूर्तम्	अपिपूर्त
उ० ,,	अपिपरम्	अपिपूर्व	अपिपूर्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	पिपूर्यात	पिपूर्याताम्	पिपूर्युः
म० ,,	पिपूर्याः	पिपूर्यातम्	पिपूर्यात
उ० ,,	पिपूर्यम्	पिपूर्याव	पिपूर्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	पूर्यात्	पूर्यास्ताम्	पूर्यासुः
म० ,,	पूर्याः	पूर्यास्तम्	पूर्यास्त
उ० ,,	पूर्यासम्	पूर्यास्व	पूर्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अपारीत	अपारिष्टाम्[2]	अपारिषुः
म० ,,	अपारीः	अपारिष्टम्	अपारिष्ट
उ० ,,	अपारिषम्	अपारिष्व	अपारिष्म

लृङ्

अपरिष्यत्–अपरीष्यत् इत्यादि ।

५. ओ हाक्–त्यागे । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	जहाति	जहितः[3]-जहीतः	जहति

1. गुण, हलङ्यादिलोप, विसर्ग ।
2. "सिचि च परस्मैपदेषु" से वृद्धि निषेध ।
3. "जहातेश्च" से इत्, हल्यघोः से ईत् ।

म० ,,	जहासि	जहिथः-जहीथः	जहिथ-जहीथ
उ० ,,	जहामि	जहिवः-जहीवः	जहिमः-जहीमः

लिट्

प्र० पु०	जहौ	जहतुः[1]	जहुः
म० ,,	जहिथ-जहाथ	जहथुः	जह
उ० ,,	जहौ	जहिव	जहिम

लुट्—हाता, हातारौ इत्यादि । लृट्-हास्यति, हास्यतः इत्यादि ।

लोट्

प्र० पु०	जहातु-जहितात्-हीतात्[2] जहि, जहीताम्		जहतु
म० ,,	जहाहि[2]-जहिहि-हीहि	जहितम्-हीतम्	जहित-हीत
उ० ,,	जहानि	जहाव	जहाम

लङ्

प्र० पु०	अजहात्	अजहिताम्-हीताम्	अजहुः
म० ,,	अजहाः	अजहित-हीतम्	अजहित-हीत
उ० ,,	अजहाम्	अजहिव-हीव	अजहिम-हीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जह्यात्[3]	जह्याताम्	जह्युः
म० ,,	जह्याः	जह्यातम्	जह्यात
उ० ,,	जह्याम्	जह्याव	जह्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	हेयात्[4]	हेयास्ताम्	हेयासुः

1. आकारलोप ।
2. "आ च हौ" से आ न ।
3. 'लोपो यि" से आ लोप ।
4. "एर्लिङि" ।

म० ,,	हेयाः	हेयास्तम्	हेयास्त
उ० ,,	हेयासम्	हेयास्व	हेयास्म

लुङ्

प्र० पु०	अहासीत्[1]	अहासिष्टाम्	अहासिषुः
म० ,,	अहासीः	अहासिष्टम्	अहासिष्ट
उ० ,,	अहासिषम्	अहासिष्व	अहासिष्म

लृङ्

अहास्यत्-अहास्यताम् इत्यादि ।

६ ऋ-गतौ । परस्मैपदी, अनिट्

लट्

प्र० पु०	इयर्ति[2]	इयृतः	इयृति
म० ,,	इयर्षि	इयृथः	इयृथ
उ० ,,	इयर्मि	इयृवः	इयृमः

लिट्

प्र० पु०	आर	आरतुः	आरुः
म० ,,	आरिथ[3]	आरथुः	आर
उ० ,,	आर	आरिव	आरिम

लुट्—अर्ता इत्यादि । लृट्—अरिष्यति इत्यादि ।

लोट्

प्र० पु०	इयर्तु-इयृतात्	इयृताम्	इयृतुः
म० ,,	इयृहि-इयृतात्	इयृतम्	इयृत

1. सक्, इट् ।
2. "अर्तिपिपर्त्योश्च" से इत्, "अभ्यासस्यासवर्णे" ।
3. "इडत्यर्तिव्ययतीनाम्" से नित्य इट् ।

उ० ,,	इयराणि	इयराव	इयराम

लङ्

प्र० पु०	ऐयः	ऐयृताम्	ऐयरुः
म० ,,	ऐयः	ऐयृतम्	ऐयृत
उ० ,,	ऐयरम्	ऐयृव	ऐयृम

विधिलिङ्

प्र० पु०	इयृयात्	इयृयाताम्	इयृयुः
म० ,,	इयृयाः	इयृयातम्	इयृयात
उ० ,,	इयृयम्	इयृयाव	इयृयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अर्यात्[1]	अर्यास्ताम्	अर्यासुः
म० ,,	अर्याः	अर्यास्तम्	अर्यास्त
उ० ,,	अर्यासम्	अर्यास्व	अर्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	आरत्[2]	आरताम्	आरन्
म० ,,	आरः	आरतम्	आरत
उ० ,,	आरम्	आराव	आराम

लृङ्

आरिष्यत्[3] इत्यादि ।

इति परस्मैपदिनः ।

1. "गुणोर्तिसंयोगाद्योः" से गुण ।
2. सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च" से च्लि को अङ् ।
3. "ऋद्धनोःस्ये" इट् ।

७. माङ्—माने, शब्दे च। आत्मनेपदी, अनिट्।

लट्

प्र० पु०	मिमीते[1]	मिमाते	मिमते[2]
म० ,,	मिमीषे	मिमाथे	मिमीध्वे
उ० ,,	मिमे	मिमीवहे	मिमीमहे

लिट्

प्र० पु०	ममे	ममाते	ममिरे
म० ,,	ममिषे	ममाथे	ममिध्वे
उ० ,,	ममे	ममिवहे	ममिमहे

लुट्—माता, मातासे इत्यादि। लृट्—मास्यते इत्यादि।

लोट्

प्र० पु०	मिमीताम्	मिमाताम्	मिमताम्
म० ,,	मिमीष्व	मिमाथाम्	मिमीध्वम्
उ० ,,	मिमै	मिमावहै	मिमामहै

लङ्

प्र० पु०	अमिमीत	अमिमाताम्	अमिमत
म० ,,	अमिमीथाः	अमिमाथाम्	अमिमीध्वम्
उ० ,,	अमिमि	अमिमीवहि	अमिमीमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	मिमीत	मिमीयाताम्	मिमीरन्
म० ,,	मिमीथाः	मिमीयाथाम्	मिमीध्वम्
उ० ,,	मिमीय	मिमीवहि	मिमीमहि

1. "भृञामित्" से इत।
2. "श्नाभ्यस्तयोरातः" आकारलोप।

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	मासीष्ट	मासीयास्ताम्	मासीरन्
म० ,,	मासीष्ठाः	मासीयास्थाम्	मासीध्वम्
उ० ,,	मासीय	मासीवहि	मासीमहि

लुङ्

प्र० पु०	अमास्त	अमासाताम्	अमासत
म० ,,	अमास्थाः	अमासाथाम्	अमाध्वम्[1]
उ० ,,	अमासि	अमास्वहि	अमास्महि

लृङ्—अमास्यत इत्यादि ।

८. ओहाङ्[2]—गतौ । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—जिहीते । जहे । हाता । हास्यते । जिहीताम् । अजिहीत । जिहीत । हासीष्ट । अहास्त । अहास्यत । इत्यात्मनेपदिनः ॥

अथोभयपदिनः ।

९. डु भृञ्—धारणपोषणयोः । उभयपदी, अनिट् ।

लट्-पर०

प्र० पु०	बिभर्ति[3]	बिभृतः	बिभ्रति
म० ,,	बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ
उ० ,,	बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः

आ० प०

प्र० पु०	बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते
म० ,,	बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे
उ० ,,	बिभ्रे	बिभृवहे	बिभृमहे

1. "धि च" ।

2. ओकार इत् "ओदितश्च" से निष्ठानकार को नत्व करने के लिये है ।

3. "भृञामित्" से इत् ।

लिट्—पर०

प्र० पु०	बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः
म० ,,	बभर्थ[1]	बभ्रथुः	बभ्र
उ० ,,	बभार-बभर	बभृव	बभृम

आ० प०

प्र० पु०	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे
म० ,,	बभृषे	बभ्राथे	बभृध्वे
उ० ,,	बभ्रे	बभृवहे	बभृमहे

लुङ्—भर्तासि, भर्तासे इत्यादि। भरिष्यति, भरिष्यते इत्यादि।

लोट्—प०

प्र० पु०	बिभर्तु-बिभृतात्	बिभृताम्	बिभ्रतु
म० ,,	बिभृहि-बिभृतात्	बिभृतम्	बिभृत
उ० ,,	बिभराणि	बिभराव	बिभराम

आ० प०

प्र० पु०	बिभृताम्	बिभ्राताम्	बिभ्रताम्
म० ,,	बिभृष्व	बिभ्राथाम्	बिभृध्वम्
उ० ,,	बिभरै	बिभरावहै	बिभरामहै

लङ् पर०

प्र० पु०	अबिभः	अबिभृताम्	अबिभरुः
म० ,,	अबिभः	अबिभृतम्	अबिभृत
उ० ,,	अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम

आ. प.

प्र० पु०	अबिभृत	अबिभ्राताम्	अबिभ्रत

1. कृ सृ भृ वृस्तु द्रु स्रु श्रुवोलिटि" से इट् का निषेध।

म० ,,	अबिभृथाः	अबिभ्राथाम्	अबिभृध्वम्
उ० ,,	अबिभ्रि	अबिभृवहि	अबिभृमहि

विधिलिङ् आ. प.

प्र० पु०	बिभ्रीत	बिभ्रीयाताम्	बिभ्रीरन्
म० ,,	बिभ्रीथाः	बिभ्रीयाथाम्	बिभ्रीध्वम्
उ० ,,	बिभ्रीय	बिभ्रीवहि	बिभ्रीमहि

परस्मै०

प्र० पु०	बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयुः
म० ,,	बिभृयाः	बिभृयातम्	बिभृयात
उ० ,,	बिभृयाम्	बिभृयाव	बिभृयाम

आशीर्लिङ् प. पद.

प्र० पु०	भ्रियात्	भ्रियास्ताम्	भ्रियासुः
म० ,,	भ्रियाः	भ्रियास्तम्	भ्रियास्त
उ० ,,	भ्रियासम्	भ्रियास्व	भ्रियास्म

आ. प.

प्र० पु०	भृषीष्ट[1]	भृषीयास्ताम्	भृषीरन्
म० ,,	भृषीष्ठाः	भृषीयास्थाम्	भृषीध्वम्
उ० ,,	भृषीय	भृषीवहि	भृषीमहि

लुङ् पर.

प्र० पु०	अभार्षीत्	अभार्ष्टाम्	अभार्षुः
म० ,,	अभार्षीः	अभार्ष्टम्	अभार्ष्ट
उ० ,,	अभार्षम्	अभार्ष्व	अभार्ष्म

1. "उश्च" से लिङ् सिच् के कित होने से गुणाभाव।

आ. प.

प्र० पु०	अभृत[1]	अभृषाताम्	अभृषत
म० ,,	अभृथाः	अभृषाथाम्	अभृढ्वम्
उ० ,,	अभृषि	अभृष्वहि	अभृष्महि

लृङ्—अभरिष्यत्[2], अभरिष्यत इत्यादि ।

१०. डुदाञ्—दाने । उभयपदी, सेट् ।

लट्-पर.

प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति[3]
म० ,,	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० ,,	ददामि	दद्वः	दद्मः

आ. प.

प्र० पु०	दत्ते	ददाते	ददते
म० ,,	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ० ,,	ददे	दद्वहे	दद्महे

लिट्-पर.

प्र० पु०	ददौ	ददतुः	ददुः
म० ,,	ददिथ-ददाथ	ददथुः	दद
उ० ,,	ददौ	ददिव	ददिम

आ. प.

प्र० पु०	ददे	ददाते	ददिरे

---

1. "ह्रस्वादङ्गात्" सिच् लोप ।

2. क्त—भृतः । क्त्वा—भृत्वा । तुमुन्—भर्तुम् । तव्य—भर्तव्यः अनीय—भरणीयः । ल्युट्—भरणम् । णिच्—भारयति । सन्—बिभरिषति, बुभूर्षति ।

म० ,,	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
उ० ,,	ददे	ददिवहे	ददिमहे

लुट्—दातासि, दातासे इत्यादि । लृट्—दास्यति, दास्यते इत्यादि ।

लोट् पर.

प्र० पु०	ददातु-दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
म० ,,	देहि[1]-दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उ० ,,	ददानि	ददाव	ददाम

आ. प.

प्र० पु०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म० ,,	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ० ,,	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ् पर.

प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० ,,	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० ,,	अददाम्	अदद्व	अदद्म

आ. प.

प्र० पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० ,,	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० ,,	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ्—पर.

प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० ,,	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ० ,,	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

1. "ध्वसोरेः" ।

आ० प.

प्र० पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० ,,	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० ,,	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

आशी० पर.

प्र० पु०	देयात्	देयास्ताम्	देयासुः
म० ,,	देयाः	देयास्तम्	देयास्त
उ० ,,	देयासम्	देयास्व	देयास्म

आ० प०

प्र० पु०	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
म० ,,	दासीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्
उ० ,,	दासीय	दासीवहि	दासीमहि

लुङ् पर.

प्र० पु०	अदात्	अदाताम्	अदुः
म० ,,	अदाः	अदातम्	अदात
उ० ,,	अदाम्	अदाव	अदाम

आ० प०

प्र० पु०	अदित[1]	अदिषाताम्	अदिषत
म० ,,	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिध्वम्
उ० ,,	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

लृङ् पर०, आ० प०

अदास्यत्, अदास्यत इत्यादि ।

1. "स्थाघ्वोरिच्च" । "ह्रस्वादंगात्" से सिच् लुक् । क्त-दत्तः । क्त्वा-दत्वा । तुमुन्-दातुम् । तव्य-दातव्यम् । अनीय-दानीयः । णिच्-दापयति । सन्-दित्सति । कर्मवा०-दीयते । "नेर्गदनद—"से णत्व-प्रणिददाति । आदत्ते-ग्रहण करता है ।

११. डु[1] धाञ्—धारणपोषणयोः । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—दधाति – धत्ते । दधौ—दधे । धातासि-धातासे । धास्यति-धास्यते । दधातु-धत्ताम् । अदधात्-अधत्त । दध्यात्-दधीत । धेयात्-धासीष्ट । अधात्-अधित । अधास्यत्-अधास्यत ।

१२. णिजिर—शौच पोषणयोः । उभयपदी, अनिट् ।

लट्—पर०

प्र० पु०	नेनेक्ति[2]	नेनिक्तः	नेनिजति
म० ,,	नेनेक्षि	नेनिक्थः	नेनिक्थ
उ० ,,	नेनेज्मि	नेनिज्वः	नेनिज्मः

आ० प०

प्र० पु०	नेनिक्ते	नेनिजाते	नेनिजते
म० ,,	नेनिक्षे	नेनिजाथे	नेनिग्ध्वे
उ० ,,	नेनिजे	नेनिज्वहे	नेनिज्महे

लिट्-पर०

प्र० पु०	निनेज	निनिजतुः	निनिजुः
म० ,,	नेनिजिथ-निनेक्थ	निनिजथुः	निनिज
उ० ,,	निनेज	निनिजिव	निनिजिम

आ० प०

प्र० पु०	निनिजे	निनिजाते	निनिजिरे
म० ,,	निनिजिषे	निनिजाथे	निनिजिध्वे
उ० ,,	निनिजे	निनिजिवहे	निनिजिमहे

1. डु दाञ्, डु धाञ् धातुओं में 'डु' अनुबन्ध "ड्वितः क्त्रिः" से 'क्त्रि' प्रत्यय के लिये है—दत्त्रिमम्, धत्त्रिमम् । णिच्-धापयति । सन्-धित्सति । निधत्ते-रखता है ।

2. "निजां त्रयाणां गुणः श्लौ" से अभ्यास को गुण ।

लुट्—नेक्तास्मि, नेक्तासे। लृट्—नेक्ष्यति, नेक्ष्यते इत्यादि।

लोट् पर० प०

प्र० पु०	नेनेक्तु-नेनिक्तात्	नेनिक्ताम्	नेनिजतु
म० ,,	नेनिग्धि-नेनिक्तात्	नेनिक्तम्	नेनिक्त
उ० ,,	नेनिजानि[1]	नेनिजाव	नेनिजाम

आ० प०

प्र० पु०	नेनिक्ताम्	नेनिजाताम्	नेनिजताम्
म० ,,	नेनिक्ष्व	नेनिजाथाम्	नेनिग्ध्वम्
उ० ,,	नेनिजै	नेनिजावहै	नेनिजामहै

लङ् पर०

प्र० पु०	अनेनेक्-ग्	अनेनिक्ताम्	अनेनिजुः
म० ,,	अनेनेक्-ग्	अनेनिक्तम्	अनेनिक्त
उ० ,,	अनेनिजम्	अनेनिज्व	अनेनिज्म

आ० प०

प्र० पु०	अनेनिक्त	अनेनिजाताम्	अनेनिजत
म० ,,	अनेनिक्थाः	अनेनिजाथाम्	अनेनिग्ध्वम्
उ० ,,	अनेनिजि	अनेनिज्वहि	अनेनिज्महि

विधिलिङ् पर०

प्र० पु०	नेनिज्यात्	नेनिज्याताम्	नेनिज्युः
म० ,,	नेनिज्याः	नेनिज्यातम्	नेनिज्यात
उ० ,,	नेनिज्याम्	नेनिज्याव	नेनिज्याम

आ० प०

प्र० पु०	नेनिजीत	नेनिजीयाताम्	नेनिजीरन्
म० ,,	नेनिजीथाः	नेनिजीयाथाम्	नेनिजीध्वम्

1. "नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके" से गुणनिषेध।

उ० ,,	नेनिजीय	नेनिजीवहि	नेनिजीमहि

आशीर्लिङ् पर०

प्र० पु०	निज्यात्	निज्यास्ताम्	निज्यासुः
म० ,,	निज्याः	निज्यास्तम्	निज्यास्त
उ० ,,	निज्यासम्	निज्यास्व	निज्यास्म

आ० पद०

प्र० पु०	निक्षीष्ट	निक्षीयास्ताम्	निक्षीरन्
म० ,,	निक्षीष्ठाः	निक्षीयास्थाम्	निक्षीध्वम्
उ० ,,	निक्षीय	निक्षीवहि	निक्षीमहि

लुङ् पर०

प्र० पु०	अनिजत्[1]	अनिजताम्	अनिजन्
म० ,,	अनिजः	अनिजतम्	अनिजत
उ० ,,	अनिजम्	अनिजाव	अनिजाम

पक्षे

प्र० पु०	अनैक्षीत्	अनैक्ताम्	अनैक्षुः
म० ,,	अनैक्षीः	अनैक्तम्	अनैक्त
उ० ,,	अनैक्षम्	अनैक्ष्व	अनैक्ष्म

आ० प०

प्र० पु०	अनिक्त[2]	अनिक्षाताम्	अनिक्षत
म० ,,	अनिक्थाः	अनिक्षाथाम्	अनिग्ध्वम्
उ० ,,	अनिक्षि	अनिक्ष्वहि	अनिक्ष्महि

लृङ्

अनेक्ष्यत्-अनेक्ष्यत इत्यादि ।

इति जुहोत्यादिगणः

1. "इरितोवा" से परस्मैपद में विकल्प से अङ् ।

2. "झलो झलि" । क्त-निक्तः । क्त्वा-निक्त्वा । तुमुन्-नेक्तुम् । णिच्-नेजयति । सन्-निनिक्षति । यङ्-नेनिज्यते ।

अथ दिवादि प्रकरणम्

१ दिवु[1]—क्रीडादिषु । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—दीव्यति[2] । दिदेव । देविता । देविष्यति । दीव्यतु । अदीव्यत् । दीव्येत् । दीव्यात् । अदेवीत्[3] । अदेविष्यत् ।

२ षिवु-तन्तु सन्ताने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—सीव्यति । सिषेव । सेविता । सेविष्यति । सीव्यतु । असीव्यत्[4] । सीव्येत् । सीव्यात् । असेवीत् । असेविष्यत् ।

३ नृती—गात्रविक्षेपे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—नृत्यति । ननर्त-ननृततुः । नर्तिता । नर्तिष्यति[5]-नर्त्स्यति । नृत्यतु । अनृत्यत् । नृत्येत । नृत्यात् । अनर्तीत् । अनर्तिष्यत्-अनर्त्स्यत् ।

४ त्रसी—उद्वेगे । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	त्रस्यति	त्रस्यतः	त्रस्यन्ति
म० ,,	त्रस्यसि	त्रस्यथः	त्रस्यथ
उ० ,,	त्रस्यामि	त्रस्यावः	त्रस्यामः

---

1. उकार इत् "उदितोवा" से इट् विकल्प के लिये है ।

2. 'हलि च" से दीर्घ । क्त-द्यूतम् । क्तवतु-द्यूतवान् । क्त्वा-देवित्वा, द्यूत्वा । तव्य-देवितव्यम् । सन्-दुद्यूषति, दिदेविषति । णिच्-देवयति ।

3. "नेटि" ।

4. 'सिवादीनां वाड्व्यवायेऽपि"-पर्यसीव्यत्, पर्यषीव्यत् । क्त्वा-सेवित्वा, स्यूत्वा । क्त-स्यूतः ।

5. सेऽसिचि कृत—" वेट् ।

पक्षे

प्र० पु०	त्रसति[1]	त्रसतः	त्रसन्ति
म० ,,	त्रससि	त्रसथः	त्रसथ
उ० ,,	त्रसामि	त्रसावः	त्रसामः

लिट्

प्र० पु०	तत्रास	त्रेसतुः-तत्रसतुः[2]	त्रेसुः-तत्रसुः
म० ,,	तत्रसिथ-त्रेसिथ	त्रेसथुःतत्रसथुः	त्रेस-तत्रस
उ० ,,	तत्रास-तत्रस	त्रेसिव-तत्रसिव	त्रेसिम-तत्रसिम

लुट्-त्रसिता । लृट्-त्रसिष्यति । लोट्-त्रस्यतु-त्रसतु । लङ्-अत्रस्यत्-अत्रसत् । वि०लि०-त्रस्येत्-त्रसेत् । आशी०-त्रस्यात् । लुङ्-अत्रासीत्[3], अत्रसीत् । लृङ्-अत्रसिष्यत् ।

५ शो-तनूकरणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—श्यति[4] । शशौ[5] । शाता । शास्यति । श्यतु । अश्यत् । श्येत् । शायात् । अशात्[6] , अशाताम्, अशुः-अशासीत् । लृङ्-अशास्यत् ।

६ छो—छेदने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—छ्यति । चच्छौ । छाता छास्यति । छ्यतु । अछ्यत् ।

---

1. "वाभ्राश —" ।

2. "वा जृभ्रमुत्रसाम्" एत्त्वाभ्यास लोप ।

3. "अतो हलादे लंघोः" ' से ईकार इत् "श्वीदितो निष्ठायाम्" से इट् विकल्प के लिये हैं—त्रस्तः, त्रस्तवान् ।

4. "ओतःश्यनि" से ओकारलोप ।

5. "आदेश उपदेशेऽशिति" । दो धातु तक यही विधि रहेगी ।

6. "विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः " विकल्प से सिच् लुक् , पक्षे-सक् । शो धातु तक यही विधि होगी ।

छ्येत् । छायात् । अच्छात्-अच्छासीत् । अच्छास्यत् ।

७ षो—अन्तकर्मणि । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—स्यति । ससौ । साता । सास्यति । स्यतु । अस्यत् । स्येत् । सायात् । असात्-असासीत् । असास्यत् ।

८ दो—अवखण्डने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—द्यति । ददौ । दाता । दास्यति । द्यतु । अद्यत् । द्येत् । देयात् । अदात् । अदास्यत् ।

९ व्यध—ताडने । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	विध्यति[1]	विध्यतः	विध्यन्ति
म० ,,	विध्यसि	विध्यथः	विध्यथ
उ० ,,	विध्यामि	विध्यावः	विध्यामः

लिट्

प्र० पु०	विव्याध[2]	विविधतुः[3]	विविधुः
म० ,,	विव्यधिथ-विव्यद्ध	विविधथुः	विविध
उ० ,,	विव्याध-विव्यध	विविधिव	विविधिम

लुट्-व्यद्धा । लृट्-व्यत्स्यति । लोट्-विध्यतु । लङ्-अविध्यत् । वि० लि०-विध्येत् । आ०-विध्यात् । लुङ्-अव्यात्सीत् । लृङ्-अव्यत्स्यत् ।

१० पुष—पुष्टौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु-पुष्यति । पुपोष, पुपोषिथ । पोष्टा । पोक्ष्यति ।

1. श्यन्, अपित् सार्वधातुक होने से ङित्वत् है, अतः "ग्रहिज्या..." से सम्प्रसारण ।

2. "लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्" से सम्प्रसारण ।

3. "वचिस्वपि..." से सम्प्रसारण के बाद द्वित्व ।

पुष्यतु । अपुष्यत् । पुष्येत् । पुष्यात् । अपुषत्[1] । अपोक्ष्यत् ।

११ शुष—शोषणे । परस्मैपदी, वेट् । पुष् के समान रूप होंगे ।

१२ णश—अदर्शने । परस्मैपदी, वेट् ।

लट्

प्र० पु०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म० ,,	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ० ,,	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लिट्

प्र० पु०	ननाश	नेशतुः	नेशुः
म० ,,	नेशिथ[2]-ननष्ठ	नेशथुः	नेश
उ० ,,	ननाश-ननश	नेशिव-नेश्व	नेशिम-नेश्म

लुट्

प्र० पु०	नंष्टा[3]	नंष्टारौ	नंष्टारः
म० ,,	नंष्टासि	नंष्टास्थः	नंष्टास्थ
उ० ,,	नंष्टास्मि	नंष्टास्वः	नंष्टास्मः

लृट्

प्र० पु०	नङ्क्ष्यति[4]	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति

1. यहाँ से पुषादिगण चलता है, "पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु" से च्लि को अङ् । क्त-पुष्टः । क्तवतु-पुष्टवान् । णिच्-पोषयति । सन्-पुपुक्षति ।

2. "रधादिभ्यश्च" से इट् का विकल्प, इट् के अभाव में "मस्जिनशोर्झलि" से नुम्, ष्टुत्व ।

3. पक्षे-नशिता इत्यादि ।

4. पक्षे-नशिष्यति इत्यादि । इट् के अभाव में 'मस्जिनशोर्झलि" से नुम् ।

म० ,,	नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथ:	नङ्क्ष्यथ
उ० ,,	नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्याव:	नङ्क्ष्याम:

लोट्-नश्यतु । लङ्-अनश्यत् । वि० लि०-नश्येत् । आ०-नश्यात् । लुङ्-अनशत्[1] । लृङ्-अनशिष्यत्-अनङ्क्ष्यत् ।

१३ रध—हिंसा, संराद्धयो: । परस्मैपदी, वेट् ।

लट्

प्र० पु०	रध्यति	रध्यत:	रध्यन्ति
म० ,,	रध्यसि	रध्यथ:	रध्यथ
उ० ,,	रध्यामि	रध्याव:	रध्याम:

लिट्

प्र० पु०	ररन्ध	ररन्धतु:[2]	ररन्धु:
म० ,,	ररन्धिथ-ररद्ध	ररन्धथु:	ररन्ध
उ० ,,	ररन्ध	ररन्धिव-रेध्व[3]	ररन्धिम-रेध्म

लुट्—रधिता[4]-रद्धा । रधिष्यति-रत्स्यति । रध्यतु । अरध्यत् । रध्येत् । रध्यात् । अरधत्[5] । अरधिष्यत्-अरत्स्यत् ।

१४ तृप-प्रीणने । परस्मैपदी, वेट् ।

लट्—तृप्यति । लिट्-ततर्प, ततृपतु:, ततृपु: । ततर्पिथ[6], तत्रप्थ, ततर्प्थ ।

---

1. पुषादीत्यङ् । क्त-नष्ट: "यस्यविभाषा" से इट् निषेध । तुमुन्-नशितुम्, नष्टुम् । णिच्-नाशयति । सन्-निनशिषति, निनङ्क्षति ।

2. "रधिजभो रचि" से नुम् ।

3. "रधादिभ्यश्च" ।

4. "नेड्यलिटि रधे:" नुम्निषेध ।

5. नुम् करके "अनिदिताम्" से नलोप ।

6. रधादिगण का इट् । इट् के अभाव में "अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्" से अम् आगम, अम् के अभाव में उपधागुण । यही क्रम आगे भी समझें ।

लुट्-तर्पिता, त्रप्ता, तर्प्ता। लिट्-तर्पिष्यति, त्रप्स्यति, तर्प्स्यति। लोट्-तृप्यतु। लङ्-अतृप्यत्। वि० लि०-तृप्येत्। आ.-तृप्यात्। लुङ्-अतर्पिष्यत्[1], अत्रप्स्यत्[2], अतार्प्सीत्[3], अतृपत्। लृङ्-अतर्पिष्यत्, अत्रप्स्यत्, अतर्प्स्यत्।

१५ दृप-हर्षमोहनयोः। परस्मैपदी, वेट्।

दशलकारेषु—दृप्यति। ददर्प। दर्पिता, द्रप्ता, दर्प्ता। दर्पिष्यति, द्रप्स्यति दर्प्स्यति। दृप्यतु। अदृप्यत्। दृप्येत्। दृप्यात्। अदर्पीत्, अद्राप्सीत्, अदार्प्सीत्, अदृपत्। अदर्पिष्यत्, अद्रप्स्यत्, अदर्प्स्यत्।

१६ द्रुह-हिंसायाम्। परस्मैपदी, वेट्।

दशलकारेषु—द्रुह्यति। दुद्रोह, दुद्रोहिथ-दुद्रोग्ध[4]-दुद्रोढ। द्रोहिता-द्रोग्धा-द्रोढा। द्रोहिष्यति, ध्रोक्ष्यति[4]। द्रुह्यतु। अद्रुह्यत्। द्रुह्येत्। द्रुह्यात्। अद्रुहत्। अद्रोहिष्यत्-अध्रोक्ष्यत्।

१७ मुह-वैचित्त्ये। परस्मैपदी, वेट्।

दशलकारेषु-मुह्यति। लिट्-मुमोह, मुमुहतुः मुमुहुः। मुमोहिथ, मुमोग्ध, मुमोढ। लुट्-मोहिता, मोग्धा, मोढा। लृट्-मोहिष्यति, मोक्ष्यति। लुट्-मुह्यतु। लङ्-अमुह्यत्। वि०-लि०-मुह्यात्। लुङ्-अमुहत्। अमोहिष्यत्-अमोक्ष्यत्।

१८ ष्णुह—उद्गिरणे। परस्मैपदी, वेट्।

द. ल.–लट्–स्नुह्यति[5]। लिट्-सुष्णोह, सुष्णुहतुः, सुष्णुहुः। सुष्णोहिथ-

---

1. इट् हो कर "नेटि" से वृद्धिनिषेध।

2. अम् आगम, हलन्तलक्षणवृद्धि।

3. वा द्रुहमुह—" से घत्व विकल्प से, पक्षे ढत्व कर के "ढोढे लोपः"।

4. ढत्व-घत्वपक्ष में समानता, "षढोः कः सि"। यही प्रक्रिया सारी मुह धातु में होगी।

5. "धात्वादेः षः सः" निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः।

सुष्णोग्ध[1]-सुष्णोढ, सुष्णुहथुः, सुष्णुह । सुष्णोह, सुष्णुहिव-सुष्णुह्व, सुष्णुहिम-सुष्णुह्म । लुट्-स्नोहिता-स्नोग्धा-स्नोढा । लृट्-स्नोहिष्यति-स्नोक्ष्यति । लोट्-स्नुह्यतु । लङ्-अस्नुह्यत् । विधिलिङ्-स्नुह्येत् । आ०लि०-स्नुह्यात् । लुङ्-अस्नुहत्[2] । अस्नोहिष्यत्-अस्नोक्ष्यत् ।

१९ ष्णिह-प्रीतौ । परस्मैपदी, वेट् ।

दशलकारेषु—स्निह्यति । सिष्णेह । स्नेहिता, स्नेग्धा, स्नेढा । स्नेहिष्यति-स्नेक्ष्यति । स्निह्यतु । अस्निह्यत् । स्निह्येत् । स्निह्यात् । अस्निहत्[3] । अस्नेहिष्यत् -अस्नेक्ष्यत् ।

२० तुष्—तुष्टौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—तुष्यति । तुतोष । तोष्टा । तोक्ष्यति । तुष्यतु । अतुष्यत् । तुष्येत् । तुष्यात् । अतुषत् । अतोक्ष्यत्[4] ।

२१ दुष—वैकृत्ये । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—दुष्यति । दुदोष । दोष्टा । दोक्ष्यति । दुष्यतु । अदुष्यत् । दुष्येत । दुष्यात् । अदुषत्[5] । अदोक्ष्यत्[6] ।

२२ श्लिष-आलिङ्गने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—श्लिष्यति । शिश्लेष । श्लेष्टा । श्लेक्ष्यति । श्लिष्यतु ।

---

1. "रधादिभ्यश्च" "वाद्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्" "झषस्तथोर्धोऽधः" "ढोढे लोपः" इन सूत्रों को ष्णिह धातु में भी स्मरण करें ।

2 पुषादीत्यङ् ।

3. यहीं तक पुषादिगण है ।

4. क्त-तुष्टः । क्त्वा-तुष्ट्वा । तुमुन्-तोष्टुम् । तव्य-तोष्टव्यम् । णिच्-तोषयति । सन्-तुतुक्षति ।

5. णिच्-दोषयति-दूषयति ।

6. परस्मैपद तक पुषादिगण चलेगा ।

अश्लिष्यत् । श्लिष्येत् । श्लिष्यात् । अश्लिषत्-अश्लिक्षत्[1] । अश्लेक्ष्यत् ।

२३ क्रुध-क्रोधे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—क्रुध्यति । चुक्रोध । क्रोद्धा । क्रोत्स्यति । क्रुध्यतु । अक्रुध्यत् । क्रुध्येत् । क्रुध्यात् । अक्रुधत् । अक्रोत्स्यत् ।

२४ क्षुध-बुभुक्षायाम् । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—क्षुध्यति । चुक्षोध । क्षोद्धा । क्षोत्स्यति । क्षुध्यतु । अक्षुध्यत् । क्षुध्येत् । क्षुध्यात् । अक्षुधत् । अक्षोत्स्यत् ।

२५. शुध—शौचे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—शुध्यति । शुशोध । शोद्धा । शोत्स्यति । शुध्यतु । अशुध्यत् । शुध्येत् । शुध्यात् । अशुधत् । अशोत्स्यत् ।

२६. षिधु—संराद्धौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—सिध्यति । सिषेध । सेद्धा । सेत्स्यति । सिध्यतु । असिध्यत् । सिध्येत् । सिध्यात् । असिधत् । असेत्स्यत् ।

२७. शमु—उपशमे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—शाम्यति । शशाम । शमिता । शमिष्यति । शाम्यतु । अशाम्यत् । शाम्येत् । शम्यात् । अशमत् । अशमिष्यत् ।

२८. तमु—काङ्क्षायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—ताम्यति । तताम । तमिता । तमिष्यति । ताम्यतु । अताम्यत् । ताम्येत् । तम्यात् । अतमत् । अतमिष्यत् ।

---

1. ''श्लिष आलिंगने'' से क्स ।

2. उकार अनुबन्ध क्त्वा में इट् विकल्प के लिये है । क्त—शान्तः । क्त्वा—शमित्वा, शान्त्वा । तुमुन्—शमितुम् । तव्य—शमितव्य । णिच्—शमयति । सन्—शिशमिषति ।

२९. दमु—उपशमे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—दाम्यति । ददाम, देमतुः[1] । दमिता । दमिष्यति । दाम्यतु । अदाम्यत् । दाम्येत् । दम्यात् । अदमत् । अदमिष्यत् ।

३०. श्रमु—तपसि, खेदे च । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—श्राम्यति । शश्राम-शश्रमतुः[2] । श्रमिता । श्रमिष्यति । श्राम्यतु । अश्राम्यत् । श्राम्येत् । श्रम्यात् । अश्रमत् । अश्रमिष्यत् ।

३१. भ्रमु—अनवस्थाने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भ्राम्यति, भ्रमति । बभ्राम, बभ्रमतुः[3]-भ्रेमतुः । भ्रमिता । भ्रमिष्यति । भ्राम्यतु-भ्रमतु । अभ्राम्यत्-अभ्रमत् । भ्राम्येत्-भ्रमेत् । भ्रम्यात् । अभ्रमत् । अभ्रमिष्यत् ।

३२. क्षमू—सहने । परस्मैपदी, वेट् ।

दशलकारेषु—क्षाम्यति । चक्षाम, चक्षमतुः । क्षमिता[4]-क्षन्ता । क्षमिष्यति-क्षंस्यति । क्षाम्यतु । अक्षाम्यत् । क्षाम्येत् । क्षम्यात् । अक्षमत् । अक्षमिष्यत्—अक्षंस्यत् ।

३३. क्लमु—ग्लानौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—क्लाम्यति[5]-क्लामति । चक्लाम । क्लमिता । क्लमिष्यति ।

---

1. एत्वाभ्यास लोप । दान्तः । दमित्वा—दान्त्वा । णिच्—दमयति । घञ्—शमः । दमः । क्लमः । श्रमः । क्तिन्—शान्तिः । दान्तिः । क्लान्तिः । श्रान्तिः । भ्रान्तिः ।

2. संयुक्त हलमध्यस्थ अकार होने से एत्वाभ्यास लोप नहीं हुआ ।

3. "वा जॄभ्रमुत्रसाम्" ।

4. "स्वरतिसूति"—वेट् । शम् से मद् तक आठ धातुओं को "शमामष्टानां दीर्घःश्यनि" दीर्घ होगा ।

5. "वाभ्राश"—से श्यन् का विकल्प । "ष्ठिवुक्लमुचमां" से दीर्घ

क्राम्यतु-क्रामतु । अक्राम्यत्-अक्रामत् । क्राम्येत्-क्रामेत् । क्रम्यात् । अक्रमत् । अक्रमिष्यत् ।

३४. मदी[1]—हर्षे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—माद्यति । ममाद, मेदतुः । मदिता । मदिष्यति । माद्यतु । अमाद्यत् । माद्येत् । मद्यात् । अमदत् । अमदिष्यत् ।

३५. असु[2]—क्षेपणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—अस्यति । आस । असिता । असिष्यति । अस्यतु । आस्यत् । अस्येत् । अस्यात् । आस्यत् । आसिष्यत् ।

३६. यसु[3]—प्रयत्ने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—यसति-यस्यति । ययास, येसतुः । यसिता । यसिष्यति । यस्यतु-यसतु । अयस्यत्[4]-अयसत् । यस्येत्-यसेत् । यस्यात् । अयसत् । अयसिष्यत् ।

३७. जसु—मोक्षणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—जस्यति । जजास । जसिता । जसिष्यति । जस्यतु । अजस्यत् । जस्येत् । जस्यात् । अजसत् । अजसिष्यत् ।

३८ तसु—उपक्षये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तस्यति । ततास, तेसतुः । तसिता । तसिष्यति । तस्यतु । अतस्यत् । तस्येत् । तस्यात् । अतसत् । अतसिष्यत् ।

३९ दसु—उपक्षये । परस्मैपदी, सेट् । तसु वद् रूपाणि ।

---

1. ईदित् होने से निष्ठा में 'मत्तः' रूप होगा । प्रमाद्यति-लापरवाही करता है । प्रमादः-लापरवाही (घञ्) । प्रमदः-हर्ष ।

2. अस्त्र शब्द इसी से बनता है ।

3. प्रयासः शब्द इसी से निष्पन्न होता है ।

4. "यसोऽनुपसर्गे" से श्यन विकल्प से ।

४० वसु—स्तम्भे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वस्यति । ववास, ववासतुः । वसिता । वसिष्यति । वस्यतु । अवस्यत् । वस्येत् । वस्यात् । अवसत् । अवसिष्यत् ।

४१ व्युष—विभागे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—व्युष्यति । वुव्योष । व्युषिता । व्युषिष्यति । व्युष्यतु । अव्युष्यत् । व्युष्येत् । व्युष्यात् । अव्युषत् । अव्युषिष्यत् ।

४२ बिस्—प्रेरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—बिस्यति । बिबेस । बेसिता । बेसिष्यति । बिस्यतु । अबिस्यत् । बिस्येत् । बिस्यात् । अबिसत् । अबिसिष्यत् ।

४३ कुस—संश्लेषणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कुस्यति । चुकोस । कोसिता । कोसिष्यति । कुस्यतु । अकुस्यत् । कुस्येत् । कुस्यात् । अकुसत् । अकुसिष्यत् ।

४४. बुस—उत्सर्गे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—बुस्यति । बुबोस । बुसिता । बुसिष्यति । बुस्यतु । अबुस्यत् । बुस्येत् । बुस्यात् । अबुसत् । अबुसिष्यत् ।

४५. मुस—खण्डने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मुस्यति । मुमोस । मुसिता । मुसिष्यति । मुस्यतु । अमुस्यत् । मुस्येत् । मुस्यात् । अमुसत् । अमुसिष्यत् ।

४६. मसी—परिणामे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मस्यति । ममास, मेसतुः । मसिता । मसिष्यति । मस्यतु । अमस्यत् । मस्येत् । मस्यात् । अमसत् । अमसिष्यत् ।

४७. लुठ—विलोडने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—लुठ्यति । लुलोठ । लोठिता । लोठिष्यति । लुठ्यतु । अलुठ्यत् । लुठ्येत् । लुठ्यात् । अलुठत् । अलुठिष्यत् ।

४८. उच—समवाये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—उच्यति । उवोच[1]-ऊचतुः-ऊचुः । उचिता । उचिष्यति । उच्यतु । औच्यत् । उच्येत् । उच्यात् । औचत्[2] । औचिष्यत् ।

४९. भृशु—अधःपतने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भृश्यति । बभर्श, बभृशतुः । भर्शिता । भर्शिष्यति । भृश्यतु । अभृश्यत् । भृश्येत् । भृश्यात् । अभृशत् । अभर्शिष्यत् ।

५०. भ्रंशु—अधः पतने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—भ्रश्यति[3] । बभ्रंश । भ्रंशिता । भ्रंशिष्यति । भ्रश्यतु । अभ्रश्यत् । भ्रश्येत् । भ्रश्यात् । अभ्रशत्[4] । अभ्रंशिष्यत् ।

५१. वृश—वरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वृश्यति । ववर्श । वर्शिता । वर्शिष्यति । वृश्यतु । अवृश्यत् । वृश्येत् । वृश्यात् । अवृशत् । अवर्शिष्यत् ।

५२. कृश[5]—तनूकरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कृश्यति । चकर्श । कर्शिता । कर्शिष्यति । कृश्यतु । अकृश्यत् । कृश्येत् । कृश्यात् । अकृशत् । अकर्शिष्यत् ।

५३. ञितृषा[6]—पिपासायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तृष्यति । ततर्ष । तर्षिता । तर्षिष्यति । तृष्यतु ।

---

1. "अभ्यासस्यासवर्णे" उवङ ।

2. मा भवानुचत् ।

3. श्यन् अपित् सार्वधातुक होने से ङित् वत् है अतः "अनिदितान्—" से न लोप ।

4. अङ् के ङित् होने से न लोप । क्त-भ्रष्टः । क्त्वा-भ्रंशित्वा, भ्रष्ट्वा । णिच्-भ्रंशयति । सन्-बिभ्रंशिषति । कर्म०-भ्रश्यते । घञ्-भ्रंशः ।

5. क प्रत्यय लाकर 'कृशः' ।

6. "आदिर्ञिटुडवः" ।

अतृप्यत् । तृप्येत् । तृप्यात् । अतृपत् । अतर्पिष्यत् ।

५४. हृप—तुष्टौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेपु—हृष्यति । जहर्ष । हर्षिता । हर्षिष्यति । हृष्यतु । अहृष्यत् । हृष्येत् । हृष्यात् । अहृपत् । अहर्षिष्यत् ।

५५. रुष[1]—हिंसायाम । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेपु—रुष्यति । रुरोष । रोषिता-रोष्टा । रोषिष्यति । रुष्यतु । अरुष्यत् । रुष्येत् । रुष्यात् । अरुषत् । अरोषिष्यत् ।

५६. रिप—हिंसायाम् । प० सेट् । रुष् वत् रूपाणि ।

५७. कुप्—क्रोधे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेपु—कुप्यति । चुकोप । कोपिता । कोपिष्यति । कुप्यतु । अकुप्यत् । कुप्येत् । कुप्यात् । अकुपत् । अकोपिष्यत् ।

५८. गुप्—व्याकुलत्वे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेपु—गुप्यति । जुगोप । गोपिता । गोपिष्यति । गुप्यतु । अगुप्यत् । गुप्येत् । गुप्यात् । अगुपत् । अगोपिष्यत् ।

५९. लुभ—गार्ध्ये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेपु—लुभ्यति । लुलोभ । लोभिता-लोब्धा । लोभिष्यति । लुभ्यतु । अलुभ्यत् । लुभ्येत् । लुभ्यात् । अलुभत् । अलोभिष्यत् ।

६०. क्षुभ[2]—सञ्चलने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेपु—क्षुभ्यति । चुक्षोभ । क्षोभिता । क्षोभिष्यति । क्षुभ्यतु । अक्षुभ्यत् । क्षुभ्येत् । क्षुभ्यात् । अक्षुभत् । अक्षोभिष्यत् ।

६१. णभ—हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेपु—नभ्यति । ननाभ, नेभतुः । नभिता । नभिष्यति ।

---

1. क्विप्-रोट्, रेट् ।

2. क्त-क्षुभितः-क्षुब्धः ।

नभ्यतु । अनभ्यत् । नभ्येत् । नभ्यात् । अनभत् । अनभिष्यत् ।

६२. तुभ—हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् । णभ वत् रूपाणि ।

६३. क्लिदू—आर्द्रीभावे । परस्मैपदी सेट् ।

दशलकारेषु—क्लिद्यतु । चिक्लेद, चिक्लिदतुः, चिक्लिदुः, चिक्लेदिथ-चिक्लेत्थ, चिक्लिदिव-चिक्लिद्व[1] । क्लेदिता-क्लेत्ता । क्लेदिष्यति-क्लेत्स्यति । क्लिद्यतु । अक्लिद्यत् । क्लिद्येत् । क्लिद्यात् । अक्लिदत् । अक्लेदिष्यत् । अक्लेत्स्यत् ।

६४. ञिमिदा—स्नेहने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मेद्यति[2] । मिमेद । मेदिता । मेदिष्यति । मेद्यतु । अमेद्यत् । मेद्येत् । मिद्यात् । अमिदत् । अमेदिष्यत् ।

६५. ञिक्ष्विदा—स्नेहनमोचनयोः । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—क्ष्विद्यति । चिक्ष्वेद । क्ष्वेदिता । क्ष्वेदिष्यति । क्ष्विद्यतु । अक्ष्विद्यत् । क्ष्विद्येत् । क्ष्विद्यात् । अक्ष्विदत् । अक्ष्वेदिष्यत् ।

६६. ऋधु—वृद्धौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—ऋध्यति । आनर्ध, आनृधतुः । अर्धिता । अर्धिष्यति ऋध्यतु । आर्ध्यत । ऋध्येत । ऋध्यात् । आर्धत् । आर्धिष्यत् ।

॥ इति परस्मैपदिनः ॥

अथ आत्मनेपदिनः

६७. पूङ्—प्राणिप्रसवे । आ० प० वेट् ।

लट्

प्र० पु०	सूयते	सूयेते	सूयन्ते
म० ,,	सूयसे	सूयेथे	सूयध्वे

1. "स्वरतिसूति—" वेट् ।

2. "मिदेर्गुणः" ।

उ० ,,	सूये	सूयावहे	सूयामहे

लिट्

प्र० पु०	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
म० ,,	सुषुविषे[1]	सुषुवाथे	सुषुविध्वे
उ० ,,	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे

लुट्

प्र० पु०	सविता	सवितारौ	सवितारः
म० ,,	सवितासे	सवितासाथे	सविताध्वे
उ० ,,	सविताहे	सवितास्वहे	सवितास्महे

पक्षे

प्र० पु०	सोता[2]	सोतारौ	सोतारः
म० ,,	सोतासे	सोतासाथे	सोताध्वे
उ० ,,	सोताहे	सोतास्वहे	सोतास्महे

लृट्

प्र० पु०	सविष्यते	सविष्येते	सविष्यन्ते
म० ,,	सविष्यसे	सविष्येथे	सविष्यध्वे
उ० ,,	सविष्ये	सविष्यावहे	सविष्यामहे

पक्षे

प्र० पु०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
म० ,,	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उ० ,,	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

1. "स्वरतिसूति ·" के विकल्प को बाध कर "श्र्युकः किति" से निषेध प्राप्त हुआ, परन्तु क्रादि नियम से लिट् में नित्य इट् किया गया।

2. "स्वरतिसूति—" से इट् विकल्प सभी आर्धधातुक में होता जायगा।

लोट्

प्र० पु०	सूयताम्	सूयेताम्	सूयन्ताम्
म० ,,	सूयस्व	सूयेथाम्	सूयध्वम्
उ० ,,	सूयै	सूयावहै	सूयामहै

लङ्

प्र० पु०	असूयत	असूयेताम्	असूयन्त
म० ,,	असूयथाः	असूयेथाम्	असूयध्वम्
उ० ,,	असूये	असूयावहि	असूयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	सूयेत	सूयेयाताम्	सूयेरन्
म० ,,	सूयेथाः	सूयेयाथाम्	सूयेध्वम्
उ० ,,	सूयेय	सूयेवहि	सूयेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	सविषीष्ट	सविषीयास्ताम्	सविषीरन्
म० ,,	सविषीष्ठाः	सविषीयास्थाम्	सविषीध्वम्
उ० ,,	सविषीय	सविषीवहि	सविषीमहि

पक्षे

प्र० पु०	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
म० ,,	सोषीष्ठाः	सोषीयास्थाम्	सोषीध्वम्
उ० ,,	सोषीय	सोषीवहि	सोषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	असविष्ट	असविषाताम्	असविषत
म० ,,	असविष्ठाः	असविषाथाम्	असविध्वम्
उ० ,,	असविषि	असविष्वहि	असविष्महि

पक्षे

प्र० पु०	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत

म० ,,	असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोड्ढ्वम्
उ० ,,	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि

लृङ्

प्र० पु०	असविष्यत	असविष्येताम्	असविष्यन्त
म० ,,	असविष्यथाः	असविष्येथाम्	असविष्यध्वम्
उ० ,,	असविष्ये	असविष्यावहि	असविष्यामहि

पक्षे—असोष्यत इत्यादि ।

६८. दूङ्[1]—परितापे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—दूयते । दुदुवे, दुदुविषे । दविता । दविष्यते । दूयताम् । अदूयत । दूयेत । दविषीष्ट । अदविष्ट । अदविष्यत ।

६९. दीङ्—क्षये । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—दीयते । दिदीये[2], दिदीयिषे । दाता[3] । दास्यते । दीयताम् । अदीयत । दीयेत । दासीष्ट । अदास्त । अदास्यत ।

७०. डीङ्—विहायसागतौ । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—डीयते । डिड्ये । डयिता । डयिष्यते । डीयताम् । अडीयत । डीयेत । डयिषीष्ट । अडयिष्ट । अडयिष्यत ।

७१. पीङ्—पाने आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—पीयते । पिप्ये । पेता । पेष्यते । पीयताम् । अपीयत । पीयेत । पेषीष्ट । अपेष्ट । अपेष्यत ।

---

1. षूङ् से डीङ् तक के धातु ओदित् माने गये हैं, अतः निष्ठा-तकार को नत्व होकर सूनः—सूनवान्, दीनः—दीनवान्, डीनः—डीनवान् रूप होंगे ।

2. "दीङो युडचि क्ङिति" से युडागम ।

3. "मीनाति मिनोति दीङां ल्यपि च" से आत्व ।

७२. माङ्—माने । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—मायते । ममे । माता । मास्यते । मायताम् । अमायत । मायेत । मासीष्ट । अमास्त । अमास्यत ।

७३. प्रीङ्—प्रीतौ । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—प्रीयते । पिप्रिये । प्रेता । प्रेष्यते । प्रीयताम् । अप्रीयत । प्रीयेत । प्रेषीष्ट । अप्रेष्ट । अप्रेष्यत ।

७४. जनि—प्रादुर्भावे । आत्मनेपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	जायते[1]	जायेते	जायन्ते
म० ,,	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० ,,	जाये	जायावहे	जायामहे

लिट्

प्र० पु०	जज्ञे[2]	जज्ञाते	जज्ञिरे
म० ,,	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उ० ,,	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

लुट्

प्र० पु०	जनिता	जनितारौ	जनितारः
म० ,,	जनितासे	जनितासाथे	जनिताध्वे
उ० ,,	जनिताहे	जनितास्वहे	जनितास्महे

लृट्

प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते

1. "ज्ञा जनो र्जा" ।

2. "गमहनजन"—से उपधालोप, श्चुत्व से नकार को ञकार, "ज्ञाजोर्ज्ञः" ।

म० ,,	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ० ,,	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म० ,,	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ० ,,	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ्

प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० ,,	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० ,,	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
म० ,,	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
म० ,,	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	जनिषीरन्
म० ,,	जनिषीष्ठाः	जनिषीयास्थाम्	जनिषीध्वम्
उ० ,,	जनिषीय	जनिषीवहि	जनिषीमहि

लुङ्

प्र० पु०	अजनि[1], अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
म० ,,	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिध्वम्

1. "दीपजनबुध"—से च्लि को चिण्, "चिणोलुक्" से त का विकल्प से लोप, "जनिवध्योश्च" से वृद्धि निषेध । क्त—जातः । क्तवतु—जातवान् । क्त्वा—जनित्वा । तुमुन्—जनितुम् । णिच्—जनयति ।

उ० ,,	अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि
		लृङ्	
प्र० पु०	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	अजनिष्यन्त
म० ,,	अजनिष्यथाः	अजनिष्येथाम्	अजनिष्यध्वम्
उ० ,,	अजनिष्ये	अजनिष्यावहि	अजनिष्यामहि

७५. दीपी[1]—दीप्तौ । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—दीप्यते । दिदीपे । दीपिता । दीपिष्यते । दीप्यताम् । अदीप्यत् । दीप्येत । दीपिसीष्ट । अदीपि[2], अदीपिष्ट । अदीपिष्यत् ।

७६ पद—गतौ । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—पद्यते । पेदे, पेदिषे । पत्ता । पत्स्यते । पद्यताम् । अपद्यत् । पद्येत । पत्सीष्ट । अपादि । अपत्स्यत ।

७७ खिद्—दैन्ये । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—खिद्यते । चिखिदे । खेत्ता । खेत्स्यते । खिद्यताम् । अखिद्यत् । खिद्येत् । खित्सीष्ट । अखित्त । अखेत्स्यत्[4] ।

---

1. ईदित् होने से निष्ठा में इड् निषेध होकर—दीप्तः ।

2. "दीपजनबुध..." से वैकल्पिक चिण् ।

3. क्रादिनियम से इट् । एत्वाभ्यास लोप । क्त-पन्नः । क्त्वा-पत्त्वा क्तवतु-पन्नवान् । तुमुन्-पत्तुम् । तव्यत्-पत्तव्यम् । णिच्-पादयति । सन्-पित्सते । यङ्-पापद्यते । शानच्-पद्यमानः । उपपद्यते-उचित (ठीक २) होता है । प्रपद्यते-प्राप्त होता है । विपद्यते-विपद्ग्रस्त होता है । सम्पद्यते-सम्पन्न होता है । क्तिन् से सम्पत्ति, विपत्ति आदि । क्विप् से-सम्पद् आपद् आदि । "नेर्गदनद..." प्रण्यपदि ।

4. क्त-खिन्नः । क्त्वा-खित्वा । णिच्-खेदयते । सन्-चिखित्सते । यङ्-चेखिद्यते ।

७८ विद्—सत्तायाम् । आत्मनेपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—विद्यते । विविदे । वेत्ता । वेत्स्यते । विद्यताम् । अविद्यत । विद्येत । वित्सीष्ट[1] । अवित्त[2] । अवेत्स्यत ।

७९ बुध—अवगमने । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—बुध्यते । बुबुधे । बोद्धा । भोत्स्यते । बुध्यताम् । अबुध्यत । बुध्येत । भुत्सीष्ट[3] । अबोधि, अबुद्ध । अभोत्स्यत ।

८० युध—सम्प्रहारे । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—युध्यते । युयुधे । योद्धा । योत्स्यते । युध्यताम् । अयुध्यत । युध्येत । युत्सीष्ट । अयुद्ध । अयोत्स्यत ।

८१ सृज—विसर्गे । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—सृज्यते । ससृजे । स्रष्टा । स्रक्ष्यते । सृज्यताम् । असृज्यत । सृज्येत । सृक्षीष्ट[5] । असृष्ट-असृक्षाताम् । अस्रक्ष्यत[6] ।

८२ मीङ्—हिंसायाम् । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—मीयते । मिम्ये । मेता । मेष्यते । मीयताम् । अमीयत । मीयेत । मेषीष्ट । अमेष्ट । अमेष्यत ।

८३ रीङ्—स्रवणे । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—रीयते । रिर्ये । रेता । रेष्यते । रीयताम् । अरीयत । रीयेत । रेषीष्ट । अरेष्ट । अरेष्यत ।

८४ लीङ्—श्लेषणे । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—लीयते । लिल्ये । लेता-लाता । लेष्यते लास्यते ।

---

1. "लिङ्सिचावात्मनेपदेषु" से कित् ।

2. "सृजिदृशोर्झल्यमकिति" अम् आगम । क्त-सृष्टः । क्त्वा-सृष्ट्वा । तुमुन्-स्रष्टुम् । सन्-सिसृक्षते ।

3. "विभाषा लीयतेः" आत्वविकल्प से ।

लीयताम् । अलीयत । लीयेत । लेषीष्ट-लासीष्ट । अलेष्ट-अलास्त । अलेष्यत-अलास्यत ।

८५. व्रीङ्—वृणोत्यर्थे । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—व्रीयते । विव्रिये[1] । व्रेता । व्रेष्यते । व्रीयताम् । अव्रीयत । व्रीयेत । व्रेषीष्ट । अव्रेष्ट । अव्रेष्यत ।

इत्यात्मनेपदिनः ।

अथोभयपदिनः ।

८६. मृष—तितिक्षायाम् । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मृष्यति, मृष्यते । ममर्ष-ममृषे । मर्षितासि-मर्षितासे । मृष्यतु-मृष्यताम् । अमृष्यत्-अमृष्यत । मृष्येत्-मृष्येत । मृष्यात्-मर्षिषीष्ट । अमर्षीत्-अमर्षिष्ट । अमर्षिष्यत्-अमर्षिष्यत ।

८७. णह्—बन्धने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—लट्—नह्यति-नह्यते । लिट्—ननाह, नेहतुः-नेहे, नेहाते । लुट्—नद्धासि-नद्धासे । लृट्—नत्स्यति-नत्स्यते । लोट्—नह्यतु-नह्यताम् । लङ्—अनह्यत्-अनह्यत । वि० लि०-नह्येत्-नह्येत । आ० लि०—नह्यात्-नत्सीष्ट । लुङ्—अनात्सीत्[2], अनाद्धाम्, अनात्सुः-अनद्ध, अनत्साताम्-अनत्सत । लृङ्—अनत्स्यत्-अनत्स्यत ।

८८. रञ्ज—रागे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—रज्यति[3]-रज्यते । ररञ्ज-ररञ्जे । रङ्क्तासि-से ।

---

1. अचिश्नु—" से इयङ् ।

2. "नहो धः" "झषस्तथोर्धोऽधः" ।

3. श्यन् अपित्सार्वधातुक होने से ङिद्वत् है अतः "अनिदिताम्—" से न लोप ।

रङ्क्ष्यति-ते । रज्यतु-रज्यताम् । अरज्यत्-अरज्यत । रज्येत्-रज्येत । रज्यात्-रङ्क्षीष्ट । लुङ्—अराङ्क्षीत्, अराङ्क्ताम्-अरङ्क्त, अरङ्क्षाताम् । लृङ्—अरङ्क्ष्यत्-अरङ्क्ष्यत ।

८९. शप—आक्रोशे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—शप्यति, ते । शशाप-शेपे । शप्तास्मि-से । शप्स्यति-ते । शप्यतु-शप्यताम् । अशप्यत्-त । शप्येत-त । शप्यात्-शप्सीष्ट । अशाप्सीत्-अशप्त, अशप्साताम् । अशप्स्यत्-त ।

९०. शक—मर्षणे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—शक्यति-ते । शशाक-शेके । शक्तास्मि-से । शक्ष्यति-ते । शक्यतु-शक्यताम् । अशक्यत्-त । शक्येत-त । शक्यात्-शक्षीष्ट । अशकत्[1]-अशक्त, अशक्षाताम् । अशक्ष्यत्-त ।

इति दिवादयः ।

1. पुषादि होने से अङ् । कई इसे सेट् मानते हैं—शकितासि, शकिष्यते ।

अथ स्वादि प्रकरणम्

१. षुञ्—अभिषवे । उभयपदी, अनिट् ।

लट् पर०

प्र० पु०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
म० ,,	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उ० ,,	सुनोमि	सुनुवः-न्वः[1]	सुनुमः-न्मः

आ० प०

प्र० पु०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वन्ते
म० ,,	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उ० ,,	सुन्वे	सुनुवहे-न्वहे	सुनुमहे-न्महे

लिट् पर०

प्र० पु०	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः
म० ,,	सुषविथ-सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव
उ० ,,	सुषाव-सुषव	सुषुविव	सुषुविम

आ० प०

प्र० पु०	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
म० ,,	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे
उ० ,,	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे

लुट्—सोतासि-सोतासे । लृट्—सोष्यति, सोष्यते ।

लोट् पर०

प्र० पु०	सुनोतु-सुनुतात्	सुनुताम्	सुन्वन्तु

1. "लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः" ।

म० ,,	सुनु[1]-सुनुतात्	सुनुतम्	सुनुत
उ० ,,	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

आ० प०

प्र० पु०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
म० ,,	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उ० ,,	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

लङ्-पर०

प्र० पु०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
म० ,,	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उ० ,,	असुनवम्	असुनुव-न्व	असुनुम न्म

आ० प०

प्र० पु०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
म० ,,	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उ० ,,	असुन्वि	असुनुवहि-न्वहि	असुनुमहि-न्महि

विधिलि० पर०

प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
म० ,,	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उ० ,,	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

आ० प०

प्र० पु०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म० ,,	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ० ,,	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

1. "उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्" ।

आ० लि० पर०

प्र० पु०	सूयात्[1]	सूयास्ताम्	सूयासुः
म० ,,	सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त
उ० ,,	सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म

आ० प०

प्र० पु०	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
म० ,,	सोषीष्ठाः	सोषीयास्थाम्	सोषीध्वम्
उ० ,,	सोषीय	सोषीवहि	सोषीमहि

लुङ् ० पर०

प्र० पु०	असावीत्[2]	असाविष्टाम्	असाविषुः
म० ,,	असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट
उ० ,,	असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म

आ० प०

प्र० पु०	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
म० ,,	असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोध्वम्
उ० ,,	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि

लृङ्—असोष्यत्-असोष्यत ।

२ षिञ्—बन्धने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—सिनोति-सिनुते । सिषाय-सिष्ये । सेतासि-से । सेष्यति-ते । सिनोतु-सिनुताम् । असिनोत्-असिनुत । सिनुयात्-सिन्वीत । सीयात्-सेषीष्ट । असैषीत्-असेष्ट । असेष्यत्-त ।

1. "अकृत्सार्वधातुकयोः दीर्घः" ।

2. "स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु" से इट्, "सिचि वृद्धि..." से वृद्धि ।

३ चिञ्—चयने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—चिनोति, चिनुते । चिचाय-चिकाय[1], चिच्ये-चिक्ये । चेतासि-चेतासे । चेष्यति-ते । चिनोतु-चिनुताम् । अचिनोत्-अचिनुत । चिनुयात्-चिन्वीत । चीयात्-चेषीष्ट । अचैषीत्-अचेष्ट । अचेष्यत्-त ।

४ स्तृञ्—आच्छादने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—स्तृणोति स्तृणुते । तस्तार, तस्तरतुः[2]-तस्तरे । स्तर्तासि-से । स्तरिष्यति-ते । स्तृणोतु-स्तृणुते । अस्तृणोत्-अस्तृणुत । स्तृणुयात्-स्तृण्वीत । स्तर्यात्[3]-स्तरिषीष्ट[4], स्तृषीष्ट[5] । अस्तार्षीत्-अस्तरिष्ट, अस्तृत । अस्तरिष्यत्-त ।

५ धुञ्—कम्पने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु धुनोति-धुनुते । दुधाव-दुधुवे । धोतासि-से । धविष्यति-ते । धुनोतु-धुनुताम् । अधुनोत्-अधुनुत । धुनुयात्-धुन्वीत । धूयात्-धोषीष्ट । अधौषीत्-अधोष्ट । अधोष्यत्-त ।

६ धूञ्—कम्पने । उभयपदी, वेट् ।

द० ल०—लट्—धूनोति-धूनुते । लिट्-दुधाव, दुधुवतुः, दुधुवुः । दुधविथ[6]-

---

1. "विभाषा चेः" कुत्व विकल्प से । परिचिनोति-पहचानता है । संचिनोति-जमा करता है । निश्चिनोति-निश्चय करता है । क्तः-चितः । क्त्वा-चित्वा । तुमुन्-चेतुम् । शप्-चयः । णिच्-चाययति । सन्-चिचीषति, चिकीषति ।

2. "ऋतश्च संयोगादेर्गुणः" से अपित् लिट् में भी गुण ।

3. "गुणोऽर्ति संयोगाद्योः" से गुण ।

4. "ऋतश्च संयोगादेः" से लिङ् मिच् में इट् का विकल्प ।

5. "उश्च" से कित् होने से गुणाभाव ।

6. "स्वरतिसूति..." वेट् ।

दुधोथ, दुधुवथुः, दुधुव । दुधाव, दुधुविव[1], दुधुविम । लुट्-धवितास्मि-धोतास्मि, धवितासे-धोतासे । लृट्-धविष्यति-ते, धोष्यति-ते । लोट्-धूनोतु-धूनुताम् । अधूनोत्-अधूनुत । धूनुयात् । धून्वीत । धूयात्-धविषीष्ट, धोषीष्ट । अधावीत्[2]-अधविष्ट, अधोष्ट । अधविष्यत्, अधोष्यत्-अधविष्यत अधोष्यत ।

७.—कृञ्-हिंसायाम् उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—कृणोति-कृणुते । चकार, चकर्थ-चक्रे । कर्तासि-से । करिष्यति-ते । कृणोतु-कृणुताम् । अकृणोत्-अकृणुत । कृणुयात्-कृण्वीत । क्रियात्-कृषीष्ट । अकार्षीत्-अकृत । अकरिष्यत्-त ।

८. वृञ्—वरणे । उभयपदी सेट् ।

दशलकारेषु—वृणोति—वृणुते । लिट्—ववार, ववर्थ[3] । वव्रुव—वव्रे । वरीतासि[4]—से, वरितासि—से । वरीष्यति—ते, वरिष्यति—ते । वृणोतु—वृणुताम् । अवृणोत्—अवृणुत । वृणुयात्—वृण्वीत । व्रियात्—वरिषीष्ट[5], वृषीष्ट । अवारीत्—अवरीष्ट, अवरिष्ट, अवृत[6] । अवरीष्यत्—त, अवरिष्यत्—त ।

९. टुदु—उपतापे । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—दुनोति । दुदाव । दोता । दोष्यति । दुनोतु । अदुनोत् । दुनुयात् । दूयात् । अदौषीत् । अदोष्यत् ।

---

1. क्रादिनियम से नित्य इट् ।

2. "स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु" से परस्मैपद में नित्य इट् ।

3. क्रादिभ्य एव लिट इट्न स्यात् ।

4. "वृतोवा" ।

5. "लिङ् सिचावात्मनेपदेषु" से इट् विकल्प, "न लिङि" से दीर्घ निषेध ।

6. इट् के अभाव में "ह्रस्वादंगात" ।

7. "ट्वितोऽथुच्"-दवथुः ।

१०. हि—वृद्धौ च । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—हिनोति[1] । जिघाय । हेता । हेष्यति । हिनोतु अहिनोत् । हिनुयात् । हीयात् । अहैषीत् । अहेष्यत् ।

११. आप्लृ—व्याप्तौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—आप्नोति । आप, आपतुः । आप्ता । आप्स्यति । आप्नोतु । आप्नोत् । आप्नुयात् । आप्यात् । आपत् । आप्स्यत्[2] ।

१२. शक्लृ—शक्तौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—शक्नोति[3] । शशाक, शेकतुः । शक्ता । शक्ष्यति । शक्नोतु । अशक्नोत् । शक्नुयात् । शक्यात् । अशकत् । अशक्ष्यत् ।

१३. राध—संसिद्धौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—राध्नोति । रराध, रेधतुः[4], रेधिथ । राद्धा । रात्स्यति । राध्नोतु । अराध्नोत् । राध्नुयात् । राध्यात् । अरात्सीत् । अरात्स्यत् ।

१४. साध—संसिद्धौ । राधवत् ।

१५. ञिधृषा—प्रागल्भ्ये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—धृष्णोति । दधर्ष । धर्षिता । धर्षिष्यति । धृष्णोतु । अधृष्णोत् । धृष्णुयात् । धृष्यात् । अधर्षीत् । अधर्षिष्यत् ।

---

1. "हिनुमीना"—प्रहिणोति ।

2. क्त—आप्तः । क्त्वा—आप्त्वा । तुमुन्—आप्तुम् । णिच्-आपयति । सन्—ईप्सति । व्याप्नोति—व्याप्त करता है । प्राप्नोति—प्राप्त करता है । समाप्नोति—समाप्त होता है ।

3. क्त—शक्तः । तुमुन्-शक्तुम् ।

4. "राधो हिंसायाम्" । से एत्वाभ्यास लोप ।

१६. दम्भु—दम्भने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—दभ्नोति । ददम्भ[1] । दम्भिता । दम्भिष्यति । दभ्नोतु । अदभ्नोत् । दभ्नुयात् । दभ्यात् । अदम्भीत् । अदम्भिष्यत् ।

१७. तृप—प्रीणने । परस्मैपदी, सेट ।

दशलकारेषु—तृप्नोति[2] । ततर्प । तर्पिता । तर्पिष्यति । तृप्नोतु । अतृप्नोत् । तृप्नुयात् । तृप्यात् । अतर्पीत् । अतर्पिष्यत् ।

१८. अशू—व्याप्तौ, संघाते च । आत्मनेपदी, वेट् ।

दशलकारेषु—अश्नुते । आनशे[3] । अशिता, अष्टा[4] । अशिष्यते, अक्ष्यते । अश्नुताम् । आश्नुत । अश्नुवीत । अशिषीष्ट, अक्षीष्ट । लुङ्—आशिष्ट, आशिषाताम्, आशिषत । आष्ट, आक्षाताम्, आक्षत । लृङ्—आशिष्यत, आक्ष्यत ।

। इति स्वादयः ।

---

1. श्रन्थिग्रन्थिदम्भिस्वञ्जीनां लिटः कित्वं वा'' से कित ''दम्भेश्च एत्वाभ्यासलोपौ वक्तव्यौ''—एत्वाभ्यासलोप । देभतुः, देभुः ।

2. ''क्षुभ्नादिषु च'' से णत्वनिषेध ।

3. ''अश्नोतेश्च'' से नुट् ।

4. ऊदित् होने से इट् विकल्प से ।

अथ तुदादि प्रकरणम्

१. तुद्—व्यथने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—तुदति–ते । तुतोद–तुतुदे । तोत्तासि–से । तोत्स्यति–ते । तुदतु–तुदताम् । अतुदत्–अतुदत । तुदेत्–तुदेत । तुद्यात्–तुत्सीष्ट[1] । अतौत्सीत्, अतौत्ताम्–अतुत्त, अतुत्साताम् । अतोत्स्यत्–त ।

२. णुद्—प्रेरणे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—नुदति–ते । नुनोद–नुनुदे । नोत्तासि–से । नोत्स्यति–ते । नुदतु–नुदताम् । अनुदत–अनुदत । नुदेत्–त । नुद्यात्–नुत्सीष्ट । अनौत्सीत्–अनुत्त । अनोत्स्यत्–त ।

३. भ्रस्ज—पाके । उभयपदी, अनिट् ।

लट् पर.

प्र० पु०	भृज्जति[2]	भृज्जतः	भृज्जन्ति
म० ,,	भृज्जसि	भृज्जथः	भृज्जथ
उ० ,,	भृज्जामि	भृज्जावः	भृज्जामः

आत्मनेपद

प्र० पु०	भृज्जते	भृज्जेते	भृज्जन्ते
म० ,,	भृज्जसे	भृज्जेथे	भृज्जध्वे
उ० ,,	भृज्जे	भृज्जावहे	भृज्जामहे

---

1. "लिङ्सिचावात्मनेपदेषु" से कित् होने से आत्मनेपद लिङ् और लुङ् में गुण नहीं होगा ।

2. 'श' अपित्सार्वधातुक होने से ङिद्वत् है, अतः "ग्रहिज्या"—से सम्प्रसारण, श्चुत्व से शकार को जकार ।

लिट् पर०

प्र० पु०	बभर्ज[1]	बभर्जतुः	बभर्जुः
म० ,,	बभर्जिथ-बभर्ष्ठ	बभर्जथुः	बभर्ज
उ० ,,	बभर्ज	बभर्जिव	बभर्जिम

पक्षे

प्र० पु०	बभ्रज्ज	बभ्रज्जतुः	बभ्रज्जुः
म० ,,	बभ्रज्जिथ-बभ्रष्ठ	बभ्रज्जथुः	बभ्रज्ज
उ० ,,	बभ्रज्ज	बभ्रज्जिव	बभ्रज्जिम

आत्मनेपद

प्र० पु०	बभर्जे	बभर्जाते	बभर्जिरे
म० ,,	बभर्जिषे	बभर्जाथे	बभर्जिध्वे
उ० ,,	बभर्जे	बभर्जिवहे	बभर्जिमहे

पक्षे

प्र० पु०	बभ्रज्जे	बभ्रज्जाते	बभ्रज्जिरे
म० ,,	बभ्रज्जिषे	बभ्रज्जाथे	बभ्रज्जिध्वे
उ० ,,	बभ्रज्जे	बभ्रज्जिवहे	बभ्रज्जिमहे

लुट् पर०

प्र० पु०	भर्ष्टा-भ्रष्टा	भर्ष्टारौ-भ्रष्टारौ	भर्ष्टारः-भ्रष्टारः
म० ,,	भर्ष्टासि-भ्रष्टासि	भर्ष्टास्थः-भ्रष्टास्थः	भर्ष्टास्थ-भ्रष्टास्थ
उ० ,,	भर्ष्टास्मि-भ्रष्टास्मि	भर्ष्टास्वः-भ्रष्टास्वः	भर्ष्टास्मः-भ्रष्टास्मः

आत्मनेपद—भर्ष्टासे-भ्रष्टासे इत्यादि। लृट्—भर्क्ष्यति-ते-भ्रक्ष्यति-ते।

लोट् पर०

प्र० पु०	भृज्जतु-तात्	भृज्जताम्	भृज्जन्तु

1. "भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम्" से रम्।

म० ,,	भृज्ज-तात्	भृज्जतम्	भृज्जत
उ० ,,	भृज्जानि	भृज्जाव	भृज्जाम

आत्मने०

प्र० पु०	भृज्जताम्	भृज्जेताम्	भृज्जताम्
म० ,,	भृज्जस्व	भृज्जेथाम्	भृज्जध्वम्
उ० ,,	भृज्जै	भृज्जावहै	भृज्जामहै

लङ्—अभृज्जत्-अभृज्जत । वि० लिङ्—भृज्जेत्-भृज्जेत । आ० लिङ्—भृज्ज्यात्[1]-भ्रक्षीष्ट[2], भर्क्षीष्ट । लुङ्—अभार्क्षीत्[3], अभ्राक्षीत्-अभर्ष्ट, अभ्रष्ट[4] । लृङ्—अभर्क्ष्यत्-त, अभ्रक्ष्यत्-त ।

४. कृप—विलेखने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—लट्—कृपति-ते । लिट्—चकर्प-चकृपे । लुट्—क्रष्टासि-से, कर्ष्टासि-से । लृट्—कर्क्ष्यति-ते, क्रक्ष्यति-ते । लोट्—कृपतु-कृपताम् । लङ्—अकृपत्-त । वि० लिङ्—कृपेत्-त । आशीर्लिङ्—कृप्यात्-कृक्षीष्ट । लुङ्—अक्राक्षीत्[5], अकार्क्षीत्, अकृक्षत्-अकृक्षत, अकृष्ट[6] । अक्रक्ष्यत्-त । अकर्क्ष्यत्-त ।

---

1. क्ङित् में रमागम को बाध कर पूर्वविप्रतिषेध से सम्प्रसारण ।

2. रमागम का विकल्प ।

3. हलन्तलक्षणवृद्धि, रमागमविकल्प से ।

4. अभर्ष्टाताम्-अभ्रष्टाताम् ।

5. "स्पृशमृशकृष तृप—" से सिच् विकल्प से, हलन्त लक्षण वृद्धि, रमागम का विकल्प । वस में क्ङित्वात् गुणाभाव ।

6. सिच् के सकार का "झलो झलि" से लोप, ष्टुत्व । अकृक्षाताम्, अकृक्षन्त ।

५. मिल—सङ्गमे । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मिलति-ते । मिमेल-मिमिले । मेलितासि-से । मेलिष्यति-ते । मिलतु-मिलताम् । अमिलत्-त । मिलेत्-त । मिल्यात्-मेलिषीष्ट । अमेलीत्-अमेलिष्ट । अमेलिष्यत्-त ।

६. मुच्लृ—मोचने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—मुञ्चति-ते । मुमोच-मुमुचे । मोक्तासि-से । मोक्ष्यति-ते । मुञ्चतु-मुञ्चताम् । अमुञ्चत्-त । मुञ्चेत्-त । मुच्यात्-मुक्षीष्ट । अमुचत्[1]-अमुक्त[2], अमुक्षाताम् । अमोक्ष्यत्-अमोक्ष्यत ।

७. लुप्लृ—छेदने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—लुम्पति-ते । लुलोप-लुलुपे । लोप्तासि-से । लोप्स्यति-ते । लुम्पतु-लुम्पताम् । अलुम्पत्-त । लुम्पेत-त । लुप्यात्-लुप्सीष्ट । अलुपत्[3]-त । अलोप्स्यत्-त ।

८. विद्लृ—लाभे । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—विन्दति-ते । विवेद-विविदे । वेदितासि-से । वेदिष्यति-ते । विन्दतु-विन्दताम् । अविन्दत्-त । विन्देत्-त । विद्यात्-वित्सीष्ट । अविदत्-अवित्त । अवेत्स्यत्-त ।

९ षिच्—क्षरणे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—सिञ्चति[4]-ते । सिषेच-सिषिचे । सेक्तासि-से । सेक्ष्यति-ते । सिञ्चतु-सिञ्चताम् । असिञ्चत्-त । सिञ्चेत्-त । सिच्यात्-

---

1. परस्मैपद में अङ् ।

2. आत्मनेपद में सलोप । क्त-मुक्तः । क्त्वा-मुक्त्वा । तुमुन्-मोक्तुम् । तव्य-मोक्तव्यः । क्तिन्-मुक्तिः । णिच्-मोचयति । सन्-मुमुक्षति ।

3. अङ् । क्त-लुप्तः ।

4. मुच् से खिद तक "शेमुचादीनाम्" से नुम् ।

सिक्षीष्ट[1] । असिचत्[2]-असिक्त । असेक्ष्यत्-त ।

१० लिप—उपदेहे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—लिम्पति, ते । लिलेप-लिलिपे । लेप्तासि-से । लेप्स्यति-ते । लिम्पतु-लिम्पताम् । अलिम्पत्-त । लिम्पेत्-त । लिप्यात्-लिप्सीष्ट । अलिपत्-अलिप्त[3] । अलेप्स्यत्-त ।

अथ परस्मैपदिनः ।

११. कृती[4]—छेदने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कृन्तति । चकर्त । कर्तिता । कर्तिष्यति[5]-कर्त्स्यति । कृन्ततु । अकृन्तत । कृन्तेत । कृत्यात् । अकर्तीत । अकर्तिष्यत्-अकर्त्स्यत् ।

१२. खिद—परिदेवने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—खिन्दति । चिखेद । खेत्ता । खेत्स्यति । खिन्दतु । अखिन्दत् । खिन्देत् । खिद्यात् । अखैत्सीत्[6] । अखेत्स्यत् ।

---

1. आ०लिङ्० तथा लुङ् आत्मनेपद में "लिङ्सिचा..." से किस्वात् गुणाभाव ।

2. "लिपिसिचिह्वश्च" से अङ्, एवं लिप् में भी ।

3. क्त-लिप्तः । क्त्वा-लिप्त्वा । तुमुन्-लेप्तुम् । घञ्-लेपः । णिच्-लेपयति । लिलिप्सति ।

4. ईकार इत् निष्ठा में इट् निषेध के लिये है । कृत्तः । कृत्तवान् ।

5. "सेऽसिचिकृतचृत..." से स परे होते इट् विकल्प । सन्-चिकर्तिषति, चिकृत्सति ।

6. हलन्तलक्षणावृद्धि । घञ्-खेदः । क्त-खिन्नः । तुमुन्-खेत्तुम् । सन्-चिखित्सति ।

१३ ओव्रश्चू—छेदने । परस्मैपदी, वेट् ।

दशलकारेषु—वृश्चति । वव्रश्च । व्रश्चिता-व्रष्टा[1] । व्रश्चिष्यति-व्रक्ष्यति । वृश्चतु । अवृश्चत् । वृश्चेत् । वृश्च्यात् । अव्रश्चीत्-अव्राक्षीत्[2] । अव्रश्चिष्यत् अव्रक्ष्यत् ।

१४ व्यच—व्याजीकरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—विचति । विव्याच, विविचतुः, विविचुः । व्यचिता । व्यचिष्यति । विचतु । अविचत् । विचेत् । विच्यात् । अव्याचीत्-अव्यचीत् । अव्यचिष्यत् ।

१५ उछि—उञ्छे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—उञ्छति[3] । उञ्छाञ्चकार[4] । उञ्छिता । उञ्छिष्यति । उञ्छतु । औञ्छत् । उञ्छेत् । उञ्छ्यात् । औञ्छीत्[5] । औञ्छिष्यत् ।

१६ ऋच्छ—गतीन्द्रियप्रलयमूर्तिभावेषु । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—ऋच्छति । आनर्च्छ । ऋच्छिता । ऋच्छिष्यति । ऋच्छतु । आर्च्छत् । ऋच्छेत् । ऋच्छ्यात् । आर्च्छीत् । आर्च्छिष्यत् ।

१७ उभ्क—उत्सर्गे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—उज्झति । उज्झाञ्चकार । उज्झिता । उज्झिष्यति । उज्झतु । औज्झत् । उज्झेत् । उज्झ्यात् । औज्झीत्[6] । औज्झिष्यत् ।

---

1. "स्वरति..." से वेट् । क्त-वृक्णः, (ओदितश्च) तुमुन्-व्रश्चितुम् । सन्-विव्रश्चिषति-विव्रक्षति ।

2. अव्रश्च्+स्+ईत्, "स्कोःसंयोगाद्योरन्ते" सलोप, कुत्व, षत्व ।

3. इदित्वात् नुम्, श्चुत्व ।

4. "इजादेश्च..." आम् ।

5. "आटश्च" की वृद्धि । मा भवान् उञ्छीत् (नर्टि) ।

6. मा भवान् उज्झीत् ।

१८ लुभ—विमोहने। परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—लुभति । लुलोभ । लोभिता, लोब्धा[1] । लोभिष्यति । लुभतु । अलुभत् । लुभेत् । लुभ्यात् । अलोभीत् । अलोभिष्यत् ।

१९ तृप—तृप्तौ । परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—तृपति । ततर्प । तर्पिता । तर्पिष्यति । तृपतु । अतृपत् । तृपेत् । तृप्यात् । अतर्पीत् । अतर्पिष्यत् ।

२० तृम्फ—तृप्तौ । परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—तृफति[2] । ततृम्फ । तृम्फिता । तृम्फिष्यति । तृम्फतु । अतृम्फत् । तृम्फेत् । तृफ्यात् । अतृम्फीत् । अतृम्फिष्यत् ।

२१ मृड—सुखने । परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—मृडति । ममर्ड । मर्डिता । मर्डिष्यति । मृडतु । अमृडत् । मृडेत् । मृड्यात् । अमर्डीत् । अमर्डिष्यत् ।

२२ पृड् सुखने । मृड्वत् रूपाणि ।

२३. इष—इच्छायाम् । परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—इच्छति । इयेष-ईषतुः । एषिता[3]—एष्टा । एषिष्यति । इच्छतु । ऐच्छत् । इच्छेत् । इष्यात् । ऐषीत्[4] । ऐषिष्यत् ।

२४. कुट—कौटिल्ये । परस्मैपदी, सेट्।

दशलकारेषु—कुटति । चुकोट, चुकुटिथ[5] । कुटिता । कुटिष्यति ।

1. "तीषसहलुभरुषरिषः" से वेट् ।

2. 'श' अपित् सार्वधातुक होने से ङित् है, अतः "अनिदिताम्..." से न लोप हो कर "शेतृम्फादीनां नुम् वाच्यः" ।

3. "तीषसहलुभरुषरिषः" वेट् ।

4. "नेटि" "आटश्च" ।

5. "गाङ् कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्" से ङित्वात् गुणाभाव ।

कुटतु । अकुटत् । कुटेत् । कुट्यात् । अकुटीत् । अकुटिष्यत् ।

२५. पुट—संश्लेषणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पुटति । पुपोट, पुपुटिथ । पुटिता । पुटिष्यति । पुटतु । अपुटत् । पुटेत् । पुट्यात् । अपुटीत् । अपुटिष्यत् ।

२६. स्फुट—विकसने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—स्फुटति । पुस्फोट । स्फुटिता । स्फुटिष्यति । स्फुटतु । अस्फुटत् । स्फुटेत् । स्फुट्यात् । अस्फुटत्[1] । अस्फुटिष्यत् ।

२७. स्फुर—सञ्चलने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—स्फुरति । पुस्फोर । स्फुरिता । स्फुरिष्यति । स्फुरतु । अस्फुरत् । स्फुरेत् । स्फुर्यात् । अस्फुरीत् । अस्फुरिष्यत् ।

२८. स्फुल—सञ्चलने । स्फुरवत् । रूपाणि ।

२९. णू—स्तवने । परस्मैपदी. सेट् ।

दशलकारेषु—नुवति । नुनाव । नुविता । नुविष्यति । नुवतु । अनुवत् । नुवेत् । नूयात् । अनुवीत । अनुविष्यत्[2] । (इति कुटादयः) ।

३०. टुमस्जो—शुद्धौ । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—मज्जति[3] । ममज्ज, ममज्जतुः, ममज्जिथ—ममङ्क्थ[4] । मङ्क्ता । मङ्क्ष्यति । मज्जतु । अमज्जत् । मज्जेत् । मज्ज्यात् । अमाङ्क्षीत् ।

---

1. कुट से णू तक कुटादिगण है ।

2. क्त—नूतः सन्—नुनूषति ।

3. श्चुत्व से सकार को शकार, फिर "झलां जश् झशि से" शकार को जकार ।

4. "मस्जिनशो र्झलि" नुम् । संयोगादि लोप ।

असङ्क्ष्यत्[1]।

३१. रुजो[2]—भङ्गे। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—रुजति। रुरोज। रोक्ता। रोक्ष्यति। रुजतु। अरुजत्। रुजेत्। रुज्यात्। अरौक्षीत्-अरौक्ताम्। अरोक्ष्यत्।

३२. भुजो[3]—कौटिल्ये। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—भुजति। बुभोज। भोक्ता। भोक्ष्यति। भुजतु। अभुजत्। भुजेत्। भुज्यात्। अभौक्षीत्। अभोक्ष्यत्।

३३. विश—प्रवेशने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—विशति। विवेश। वेष्टा। वेक्ष्यति। विशतु। अविशत्। विशेत्। विश्यात्। अविक्षत्[4]। अवेक्ष्यत्।

३४. मृश—आमर्शने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—मृशति। ममर्श, ममृशतुः। म्रष्टा[5]। म्रक्ष्यति। मृशतु। अमृशत्। मृशेत्। मृश्यात्। अम्राक्षीत्[6]-अमार्क्षीत्-अमृक्षत्। अम्रक्ष्यत्।

३५. षद्लृ—विशरणगत्यवसादनेषु। परस्मैपदी, अनिट्।

---

1. "चोः कुः" जकार को गकार, चर्त्व, अनुस्वार परसवर्ण। अमाङ्क्ताम्, अमाङ्क्षुः। क्त—मग्नः (ओदितश्च)। ट्वितोऽथुच्"—मज्जथुः क्त्वा—मङ्क्त्वा। तुमुन्—मङ्क्तुम्। णिच्—मज्जयति। सन्—मिमङ्क्षति।

2. मग्नः।

3 ओदित् होने से निष्ठा में-भुग्नः।

4. "शल इगुपधादनिटः क्सः"। क्त-विष्टः। क्त्वा-विष्ट्वा। तुमुन्-वेष्टुम्। घञ्-वेशः। णिच्-वेशयति। सन्-विविक्षति। उपविशति-बैठता है।

5. "अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्" से अम् आगम।

6. "स्पृशमृशकृष-—" से सिच्-विकल्प, अमागम विकल्प से। सिच् के अभाव में क्स।।

दशलकारेषु—सीदति[1] । ससाद, सेदतुः, सेदिथ, ससत्थ । सत्ता । सत्स्यति । सीदतु । असीदत् । सीदेत् । सद्यात् । असदत्[2] । असत्स्यत् ।

३६. शद्लृ—शातने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—शीयते[3] । शशाद, शेदतुः, शेदुः, शेदिथ-शशत्थ । शत्ता । शत्स्यति । शीयताम् । अशीयत । शीयेत । शद्यात् । अशदत् । अशत्स्यत् ।

३७. कॄ—विक्षेपे परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु - किरति । चकार, चकरतुः[4], चकरुः । करिता[5]-करीता । करिष्यति-करीष्यति । किरतु । अकिरत् । किरेत् । कीर्यात्[6] । अकारीत् । अकरिष्यत्, अकरीष्यत् ।

३८ गॄ—निगरणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—गिरति[7] । जगार । गरिता-गरीता । गरिष्यति-गरीष्यति । गिरतु । अगिरत् । गिरेत् । गीर्यात् । अगारीत् । अगरिष्यत-अगरीष्यत् ।

---

2. "पाघ्राध्मा—" से सीद् आदेश । लृदित् होने से अङ् । उपसीदति-पास बैठता है । निषीदति-बैठता है । प्रसीदति-प्रसन्न होता है । विषीदति-दुःखी होता है । क्त-सन्नः । क्त्वा-सत्त्वा । तुमुन्-सत्तुम् । णिच्-सादयति । सन्-सिषत्सति । घञ्-सादः । क्तिन्-आसत्तिः (समीपता) ।

3. सार्वधातुकलकारों में 'शदेः शितः" से आत्मनेपद ।

4. 'ऋच्छत्यॄताम्, से लिट् में गुण ।

5. "वॄतो वा"-। क्तः-कीर्णः । सन्-चिकीर्षति ।

6. "हलि च" से दीर्घ ।

7. प्रत्येक रूप में "अचि विभाषा" से लत्व विकल्प हो कर 'गिलति' आदि भी समझ लेना चाहिये ।

३९. प्रच्छ—ज्ञीप्सायाम । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—पृच्छति । पप्रच्छ । प्रष्टा । प्रक्ष्यति । पृच्छतु । अपृच्छत् । पृच्छेत् । पृच्छ्यात् । अप्राक्षीत्[1] । अप्रक्ष्यत् ।

॥ इति परस्मैपदिनः ॥

४०. दृङ्—आदरे । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—आद्रियते[2] । आदद्रे, आदद्राते, आदद्रिरे, आदद्रिषे । आदर्ता । आदरिष्यते । आद्रियताम् । आद्रियत । आद्रियेत । आदृषीष्ट । आदृत[3] । आदरिष्यत ।

४१. ध्रिङ्—अवस्थाने । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—ध्रियते । दध्रे । धर्ता । धरिष्यते । ध्रियताम् । अध्रियत । ध्रियेत । धृषीष्ट । अधृत । अधरिष्यत ।

४२. मृङ्—प्राण परित्यागे । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—म्रियते । ममार[4] । मर्ता । मरिष्यति । म्रियताम् । अम्रियत । म्रियेत । मृषीष्ट । अमृत । अमरिष्यत् ।

४३. पृङ्—व्यायामे । आत्मनेपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—व्याप्रियते । व्यापप्रे । व्यापर्ता । व्यापरिष्यते । व्याप्रियताम् । व्याप्रियत । व्याप्रियेत । व्यापृषीष्ट । व्यापृत । व्यापरिष्यत ।

---

1. हलन्त लक्षणा वृद्धि । व्रश्चेति ष, "षढोः कः सि" । क्त-पृष्टः । क्त्वा-पृष्ट्वा । तुमुन्-प्रष्टुम् । भावे नङ्-प्रश्नः । णिच्-प्रच्छयति । सन्-पिप्रक्षति ।

2. "रिङ् शयग्लिङ्क्षु" से रिङ्, इयङ् ।

3. "ह्रस्वादंगात्" सिच्लोप ।

4. "म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च" से परस्मैपद । क्त-मृतः । णिच्-मारयति । सन्-मुमूर्षति ।

४४. जुषी[1]—प्रीतिसेवनयोः। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—जुषते। जुजोष। जोषिता। जोषिष्यते। जुषताम्। अजुषत। जुषेत। जोषिषीष्ट। अजोषिष्ट। अजोषिष्यत।

४५. ओविजी[2]—भय सञ्चलनयोः। आत्मनेपदी सेट्।

दशलकारेषु—उद्विजते। उद्विविजे। उद्विजिता[3] उद्विजिष्यते उद्विजताम्। उद्विजत। उद्विजेत। उद्विजिष्ट। उद्विजिषीष्ट। उद्विजिष्यत।

४६ ओ लजी—लज्जायाम्। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—लजते। लेजे। लजिता। लजिष्यते। लजताम्। अलजत्। लजेत। लजिषीष्ट। अलजिष्ट। अलजिष्यत।

४७ ओ लस्जी—लज्जायाम्। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—लज्जते। ललज्जे। लज्जिता। लज्जिष्यते। लज्जताम्। अलज्जत। लज्जेत। लज्जिषीष्ट। अलज्जिष्ट। अलज्जिष्यत।

। इति तुदादयः।

---

1. ईदित् होने से निष्ठा में इट् निषेध-जुष्टः।

2 ओदित् होने से निष्ठानत्व-उद्विग्नः।

3. "विज इट्" से इट्, ङिद्वत्।

अथ रुधादि प्रकरणम्

१. रुधिर्—आवरणे। उभयपदी, अनिट्।

लट्—पर०

प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्धः[1]	रुन्धन्ति
म० ,,	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध
उ० ,,	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

आ० प०

प्र० पु०	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धन्ते
म० ,,	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उ० ,,	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लिट्—पर०

प्र० पु०	रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः
म० ,,	रुरोधिथ-रुरोद्ध	रुरुधथुः	रुरुध
उ० ,,	रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम

आ० प०

प्र० पु०	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
म० ,,	रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिध्वे
उ० ,,	रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे

लुट्—रोद्धासि-रोद्धासे। लृट्—रोत्स्यति-रोत्स्यते।

लोट्—पर०

प्र० पु०	रुणद्धु-रुन्धात्	रुन्धाम्	रुन्धन्तु

---

1. "श्नसो रल्लोपः"। "झरो झरि सवर्णे" से विकल्प से ध लोप, "झषस्तथोर्धोऽधः"।

म० ,,	रुन्धि[1]-रुन्धात्	रुन्धम्	रुन्ध
उ० ,,	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

आ० प०

प्र० पु०	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धन्ताम्
म० ,,	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उ० ,,	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

लङ्-पर०

प्र० पु०	अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
म० ,,	अरुणः[2]-अरुणत्	अरुन्धम्	अरुन्ध
उ० ,,	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

आ. प.

प्र० पु०	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
म० ,,	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ० ,,	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

वि. लि. पर.

प्र० पु०	रुन्ध्यात्[3]	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
म० ,,	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ० ,,	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

आ. प.

प्र० पु०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म० ,,	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्

1. "हुझल्भ्यो हेर्धिः"।

2. "दश्च" से दकार को रुत्व का विकल्प ।

3. आभीयत्व से अल्लोप के असिद्ध होने से 'अनिदिताम्' से न लोप न हुआ ।

उ० ,,	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि
		आ. लि. पर	
प्र० पु०	रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासुः
म० ,,	रुध्याः	रुध्यास्तम्	रुध्यास्त
उ० ,,	रुध्यासम्	रुध्यास्व	रुध्यास्म
		आ. प.	
प्र० पु०	रुत्सीष्ट[1]	रुत्सीयास्ताम्	रुत्सीरन्
म० ,,	रुत्सीष्ठाः	रुत्सीयास्थाम्	रुत्सीध्वम्
उ० ,,	रुत्सीय	रुत्सीवहि	रुत्सीमहि
		लुङ्-पर.	
प्र० पु०	अरुधत्[2]	अरुधताम्	अरुधन्
म० ,,	अरुधः	अरुधतम्	अरुधत
उ० ,,	अरुधम्	अरुधाव	अरुधाम
		पक्षे	
प्र० पु०	अरौत्सीत्	अरौद्धाम्[3]	अरौत्सुः
म० ,,	अरौत्सीः	अरौद्धम्	अरौद्ध
उ० ,,	अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म
		आ. प.	
प्र० पु०	अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत

1. "लिङ् सिचावात्मनेपदेषु" से कित्वात् गुणाभाव, एवं लुङ् आत्मनेपद में भी।

2. "इरितो वा" से अङ् विकल्प से।

3. हलन्तलक्षणावृद्धि, "झलो झलि" से लोप। क्त—रुद्धः। क्त्वा—रुद्ध्वा। तुमुन्—रोद्धुम्। घञ्—रोधः। णिच्—रोधयति। सन्—रुरुत्सति। निरुणद्धि—रोकता है। अनुरुणद्धि—आग्रह करना है।

म० ,,	अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुध्वम्
उ० ,,	अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि

लृङ्—अरोत्स्यत्—अरोत्स्यत इत्यादि ।

२. भिदिर्—विदारणे । उभयपदी, अनिट् ।

लट्-पर.

प्र० पु०	भिनत्ति	भिन्तः	भिन्दन्ति
म० ,,	भिनत्सि	भिन्थः	भिन्थ
उ० ,,	भिनद्मि	भिन्द्वः	भिन्द्मः

आ प.

प्र० पु०	भिन्ते	भिन्दाते	भिन्दते
म० ,,	भिन्त्से	भिन्दाथे	भिन्ध्वे
उ० ,,	भिन्दे	भिन्द्वहे	भिन्द्महे

लिट-प.

प्र० पु०	बिभेद	बिभिदतुः	बिभिदुः
म० ,,	बिभेदिथ-बिभेत्थ	बिभिदथुः	बिभिद
उ० ,,	बिभेद	बिभिदिव	बिभिदिम

आ. प.

प्र० पु०	बिभिदे	बिभिदाते	बिभिदिरे
म० ,,	बिभिदिषे	बिभिदाथे	बिभिदिध्वे
उ० ,,	बिभिदे	बिभिदिवहे	बिभिदिमहे

लुट्—भेत्तासि—भेत्तासे । लृट्—भेत्स्यति—भेत्स्यते ।

लोट्-पर.

प्र० पु०	भिनत्तु-भिन्तात्	भिन्ताम्	भिन्दन्तु
म० ,,	भिन्धि-भिन्तात्	भिन्तम्	भिन्त

उ० ,,	भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम

आ. प.

प्र० पु०	भिन्ताम्	भिन्दाताम्	भिन्दताम्
म० ,,	भिन्त्स्व	भिन्दाथाम्	भिन्ध्वम्
उ० ,,	भिनदै	भिनदावहै	भिनदामहै

लङ्-पर.

प्र० पु०	अभिनत्	अभिन्ताम्	अभिन्दन्
म० ,,	अभिनः-अभिनत्	अभिन्तम्	अभिन्त
उ० ,,	अभिनदम्	अभिन्द्व	अभिन्द्म

आ. प.

प्र० पु०	अभिन्त	अभिन्दाताम्	अभिन्दत
म० ,,	अभिन्थाः	अभिन्दाथाम्	अभिन्ध्वम्
उ० ,,	अभिन्दि	अभिन्द्वहि	अभिन्द्महि

विधि० लि० पर०

प्र० पु०	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्युः
म० ,,	भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात
उ० ,,	भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम

आ० प०

प्र० पु०	भिन्दीत	भिन्दीयाताम्	भिन्दीरन्
म० ,,	भिन्दीथाः	भिन्दीयाथाम्	भिन्दीध्वम्
उ० ,,	भिन्दीय	भिन्दीवहि	भिन्दीमहि

आ० लि० पर०

प्र० पु०	भिद्यात्	भिद्यास्ताम्	भिद्यासुः
म० ,,	भिद्याः	भिद्यास्तम्	भिद्यास्त

उ० ,,	भिद्यासम्	भिद्यास्व	भिद्यास्म

आ० प०

प्र० पु०	भित्सीष्ट	भित्सीयास्ताम्	भित्सीरन्
म० ,,	भित्सीष्ठाः	भित्सीयास्थाम्	भित्सीध्वम्
उ० ,,	भित्सीय	भित्सीवहि	भित्सीमहि

लुङ् पर०

प्र० पु०	अभिदत्	अभिदताम्	अभिदन्
म० ,,	अभिदः	अभिदतम्	अभिदत
उ० ,,	अभिदम्	अभिदाव	अभिदाम

पक्षे

प्र० पु०	अभैत्सीत्	अभैत्ताम्	अभैत्सुः
म० ,,	अभैत्सीः	अभैत्तम्	अभैत्त
उ० ,,	अभैत्सम्	अभैत्स्व	अभैत्स्म

आ० प०

प्र० पु०	अभित्त	अभित्साताम्	अभित्सत
म० ,,	अभित्थाः	अभित्साथाम्	अभिद्ध्वम्
उ० ,,	अभित्सि	अभित्स्वहि	अभित्स्महि

लृङ्—अभेत्स्यत् - अभेत्स्यत[1] इत्यादि ।

३. छिदिर्—द्वैधीकरणे । उभयपदी, अनिट् ।

लट्—प०

प्र० पु०	छिनत्ति	छिन्तः	छिन्दन्ति
म० ,,	छिनत्सि	छिन्थः	छिन्थ
उ० ,,	छिनद्मि	छिन्द्वः	छिन्द्मः

1. क्त-छिन्नः । क्त्वा-छित्वा । तुमुन्-छेत्तुम् । तव्य-छेत्तव्यम् । घञ्-छेदः । ण्वुल्-छेदकः । कर्मवा०-छिद्यते । णिच्-छेदयति । सन्-चिच्छित्सति । यङ्-चेच्छिद्यते ।

म० ,,	ततर्हिथ	ततृहथुः	ततृह
उ० ,,	ततर्ह	ततृहिव	ततृहिम
		लुट्	
प्र० पु०	तर्हिता	तर्हितारौ	तर्हितारः
म० ,,	तर्हितासि	तर्हितास्थः	तर्हितास्थ
उ० ,,	तर्हितास्मि	तर्हितास्वः	तर्हितास्मः
		लृट्	
प्र० पु०	तर्हिष्यति	तर्हिष्यतः	तर्हिष्यन्ति
म० ,,	तर्हिष्यसि	तर्हिष्यथः	तर्हिष्यथ
उ० ,,	तर्हिष्यामि	तर्हिष्यावः	तर्हिष्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	तृणेढु-तृण्ढात्	तृण्ढाम्	तृंहन्तु
म० ,,	तृण्ढि[1]-तृण्ढात्	तृण्ढम्	तृण्ढ
उ० ,,	तृणहानि	तृणहाव	तृणहाम
		लङ्	
प्र० पु०	अतृणेट्	अतृण्ढाम्	अतृंहन्
म० ,,	अतृणेट्	अतृण्ढम्	अतृण्ढ
उ० ,,	अतृणहम्	अतृंह्व	अतृंह्म
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	तृंह्यात्	तृंह्याताम्	तृंह्युः
म० ,,	तृंह्याः	तृंह्यातम्	तृंह्यात
उ० ,,	तृंह्याम्	तृंह्याव	तृंह्याम
		आशीर्लिङ्	
प्र० पु०	तृह्यात्	तृह्यास्ताम्	तृह्यासुः

1. "हुझल्भ्यो हेर्धिः"।

म० ,,	तृह्याः	तृह्यास्तम्	तृह्यास्त
उ० ,,	तृह्यासम्	तृह्यास्व	तृह्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अतृहत्	अतर्हिष्टाम्	अतर्हिषुः
म० ,,	अतर्हीः	अतर्हिष्टम्	अतर्हिष्ट
उ० ,,	अतर्हिषम्	अतर्हिष्व	अतर्हिष्म

लृङ्

प्र० पु०	अतर्हिष्यत्	अतर्हिष्यताम्	अतर्हिष्यन्
म० ,,	अतर्हिष्यः	अतर्हिष्यतम्	अतर्हिष्यत
उ० ,,	अतर्हिष्यम्	अतर्हिष्याव	अतर्हिष्याम

१२ हिसि—हिंसायाम् । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—हिनस्ति[1] । जिहिंस । हिंसिता । हिंसिष्यति । हिनस्तु । लङ्—अहिनत्, अहिंस्ताम्, अहिंसन्, अहिनः-अहिनत् । हिंस्यात्, हिंस्याताम् । हिंस्यात् । हिंस्यास्ताम् । अहिंसीत् । अहिंसिष्यत् ।

१३ उन्दी—क्लेदने । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	उनत्ति	उन्तः	उन्दन्ति
म० ,,	उनत्सि	उन्थः	उन्थ
उ० ,,	उनद्मि	उन्द्वः	उन्द्मः

लिट्—उन्दाञ्चकार[2] । लुट्-उन्दिता । लृट्-उन्दिष्यति

लोट्

प्र० पु०	उनत्तु-उन्तात्	उन्ताम्	उन्दन्तु
म० ,,	उन्धि-उन्तात्	उन्तम्	उन्त

1. "श्नान्नलोपः" ।

2. इजादि गुरुमान है ।

उ० ,,	उनदानि	उनदाव	उनदाम

लङ्

प्र० पु०	औनत्	औन्ताम्	औन्दन्
म० ,,	औनः-औनत्	औन्तम्	औन्त
उ० ,,	औनदम्	औन्द्व	औन्द्म

वि. लि.—उन्द्यात् । आ. लि.—उद्यात् । लुङ्—औन्दीत्[1] । लृङ्—औन्दिष्यत् ।

१४. अञ्जू—व्यक्ति म्रक्षण कान्ति गतिषु । परस्मैपदी, वेट् ।

लट्

प्र० पु०	अनक्ति	अङ्क्तः	अञ्जन्ति
म० ,,	अनक्षि	अङ्क्थः	अङ्क्थ
उ० ,,	अनज्मि	अञ्ज्वः	अञ्ज्मः

लिट्

प्र० पु०	आनञ्ज	आनञ्जतुः	आनञ्जुः
म० ,,	आनञ्जिथ[1]-आनङ्क्थ	आनञ्जथुः	आनञ्ज
उ० ,,	आनञ्ज	आनञ्जिव	आनञ्जिम

लुट्—अञ्जिता—अङ्क्ता । लृट्—अञ्जिष्यति—अङ्क्ष्यति ।

लोट्

प्र० पु०	अनक्तु-अङ्क्तात्	अङ्क्ताम्	अञ्जन्तु
म० ,,	अङ्ग्धि—अङ्क्तात्	अङ्क्तम्	अङ्क्त
उ० ,,	अनजानि	अनजाव	अनजाम

लङ्

प्र० पु०	आनक्	आङ्क्ताम्	आञ्जन्

---

1. "नेटि" "आटश्च" । मा भवान्-उन्दीत् । क्त—उत्तः—उन्नः । क्त्वा—उन्दित्वा ।

म० ,,	,,	आङ्क्थ	आङ्क्त
उ० ,,	आनजम्	आञ्ज्व	आञ्ज्म

वि. लि.—अञ्ज्यात् । आ. लि.—अज्यात् । लुङ्- आञ्जीत्[1] । लृङ्—आञ्जिष्यत् ।

१५. तञ्चू—सङ्कोचने । परस्मैपदी, वेट् ।

दशलकारेषु—तनक्ति । ततञ्च । तञ्चिता—तङ्क्ता । तञ्चिष्यति—तङ्क्ष्यति । तनक्तु । अतनक् । तञ्च्यात् । तच्यात् । अतञ्चीत्, अताङ्क्षीत्, अतङ्क्ताम् । अतञ्चिष्यत्—अतङ्क्ष्यत् ।

१६. ओविजी—भयसञ्चलनयोः । परस्मैपदी, वेट् ।

दशलकारेषु—विनक्ति । विवेज, विविजिथ । विजिता । विजिष्यति । विनक्तु । अविनक् । विञ्ज्यात् । विज्यात् ।अविजीत् । अविजिष्यत् ।

१७. शिष्लृ—विशेषणे । परस्मैपदी, अनिट् ।

लट्

प्र० पु०	शिनष्टि	शिंष्टः[2]	शिंषन्ति
म० ,,	शिनक्षि	शिंष्ठः	शिंष्ठ
उ० ,,	शिनष्मि	शिंष्वः	शिंष्मः

लिट्

प्र० पु०	शिशेष	शिशिषतुः	शिशिषुः
म० ,,	शिशेषिथ-शिशेष्ठ	शिशिषथुः	शिशिष
उ० ,,	शिशेष	शिशिषिव	शिशिषिम

लुट्—शेष्टा । लृट्—शेक्ष्यति ।

---

1. "अञ्जेः सिचि" से नित्य इट् । मा भवान् अञ्जीत् । क्त—अक्तः । क्त्वा—अञ्जित्वा—अङ्क्त्वा । व्यनक्ति—प्रकट करता हैं । ल्युट्—अञ्जनम् । णिच्—अञ्जयति । सन्—अञ्जिजिषति ।

2. शिन न् ष तः, 'श्नान्नलोपः' 'श्नसोरल्लोपः' अनुस्वार, ष्टुत्व ।

लोट्

प्र० पु०	शिनष्टु-शिंष्टात्	शिंष्टाम्	शिंषन्तु
म० ,,	शिण्ढि[1]-शिंष्टात्	शिंष्टम्	शिंष्ट
उ० ,,	शिनषाणि	शिनषाव	शिनषाम

लङ्

प्र० पु०	अशिनट्	अशिंष्टाम्	अशिंषन्
म० ,,	अशिनट्	अशिंष्टम्	अशिंष्ट
उ० ,,	अशिनषम्	अशिंष्व	अशिंष्म

वि. लि.—शिंष्यात्। आ. लि.—शिष्यात्। लुङ्—अशिषत्[2]। लृङ्—अशेक्ष्यत्।

१८. पिष्लृ—सञ्चूर्णने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—पिनष्टि। पिपेष। पेष्टा। पेक्ष्यति। पिनष्टु[3]। अपिनट्। पिंष्यात्। पिष्यात्। अपिषत्। अपेक्ष्यत्।

१९. भञ्जो—आमर्दने। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—भनक्ति। बभञ्ज, बभञ्जिथ, बभङ्क्थ। भङ्क्ता। भङ्क्ष्यति। भनक्तु। अभनक्, अभङ्क्ताम्। भञ्ज्यात्। भज्यात्। अभाङ्क्षीत्[1], अभाङ्क्ताम्। अभङ्क्ष्यत्।

२०. भुज—पालनाभ्यवहारयोः। परस्मैपदी, अनिट्।

दशलकारेषु—भुनक्ति। बुभोज। भोक्ता। भोक्ष्यति। भुनक्तु।

---

1. हेर्धि, ष्टुत्व, "झरो झरि सवर्णे" परसवर्ण। क्त—शिष्टः। क्त्वा—शिष्ट्वा। तुमुन्—शेष्टुम्। घञ्—शेषः। णिच्—शेषयति। सन्—शिशिक्षति।

2. लृदित्वादङ्।

3. पिंष्टाम् पिंषन्तु, पिण्ढि।

4. हलन्त लक्षण वृद्धि। क्त-भग्नः।

अभुनक् । भुञ्ज्यात् । भुज्यात् । अभौक्षीत्[1] । अभोक्ष्यत् ।

आत्मनेपदिनः

२१. ञि इन्धी—दीप्तौ । आ० प० सेट ।

लट्

प्र० पु०	इन्धे	इन्धाते	इन्धते
म० ,,	इन्त्से	इन्धाथे	इन्ध्वे
उ० ,,	इन्धे	इन्ध्वहे	इन्ध्महे

लिट्—इन्धाञ्चक्रे । लुट्—इन्धिता । लृट्—इन्धिष्यते ।

लोट्

प्र० पु०	इन्धाम्	इन्धाताम्	इन्धताम
म० ,,	इन्त्स्व	इन्धाथाम्	इन्ध्वम्
उ० ,,	इनधै	इनधावहै	इनधामहै

लङ

प्र० पु०	ऐन्ध	ऐन्धाताम्	ऐन्धत
म० ,,	ऐन्धाः	ऐन्धाथाम्	ऐन्ध्वम्
उ० ,,	ऐन्धि	ऐन्ध्वहि	ऐन्ध्महि

वि० लि०—इन्धीत । आ०लि०—इन्धिषीष्ट । लुङ्—ऐन्धिष्ट लृङ्—ऐन्धिष्यत ।

२२. विद्—विचारणे । आ० प०, अनिट् ।

दशलकारेषु—विन्ते । विविदे । वेत्ता । वेत्स्यते । विन्ताम् । अविन्त । विन्दीत । वित्सीष्ट । अवित्त । अवेत्स्यत ।

२३. खिद्—दैन्ये । आ० प०, अनिट् ।

दशलकारेषु—खिन्ते । चिखिदे । खेत्ता । खेत्स्यते । खिन्ताम् । अखिन्त । खिन्दीत । खित्सीष्ट । अखित्त । अखेत्स्यत ।

। इति रुधादयः ।

---

1. "भुजोऽनवने" से आत्मनेपद में भी रूप होंगे । भुङ्क्ते । बुभुजे । भोक्तासे । भोक्ष्यते । भुङ्क्ताम् । अभुङ्क्त । भुञ्जीत । भुक्षीष्ट । अभुक्त । अभोक्ष्यत । क्त-भुक्तः । क्त्वा-भुक्त्वा । घञ्-भोगः । क्तिन्-भुक्तिः । कर्मवा-भुज्यते । णिच्-भोजयति । सन्-बुभुक्षति । बुभुक्षा ।

अथ तनादि-प्रकरणम्

१. तनु—विस्तारे । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्

प्र० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
म० ,,	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उ० ,,	तनोमि	तन्वः-तनुवः	तन्मः-तनुमः

लिट्

प्र० पु०	ततान	तेनतुः	तेनुः
म० ,,	तेनिथ	तेनथुः	तेन
उ० ,,	ततान-ततन	तेनिव	तेनिम

लुट्—तनिता । लृट्—तनिष्यति इत्यादि ।

लोट्

प्र० पु०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
म० ,,	तनु[1]-तनुतात्	तनुतम्	तनुत
उ० ,,	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लङ्

प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म० ,,	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ० ,,	अतनवम्	अतनुव-न्व	अतनुम-न्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
म० ,,	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात

उ० ,,	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः
म० ,,	तन्याः	तन्यास्तम्	तन्यास्त
उ० ,,	तन्यासम्	तन्यास्व	तन्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः
म० ,,	अतानीः	अतानिष्टम्	अतानिष्ट
उ० ,,	अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म

पक्षे—अतनीत्, अतनिष्टाम् इत्यादि। लृङ्—अतनिष्यत्।

आत्मनेपद में

दशलकारेषु—तनुते। तेने। तनितासे। तनिष्यते। तनुताम्। अतनुत। तन्वीत। तनिषीष्ट। अतनिष्ट, अतत[2]। अतनिष्यत।

२. षणु[3]—दाने। उभयपदी, सेट्।

लट्-पर०

प्र० पु०	सनोति	सनुतः	सन्वन्ति
म० ,,	सनोषि	सनुथः	सनुथ
उ० ,,	सनोमि	सनुवः-सन्वः	सनुमः-सन्मः

आ० प०

प्र० पु०	सनुते	सन्वाते	सन्वते
म० ,,	सनुषे	सन्वाथे	सनुध्वे

1. "उतश्च प्रत्ययात्—" से हि का लुक्।

2. तनादिभ्यस्तथासोः" से सिच् लुक्, "अनुदात्तोपदेश—" से अनुनासिकलोप। म० पु०—अतथाः—अतनिष्ठाः।

3. "धात्वादेः ष सः"। षत्व निवृत्ति से णत्व निवृत्ति।

उ० ,,	सन्वे	सनुवहे-न्वहे	सनुमहे-न्महे

लिट्-ससान-सेने । लुट्-सनितासि-से । लृट्-सनिष्यति-ते ।

लोट्-पर०

प्र० पु०	सनोतु-सनुतात्	सनुताम्	सन्वन्तु
म० ,,	सनु-सनुतात्	सनुतम्	सनुत
उ० ,,	सनवानि	सनवाव	सनवाम

आ०प०

प्र० पु०	सनुताम्	सन्वाताम्	सन्वताम्
म० ,,	सनुष्व	सन्वाथाम्	सनुध्वम्
उ० ,,	सनवै	सनवावहै	सनवामहै

लङ्-पर०

प्र० पु०	असनोत्	असनुताम्	असन्वन्
म० ,,	असनोः	असनुतम्	असनुत
उ० ,,	असनवम्	असनुव-न्व	असनुम-न्म

आ०प०

प्र० पु०	असनुत	असन्वाताम्	असन्वत
म० ,,	असनुथाः	असन्वाथाम्	असनुध्वम्
उ० ,,	असन्वि	असनुवहि-न्वहि	असनुमहि-न्महि

विधि० पर०

प्र० पु०	सनुयात्	सनुयाताम्	सनुयुः
म० ,,	सनुयाः	सनुयातम	सनुयात
उ० ,,	सनुयाम्	सनुयाव	सनुयाम

आ० प०

प्र० पु०	सन्वीत	सन्वीयाताम्	सन्वीरन्
म० ,,	सन्वीथाः	सन्वीयाथाम्	सन्वीध्वम्
उ० ,,	सन्वीय	सन्वीवहि	सन्वीमहि

आशी० पर०

प्र० पु०	सायात्[1]	सायास्ताम्	सायासुः
म० ,,	सायाः	सायास्तम्	सायास्त
उ० ,,	सायासम्	सायास्व	सायास्म

पक्षे—सन्यात् । लुङ्-असानीत्-असनीत् ।

आत्मने०

प्र० पु०	असात[2]-असनिष्ट	असनिषाताम्	असनिषत
म० ,,	असाथाः-असनिष्ठाः	असनिषाथाम्	असनिध्वम्
उ० ,,	असनिषि	असनिष्वहि	असनिष्महि

लृङ्-असनिष्यत्-असनिष्यत ।

३ क्षणु—हिंसायाम् । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—क्षणोति-क्षणुते[3] । चक्षाण-चक्षणे । क्षणितासि-से । क्षणिष्यति-ते । क्षणोतु-क्षणुताम् । अक्षणोत्-अक्षणुत । क्षणुयात्-क्षण्वीत । क्षण्यात्-क्षणिषीष्ट । अक्षणीत्[4]-अक्षत, अक्षणिष्ट । अक्षणिष्यत्-अक्षणिष्यत ।

४ क्षिणु—हिंसायाम् । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—क्षिणोति-क्षेणोति-क्षेणुते-क्षिणुते । चिक्षेण-चिक्षिणे । क्षेणितासि-से । क्षेणिष्यति-ते । क्षिणोतु-क्षेणोतु-क्षिणुताम्, क्षेणुताम् । अक्षिणोत्-अक्षेणोत्-अक्षिणुत-अक्षेणुत । क्षिणुयात्-क्षेणुयात्-क्षिण्वीत, क्षेण्वीत । क्षिण्यात्-क्षेणिषीष्ट । अक्षेणीत्-अक्षित, अक्षेणिष्ट । अक्षेणिष्यत्-त ।

1. "जनसनखनां सञ्झलोः" से अनुनासिक को आकारान्तादेश ।

2. सर्वत्र—"तनादिभ्यस्तथासोः" से सिच् लोप, "अनुदात्तोपदेश..." से अनुनासिकलोप ।

3. "उप्रत्यये लघूपधस्य गुणो वा" ।

4. ह्म्यन्तक्षणश्वस..." से वृद्धि निषेध ।

५ तृणु—अदने । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तृणोति-तर्णोति-तृणुते, तर्णुते । ततर्ण-ततृणे । तर्णितासि-से । तर्णिष्यति-ते । तृणोतु-तर्णोतु-तृणुताम्, तर्णुताम् । अतृणोत्, अतर्णोत्-अतृणुत, अतर्णुत । तृणुयात्-तर्णुयात्-तृण्वीत, तर्ण्वीत । तृण्यात्, तर्णिषीष्ट । अतर्णीत्, अतृत, अतर्णिष्ट । अतर्णिष्यत्-त ।

६ घृणु—दीप्तौ । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—घृणोति, घर्णोति । घृणुते-घर्णुते । इत्यादि तृणुवत् ।

७. डुकृञ्[1]—करणे । उभयपदी, अनिट् ।

लट्-पर.

प्र० पु०	करोति	कुरुतः[2]	कुर्वन्ति[3]
म० ,,	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० ,,	करोमि	कुर्वः[4]	कुर्मः

आ. प.

प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० ,,	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० ,,	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लिट्-पर.

प्र० पु०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
म० ,,	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र
उ० ,,	चकार-चकर	चकृव	चकृम

लुट—कर्तासि—से । लृट्—करिष्यति—ते ।

---

1. "ड्वितः क्त्रिः" कृत्रिमम् ।
2. "अत उत्सार्वधातुके" ।
3. "न भकुर्छुराम्" से निषेध ।
4. "नित्यं करोतेः" से म् व् का लोप ।

लोट् पर.

प्र० पु०	करोतु-कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० ,,	कुरु-कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उ० ,,	करवाणि	करवाव	करवाम

आ. प.

प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० ,,	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० ,,	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ्-पर.

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० ,,	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० ,,	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

आ. प.

प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० ,,	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० ,,	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

वि. लि.-पर.

प्र० पु०	कुर्यात्[1]	कुर्याताम्	कुर्युः
म० ,,	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० ,,	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

आ. प.

प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० ,,	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्

1. "ये च" से उकार लोप।

उ० ,,	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

आ. लि.-प.

प्र० पु०	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः
म० ,,	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त
उ० ,,	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म

आ. प.

प्र० पु०	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
म० ,,	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीध्वम्
उ० ,,	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

लुङ्-प.

प्र० पु०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
म० ,,	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
उ० ,,	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म

आ. प.

प्र० पु०	अकृत[1]	अकृषाताम्	अकृषत
म० ,,	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
उ० ,,	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

लृङ्—अकरिष्यत्—अकरिष्यत इत्यादि ।

---

1. "ह्रस्वादङ्गात्" । अपकरोति—बुरा करता है । विकरोति—बिगाड़ता है । अधिकरोति — अधिकार करता है । प्रतिकरोति—प्रतिकार करता है । उपकरोति—उपकार करता है । क्त—कृतः । क्त्वा—कृत्वा । तुमुन्—कर्तुम् । तव्य—कर्तव्यम् । घञ्—कारः । क्तिन्—कृतिः । ण्वुल्—कारकः । तृच्—कर्ता । णिच्—कारयति । सन्—चिकीर्षति । चिकीर्षुः । कर्मवा०—क्रियते ।

८. वनु—याचने । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—वनुते । ववने । वनिता । वनिष्यते । वनुताम् । अवनुत । वन्वीत । वनिषीष्ट । अवत, अवनिष्ट । अवनिष्यत ।

९. मनु—याचने । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मनुते । मेने । मनितासे । मनिष्यते । मनुताम् । अमनुत । मन्वीत । मनिषीष्ट । अमत, अमनिष्ट । अमनिष्यत ।

इति तनादयः ।

अथ क्र्यादि प्रकरणम्

डुक्रीञ्—द्रव्यविनिमये । उभयपदी, अनिट् ।

लट्-पर०

प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः[1]	क्रीणन्ति[2]
म० ,,	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ० ,,	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

आ० प०

प्र० पु०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म० ,,	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ० ,,	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लिट्-पर०

प्र० पु०	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः
म० ,,	चिक्रयिथ-चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
उ० ,,	चिक्राय-चिक्रिय	चिक्रियिव	चिक्रियिम

आ० प०

प्र० पु०	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
म० ,,	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे
उ० ,,	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे

लुट्—क्रेतासि-क्रेतासे । लृट्-क्रेष्यति-क्रेष्यते ।

लोट्-पर०

प्र० पु०	क्रीणातु-क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु

---

1. "ई हल्यघोः" से ईत्व ।

2. श्नाभ्यस्तयोरातः" आकार लोप ।

म० ,,	क्रीणीहि[1]-क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ० ,,	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

आ० प०

प्र० पु०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म० ,,	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० ,,	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ्-पर०

प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० ,,	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० ,,	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

आ० प०

प्र० पु०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म० ,,	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ० ,,	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

वि०लि०-पर०

प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म० ,,	क्रीणीयाः	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयात
उ० ,,	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

आ० प०

प्र० पु०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म० पु०	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० ,,	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

आ०लि०-पर०

प्र० पु०	क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः

1. हि अपित् होने से ङित् है, अतः आकार को ईकार ।

म० ,,	क्रीयाः	क्रीयास्तम्	क्रीयास्त
उ० ,,	क्रीयासम्	क्रीयास्व	क्रीयास्म

आ० प०

प्र० पु०	क्रेषीष्ट	क्रेषीयास्ताम्	क्रेषीरन्
म० ,,	क्रेषीष्ठाः	क्रेषीयास्थाम्	क्रेषीध्वम्
उ० ,,	क्रेषीय	क्रेषीवहि	क्रेषीमहि

लुङ्-पर०

प्र० पु०	अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः
म० ,,	अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
उ० ,,	अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म

आ० प०

प्र० पु०	अक्रेष्ट	अक्रेषाताम्	अक्रेषत
म० ,,	अक्रेष्ठाः	अक्रेषाथाम्	अक्रेध्वम्
उ० ,,	अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि

लृङ्—अक्रेष्यत्[1]-अक्रेष्यत इत्यादि ।

२. प्रीञ्—तर्पणे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—प्रीणाति-प्रीणीते । पिप्राय-पिप्रिये । प्रेतासि-से । प्रेष्यति-ते । प्रीणातु-प्रीणीताम् । अप्रीणात्-अप्रीणीत । प्रीणीयात्-प्रीणीत । प्रीयात्-प्रेषीष्ट । अप्रैषीत्-अप्रेष्ट । अप्रेष्यत्-त ।

३. श्रीञ्—पाके । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—श्रीणाति-श्रीणीते । शिश्राय-शिश्रिये । श्रेतासि-से ।

1. "परिव्यवेभ्यः क्रियः"—आत्मनेपद । परिक्रीणीते । विक्रीणीते । बेचता है । क्त-क्रीतः । क्त्वा-क्रीत्वा । तुमुन्-क्रेतुम् । तव्य-क्रेतव्यम् । अच्-क्रयः । क्तवत्-क्रीतवान् । णिच्-क्रापयति । सन्-चिक्रीषति-ते । एवं प्री धातु के रूप भी जानो । णिच्-प्राययति ।

श्रेष्यति-ते । श्रीणातु-श्रीणीताम् । अश्रीणात्-अश्रीणीत । श्रीणीयात्-श्रीणीत श्रीयात्-श्रेषीष्ट । अश्रैषीत्-अश्रेष्ट । अश्रेष्यत्-त ।

४. मीञ्—हिंसायाम् । उभयपदी, अनिट् ।

लट्—मीनाति[1]-मीनीते । लिट्-पर०—ममौ, मिम्यतुः, मिम्युः । ममिथ, ममाथ । आ०-प०—मिम्ये, मिम्याते, मिम्यिरे । लुट्—मातासि-से । लृट्—मास्यति-ते । लोट्—मीनातु-मीनीताम् । लङ्—अमीनात्-अमीनीत । वि० लि०—मीनीयात्-मीनीत । आ० लि०—मीयात्-मासीष्ट । लुङ्—अमासीत्[2]-अमास्त, अमासाताम् । लृङ्—अमास्यत्-त ।

५. षिञ्—बन्धने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—सिनाति-सिनीते । सिषाय-सिष्ये । सेतासि-से । सेष्यति-ते । सिनातु-सिनीताम् । असिनात्-असिनीत । सिनीयात्-सिनीत । सीयात्-सेषीष्ट । असैषीत्-असेष्ट । असेष्यत्-त ।

६. स्कुञ्—आप्रवणे । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—स्कुनोति[3]-स्कुनुते, स्कुनाति-स्कुनीते । चुस्काव-चुस्कुवे । स्कोतासि-स्कोतासे । स्कोष्यति-ते । स्कुनोतु, स्कुनुताम्-स्कुनातु-स्कुनीताम् । अस्कुनोत्-अस्कुनुत, अस्कुनात्-अस्कुनीत । स्कुनुयात्-स्कुन्वीत, स्कुनीयात्-स्कुनीत । स्कूयात्-स्कोषीष्ट । अस्कौषीत्-अस्कोष्ट । अस्कोष्यत्-त ।

७. स्तम्भु—रोधने । परस्मैपदी, सेट् ।

लट्—स्तभ्नोति, स्तभ्नाति । लिट्—तस्तम्भ । लुट्—स्तम्भिता । लृट्—स्तम्भिष्यति । लोट्—स्तभ्नोतु-स्तभ्नुतात्, स्तभ्नुताम्, स्तभ्नुवन्तु, स्तभ्नुहि । स्तभ्नातु, स्तभ्नीतात्, स्तभ्नीताम्, स्तभ्नन्तु, स्तभान-स्तभ्नीतम्,

1. "हिनुमीना" णत्व-प्रमीणाति ।
2. सक्, इट् ।
3. स्तम्भु-स्तुम्भु—" से वैकल्पिक श्नुविकरण ।

स्तभ्नीत । लङ्—अस्तभ्नोत्-अस्तभ्नात् । वि० लि०—स्तभ्नुयात्-स्तभ्नीयात् । आ० लि०—स्तभ्यात् । लुङ्—अस्तम्भीत्-अस्तभत्[1] । लृङ्—अस्तम्भिष्यत् ।

८. युञ्—बन्धने । उभयपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—युनाति-युनीते । युयाव-युयुवे । योतासि-से । योष्यति-ते । युनातु-युनीताम् । अयुनात्-अयुनीत । युनीयात्-युनीत । यूयात्-योषीष्ट । अयौषीत्-अयोष्ट । अयोष्यत्-त ।

९. क्नूञ्—शब्दे । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—क्नूनाति-क्नूनीते । चुक्नाव-चुक्नुवे । क्नवितासि-क्नवितासे । क्नविष्यति-क्नविष्यते । क्नूनातु-क्नूनीताम् । अक्नूनात्-अक्नूनीत । क्नूनीयात्-क्नूनीत । क्नूयात्-क्नविषीष्ट । अक्नावीत्-अक्नविष्ट । अक्नविष्यत्-त ।

१०. द्रूञ्—हिंसायाम्, उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—द्रूणाति-द्रूणीते । दुद्राव-दुद्रुवे । द्रवितासि-से । द्रविष्यति-ते । द्रूणातु-द्रूणीताम् । अद्रूणात । द्रूणीयात्-द्रूणीत । द्रूयात्-द्रविषीष्ट । अद्रावीत्-अद्रविष्ट । अद्रविष्यत्-त ।

११. पूञ्—पवने । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पुनाति[2]-पुनीते । पुपाव-पुपुवे[3] । पवितासि-से । पविष्यति-ते । पुनातु-पुनीताम् । अपुनात्-अपुनीत । पुनीयात्-पुनीत । पूयात्-पविषीष्ट । अपावीत्-अपविष्ट । अपविष्यत्-त ।

1. "जॄस्तम्भुम्रुचु—" से वैकल्पिक च्लि को अङ्, "अनिदिताम्—" न लोप । इसी प्रकार स्तुम्भु आदि सौत्र धातुओं के रूप होंगे, च्लि को अङ् न होगा ।

2. "प्वादीनां ह्रस्वः ।

3. अपित लिट् में उवङ् । निष्ठा-पूतः, पूतवान् । णिच्-पावयति । सन्-पिपविषति-ते ।

१२. लूञ्—छेदने । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—लुनाति[1]-लुनीते । लुलाव-लुलुवे । लवितासि-से । लविष्यति-ते । लुनातु-लुनीताम् । अलुनात्-अलुनीत । लुनीयात्-लुनीत । लूयात्-लविषीष्ट । अलावीत्-अलविष्ट । अलविष्यत्-त ।

१३. स्तॄञ्—आच्छादने । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—स्तृणाति-स्तृणीते । तस्तार, तस्तरतुः[2]-तस्तरे । स्तरि-रीतासि-से । स्तरि-रीष्यति-ते । स्तृणातु-स्तृणीताम् । अस्तृणात्-अस्तृणीत । स्तीर्यात्[3]-स्तरिषीष्ट[4], स्तीर्षीष्ट[5] । अस्तारीत्[6]-अस्तरिष्ट[7], अस्तरीष्ट, अस्तीर्ष्ट । अस्तरि-रीष्यत्-अस्तरि-रीष्यत ।

१४. कॄञ्—हिंसायाम् । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कृणाति[1]-कृणीते । चकार, चकरतुः-चकरे । करि-रीतासि-से । करि-रीष्यति—ते । कृणातु-कृणीताम् । अकृणात्-अकृणीत । कृणीयात्-कृणीत ।

---

1. निष्ठा-लूनः, लूनवान् । णिच्-लावयति । सन्-लिलविषति ।

2. "ऋतश्च संयोगादे र्गुणः" से अपित् लिट् में भी गुण ।

3. "ऋत इद्धातोः" "हलि च" ।

4. "न लिङि" से इट् को दीर्घ निषेध । "लिङ् सिचोरात्मनेपदेषु" से इट् विकल्प ।

5. "उश्च" ऋत इत, उपधादीर्घ ।

6. अस्तारिष्टाम्, "सिचि च परस्मैपदेषु" इट् का दीर्घ निषेध ।

7. इट् विकल्प, दीर्घ विकल्प । इडभाव में "उश्च" से कित् "ऋत इद्धातोः" "हलि च" ।

8. "ऋवर्णान्तस्य णत्वं वाच्यम ।

कीर्यात्[1]-करिषीष्ट[2], कीर्षीष्ट। अकारीत-अकरि-रीष्ट, अकीष्ट। अकरि-रीष्यत्-त।

१५. वृञ्—वरणे। उभयपदी, सेट्।

दशलकारेषु—वृणाति-वृणीते। ववार-ववरे। वरि-रीतासि-से। वरि रीष्यति—ते। वृणातु-वृणीताम्। अवृणात्-अवृणीत। वृणीयात्-वृणीत। वूर्यात्[3]-वरिषीष्ट, वूर्षीष्ट। अवारीत्। अवारिष्टाम्[4]-अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवूर्ष्ट। अवरि-रीष्यत्—त।

१६. धूञ्—कम्पने। उभयपदी, वेट्।

दशलकारेषु—धुनाति-धुनीते। दुधाव, दुधविथ-दुधोथ। धवितासि-से[5], धोतासि-से। धविष्यति—ते, धोष्यति-ते। धुनातु-धुनीताम्। अधुनात्-अधुनीत। धुनीयात्-धुनीत्। धूयात्-धविषीष्ट, धोषीष्ट। अधावीत, अधाविष्टाम्—अधविष्ट, अधोष्ट। अधविष्यत्—त, अधोष्यत्—त।

१७. ग्रह—उपादाने। उभयपदी, सेट्।

दशलकारेषु—गृह्णाति-गृह्णीते। जग्राह, जग्रहिथ-जग्रहे। ग्रहीतासि[6]-से। ग्रहीष्यसि—से। गृह्णाति-गृह्णीताम्। अगृह्णात्-अगृह्णीत। गृह्णीयात्-गृह्णीत। गृह्यात्-ग्रहीषीष्ट। अग्रहीत्[7]-अग्रहीष्ट। अग्रहीष्यत्-त। इत्युभयपदिनः॥

1. "ऋत इद्धातोः" "हलि च"।

2. "लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु" इट् विकल्प। "न लिङि" दीर्घ निषेध। 3. "उदोष्ठ्य पूर्वस्य" "हलि च"। 4. "सिचि च परस्मैपदेषु" दीर्घ निषेध। 5. "स्वरति सूति"—वेट्। 6. "ग्रहोऽलिटि दीर्घः"।

7. "ह्म्यन्त क्षणश्वस"—वृद्धि निषेध। निगृह्णाति-पकड़ता है, रोकता है, बांधता है। विगृह्णाति-लड़ाई करता है। अनुगृह्णाति-कृपा करता है। आगृह्णाति-आग्रह (हठ) करता है। प्रतिगृह्णाति-दान लेता है। क्त—गृहीतः। क्त्वा—गृहीत्वा। तुमुन्-ग्रहीतुम्। अनीय-ग्रहणीयम्। अच्-ग्रहः। घञ्-ग्राहः। ल्युट्-ग्रहणम्। ण्वुल्-ग्राहकः। णिच्-ग्राहयति। सन्-जिघृक्षति। यङ्-जगृहीति। कर्म०-गृह्यते।

अथ परस्मैपदिनः ।

१८. कुष्—निष्कर्षे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कुष्णाति । चुकोष । कोषिता[1] । कोषिष्यति । कुष्णातु । अकुष्णात् । कुष्णीयात् । कुष्यात् । अकोषीत्[2] । अकोषिष्यत ।

१६. अश्—भोजने । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—अश्नाति । आश । अशिता । अशिष्यति । अश्नातु[3] । आश्नात् । अश्नीयात् । अश्यात् । आशीत्[4] । आशिष्यत् ।

२०. ज्ञा – अवबोधने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—जानाति । जज्ञौ । ज्ञाता । ज्ञास्यति । जानातु[5] । अजानात् । जानीयात् । ज्ञायात्[6]-ज्ञेयात् । अज्ञासीत् । अज्ञास्यत् ।

२१. पॄ—पालनपूरणयोः । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पृणाति । पपार, पप्रतुः पपरतुः[7] । परि-रीता । परि-रीष्यति । पृणातु । अपृणात् । पृणीयात् । पूर्यात्[8] । अपारीत् । अपरि-रीष्यत् ।

---

1. "निरः कुषः" से इट् विकल्प होकर-निष्कोषिता, निष्कोष्टा ।
2. इडभाव में क्स हो कर निरकुक्षत् ।
3. मध्यम पु०-अशान"—"हलः श्नः शानज्झौ" ।
4. "नेटि" मा भवानशीत् ।
5. जानीताम्, जानन्तु । जानीहि ।
6. "वाऽन्यस्य संयोगादेः" ।
7. "शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा" ह्रस्वपक्ष में यण् ।
8. "उदोष्ठ्यपूर्वस्य" "हलि च" ।

२२. शॄ—हिंसायाम । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—शृणाति । शशार, शश्रतुः[1], शशरतुः । शरि-रीता । शरि-रीष्यति । शृणातु । अशृणात् । शृणीयात् । शीर्यात् । अशारीत् । अशरि-रीष्यत् ।

२३. दॄ—विदारणे । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—दृणाति । ददार, दद्रतुः, ददरतुः । दरि-रीता । दरि-रीष्यति । दृणातु । अदृणात् । दृणीयात् । दीर्यात्[2] । अदारीत् । अदरि-रीष्यत् ।

२४. जॄ—वयोहानौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—जृणाति । जजार, जजरतुः[3] । जरि-रीता । जरि-रीष्यति । जृणातु । अजृणात् । जृणीयात् । जीर्यात् । अजारीत्, अजारिष्टाम् । अजरि-रीष्यत् ।

२५. मुष—स्तेये । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मुष्णाति । मुमोष । मोषिता । मोषिष्यति । मुष्णातु[4] । अमुष्णात् । मुष्णीयात् । मुष्यात् । अमोषीत् । अमोषिष्यत् ।

२६. पुष—पुष्टौ । परस्मैपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—पुष्णाति । पुपोष । पोषिता । पोषिष्यति । पुष्णातु । अपुष्णात् । पुष्णीयात् । पुष्यात् । अपोषीत् । अपोषिष्यत् ।

२७ बन्ध-बन्धने । परस्मैपदी, अनिट् ।

दशलकारेषु—बध्नाति । बबन्ध, बबन्धिथ, बबन्ध । बन्द्धा ।

---

1. "शॄदॄपां ह्रस्वो वा" ।
2. "ॠत इद्धातोः" ।
3. "ॠच्छत्यॄताम्" से गुण ।
4. मध्यम-पु०-मुषाण ।

भन्त्स्यति। बध्नातु, बधान। अबध्नात्। बध्नीयात्। बध्यात्। अभान्त्सीत्[1]। अभन्त्स्यत्।

२८ क्लिशू—विबाधने। परस्मैपदी, वेट्।

दशलकारेषु—क्लिश्नाति। चिक्लेश। क्लेशिता, क्लेष्टा। क्लेशिष्यति-क्लेक्ष्यति। क्लिश्नातु[2]। अक्लिश्नात्। क्लिश्नीयात्। क्लिश्यात्। अक्लेशीत्-अक्लिक्षत्। अक्लेशिष्यत्-अक्लेक्ष्यत्।

२९ वृङ्—सम्भक्तौ। आत्मनेपदी, सेट्।

दशलकारेषु—वृणीते, वृणाते, वृणते। वव्रे, वव्राते, वव्रिरे। वरि-रीता। वरि-रीष्यते। वृणीताम्। अवृणीत। वृणीत। वरि-रीषीष्ट-वर्षीष्ट[3]। अवरि-रीष्ट-अवृत। अवरि-रीष्यत।

इति क्र्यादिगणः।

---

1. "एकाचो बशोभष्..."। हलन्त लक्षणवृद्धि। अभान्ताम्।

2. क्लिशान।

3. "लिङ् सिचोरात्मनेपदेषु" इट् विकल्प, इडभाव में "उदोष्ठ्य-पूर्वस्य"।

अथ चुरादि प्रकरणम्

१ चुर—स्तेये, उभयपदी, सेट्।

दशलकारेषु—चोरयति[1]-चोरयते । चोरयामास-मासे । चोरयितासि-से । चोरयिष्यति-ते । चोरयतु-ताम् । अचोरयत्-त । चोरयेत्-त । चोर्यात्-चोरयिषीष्ट । अचूचुरत्-त । अचोरयिष्यत्-त ।

२ चिति—स्मृत्याम् । उभयपदी, सेट्।

दशलकारेषु—चिन्तयति-ते । चिन्तयामास-से, चिन्तयाम्बभूव[2]-वे । चिन्तयितासि-से । चिन्तयिष्यति-ते । चिन्तयतु-ताम् । अचिन्तयत्-त । चिन्तयेत्-त । चिन्त्यात्[2]-चिन्तयिषीष्ट । अचिचिन्तत्-त । अचिन्तयिष्यत्-त ।

३ यत्रि—सङ्कोचे । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—यन्त्रयति-ते । यन्त्रयामास-से । यन्त्रयितासि-से । यन्त्रयिष्यति-ते । यन्त्रयतु-ताम् । अयन्त्रयत्-त । यन्त्रयेत्-त । यन्त्र्यात्-यन्त्रयिषीष्ट । अययन्त्रत्-त । अयन्त्रयिष्यत्-त ।

---

1. सभी णिजन्त धातु उभयपदी होंगे।

2 आमन्त से कृ, भू, अस् का अनुप्रयोग होता ही है, विस्तार भय से कभी किसी के रूप छोड़ दिये गये हैं । णिच् के व्यवधान होने से "अनिदिताम्..." से न लोप नहीं होता । मतान्तर से चुरादिगण के सभी इदित् धातुओं को णिच् का विकल्प है । इसलिये णिच् के अभाव में-चिन्तति । चिचिन्त । चिन्तिता । चिन्तिष्यति । चिन्ततु । अचिन्तत् । चिन्तेत् । चिन्त्यात् । अचिन्तीत् । अचिन्तिष्यत्—इत्यादि रूप भी होंगे । सभी इदितों में इसी तरह चाहे हम न भी लिखें जान लेना ।

४ कुद्रि—अनृतभाषणे । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—कुन्द्रति-ते । कुन्द्रयामास-से । कुन्द्रयितासि-से । कुन्द्रयिष्यति-कुन्द्रयिष्यते । कुन्द्रयतु-ताम् । अकुन्द्रयत्-त । कुन्द्रयेत्-त । कुन्द्र्यात्-कुन्द्रयिषीष्ट । अचुकुन्द्रत्-त ।अकुन्द्रयिष्यत्-त ।

५ तन्त्रि—कुटुम्बधारणे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—तन्त्रयते । तन्त्रयाञ्चक्रे, मासे, बभूवे । तन्त्रयितासे । तन्त्रयिष्यते । तन्त्रयताम् । अतन्त्रयत । तन्त्रयेत । तन्त्रयिषीष्ट । अततन्त्रत । अतन्त्रयिष्यत ।

६ मन्त्रि—गुप्तभाषणे । आत्मनेपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—मन्त्रयते । मन्त्रयाञ्चक्रे-मासे-बभूवे । मन्त्रयितासे । मन्त्रयिष्यते । मन्त्रयताम् । अमन्त्रयत । मन्त्रयेत । मन्त्रयिषीष्ट । अममन्त्रत[1] । अमन्त्रयिष्यत ।

७ स्फुडि—परिहासे । उभयपदी, सेट् ।

दशलकारेषु—स्फुण्डयति-ते[2] । स्फुण्डयाञ्चकार-क्रे । स्फुण्डयिता । स्फुण्डयिष्यति-ते । स्फुण्डयतु-स्फुण्डयताम् । अस्फुण्डयत्-त । स्फुण्डयेत्-त । स्फुण्ड्यात्-स्फुण्डयिषीष्ट । अपुस्फुण्डत्-त । अस्फुण्डयिष्यत्-त ।

८ पीड—अवगाहे । सेट् ।

दशलकारेषु—पीड़यति । पीड़याञ्चकार । पीड़यिता । पीड़यिष्यति । पीड़यतु । अपीडत् । पीड़येत् । पीड्यात् । अपीपिड़त्[3]-अपिपीड़त् । अपीड़यिष्यत् ।

९ प्रथ—प्रख्याने, सेट् ।

दशलकारेषु—प्रथयति । प्रथयाञ्चकार । प्रथयिता । प्रथयिष्यति ।

1. अभ्यास लघुपरक हो तो सन्वद्भाव होता है, अन्यथा नहीं ।

2. णिच् के अभाव में स्फुण्डति, पुस्फुण्ड, अस्फुण्डीत् इत्यादि ।

3. "भ्राजभास भाषदीपजीव मीलपीड़ा मन्यतरस्याम्" से उपधा को विकल्प से ह्रस्व ।

प्रथयतु । अप्रथयत् । प्रथयेत् । प्रथ्यात् । अपप्रथत्[1] । अप्रथयिष्यत्

१० पृथ—प्रक्षेपे, सेट् ।

दशलकारेषु—पर्थयति । पर्थयाञ्चकार । पर्थयिता । पर्थयिष्यति पर्थयतु । अपर्थयत् । पर्थयेत् । पर्थ्यात् । अपीपृथत्[2]-अपपर्थत् । अपर्थयिष्यत् ।

११ लुण्ठ—स्तेये, सेट् ।

दशलकारेषु—लुण्ठयति । लुण्ठयाञ्चकार । लुण्ठयिष्यति । लुण्ठयतु । लुण्ठ्यात् । अलुलुण्ठत्[3] । अलुण्ठयिष्यत् ।

१२ तड़—आघाते । सेट् ।

दशलकारेषु—ताडयति । ताड़यामास । ताडयिता । ताडयिष्यति । ताड़यतु । अताड़यत् । ताडयेत् । ताड़्यात् । अतीतड़त् । अताड़यिष्यत् ।

१३ मडि—भूषायां, हर्षे च । सेट ।

दशलकारेषु—मण्डयति । मण्डयामास । मण्डयिता । मण्डयिष्यति । मण्डयतु । अमण्डयत् । मण्डयेत् । मण्ड्यात् । अममण्डत् । अमण्डयिष्यत् ।

१४ भडि—कल्याणे । सेट् ।

दशलकारेषु—भण्डयति । भण्डयामास । भण्डयिता । भण्डयिष्यति । भण्डयतु । अभण्डयत । भण्डयेत् । भण्ड्यात् । अबभण्डत् । अभण्डयिष्यत् ।

१५ छर्द—वमने । सेट् ।

दशलकारेषु—छर्दयति । छर्दयामास । छर्दयिता । छर्दयिष्यति ।

---

1. "अत्स्मृदृत्वर प्रथम्रदस्तृस्पशाम्" से अभ्यास को अकार ।

2. "उऋत्" से उपधा ऋवर्ण को ऋत्, ऋत्करण सामर्थ्य से लघूपधगुणाभाव, पृथ् को द्वित्व, 'उरत्' । सन्वद्भाव, इत्व, "दीर्घो लघोः" ।

3. अभ्यास से परे लघु नहीं, अतः सन्वद्भाव न हुआ ।

छर्दयतु । अच्छर्दयत् । छर्दयेत् । छर्द्यात् । अचच्छर्दत् । अच्छर्दयिष्यत् ।

१६ चुद—संचोदने । सेट्।

दशलकारेषु—चोदयति । चोदयामास । चोदयिता । चोदयिष्यति । चोदयतु । अचोदयत् । चोदयेत् । चोद्यात् । अचूचुदत् । अचोदयिष्यत् ।

१७ पाल—रक्षणे । सेट्।

द०ल०—पालयति । पालयामास । पालयिता । पालयिष्यति । पालयतु । अपालयत् । पालयेत् । पाल्यात् । अपीपलत् । अपालयिष्यत् ।

१८ पूज—पूजायाम्। सेट ।

दशल०—पूजयति । पूजयामास । पूजयिता । पूजयिष्यति । पूजयतु । अपूजयत् । पूजयेत् । पूज्यात् । अपूपुजत् । अपूजयिष्यत् ।

१९. कृत—संशब्दने । सेट् ।

द०ल०— कीर्तयति । कीर्तयामास । कीर्तयिता । कीर्तयतु । अकीर्तयत् । कीर्तयेत् । कीर्त्यात् । अचिकीर्तत् । अकीर्तयिष्यत्[1] ।

२०. म्लेच्छ—अव्यक्तायां वाचि । सेट्।

द० ल०—म्लेच्छयति । म्लेच्छयामास । म्लेच्छयिता । लेच्छयिष्यति । म्लेच्छयतु । अम्लेच्छयत् । म्लेच्छयेत् । म्लेच्छ्यात् । अमिम्लेच्छत् । अम्लेच्छयिष्यत् ।

२१. ईड—स्तुतौ । सेट्।

द० ल०—ईडयति । ईडयामास । ईडयिता । ईडयिष्यति ।

---

1. "उपधायश्च" से इत्त्व, "उपधायाञ्च" से दीर्घ ।

ईडयतु । एेडयेत्[1] ईड्यात् । एेडिडत्[2] । एेडिष्यत् ।

२२. पिडि—सङ्घाते । सेट् ।

द० ल०—पिण्डयति[3] । पिण्डयाञ्चकार । पिण्डयिता । पिण्डयिष्यति । पिण्डयतु । अपिण्डयत् । पिण्डयेत् । पिण्ड्यात् । अपिपिण्डत् । अपिण्डयिष्यत् ।

२३ रुप—रोपे सेट् ।

द० ल०—रोपयति । रोपयाञ्चकार । रोपयिता । रोपयिष्यति । रोपयतु । अरोपयत् । रोपयेत् । रोप्यात् । अरूरुपत् । अरोपयिष्यत् ।

२४ तुल—उन्माने । सेट् ।

द० ल०—तोलयति । तोलयाञ्चकार । तोलयिता । तोलयिष्यति । तोलयतु । अतोलयत् । तोलयेत् । तोल्यात् । अतूतुलत् । अतोलयिष्यत् ।

२५ शुल्व—माने । सेट् ।

द० ल०—शुल्वति । शुल्वयाञ्चकार । शुल्वयिता । शुल्वयिष्यति । शुल्वयतु । अशुल्वयत् । शुल्वयेत् । शुल्व्यात् । अशुशुल्वत् । अशुल्वयिष्यत् ।

२६ घुसिर्—विशब्दने, सेट् ।

द० ल०—घोषयति । घोषयाञ्चकार । घोषयिता । घोषयिष्यति । घोषयतु । अघोषयत् । घोषयेत् । घोष्यात् । अजूघुषत् । अघोषयिष्यत् ।

---

1. "आटश्च" ।

2. "अजादेस्तु द्वितीयस्य" दूसरे एकाच् अवयव 'डि' को द्वित्व हुआ ।

3. णिच् के अभाव में पिण्डति, पिपिण्ड, अपिण्डीत् इत्यादि ।

२७ पट—भाषायाम् । सेट् ।

द०ल०—पाटयति । पाटयाञ्चकार । पाटयिता । पाटयिष्यति । पाटयतु । अपाटयत् । पाटयेत् । पाट्यात् । अपूपुटत् । अपाटयिष्यत् ।

२८ पुट—भाषार्थः । सेट् ।

द० ल०—पोटयति । पोटयाञ्चकार । पोटयिता । पोटयिष्यति । पोटयतु । अपोटयत् । पोटयेत् । पोट्यात् । अपूपुटत् । अपोटयिष्यत् ।

२९ लुट्—भाषार्थः । सेट् ।

द० ल०—लोटयति । लोटयामास । लोटयिता । लोटयिष्यति । लोटयतु । अलोटयत् । लोटयेत् । लोट्यात् । अलूलुटत् । अलोटयिष्यत् ।

३० तुजि—भाषार्थः । सेट् ।

द० ल०—तुञ्जयति[1] । तुञ्जयामास । तुञ्जयिता । तुञ्जयिष्यति । तुञ्जयतु । अतुञ्जयत् । तुञ्जयेत् । तुञ्ज्यात् । अतुतुञ्जत् । अतुञ्जयिष्यत् ।

३१. मिजि[2]—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—मिञ्जयति । मिञ्जयाञ्चकार । मिञ्जयिष्यति । मिञ्जयतु । अमिञ्जयत् । मिञ्जयेत् । मिञ्ज्यात् । अमिमिञ्जत् । अमिञ्जयिष्यत् ।

३२. पिजि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—पिञ्जयति । पिञ्जयाञ्चकार । पिञ्जयिता । पिञ्जयिष्यति । पिञ्जयतु । अपिञ्जयत् । पिञ्जयेत् । पिञ्ज्यात् । अपिपिञ्जत् । अपिञ्जयिष्यत् ।

३३. लुजि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—लुञ्जयति । लुञ्जयाञ्चकार । लुञ्जयिता । लुञ्जयिष्यति ।

---

1. पक्षे-तुञ्जति इत्यादि ।
2. पक्ष में—मिञ्जति इत्यादि । एवं सभी इदितों में ।

लुञ्जयतु । अलुञ्जयत् । लुञ्ज्यात् । अलुलुञ्जत् । अलुञ्जयिष्यत् ।

३४. मजि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—मञ्जयति । मञ्जयाञ्चकार । मञ्जयिता । मञ्जयिष्यति । मञ्जयतु । अमञ्जयत् । मञ्जयेत् । मञ्ज्यात् । अममञ्जत् । अमञ्जयिष्यत् ।

३५. लघि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—लङ्घयति । लङ्घयाञ्चकार । लङ्घयिता । लङ्घयिष्यति । लङ्घयतु । अलङ्घयत् । लङ्घयेत् । लङ्घ्यात् । अललङ्घत । अलङ्घयिष्यत् ।

३६. त्रसि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—त्रंसयति । त्रंसयाञ्चकार । त्रंसयिता । त्रंसयिष्यति । त्रंसयतु । अत्रंसयिष्यत । त्रंसयेत् । त्रंस्यात् । अतत्रंसत् । अत्रंसयिष्यत् ।

३७. पिसि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—पिंसयति । पिंसयाञ्चकार । पिंसयिष्यति । पिंसयतु । अपिंसयत् । पिंसयेत । अपिपिंसत् । अपिंसयिष्यत् ।

३८. कुसि—भाषार्थः । सेट् । पिसिवत् रूपाणि ।

३९. दसि—भाषार्थ । सेट् ।

दशलकारेषु—दंसयति । दंसयाञ्चकार । दंसयिता । दंसयिष्यति । दंसयतु । अदंसयत् । दंसयेत् । दंस्यात् । अददंसत् । अदंसयिष्यत् ।

४०. कुशि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—कुंशयति । कुंशयाञ्चकार । कुंशयिता । कुंशयिष्यति । कुंशयतु । अकुंशयत् । कुंशयेत् । कुंश्यात् । अचुकुंशत् । अकुंशयिष्यत् ।

४१. घट—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—घाटयति । घाटयञ्चकार । घाटयिता । घाटयिष्यति । घाटयतु । अघाटयत् । घाटयेत् । घाट्यात् । अजीघटत् । अघाटयिष्यत् ।

४२. घटि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—घण्टयति । घण्टयाञ्चकार । घण्टयिता । घण्टयिष्यति । घण्टयतु । अघण्टयत् । घण्टयेत् । घण्ट्यात् । अजिघण्टत् । अघण्टयिष्यत् ।

४३. बृहि—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—बृंहयति । बृंहयाञ्चकार । बृंहयिता । बृंहयिष्यति । बृंहयतु । अबृंहयत् । बृंहयेत् । बृंह्यात् । अबिबृंहत् । अबृंहयिष्यत् ।

४४. बर्ह—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—बर्हयति । बर्हयाञ्चकार । बर्हयिता । बर्हयिष्यति । बर्हयतु । अबर्हयत् । बर्हयेत् । बर्ह्यात् । अबबर्हत् । अबर्हयिष्यत् ।

४५. वल्ह—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—बल्हयति । बल्हयाञ्चकार । वल्हयिता । वल्हयिष्यति । बल्हयतु । अबल्हयत् । बल्हयेत् । बल्ह्यात् । अबबल्हत् । अबल्हयिष्यत् ।

४६. गुप—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—गोपयति । गोपयामास । गोपयिता । गोपयिष्यति । गोपयतु । अगोपयत् । गोपयेत् । गोप्यात् । अजूगुपत् । अगोपयिष्यत् ।

४७. धूप—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—धूपयति । धूपयाञ्चकार । धूपयिता । धूपयिष्यति । धूपयतु । अधूपयत् । धूपयेत् । धूप्यात् । अदूधूपत् । अधूपयिष्यत् ।

४८. विच्छ—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—विच्छयति । विच्छयाञ्चकार । विच्छयिता । बिच्छयिष्यति । विच्छयतु । अविच्छयत् । विच्छयेत् । विच्छ्यात् । अविविच्छत् । अविच्छयिष्यत् ।

४९. चीव—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—चीवयति । चीवयाञ्चकार । चीवयिता । चीवयिष्यति ।

चीवयतु । अचीवयत् । चीवयेत् । चीव्यात् । अचीचिवत् । अचीवयिष्यत् ।

५०. पुथ—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—पोथयति । पोथयामास । पोथयिता । पोथयिष्यति । पोथयतु । अपोथयत् । पोथयेत् । पोथ्यात् । अपूपुथत् । अपोथयिष्यत् ।

५१. लोकृ—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—लोकयति । लोकयामास । लोकयिता । लोकयिष्यति । लोकयतु । अलोकयत् । लोकयेत् । लोक्यात् । अलुलोकत्[1] । अलोकयिष्यत् ।

५२. लोचृ—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—लोचयति । लोचयामास । लोचयिता । लोचयिष्यति । लोचयतु । अलोचयत् । लोचयेत् । लोच्यात् । अलुलोचत् । अलोचयिष्यत् ।

५३. णद—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—नादयति । नादयामास । नादयिता । नादयिष्यति । नादयतु । अनादयत् । नादयेत् । नाद्यात् । अनीनदत् । अनादयिष्यत् ।

५४. कुप—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—कोपयति । कोपयामास । कोपयिता । कोपयिष्यति । कोपयतु । अकोपयत् । कोपयेत् । कोप्यात् । अचूकुपत् । अकोपयिष्यत् ।

५५. तर्क—भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—तर्कयति । तर्कयामास । तर्कयिता । तर्कयिष्यति । तर्कयतु । अतर्कयत् । तर्कयेत् । तर्क्यात् । अततर्कत् । अतर्कयिष्यत् ।

५६. वृतु – भाषार्थः । सेट् ।

दशलकारेषु—वर्तयति । वर्तयामास । वर्तयिता । वर्तयिष्यति ।

---

1. "नाग्लोपिशास्वृदिताम्" से उपधाह्रस्व निषेध, अभ्यास से परे लघु न होने से सन्वद् भाव न हुआ ।

वर्तयतु । अवर्तयत् । वर्तयेत् । वर्त्यात् । अववर्तत् । अवर्तयिष्यत् ।

५७. वृधु—भाषार्थः । सेट् ।

दृ० ल०—वर्धयति । वर्धयामास । वर्धयिता । वर्धयिष्यति । वर्धयतु । अवर्धयत् । वर्धयेत् । वर्ध्यात् । अवीवृधत् । अवर्धयिष्यत् ।

५८ युज[1]—संयमने । सेट् (णि० वि०) ।

दृ० ल०—योजयति । योजयमास । योजयिता । योजयिष्यति । योजयतु । अयोजयत् । योजयेत् । योज्यात् । अयूयुजत् । अयोजयिष्यत् ।

५६ पृच—संयमने । से० (णि० वि०)

दृ० ल०—पर्चयति । पर्चयामास । पर्चयिता । पर्चयिष्यति । पर्चयतु । अपर्चयत् । पर्चयेत् । पर्च्यात् । अपीपृचत् । अपर्चयिष्यत ।

६० अर्च—पूजायाम् से० (णि० वि०)

दृ०ल०—अर्चयति । अर्चयामास । अर्चयिता । अर्चयिष्यति । अर्चयतु । आर्चयत् । अर्चयेत् । अर्च्यात् । आर्चिचत् । आर्चयिष्यत् ।

६१ षह—मर्षणे । से० (णि० वि०)

दृ०ल०—साहयति । साहयाञ्चकार । साहयिष्यति । साहयतु । असाहयत् । साहयेत । साह्यात् । असीषहत्[2] । असाहयिष्यत् ।

६२ वृञ्—वरणे । से० (णि० वि०)

दृ० ल०—वारयति, वारयते । वारयामास । वारयिता ।

---

1. धृष् तक णिच् विकल्प है । णिच् के अभाव में-योजति, युयोज, अयोजीत् इत्यादि रूप भ्वादिगण के समान होंगे ।

2. णिच् के अभाव में-असाहीत, असहीत् ।

वारयिष्यति-ते । वारयतु-ताम् । अवारयत्-त । वारयेत्-त । वार्यात्-वारयिषीष्ट[1] । अवीवरत्-त । अवारयिष्यत्-त ।

६३. जॄ—वयोहानौ । से. (णि० वि०)

दशलकारेषु जारयति । जारयामास । जारयिता । जारयिष्यति । जारयतु । अजारयत् । जारयेत् । जार्यात् । अजीजरत् । अजारयिष्यत्[2] ।

६४. शिष—असर्वोपयोगे । से० (णि० वि०) ।

दशलकारेषु—शेषयति । शेषयामास । शेषयिता । शेषयिष्यति । शेषयतु । अशेषयत् । शेषयेत् । शेष्यात् । अशीशिषत्[3] । अशेषयिष्यत् ।

६५. तप—दाहे । से० (णि० वि०)

दशलकारेषु—तापयति । तापयामास । तापयिता[4] । तापयिष्यति । तापयतु । अतापयत् । तापयेत् । ताप्यात् । अतीतपत् । अतापयिष्यत् ।

६६. तृप—तृप्तौ । से० (णि० वि०)

दशलकारेषु—तर्पयति । तर्पयामास । तर्पयिता[5] । तर्पयिष्यति । तर्पयतु । अतर्पयत् । तर्पयेत् । तर्प्यात् । अतीतृपत् । अतर्पयिष्यत् ।

६७. हिंसी—हिंसायाम् । से० (णि० वि०)

दशलकारेषु—हिंसयति । हिंसयामास । हिंसयिता । हिंसयिष्यति । हिंसयतु । अहिंसयत् । हिंसयेत् । हिंस्यात् । अजिहिंसत् । अहिंसयिष्यत् ।

---

1. पक्षे-वरि-रीषीष्ट ।

2. पक्षे—जरति । अजारीत् ।

3. पक्षे—शेष्टा । अशिक्षत् (क्स) ।

4. पक्षे—तपति । तप्ता । अताप्सीत् ।

5. पक्षे—तर्पिता, त्रर्प्ता, त्रप्ता । तर्प्स्यति, त्रप्स्यति । लङ्-अतृपत्, अतार्प्सीत्-अत्राप्सीत् । स्पृशमृशतृप''—से सिच् विकल्प ।

६८. अर्ह—पूजायाम् । से० (णि० वि०)

द० ल०—अर्हयति । अर्हयमास[1] । अर्हयिता । अर्हयिष्यति । अर्हयतु । आर्हयत् । अर्हयेत् । अर्ह्यात् । आर्हिहत् । आर्हिष्यत् ।

६९ छद्—अपवारणे । से० (णि० वि०)

द० ल०—छादयति । छादयामास[2] । छादयिता । छादयिष्यति । छादयतु । अच्छादयत् । छादयेत् । छाद्यात् । अचीच्छदत्[3] । अच्छादयिष्यत् ।

७०. धून्—कम्पने । से. (णि. वि.)

दशलकारेषु—धूनयति । धूनयामास । धूनयिता । धूनयिष्यति । धूनयतु । अधूनयत् । धूनयेत् । धून्यात् । अदूधुनत् । अधूनयिष्यत् ।

७१. प्रीन्—तर्पणे । से. (णि. वि.)

दशलकारेषु—प्रीणयति[4] । प्रीणयामास । प्रीणयिता । प्रीणयिष्यति । प्रीणयतु । अप्रीणयत् । प्रीणयेत् । प्रीण्यात् । अपीप्रणत् । अप्रीणयिष्यत् ।

७२. वच—परिभाषणे । सेट् ।

दशलकारेषु—वाचयति । वाचयामास । वाचयिता । वाचयिष्यति । वाचयतु । अवाचयत् । वाचयेत् । वाच्यात् । अवावचत् । अवाचयिष्यत् ।

७३. मान—पूजायाम् । सेट् ।

दशलकारेषु—मानयति । मानयामास । मानयिता । मानयिष्यति ।

1. पक्षे—हिंसति । अहिंसीत् ।

2. पक्षे—छदति । लु.—अच्छादीत्, अच्छदिष्ट ।

3. "धूञ्प्रीञो नुक्" ।

4. पक्षे—प्रयाति-ते ।

5. णिच् के अभाव में—वचति । उवाच । वक्ता । वक्ष्यति । वचतु । अवचत् । वचेत् । उच्यात् । अवाक्षीत् ।

मानयतु । अमानयत् । मानयेत् । मान्यात् । अममानत् । अमानयिष्यत्[1] ।

७४. भू—प्राप्तौ । सेट् । आत्मनेपदी ।

दशलकारेषु—भावयति । भावयाञ्चक्रे-मासे-बभूवे । भावयिता । भावयिष्यते । भावयताम् । अभावयत । भावयेत । भावयिषीष्ट । अबीभवत । अभावयिष्यत[2] ।

७५. मार्ग—अन्वेषणे । सेट् ।

दशलकारेषु—मार्गयति । मार्गयामास । मार्गयिता । मार्गयिष्यति । मार्गयतु । अमार्गयत् । मार्गयेत् । मार्ग्यात् । अममार्गत् । अमार्गयिष्यत्[3] ।

७६. धृप—सहने । सेट् ।

दशलकारेषु—धर्षयति । धर्षयामास । धर्षयिता । धर्षयिष्यति धर्षयतु । अधर्षयत् । धर्षयेत् । धर्ष्यात् । अदीधृषत्-अदधर्षत् । अधर्षयिष्यत्[4] । इत्याधृषीयाः[5] ॥

अथादन्ताः ।

---

1. णिजभाव में – मानति । ममान । मानिता । मानिष्यति । मानतु । अमानत् । मानेत् । मान्यात् । अमानीत् अमानिष्यत् ।

2. णिच् के अभाव में—भवते । बभूवे । भविता । भविष्यते । भवताम् । अभवत । भवेत । भविषीष्ट । अभविष्ट । अभविष्यत । यदि णि सहित को ही आत्मनेपद माना जाय तो भवति इत्यादि भ्वादिगण तुल्य रूप होंगे ।

3. णिजभाव में मार्गति । ममार्ग । मार्गिता । मार्गिष्यति । मार्गतु । अमार्गत् । मार्गेत् । मार्ग्यात् । अमार्गीत् । अमार्गिष्यत् ।

4. णिजभाव में—धर्षति । दधर्ष । धर्षिता । धर्षिष्यति । धर्षतु । अधर्षत् । धर्षेत् । धृष्यात् । अधर्षीत् । (नोट) । अधर्षिष्यत् ।

5. युज् से धृप् तक णिच् का विकल्प था

७७. कथ—वाक्य प्रबन्धे[1]। सेट्।

दशलकारेषु—कथयति[2]। कथयामास-ञ्चकार-म्बभूव। कथयिता। कथयिष्यति। कथयतु। अकथयत्। कथयेत्। कथ्यात्[3]। अचकथत्[4]। अकथयिष्यत्।

७८. गण—संख्याने। सेट्

दशलकारेषु—गणयति। गणयामास। गणयिता। गणयिष्यति। गणयतु। अगणयत्। गणयेत्। गण्यात्। अजीगणत्-अजगणत्[5]। अगणिष्यत्।

७९. रच—प्रतियत्ने। सेट्।

दशलकारेषु—रचयति। रचयामास। रचयिता। रचयिष्यति। रचयतु। अरचयत्। रचयेत्। रच्यात्। अररचत्। अरचयिष्यत्।

८०. कल[6]—गतौ, संख्याने च। सेट्।

दशलकारेषु—कलयति। कलयामास। कलयिता। कलयिष्यति। कलयतु। अकलयत्। कलयेत्। कल्यात्। अचकलत्। अकलयिष्यत्।

८१. मह—पूजायाम्। सेट्।

दशलकारेषु—महयति। महयामास। महयिता। महयिष्यति। महयतु। अमहयत्। महयेत्। मह्यात्। अममहत्। अमहयिष्यत्।

---

1. अदन्त होने से ये धातु अग्लोपी हैं, अतः "नाग्लोपिशास्—" से उपधाह्रस्व तथा दीर्घ सन्वद्भाव न होंगे।

2. अल्लोप के स्थानिवद् भाव से वृद्धि न हुई।

3. "णेरनिटि" से णिलोप।

4. अग्लोपी होने से दीर्घ, सन्वद् भाव न हुए।

5. "ईच गणः" से अभ्यास को ईकार और अकार।

6. कल धातु अनेकार्थक है। कलिः कवीनां कामधेनुः।

८२. सूच—पैशुन्ये । सेट् ।

दशलकारेषु—सूचयति । सूचयामास । सूचयिता । सूचयिष्यति । सूचयतु । असूचयत् । सूचयेत् । सूच्यात् । असुसूचत्[1] । असूचयिष्यत् ।

८३. कुमार—क्रीडायाम् । सेट् ।

दशलकारेषु—कुमारयति । कुमारयामास । कुमारयिता । कुमारयिष्यति । कुमारयतु । अकुमारयत् । कुमारयेत् । कुमार्यात्[2] । अचुकुमारत् । अकुमारयिष्यत् ।

८४. ऊन—परिहाणे । सेट् ।

दशलकारेषु—ऊनयति । ऊनयामास । ऊनयिता । ऊनयिष्यति । ऊनयतु । औनयत्[3] । ऊनयेत् । ऊन्यात् । औननत्[4] । औनयिष्यत् ।

८५. ध्वन—शब्दे । सेट् ।

दशलकारेषु—ध्वनयति । ध्वनयामास । ध्वनयिता । ध्वनयिष्यति । ध्वनयतु । अध्वनयत् । ध्वनयेत् । ध्वन्यात् । अदध्वनत् । अध्वनयिष्यत् ।

८६. सूत्र—वेष्टने । सेट् ।

दशलकारेषु—सूत्रयति । सूत्रयाञ्चकार-मास-म्बभूव । सूत्रयिता । सूत्रयिष्यति । सूत्रयतु । असूत्रयत् । सूत्रयेत् । सूत्र्यात् । असुसूत्रत् । असूत्रयिष्यत् ।

८७. मूत्र—प्रस्रवणे । सेट् ।

दशलकारेषु—मूत्रयति । मूत्रयामास । मूत्रयिता । मूत्रयिष्यति ।

---

1. षोपदेश न होने से षत्व न हुआ ।

2. "आटश्च" ।

3. "णिच्यच आदेशो न द्वित्वे कर्तव्ये"—अल्लोप से प्रथम द्वित्व, फिर उत्तर खण्ड में अल्लोप । यदि द्वित्व से पूर्व अल्लोप करें तो 'नि' को द्वित्व होकर 'औनिनत्' ऐसा अशुद्ध रूप हो जाता ।

मूत्रयतु । असूत्रयत् । मूत्रयेत् । मूत्र्यात् । असुमूत्रत् । असूत्रयिष्यत् ।

८८. पद—गतौ । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—पदयते । पदयामासे-श्चक्रे । पदयिता । पदयिष्यते । पदयताम् । अपदयत् । पदयेत् । पदयिषीष्ट । अपपदत् । अपदयिष्यत ।

८९. गृह—ग्रहणे । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—गृहयते । गृहयामासे-श्चक्रे । गृहयिता । गृहयिष्यते । गृहयताम् । अगृहयत । गृहयेत । गृहयिषीष्ट । अजगृहत । अगृहयिष्यत ।

९०. मृग—अन्वेषणे । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—मृगयते । मृगयामासे । मृगयिता । मृगयिष्यते । मृगयताम् । अमृगयत । मृगयेतु । मृगयिषीष्ट । अममृगत । अमृगयिष्यत ।

९१. शूर—विक्रान्तौ । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—शूरयते । शूरयामासे-श्चक्रे । शूरयिता । शूरयिष्यते । शूरयताम् । अशूरयत । शूरयेत । शूरयिषीष्ट । अशुशूरत । अशूरयिष्यत ।

९२. वीर—विक्रान्तौ । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—वीरयते । वीरयामासे-श्चक्रे । वीरयिता । वीरयिष्यते । वीरयताम् । अवीरयत । वीरयेत । वीरयिषीष्ट । अविवीरत । अवीरयिष्यत ।

९३. गर्व—माने । आ. प. सेट् ।

दशलकारेषु—गर्वयते । गर्वयामासे-श्चक्रे । गर्वयिता । गर्वयिष्यते । गर्वयताम् । अगर्वयत । गर्वयेत । गर्वयिषीष्ट । अजगर्वत । अगर्वयिष्यत ।

इति चुरादिगण प्रकरणम् ॥

अथ णिजन्त प्रक्रिया

१. भू—सत्तायाम् ।

लट्

प्र० पु०	भावयति	भावयतः	भावयन्ति
म० ,,	भावयसि	भावयथः	भावयथ
उ० ,,	भावयामि	भावयावः	भावयामः

लिट्

प्र० पु०	भावयाञ्चकार	भावयाञ्चक्रतुः	भावयाञ्चक्रुः
म० ,,	भावयाञ्चकर्थ	भावयाञ्चक्रथुः	भावयाञ्चक्र
उ० ,,	भावयाञ्चकार-कर	भावयाञ्चकृव	भावयाञ्चकृम

लुट्

प्र० पु०	भावयिता	भावयितारौ	भावयितारः
म० ,,	भावयितासि	भावयितास्थः	भावयितास्थ
उ० ,,	भावयितास्मि	भावयितास्वः	भावयितास्मः

लृट्

प्र० पु०	भावयिष्यति	भावयिष्यतः	भावयिष्यन्ति
म० ,,	भावयिष्यसि	भावयिष्यथः	भावयिष्यथ
उ० ,,	भावयिष्यामि	भावयिष्यावः	भावयिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	भावयतु	भावयताम्	भावयन्तु
म० ,,	भावय-तात्	भावयतम्	भावयत
उ० ,,	भावयानि	भावयाव	भावयाम

लङ्

प्र० पु०	अभावयत्	अभावयताम्	अभावयन्
म० ,,	अभावयः	अभावयतम्	अभावयत
उ० ,,	अभावयम्	अभावयाव	अभावयाम

वि. लिङ.

प्र० पु०	भावयेत्	भावयेताम्	भावयेयुः
म० ,,	भावयेः	भावयेतम्	भावयेत
उ० ,,	भावयेयम्	भावयेव	भावयेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भाव्यात्[1]	भाव्यास्ताम्	भाव्यासुः
म० ,,	भाव्याः	भाव्यास्तम्	भाव्यास्त
उ० ,,	भाव्यासम्	भाव्यास्व	भाव्यास्म

लुङ्

प्र० पु०	अबीभवत्[2]	अबीभवताम्	अबीभवन्
म० ,,	अबीभवः	अबीभवतम्	अबीभवत
उ० ,,	अबीभवम्	अबीभवाव	अबीभवाम

लृङ्

प्र० पु०	अभावयिष्यत्	अभावयिष्यताम्	अभावयिष्यन्
म० ,,	अभावयिष्यः	अभावयिष्यतम्	अभावयिष्यत
उ० ,,	अभावयिष्यम्	अभावयिष्याव	अभावयिष्याम

1. "णेरनिटि" णिलोप।

2. अ भू अ त्, इति स्थितौ 'द्वित्वे कार्ये 'णावच आदेशस्य निषेधात्' पूर्वं द्वित्वे ततः णिलोपप्रत्ययलक्षणेनोत्तरखण्डे वृद्ध्यावादेशे "णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः" इति ह्रस्वे, सन्वद्भावे, "ओः पुयण्ज्यपरे" इत्यनेनाभ्यासोकारस्येत्वे 'दीर्घो लघोः' इति दीर्घे 'अबीभवत्' इति रूपम्।

२. पूञ्-पवने (क्र्यादि० उभ०)

दशलकारेषु—पावयति[1]। पावयाञ्चकार-मास-म्बभूव। पावयिता। पावयिष्यति। पावयतु। अपावयत्। पावयेत्। पाव्यात्। अपीपवत्। अपावयिष्यत्।

३. मूङ्-बन्धने (भ्वादि० आ०)

दशलकारेषु - मावयति। मावयाञ्चकार-मास-म्बभूव। मावयिता। मावयिष्यति। मावयतु। अमावयत्। मावयेत्। माव्यात्। अमीमवत्। अमावयिष्यत्।

४. यु—मिश्रणामिश्रणयोः (अदादि० प०)

दशलकारेषु—यावयति। यावयाञ्चकार-मास-म्बभूव। यावयिता। यावयिष्यति। यावयतु। अयावयत्। यावयेत्। याव्यात्। अयीयवत्। अयावयिष्यत्।

५. रु—शब्दे (अदादि०प०)

दशलकारेषु—रावयति[2]। रावयामास-ञ्चकार-म्बभूव। रावयिता। रावयिष्यति। रावयतु। अरावयत्। रावयेत्। राव्यात्। अरीरवत्। अरावयिष्यत्।

६. लूञ्-छेदने (क्र्यादि० प०)

दशलकारेषु—लावयति। लावयाञ्चकार-मास-म्बभूव। लावयिता। लावयिष्यति। लावयतु। अलावयत्। लावयेत्। लाव्यात्। अलीलवत्। अलावयिष्यत्।

---

1. देवदत्तः पुनाति यज्ञदत्तस्तं प्रेरयति-पावयति। सभी णयन्त धातुओं को 'णिचश्च' से कर्तृगामि क्रिया फल होते आत्मनेपद भी हो सकता है।

2. देवदत्तः रौति यज्ञदत्तस्तं प्रेरयति इति यज्ञदत्तो देवदत्तं रावयति। ध्यान रहे कि--अकर्मक धातु भी णयन्त में सकर्मक हो जाते हैं।

७. जु–गतौ (सौत्रो धातुः)

दशलकारेषु—जावयति । जावयामास-ञ्चकार-म्बभूव । जावयिता । जावयिष्यति । जावयतु । अजावयत् । जावयेत् । जाव्यात् । अजीजवत्[1], अजावयिष्यत् ।

८. स्रु–प्रसवणे (भ्वा० प०)

दशलकारेषु—स्रावयति[2] । स्रावयामास-ञ्चकार-म्बभूव । स्रावयिता । स्रावयिष्यति । स्रावयतु । अस्रावयत् । स्रावयेत् । स्राव्यात् । असिस्रवत्[3]-असुस्रवत् । अस्रावयिष्यत् ।

९. चुर्–स्तेये (चुरा० उभ०)

दशलकारेषु—चोरयति[4] । चोरयामास । चोरयिता । चोरयिष्यति । चोरयतु । अचोरयत् । चोरयेत् । चोर्यात् । अचूचुरत् । अचोरयिष्यत् ।

१०. टु ओ श्वि–गतिवृद्ध्योः (भ्वा० प०)

दशलकारेषु—श्वाययति । श्वाययमास । श्वाययिता । श्वाययिष्यति । श्वाययतु । अश्वाययत् । श्वाययेत् । श्वाय्यात् । अशूशवत्[5]-अशिश्वयत्[6] । अश्वाययिष्यत् ।

---

1 "ओः पुयण्ज्यपरे" अभ्यासोकार को इकार ।

2. जलं स्रवति, तत् प्रेरयति--स्रावयति ।

3. "स्रवति शृणोति द्रवति प्रवति प्लवति च्यवतीनां वा" से अभ्यासोकार को इकार । संयोगपरक होने से इकार दीर्घ है (लघु नहीं) अतः "दीर्घो लघोः" से दीर्घ नहीं हुआ ।

4. णयन्त चोरि से प्रेरणार्थक णिच् , वृद्धि को बाध कर पूर्व विप्रतिषेध णिलोप (णयल्लोपावियङ्यण्गुणवृद्धिदीर्घेभ्यः पूर्वविप्रतिषेधेन)

5. "णौ च संश्चङोः" से सम्प्रसारण करके 'शु' को द्वित्व ।

6. सम्प्रसारणाभाव में 'श्वि' को द्वित्व, अभ्यास लघु न होने से दीर्घाभाव ।

११. स्तम्भु—रोधने (क्र्या० प०)

दशलकारेषु—स्तम्भयति । स्तम्भयामास-ञ्चकार-म्बभूव । स्तम्भयिता । स्तम्भयिष्यति । स्तम्भयतु । अस्तम्भयत् । स्तम्भयेत् । स्तम्भ्यात् । अतस्तम्भत्[1] । अस्तम्भयिष्यत् ।

१२. षह्—मर्षणे (भ्वा० प०)

दशलकारेषु—साहयति । साहयामास-ञ्चकार-म्बभूव । साहयिता । साहयिष्यति । साहयतु । असाहयत् । साहयेत् । साह्यात् । असीषहत्[2] । असाहयिष्यत् ।

१३ षिवु—तन्तु सन्ताने (दि० प०)

दशलकारेषु—सेवयति । सेवयाञ्चकार-मास-म्बभूव । सेवयिता । सेवयिष्यति । सेवयतु । असेवयत् । सेवयेत् ! सेव्यात् । असीषिवत्[3] । असेवयिष्यत् ।

१४ ञिष्वप्—शये (अदा० पर०)

दशलकारेषु—स्वापयति । स्वापयामास-ञ्चकार-म्बभूव । स्वापयिता । स्वापयिष्यति । स्वापयतु । अस्वापयत् । स्वापयेत-स्वाप्यात् । असूषुपत्[4] । अस्वापयिष्यत् ।

---

1. 'अवातस्तम्भत्' में "अवाच्चालम्बनाविदूर्ययोः" से षत्व प्राप्त हुआ, "स्तम्भुसिवुसहां चङि" से निषेध ।

2. 'न्यसीषहत' में पूर्वसकार को "परिनिविभ्यः" से प्राप्तषत्व का स्तम्भुसिवुसहां चङि" से निषेध ।

3. पर्यसीषिवत्— 'स्तम्भुसिवु...'' से षत्वनिषेध ।

4. "स्वापेश्चङि" से सम्प्रसारण, पूर्वरूप, 'सुप्' को द्वित्व, सन्वद्भाव, दीर्घ ।

१५ हन—हिंसागत्योः (अदा० पर०)

दशलकारेषु—घातयति[1] । घातयामास-ञ्चकार-म्बभूव । घातयिता । घातयिष्यति । घातयतु । अघातयत् । घातयेत् । घात्यात् । अजीघतत्[2] । अघातयिष्यत् ।

१६ ष्ठा—गतिनिवृत्तौ (भ्वा० पर०)

दशलकारेषु—स्थापयति[3] । स्थापयामास-ञ्चकार-म्बभूव । स्थापयिता । स्थापयिष्यति । स्थापयतु । अस्थापयत् । स्थापयेत् । स्थाप्यात् । अतिष्ठिपत्[4] । अस्थापयिष्यत् ।

१७ घ्रा—गन्धोपादाने (भ्वा० पर०)

दशलकारेषु—घ्रापयति[5] । घ्रापयामास-ञ्चकार-म्बभूव । घ्रापयिता । घ्रापयिष्यति । घ्रापयतु । अघ्रापयत् । घ्रापयेत् । घ्राप्यात् । अजिघ्रिपत्[6]-अजिघ्रपत् । अघ्रापयिष्यत् ।

१८ शो—तनूकरणे (दिवा० पर०)

दशलकारेषु—शाययति । शाययामास-ञ्चकार-म्बभूव । शाययिता । शाययिष्यति । शाययतु । अशाययत् । शाययेत् । शाय्यात् । अशीशयत् । अशाययिष्यत् ।

---

1. हन्+इ, उपधावृद्धि, "हनस्तोऽचिण्णलोः" नकार को तकार, "हो हन्तेः..." से कुत्व ।

2. "अभ्यासाच्च" कुत्व ।

3. अर्तिह्रीव्लीरी..." से पुक् ।

4. "तिष्ठतेरित्" से उपधा को इकार, स्थिप् को द्वित्व ।

5. पुक् ।

6. जिघ्रतेर्वा" से उपधा को वैकल्पिक इत्, इत् के अभाव में केवल अभ्यास में इकार श्रवण होगा—अजिघ्रपत् ।

१९ ह्वेञ्—स्पर्धायाम् (भ्वादि० उभ०)

दशलकारेषु—ह्वाययति[1] । ह्वाययामास-ञ्चकार-म्बभूव । ह्वाययिता । ह्वाययिष्यति । ह्वाययतु । अह्वाययत् । ह्वाययेत् । ह्वाय्यात् । अजूहवत्[2]-अजुहावत् । अह्वायिष्यत् ।

२० पा—पाने (भ्वादि० पर०)

दशलकारेषु—पाययति[3] । पाययामास-ञ्चकार-म्बभूव । पाययिता । पाययिष्यति । पाययतु । अपाययत् । पाययेत् । पाय्यात् । अपीप्यत्[4] । अपाययिष्यत् ।

२१ पा—रक्षणे (अदा० पर०)

दशलकारेषु—पालयति[5] । पालयामास-ञ्चकार-म्बभूव । पालयिता । पालयिष्यति । पालयतु । अपालयत् । पालयेत् । पाल्यात् । अपीपलत् । अपालयिष्यत् ।

२२ वा—गतिगन्धनयोः (अदा० पर०)

दशलकारेषु—वाजयति[6] । वाजयामास-ञ्चकार-म्बभूव । वाजयिता ।

---

1. "आदेश उपदेशेऽशिति" से आकार करने के बाद पुक् को बाध कर "शाच्छासा.." से युक् ।

2. "ह्वः सम्प्रसारणम्" से सम्प्रसारण, 'हु' को द्वित्व, काण्यादिगणपठित होने से उपधा ह्रस्व का विकल्प, उपधाह्रस्व में अभ्यासलघु होने से दीर्घ, ह्रस्व भाव में लघुपरक अभ्यास न होने से सन्वद्भाव दीर्घ न हुए ।

3. युक् ।

4. "लोपः पिबते रीच्चाऽभ्यासस्य" से उपधा का लोप और अभ्यास को ईकार ।

5. "पाते र्णौ लुग्वक्तव्यः" लुक् आगम ।

6. "वोविधूनने जुक्" । अर्थान्तर में पुगागम होकर—वापयति । अवीवपत् इत्यादि रूप होंगे ।

वाजयिष्यति । वाजयतु । अवाजयत् । वाजयेत् । वाज्यात् अवीवजत् । अवाजयिष्यत् ।

२३ शद्लृ—विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वादि० पर०)

दशलकारेषु—शातयति । शातयामास-ञ्चकार-म्बभूव । शातयिता । शातयिष्यति । शातयतु । अशातयत् । शातयेत् । शात्यात् । अशीशतत्[1] । अशातयिष्यत् ।

२४ रुह्—बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वादि० पर०)

दशलकारेषु—रोपयति[2] । रोपयामास-ञ्चकार-म्बभूव । रोपयिता । रोपयिष्यति । रोपयतु । अरोपयत् । रोपयेत् । रोप्यात् । अरूरुपत् । अरोपयिष्यत् ।

२५ दुष्—वैकृत्ये (भ्वादि० पर०)

दशलकारेषु—दूषयति । दूषयामास-ञ्चकार-म्बभूव । दूषयिता । दूषयिष्यति[3] । दूषयतु । अदूषयत् । दूषयेत् । दूष्यात् । अदूदुषत् । अदूषयिष्यत् ।

पक्षे—दोषयति । दोषयामास । दोषयिता । दोषयिष्यति । दोषयतु । अदोषयत् । दोषयेत् । दोष्यात् । अदूदुषत् ।

२६ अन—प्राणने (अदा० पर०)

दशलकारेषु—प्राणयति । प्राणयामास । प्राणयिता । प्राणयिष्यति । प्राणयतु । प्राणयत् । प्राणयेत् । प्राण्यात् ।

---

1. गतिभिन्न अर्थ में "शदेरगतौ तः" से तकारादेश । गत्यर्थ में—शादयति, अशीशदत् ।

2. "रुहः पोऽन्यतरस्याम्" से हकार को पकारादेश । पक्षे—रोहयति, अरूरुहत् ।

3. "दोषो णौ" से गुण को बाधकर उपधा को ऊकार ।

प्राणिणत्[1] । प्राणयिष्यत् ।

२७ इण्—गतौ (अदा० पर०)

दशलकारेषु—गमयति[2] । गमयामास-ञ्चकार-म्बभूव । गमयिता । गमयिष्यति । गमयतु । अगमयत् । गमयेत् । गम्यात् । अजीगमत् । अगमयिष्यत् ।

२८ घट—चेष्टायाम् (चुरा० पर०)

दशलकारेषु—घटयति । घटयामास-ञ्चकार-म्बभूव । घटयिता । घटयिष्यति । घटयतु । अघटयत् । घटयेत् । घट्यात् । अजीघटत् । अघटयिष्यत् ।

२९. ज्ञप—ज्ञाने, ज्ञापने च । सेट् ।

दशलकारेषु—ज्ञपयति[3] । ज्ञपयामास-ञ्चकार-म्बभूव । ज्ञपयिता । ज्ञपयिष्यति । ज्ञपयतु । अज्ञपयत् । ज्ञपयेत् । ज्ञप्यात् । अजिज्ञपत् । अज्ञपयिष्यत् ।

३०. रभ—राभस्ये (भ्वा० आ०) ।

दशलकारेषु—रम्भयति[4] । रम्भयामास । रम्भयिता । रम्भयिष्यति । रम्भयतु । अरम्भयत् । रम्भयेत् । रम्भ्यात् । अररम्भत् । अरम्भयिष्यत् ।

---

1. द्वितीय एकाच् 'नि' को द्वित्व । "उभौ साभ्यासस्य" दोनों लकारों को णत्व ।

2. "णौ गमिरबोधने" से गति अर्थ में इण् को गम् आदेश । "मितां ह्रस्वः" से उपधा को ह्रस्व । बोधन अर्थ में—प्रत्याययति, प्रत्यायियत् । बोधन अर्थ में 'अवगमयति' प्रयोग अवपूर्वक गम्लृ (गतौ) का समझना चाहिये ।

3. "मितां ह्रस्वः" ।

4. "रधिजभोरचि" नुम् ।

३१. डुलभष् - लाभे (भ्वा० आ०)।

दशलकारेषु—लम्भयति[1] । लम्भयामास । लम्भयिता । लम्भयिष्यति । लम्भयतु । अलम्भयत् । लम्भयेत् । लम्भ्यात् । अललम्भत् । अलम्भयिष्यत् ।

३२. ईर्ष्य—ईर्ष्यायाम् (भ्वा० पर०)।

दशलकारेषु—ईर्ष्ययति । ईर्ष्ययामास । ईर्ष्ययिता । ईर्ष्ययिष्यति । ईर्ष्ययतु । ऐर्ष्ययत् । ईर्ष्ययेत् । ईर्ष्यात् । ऐर्ष्यियत्[2]-ऐर्षिष्यत् । ऐर्ष्ययिष्यत् ।

अथ ण्यन्त धातूनां तालिका

धातु	लट्	लङ्
अट्	आटयति	आटिटत्[3]
अर्च्	अर्चयति	आर्चिचत्
अश	आशयति	आशिशत्
ऋ	अर्पयति[4]	आर्पिपत्
एध	एधयति	ऐदिधत्
कृत	कीर्तयति	अचीकृतत्-अचिकीर्तत्
गुह	गूहयति[5]	अजूगुहत्
चकास	चकासयति	अचीचकासत्-अचचकासत्

---

1. "लभेश्च" नुम् । 2 "ईर्ष्यतेस्तृतीयस्येति वक्तव्यम्" की व्याख्याभेद से 'यि' द्वित्व करने से 'ऐर्ष्यियत्' । 'ष्यि' को द्वित्व करने से अभ्यास में षकार श्रवण-ऐर्षिष्यत् ।

3. अजादि धातु के द्वितीय एकाच 'टि' को द्वित्व ।

4. "अर्तिह्रीव्ली—" से पुक् आगम, "पुगन्त" से उपधागुण ।

5. "ऊदुपधाया गोहः" ।

धातु	लट्	लङ्
जन्	जनयति	अजीजनत्
जीव	जीवयति	अजीजिवत्-अजिजीवत्
त्वर	त्वरयति	अतत्वरत्
ज्वर	ज्वरयति	अजिज्वरत्
स्मृ	स्मारयति	असस्मरत्
दीप	दीपयति	अदीदिपत्-अदिदीपत्
दृ	दारयति	अददरत्
द्रु	द्रावयति	अदिद्रवत्-अदुद्रुवत्
नट	नटयति	अनीनटत्
पीड	पीडयति	अपीपिडत्-अपिपीडत्
पूज्	पावयति	अपीपवत्
प्रथ	प्रथयति	अपप्रथत्
भास	भासयति	अबीभसत्-अबभासत्
भी	भीषयते भाययते भाययति	अबीभिषत् अबीभयत अबीभयत्
भ्राज	भ्राजयति	अबिभ्रजत्-अबभ्राजत्
मृज	मार्जयति	अमीमृजत्-अममार्जत्
यम	यमयति	अयीयमत्
रञ्ज	रञ्जयति रजयति	अररञ्जत् अरीरजत्
वृत	वर्तयति	अवीवृतत्-अववर्तत्
श्रु	श्रावयति	अशिश्रवत्-अशुश्रवत्
कृ	कारयति	अचीकरत्

शास	शासयति	अशशासत
ह्री	ह्रेपयति	अजिह्रिपत्
क्ष्मा	क्ष्मापयति	अचिक्ष्मपत्
स्तृ	स्तारयति	अतस्तरत
वेष्ट	वेष्टयति	अविवेष्टत्-अववेष्टत्

इति ण्यन्तप्रक्रिया ।

अथ सन्नन्तप्रक्रिया

१ पठ—व्यक्तायां वाचि (भ्वा० पर०)

दशलकारेषु—पिपठिषति[1] । पिपठिषाञ्चकार । पिपठिषिता । पिपठिषिष्यति । पिपठिषतु । अपिपठिषत् । पिपठिषेत् । पिपठिष्यात् । अपिपठिषीत् । अपिपठिषिष्यत् ।

२ अद—भक्षणे (अदा० पर०)

दशलकारेषु—जिघत्सति[2] । जिघत्साञ्चकार । जिघत्सिता । जिघत्सिष्यति । जिघत्सतु । अजिघत्सत् । जिघत्सेत् । जिघत्स्यात् । अजिघत्सीत् । अजिघत्सिष्यत् ।

३ डुकृञ्—करणे (तना० पर०)

दशलकारेषु चिकीर्षति[3] । चिकीर्षाञ्चकार । चिकीर्षिता । चिकीर्षिष्यति । चिकीर्षतु । अचिकीर्षत् । चिकीर्षेत् । चिकीर्ष्यात् । अचिकीर्षीत् । अचिकीर्षिष्यत् ।

४ हन्—हिंसागत्योः (अदा० पर०)

दशलकारेषु—जिघांसति । जिघांसाञ्चकार । जिघांसिता ।

---

1. पठ+स, द्वित्व, "सन्यतः" से इत्व, षत्व, 'पिपठिष्' की धातु संज्ञा हो कर लट्, तिप्, शप् । सन्नन्त होने के बाद सभी धातु अनेकाच् होने से सेट् होंगे ।

2. "लुङ्सनोर्घस्लृ" "सस्यार्धधातुके" ।

3. कृ+स्, "अज्झनगमां सनि" से दीर्घ, "इको झल्" से कित्वाद् गुणाभाव, "ऋत इद्धातोः" से इत्, रपर, किर्+स्, द्वित्व, "हलि च" से उपधादीर्घ ।

जिघांसिष्यति । जिघांसतु । अजिघांसत् । जिघांसेत् । जिघांस्यात् । अजिघांसीत् । अजिघांसिष्यत् ।

५ गम्लृ—गतौ (भ्वा० पर०)

दशलकारेषु—जिगमिषति[1] । जिगमिषाञ्चकार । जिगमिषिता । जिगमिषिष्यति । जिगमिषतु । अजिगमिषत् । जिगमिषेत् । जिगमिष्यात् । अजिगमिषीत् । अजिगमिषिष्यत् ।

६ इङ्—अध्ययने (अदा० आत्मने०)

दशलकारेषु—अधिजिगांसते[2] । अधिजिगांसाञ्चक्रे । अधिजिगांसिता । अधिजिगांसिष्यते । अधिजिगांसताम् । अध्यजिगांसत । अधिजिगांसेत । अधिजिगांसीत । अध्यजिगांसिष्ट । अध्यजिगांसिष्यत् ।

७ रुदिर—अश्रुविमोचने (अदा० पर०)

दशलकारेषु—रुरुदिषति[3] । रुरुदिषाञ्चकार । रुरुदिषिता । रुरुदिषिष्यति । रुरुदिषतु । अरुरुदिषत् । रुरुदिषेत् । रुरुदिष्यात् । अरुरुदिषीत् । अरुरुदिषिष्यत् ।

---

1. "सनिच" से गम् आदेश । बोधन अर्थ में प्रतीषिषति, प्रत्यैषिषीत् रूप होंगे ।

2. "इङश्च" गम् आदेश, द्वित्व, "अज्झनगमां सनि" से दीर्घ । "पूर्ववत्सनः"—यदि धातु आत्मनेपदी हो तो सन्नन्त होने पर भी आत्मनेपद होगा और यदि परस्मैपदी हो तो सन्नन्त होकर परस्मैपदी रहेगा ।

3. रोदितुम् इच्छति इति विग्रहः । रुद्+सन्, इट्, द्वित्व, "रुद विदमुषग्रहस्वपिप्रच्छः संश्च" से सन् के कित् होने से लघूपधगुण न हुआ । विद, मुष, ग्रह में भी सन् कित् होगा ।

८ विद्—ज्ञाने (अदा० पर०)

दशलकारेषु—विविदिषति । विविदिषाञ्चकार । विविदिषिता । विविदिषिष्यति । विविदिषतु । अविविदिषत् । विविदिषेत् । विविदिष्यात् । अविविदिषीत् । अविविदिषिष्यत् ।

मुष्—स्तेये (क्र्यादि० पर०)

दशलकारेषु—मुमुषिषति । मुमुषिषाञ्चकार । मुमुषिषिता । मुमुषिषिष्यति । मुमुषिषतु । अमुमुषिषत् । मुमुषिषेत् । मुमुषिष्यात् । अमुमुषिषीत् । अमुमुषिष्यत् ।

१० ग्रह्—उपादाने (क्र्यादि० उभ०)

दशलकारेषु—जिघृक्षति[1] । जिघृक्षाञ्चकार । जिघृक्षिता । जिघृक्षिष्यति । जिघृक्षतु । अजिघृक्षत् । जिघृक्षेत् । जिघृक्ष्यात् । अजिघृक्षीत् । अजिघृक्षिष्यत् ।

११ गुह्—सम्वरणे (भ्वादि० पर०)

दशलकारेषु—जुघुक्षति[2] । जुघुक्षाञ्चकार । जुघुक्षिता । जुघुक्षिष्यति । जुघुक्षतु । अजुघुक्षत् । जुघुक्षेत् । जुघुक्ष्यात् । अजुघुक्षीत् । अजुघुक्षिष्यत् ।

१२ ञिष्वप—शये (अदा० पर०)

दशलकारेषु—सुषुप्सति[3] । सुषुप्साञ्चकार । सुषुप्सिता । सुषुप्सिष्यति । सुषुप्सतु । असुषुप्सत् । सुषुप्सेत् । सुषुप्स्यात् ।

1. "हलन्ताच्च" से सन् कित् । ध्यान रहे कि—ग्रह गुह को "सनिग्रहगुहोश्च" से इट् का निषेध है ।

2. ग्रहीतुम् इच्छति । ग्रह | सन्, "रुदविद—से सन् कित्, "ग्रहिज्या..." से सम्प्रसारण, "होढः" "षढोःकःसि" षत्व ।

3. "रुद विद..." से सन्, कित् होने से "वचिस्वपि..." से सम्प्रसारण, लघूपधगुणाभाव ।

१३ प्रच्छ – ज्ञीप्सायाम् (तुदा० पर०)

दशलकारेषु—पिपृच्छिषति[1] । पिपृच्छिषाञ्चकार । पिपृच्छिषिता । पिपृच्छिषिष्यति । पिपृच्छिषतु । अपिपृच्छिषत्[2] । पिपृच्छिषेत् । पिपृच्छिष्यात् । अपिपृच्छिषीत् । अपिपृच्छिषिष्यत् ।

१४ कृ —विक्षेपे (तुदा० पर०)

दशलकारेषु—चिकरिषति[3] । चिकरिषाञ्चकार । चिकरिषिता । चिकरिषिष्यति । चिकरिषतु । अचिकरिषत् । चिकरिषेत् । चिकरिष्यात् । अचिकरिषीत् । अचिकरिषिष्यत् ।

१५ गृ—निगरणे (तुदा० पर०)

दशलकारेषु—जिगरिषति[4] । जिगरिषाञ्चकार । जिगरिषिता । जिगरिषिष्यति । जिगरिषतु । अजिगरिषत् । जिगरिषेत् । जिगरिष्यात् । अजिगरिषीत् । अजिगरिषिष्यत् ।

१६. दृङ्—आदरे (तुदा० आत्म०)

दशलकारेषु—दिदरिषते[5] । दिदरिषाञ्चक्रे । दिदरिषिता । दिदरिषिष्यते ।

असुपुप्सीत् असुपुप्सिष्यत ।

---

1. सन् कित् होने से "ग्रहिज्या .." से सम्प्रसारण ।

2. प्रच्छ धातु अनिट् है, सन् परे होने "किरश्च" पञ्चभ्यः" से इट् ।

3. कृ धातु को "सनिग्रहगुहोश्च" से इट्निषेध प्राप्त हुआ, "किरश्च-पंचभ्यः" से फिर इट् हुआ । "उरत्" 'सन्यतः' । यहां "वृतो वा" से इट् को दीर्घ इष्ट नहीं ।

4. कृ के समान सभी प्रक्रिया । "अचिविभाषा" से लत्वविकल्प हो कर 'जिगलिषति' इत्यादि रूप भी होंगे ।

5. "पूर्ववत्सनः" से आत्मनेपद । धातु अनिट् था, "किरश्चपञ्चभ्यः" से इट् ।

दिदरिषिताम् । अदिदरिषत । दिदरिषेत । दिदरिषिषीष्ट । अदिदरिषिष्ट। अदिदरिषिष्यत ।

१७. धृङ्—अवस्थाने (तुदा० आत्म०)

दशलकारेषु—दिधरिषते । दिधरिषाञ्चक्रे । दिधरिषिता। दिधरिषिष्यते। दिधरिषताम्। अदिधरिषत। दिधरिषेत। दिधरिषिषीष्ट। अदिधरिषिष्ट। अदिधरिषिष्यत।

१८. भू—सत्तायाम (भ्वादि० पर०)

दशलकारेषु—बुभूषति[1] । बुभूषाञ्चकार । बुभूषिता । बुभूषिष्यति। बुभूषतु। अबुभूषत्। बुभूषेत्। बुभूष्यात्। अबुभूषीत्। अबुभूषिष्यत्।

१९. दिवु—क्रीडायाम् (दिवा० पर०)

दशलकारेषु—दुद्यूषति[2]। दुद्यूषाञ्चकार । दुद्यूषिता। दुद्यूषिष्यति। दुद्यूषतु। अदुद्यूषत्। दुद्यूषेत्। दुद्यूष्यात् । अदुद्यूषीत्। अदुद्यूषिष्यत्।

२०. ष्टुञ्—स्तुतौ (अदा० उभ०)

दशलकारेषु – तुष्टूषति[3]। तुष्टूषाञ्चकार। तुष्टूषिता। तुष्टूषिष्यति। तुष्टूषतु। अतुष्टूषत्। तुष्टूषेत्। तुष्टूष्यात्। अतुष्टूषीत्। अतुष्टूषिष्यत्।

---

1. धातु सेट् है परन्तु "सनिग्रहगुहोश्च" से इट् निषेध, "इकोझल्" से सन् कित् होने से गुण न हुआ।

2. देवितुमिच्छति । दिव्+स, धातु तो सेट् है पर "सनीवन्तर्धभ्रस्ज···" से इट् विकल्प, "हलन्ताच्च" से कित्व, "च्छ्वोः शूडनुनासिके च" से वकार को ऊठ्, यण्, द्यू को द्वित्व। इट् करने पर 'दिदेविषति',

3. स्तोतुमिच्छति । स्तु+स, द्वित्व, "शर्पूर्वाःखयः" "इको झल्" से सन् कित् होने से गुणाभाव, "अज्झनगमां सनि" से दीर्घ, "स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात्" के नियम से अभ्यासोत्तर षत्व।

२१. ञिष्वप्—शये (ण्यन्त से सन्)

दशलकारेषु—सुष्वापयिषति[1]। सुष्वापयिषाञ्चकार। सुष्वापयिषिता। सुष्वापयिषिष्यति। सुष्वापयिषतु। असुष्वापयिषत्। सुष्वापयिषेत्। सुष्वापयिष्यात्। असुष्वापयिषीत्। असुष्वापयिषिष्यत्।

२२. साध—संसिद्धौ (स्वादि० पर०)

दशलकारेषु—सिषाधयिषति[2]। सिषाधयिषाञ्चकार। सिषाधयिषिता। सिषाधयिषिष्यति। सिषाधयिषतु। असिषाधयिषत्। सिषाधयिषेत्। सिषाधयिष्यात्। असिषाधयिषीत्। असिषाधयिषिष्यत्।

२३. षिवु—तन्तुसन्ताने (दि० पर०)

दशलकारेषु—सुस्यूषति[3]। सुस्यूषाञ्चकार। सुस्यूषिता। सुस्यूषिष्यति। सुस्यूषतु। असुस्यूषत्। सुस्यूषेत्। सुस्यूष्यात्। असुस्यूषीत्। असुस्यूषिष्यत्।

इट् करने पर—

सिसेविषति। सिसेविषाञ्चकार। सिसेविता इत्यादि।

२४. आप्लृ—व्याप्तौ (स्वादि० उभ०)

दशलकारेषु—ईप्सति[4]। ईप्साञ्चकार। ईप्सिता। ईप्सिष्यति। ईप्सतु। ऐप्सत्। ईप्सेत्। ईप्स्यात्। ऐप्सीत्। ऐप्सिष्यत्।

---

1. स्वापयितुमिच्छति। ण्यन्त 'स्वापि' से सन्, 'स्वाप्' को द्वित्व, "स्वापेश्चङि"... "द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्" से अभ्यास को सम्प्रसारण। "स्तौतिण्योः···" नियम से अभ्यासोत्तर षत्व।

2. साधयितुमिच्छति। "स्तौतिण्यो···" से षत्व।

3. "सनीवन्तर्ध···" से इट् विकल्प। "हलन्ताच्च" से सन् कित् "च्छ्वोः···" से ऊठ्, स्यू को द्वित्व।

4. आप्तुमिच्छति। "आप्ज्ञप्यृधामीत्" 'अप्स' को द्वित्व, "अत्र-लोपोऽभ्यासस्य"।

२५. ऋधु—वृद्धौ (दिवा० स्वादि० पर०)

दशलकारेषु—ईर्त्सति[1] । ईर्त्साञ्चकार । ईर्त्सिता । ईर्त्सिष्यति । ईर्त्सतु । ऐर्त्सत् । ईर्त्सेत् । ईर्त्स्यात् । ऐर्त्सीत् । ऐर्त्सिष्यत् ।

२६. भ्रस्ज्—पाके (तुदा. पर.)

दशलकारेषु—बिभ्रज्जिषति[2]-बिभर्जिषति-बिभ्रक्षति[3] । बिभ्रज्जिषाञ्चकार-बिभर्जिषाञ्चकार-बिभ्रक्षाञ्चकार इत्यादि ।

२७. दम्भु—दम्भने । (स्वादि. पर.)

दशलकारेषु—धिप्सति[4]-धीप्सति । धिप्साञ्चकार-धीप्साञ्चकार । धिप्सिता-धीप्सिता । धिप्सिष्यति-धीप्सिष्यति । धिप्सतु-धीप्सतु । अधिप्सत्-अधीप्सत् । धिप्सेत्-धीप्सेत् । धिप्स्यात्-धीप्स्यात । अधिप्सीत्-अधीप्सीत् । अधिप्सिष्यत्-अधीप्सिष्यत् ।

२८. श्रिञ्—सेवायाम् (भ्वादि. उभ.)

दशलकारेषु—शिश्रीषति[5] । शिश्रीषाञ्चकार । शिश्रीषिता । शिश्रीषिष्यति । शिश्रीषतु । अशिश्रीषत् । शिश्रीषेत् । शिश्रीष्यात् । अशिश्रीषीत् । अशिश्रीषिष्यत् ।

---

1. अर्धितुमिच्छति । 'ईप्सति' के समान प्रक्रिया । इट् का विकल्प "सनीवन्तर्ध · ·" से इट् । इट् करने पर तो अर्दिधिषति ।

2. "सनीवन्तर्ध"—से इट् विकल्प । इट् कर के "भ्रस्जो रोपधयोः"—रम् आगम का विकल्प हो कर दो रूप ।

3. इट् के अभाव में रम् आगम विकल्प—बिभ्रक्षति, बिभर्क्षति दो रूप ।

4. "सनीवन्तर्ध"— इट् विकल्प, "दम्भ इच्च" । इट् हो कर 'दिदम्भिषति' इत्यादि रूप भी होंगे ।

5. "सनीवन्तर्ध"—से इट् विकल्प । "इको झल्" से कित्व होकर गुण नहीं होगा । इट् होकर—शिश्रयिषति ।

२९. स्वृ—शब्दोपतापयोः (भ्वादि. पर.)

दशलकारेषु—सुस्वूर्षति[1]। सुस्वूर्षाञ्चकार। सुस्वूर्षिता। सुस्वूर्षिष्यति। सुस्वूर्षतु। असुस्वूर्षत्। सुस्वूर्षेत्। सुस्वूर्ष्यात्। असुस्वूर्षीत्। असुस्वूर्षिष्यत्।

३०. यु—मिश्रणामिश्रणयोः (अदा. पर.)

दशलकारेषु—युयूषति[2]। युयूषाञ्चकार। युयूषिता। युयूषिष्यति। युयूषतु। अयुयूषत्। युयूषेत्। युयूष्यात्। अयुयूषीत्। अयुयूषिष्यत्।

३१. ऊर्णुञ्—आच्छादने (अदा. उभ.)

दशलकारेषु— ऊर्णुनूषति[3]-ऊर्णुनुविषति-ऊर्णुनविषति। ऊर्णुनूषाञ्चकार-ऊर्णुनुविषाञ्चकार-ऊर्णुनविषाञ्चकार। लङ्—और्णुनूषत्, और्णुनविषत्-और्णुनुविषत्। लुङ्—और्णुनूषीत्-और्णुनुविषीत्-और्णुनविषीत्। इत्यादि।

३२. डुभृञ्—धारणपोषणयोः (जु. पर)

दशलकारेषु—बुभूर्षति[4]। बुभूर्षाञ्चकार। बुभूर्षिता। बुभूर्षिष्यति। बुभूर्षतु। अबुभूर्षत्। बुभूर्षेत्। बुभूर्ष्यात्। अबुभूर्षीत्। अबुभूर्षिष्यत्।

३३. ज्ञप—ज्ञाने (चुरा. पर.)

दशलकारेषु—ज्ञीप्सति[5]। ज्ञीप्साञ्चकार। ज्ञीप्सिता। ज्ञीप्सिष्यति।

---

1. "सनीवन्तर्ध"—इट् विकल्प। "उदोष्ठ्य पूर्वस्य"। इट् में सिस्वरिषति।

2. इट् करने पर—यियविषति।

3. "सनीवन्तर्ध—से इट् विकल्प "इको झल्" "अज्झनगमां सनि"। इट् करने पर "विभाषोर्णोः" से ङित्व विकल्प।

4. "सनीवन्तर्ध"—से इट विकल्प। इट् में-बिभरिषति।

5. ज्ञपितुमिच्छति। "सनीवन्तर्ध"—से इट् विकल्प, "आप् ज्ञप्यृधामीत्" से आकार को ईकार, 'ज्ञी' को द्वित्व, "अत्र लोपोऽभ्यासस्य" लोप। इट् पक्ष में जिज्ञपिषति।

ज्ञीप्सतु । अज्ञीप्सत् । ज्ञीप्सेत् । ज्ञीप्स्यात् । अज्ञीप्सीत् । अज्ञीप्सिष्यत् ।

३५. षण—सम्भक्तौ (भ्वादि. पर)

दशलकारेषु—सिषासति[1] । सिषासाञ्चकार । सिषासिता । सिषासिष्यति । सिषासतु । असिषासत् । सिषासेत् । सिषास्यात् । असिषासीत् । असिषासिष्यत् ।

३६. मृङ्—प्राण परित्यागे (तुदा. आत्म)

दशलकारेषु—मुमूर्षति[2] । मुमूर्षाञ्चकार । मुमूर्षिता । मुमूर्षिष्यति । मुमूर्षतु । अमुमूर्षत् । मुमूर्षेत् । मुमूर्ष्यात् । अमुमूर्षीत् । अमुमूर्षिष्यत् ।

३६. तनु—विस्तारे (तना. उभ.)

दशलकारेषु—तितांसति[3]-तितंसति । तितांसाञ्चकार-तितंसाञ्चकार । तितांसिता-तितंसिता । तितांसिष्यति-तितंसिष्यति । तितांसतु-तितंसतु । अतितांसत्-अतितंसत् । तितांसेत्-तितंसेत् । तितांस्यात्-तितंस्यात् । अतितांसत्-अतितंसत् । तितांसेत्-तितंसेत् । तितांस्यात्-तितंस्यात् । अतितांसीत्-अतितंसीत् । अतितांसिष्यत्-अतितंसिष्यत् ।

३७. पत्लृ—पतने (भ्वा. पर.)

दशलकारेषु—पित्सति[4] । पित्साञ्चकार । पित्सिता । पित्सिष्यति ।

1. "सनीवन्तर्ध"—से इट् विकल्प, इट् के अभाव में "जन सन—खनां सञ्झलोः" से नकार को आकार, इट् के अभाव में सिसनिषति" ।

2. आशंका में सन् है । 'मरणाशंका विषयो भवति' विग्रह होगा, न कि—मर्तुमिच्छति । "उदोष्ठ्य पूर्वस्य" "हलि च" ।

3. "तनिपतिदरिद्रातिभ्यः सनो वेड् वाच्यः" । इट् के अभाव में "तनोतेर्विभाषा" से उपधादीर्घ का विकल्प । इट् में—तितनिषति ।

4. यहां भी आशंका में सन् समझो । पत्—स "सनिमीमाघुरभ"—से अकार को इस्, पि स् त स्, 'पिस्' को द्वित्व, अभ्यास लोप, "हलन्ताच्च" से कित्व, "स्कोः—" से सलोप । इट् करके-पिपतिषति ।

पित्सतु । अपित्सत् । पित्सेत् । पित्स्यात् । अपित्सीत् । अपित्सिष्यत् ।

३८. दरिद्रा—दुर्गतौ (अदा. पर.)

दशलकारेषु—दिदरिद्रासति[1] दिदरिद्रासाञ्चकार। दिदरिद्रासिता । दिदरिद्रासिष्यति । दिदरिद्रासतु । अदरिद्रासत् । दिदरिद्रासेत् । दिदरिद्रास्यात् । अदरिद्रासीत् । अदरिद्रासिष्यत् ।

३६. मुच्लृ—मोचने (तुदा० उभ०) ।

दशलकारेषु—मुमुक्षति[2] । मुमुक्षाञ्चकार । मुमुक्षिता । मुमुक्षिष्यति । मुमुक्षतु । अमुमुक्षत् । मुमुक्षेत् । मुमुक्ष्यात् । अमुमुक्षीत् । अमुमुक्षिष्यत् ।

४०. वृङ्—संभक्तौ (क्र्यादि० आत्म०) ।

दशलकारेषु—विवरि-रीषते[3] । विवरि-रीषाञ्चक्रे । विवरि-रीषिता । विवरि-रीषिष्यते । विवरि-रीषताम् । अविवरि-रीषत । विवरि-रीषेत । विवरि-रीषिषीष्ट । अविवरिरीषिष्ट । अविवरि-रीषिष्यत ।

पक्षे इट् के अभाव में

वुवूर्षते । वुवूर्षाञ्चक्रे । वुवूर्षिता । वुवूर्षिष्यते । वुवूर्षताम् । अवुवूर्षत । वुवूर्षेत । वुवूर्षिषीष्ट । अवुवूर्षिष्ट । अवुवूर्षिष्यत् ।

---

1. "तनिपति दरिद्रातिभ्यः सनो वेट् वाच्यः" । इट् करके "आतो लोप इटि च"—दिदरिद्रिषति ।

2. मोक्तु मिच्छति (वत्सम्) । "हलन्ताच्च" से सन् कित् होने से गुणाभाव । यदि कर्मकर्तरि प्रयोग में (मोक्षते वत्सः स्वयमेव) अकर्मक होने से "मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा" से विकल्प से गुण होगा, वहां गुण हो कर अभ्यासलोप होकर मोक्षते रूप होगा । जहां गुण न होगा वहां अभ्यासलोप न होकर --'मुमुक्षते' रूप होगा ।

3. "इट् सनिवा" से इट् विकल्प, "वृतो वा" से दीर्घ विकल्प ।

४१. वृञ्—वरणे (स्वा० उभ०)।

विवरिषति-ते[1], वुवूर्षति-ते इत्यादि ।

४२. तॄ—प्लवनतरणयोः (भ्वा० पर०)।

दशलकारेषु—तितरि-रीषति । तितरि-रीषाञ्चकार । तितरि-रीषिता । तितरि-रीषिष्यति । तितरि-रीषतु । अतितरि-रीषत् । तितरि-रीषेत् । तितरि-रीष्यात् । अतितरि-रीषीत् । अतितरि-रीषिष्यत् ।

इट् के अभाव में

तितीर्षति[2] । तितीर्षाञ्चकार । तितीर्षिता । तितीर्षिष्यति । तितीर्षतु । अतितीर्षत् । तितीर्षेत् । तितीर्ष्यात् । अतितीर्षीत् । अतितीर्षिष्यत् ।

४३. ष्मिङ्—ईषद्धसने (भ्वा० आत्म०)।

दशलकारेषु—सिस्मयिषते[3] । सिस्मयिषाञ्चक्रे[4] । सिस्मयिषिता । सिस्मयिषिष्यते । सिस्मयिषताम् । असिस्मयिषत । सिस्मयिषेत । सिस्मयिषिषीष्ट[5] । असिस्मयिषिष्ट । असिस्मयिषिष्यत ।

४४. पूङ्—पवने (भ्वा० आत्म०)।

दशलकारेषु—पिपविषते[6] । पिपविषाञ्चक्रे । पिपविषिता । पिपवि-

1. ञित् होने से उभयपद । इट् विकल्प का ध्यान, रखें ।

2. इट् अभाव में "इको झल्" से कित् होकर गुणाभाव, "ॠत इद्धातोः" "हलि च" । विग्रह-तरीतुमिच्छति ।

3. ङित्वात् आत्मनेपद (पूर्ववत्सनः)। स्मिङ् धातु अनिट् है, पर "स्मिपूङ् रञ्ज्वशां सनि" से इट् हुआ ।

4. "स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात्" के नियम से अभ्यासोत्तर षत्व न होगा ।

5. 'सनि ग्रह गुहोश्च" के इट् निषेध को बाध कर "स्मिपूङ्-रञ्ज्वशां सनि" से इट् ।

पिष्यते । पिपविपताम् । अपिपविपत । पिपविपेत । पिपविषिषीष्ट । अपिपवि-
पिष्ट । अपिपविपिष्यत ।

४५. ऋ—गतौ (क्र्या० पर०) ।

दशलकारेषु—अरिरिपति[1] । अरिरिपाञ्चकार । अरिरिपिता । अरिरि-
पिष्यति । अरिरिपतु । आरिरिपत् । अरिरिपेत् । अरिरिष्यात् । आरिरिपीत् ।
आरिरिपिष्यत् ।

४६. अञ्जू—व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा० पर०)

दशलकारेषु—अञ्जिजिपति । अञ्जिजिपाञ्चकार । अञ्जिजिपिता ।
अञ्जिजिपिष्यति । अञ्जिजिपतु । आञ्जिजिपत् । अञ्जिजिपेत् । अञ्जिजिष्यात् ।
आञ्जिजिपीत् । आञ्जिजिपिष्यत् ।

४७. अश्—भोजने (क्र्या० पर०) ।

दशलकारेषु – अशिशिपति । अशिशिपाञ्चकार । अशिशिपिता ।
अशिशिपिष्यति । अशिशिपतु । अशिशिपत् । अशिशिपेत् । अशिशिष्यात् ।
आशिशिपीत् । आशिशिपिष्यत् ।

४८. गुप् (सन्नन्तो निन्दार्थकः) ।

दशलकारेषु—जुगुप्सते[2] । जुगुप्साञ्चक्रे । जुगुप्सिता । जुगुप्सिष्यते ।
जुगुप्सताम् । अजुगुप्सत । जुगुप्सेत । जुगुप्सिषीष्ट । अजुगुप्सिष्ट । अजुगु-
प्सिष्यत ।

---

1. स्मिपूङ्—'' से इट्, गुण, 'रि' को द्वित्व ।

2. गुप्, तिज्, कित्, मान्, बध्, शान्, से जो अर्थ विशेष में सन्
किया है वह 'धातोः' अधिकार में नहीं, अतः एव उस की आर्धधातुक संज्ञा
न होने से इन धातुओं को इट् न होगा । हां, सन्नन्त जुगुप्स आदि को तो
आर्धधातुक में इट् होगा ही ।

४९. तिज—क्षमायाम् ।

दशलकारेषु—तितिक्षते[1] । तितिक्षाञ्चक्रे । तितिक्षिता । तितिक्षिष्यते । तितिक्षताम् । अतितिक्षत । तितिक्षेत । तितिक्षिषीष्ट । अतितिक्षिष्ट । अतितिक्षिष्यत ।

५० कित्—व्याधिप्रतीकारे । पर० ।

दशलकारेषु—चिकित्सति । चिकित्साञ्चकार । चिकित्सिता । चिकित्सिष्यति । चिकित्सतु । अचिकित्सत् । चिकित्सेत् । चिकित्स्यात् । अचिकित्सीत् । अचिकित्सिष्यत् ।

५१ मान—पूजायाम् (सन्नन्ते जिज्ञासायाम्) आत्म० ।

दशलकारेषु—मीमांसते[2] । मीमांसाञ्चक्रे । मीमांसिता । मीमांसिष्यते । मीमांसताम् । अमीमांसत । मीमांसेत । मीमांसिषीष्ट । अमीमांसिष्ट । अमीमांसिष्यत ।

५२ बध—बन्धने (सन्नन्ते चित्तविकारे) आत्म० ।

दशलकारेषु—बीभत्सते । बीभत्साञ्चक्रे । बीभत्सिता । बीभत्सिष्यते । बीभत्सताम् । अबीभत्सत । बीभत्सेत । बीभत्सिषीष्ट । अबीभत्सिष्ट । अबीभत्सिष्यत ।

५३ दान—खण्डने (सन्नन्ते आर्जवे) उभ० ।

दशलकारेषु—दीदांसति-दीदांसते । दीदांसाञ्चकार-दीदांसाञ्चक्रे । दीदांसितासि-से । दीदांसिष्यति-ते । दीदांसतु-ताम् । अदीदांसत्-त । दीदांसेत्-त । दीदांस्यात्-दीदांसिषीष्ट । अदीदांसीत्-अदीदांसिष्ट । अदीदांसिष्यत्-त ।

५४ शान—तेजने (सन्नन्ते निशाने) उभ० ।

दशलकारेषु—शीशांसति-ते । शीशांसाञ्चकार-ञ्चक्रे । शीशांसितासि से

---

1. तितिक्षते, चिकित्सते में "हलन्ताच्च" से सन् कित् होने से गुणाभाव ।

2. "मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य" ।

शीशांसिष्यति-ते । शीशांसतु-ताम् । अशीशांसत्-त । शीशांसेत्-त ।
शीशांस्यात्-शीशांसिषीष्ट । अशीशांसीत्-अशीशांसिष्ट । अशीशांसिष्यत्-त ।

अथ सन्नन्तधातूनां तालिका

धातु	लट्	लिट्	आ० लिङ्	लुङ्
डुकृञ्	चिकीर्षति	चिकीर्षाञ्चकार	चिकीर्ष्यात्	अचिकीर्षीत्
ग्रह	जिघृक्षति	जिघृक्षाञ्चकार	जिघृक्ष्यात्	अजिघृक्षीत्
चिञ्	चिकीषति[1]	चिकीषाञ्चकार	चिकीष्यात्	अचिकीषीत्
दह्	दिधक्षति	दिधक्षाञ्चकार	दिधक्ष्यात्	अदिधक्षीत्
डुधाञ्	धित्सति[2]	धित्साञ्चकार	धित्स्यात्	अधित्सीत्
नृत्	निनर्तिषति[3]	निनर्तिषाञ्चकार	निनर्तिष्यात्	अनिनर्तिषीत्
मा	मित्सति	मित्साञ्चकार	मित्स्यात्	अमित्सीत्
यज्	यियक्षति[4]	यियक्षाञ्चकार	यियक्ष्यात्	अयियक्षीत्
दृश्	दिदृक्षते[5]	दिदृक्षाञ्चक्रे	दिदृक्षिषीष्ट	अदिदृक्षिष्ट
लभ	लिप्सते	लिप्साञ्चक्रे	लिप्सीष्ट	अलिप्सिष्ट
रम्	रिरंसते	रिरंसाञ्चक्रे	रिरंसीष्ट	अरिरंसिष्ट
वृत	विवर्तिषते[6]	विवर्तिषाञ्चक्रे	विवर्तिषिषीष्ट	अविवर्तिषिष्ट
ष्ठा	तिष्ठासति	तिष्ठासाञ्चकार	तिष्ठास्यात्	अतिष्ठासीत्

1. चिचीषति भी रूप होगा ।
2. धित्सते रूप भी होगा।
3. निनृत्सति रूप भी होता है ।
4. यियक्षते रूप भी होगा ।
5. "ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः" से आत्मनेपद ।
6. 'विवृत्सति' परस्मैपद अनिट् रूप ।

वच्	विवक्षति	विवक्षाञ्चकार	विवक्ष्यात्	अविवक्षीत्
आप्लृ	ईप्सति	ईप्साञ्चकार	ईप्स्यात्	ऐप्सीत्
कम	चिकामयिषते[1]	चिकामयिषाञ्चक्रे	चिकामयिषीष्ट	अचिकामयिष्ट
डुदाञ्	दित्सति	दित्साञ्चकार	दित्स्यात्	अदित्सीत्
श्रुञ्	शुश्रूषति	शुश्रूषाञ्चकार	शुश्रूष्यात्	अशुश्रूषीत

इति सन्नन्तप्रक्रिया ।

1. "आयादय आर्धधातुके वा" चिकमिषते ।

अथ यङन्तप्रक्रिया

१. भू—सत्तायाम

दशलकारेषु—बोभूयते । बोभूयाञ्चकार । बोभूयिता । बोभूयिष्यते । बोभूयताम् । अबोभूयत । बोभूयेत । बोभूयिषीष्ट । अबोभूयिष्ट । अबोभूयिष्यत ।

२. व्रज—गतौ ।

दशलकारेषु—वाव्रज्यते[1] । वाव्रजाञ्चक्रे[2] । वाव्रजिता । वाव्रजिष्यते । वाव्रज्यताम् । अवाव्रज्यत । वाव्रज्येत । वाव्रजिषीष्ट । अवाव्रजिष्ट । अवाव्रजिष्यत ।

३. डुकृञ्—करणे ।

दशलकारेषु—चेक्रीयते[3] । चेक्रीयाञ्चक्रे । चेक्रीयिता । चेक्रीयिष्यते । चेक्रीयताम् । अचेक्रीयत । चेक्रीयेत । चेक्रीयिषीष्ट । अचेक्रीयिष्ट । अचेक्रीयिष्यत ।

४. वृतु—वर्तने ।

दशलकारेषु—वरीवृत्यते[4] । वरीवृताञ्चक्रे[5] । वरीवृतिता । वरीवृतिष्यते । वरीवृत्यताम् । अवरीवृत्यत । वरीवृत्येत । वरीवृतिषीष्ट । अवरीवृतिष्ट । अवरीवृतिष्यत ।

---

1. कुटिलं व्रजति । "दीर्घोऽकितः" से अभ्यासदीर्घ ।

2. "यस्य हलः" से 'य' का लोप ।

3. कृ+य, "रीङ् ऋतः" से रीङ् कर के 'क्री' को द्वित्व, "गुणो यङ्लुकोः" से गुण ।

4. "रीगृदुपधस्य च" से उपधा को 'रि' आगम । "यस्य हलः" ।

5. "क्षुभ्नादिषु च" से णत्वनिषेध ।

५. नृती—गात्रविक्षेपे ।

दशलकारेषु—नरीनृत्यते[1] । नरीनृताञ्चक्रे । नरीनृतिता । नरीनृतिष्यते । नरीनृत्यताम् । अनरीनृत्यत । नरीनृत्येत । नरीनृतिषीष्ट । अनरीनृतिष्ट । अनरीनृतिष्यत ।

६. ग्रह—उपादाने ।

दशलकारेषु—जरीगृह्यते[2] । जरीगृहाञ्चक्रे । जरीगृहिता । जरीगृहिष्यते । जरीगृह्यताम् । अजरीगृह्यत । जरीगृह्येत । जरीगृहिषीष्ट । अजरीगृहिष्ट । अजरीगृहिष्यत ।

७. ओ व्रश्चू—छेदने ।

दशलकारेषु—वरीवृश्च्यते । वरीवृश्चाञ्चक्रे । वरीवृश्चिता । वरीवृश्चिष्यते । वरीवृश्च्यताम् । अवरीवृश्च्यत । वरीवृश्च्येत । वरीवृश्चिषीष्ट । अवरीवृश्चिष्ट । अवरीवृश्चिष्यत ।

८. लुप्लृ—छेदने ।

दशलकारेषु—लोलुप्यते[3] । लोलुपाञ्चक्रे । लोलुपिता । लोलुपिष्यते । लोलुप्यताम् । अलोलुप्यत । लोलुप्येत । लोलुपिषीष्ट । अलोलुपिष्ट । अलोलुपिष्यत ।

९. चर—गतिभक्षणयोः ।

दशलकारेषु—चञ्चूर्यते । चञ्चुराञ्चक्रे । चञ्चुरिता । चञ्चुरिष्यते । चञ्चूर्यताम् । अचञ्चूर्यत । चञ्चूर्येत । चञ्चुरिषीष्ट । अचञ्चुरिष्ट । अचञ्चुरिष्यत ।

---

1. यङ् के ङित् होने से ग्रह और व्रश्च को "ग्रहिज्या—" से सम्प्रसारण ।

2. "लुपसदचर " से धात्वर्थगर्हा में यङ् होगा ।

3. "चरफलोश्च" से अभ्यास को नुक् आगम । "उत्परस्यातः" अभ्यासोत्तर अकार को उकार, "हलिच" से दीर्घ ।

१०. फल—विशरणे।

दशलकारेषु—पम्फुल्यते। पम्फुलाञ्चक्रे। पम्फुलिता। पम्फुलिष्यते। पम्फुल्यताम्। अपम्फुल्यत। पम्फुल्येत। पम्फुलिषीष्ट। अपम्फुलिष्ट। अपम्फुलिष्यत।

११. कुङ्—शब्दे।

दशलकारेषु—कोकूयते[1]। कोकूयाञ्चक्रे। कोकूयिता। कोकूयिष्यते। कोकूयताम्। अकोकूयत। कोकूयेत। कोकूयिषीष्ट। अकोकूयिष्ट। अकोकूयिष्यत।

१२. जप—व्यक्तायां वाचि।

दशलकारेषु—जञ्जप्यते[2]। जञ्जपाञ्चक्रे। जञ्जपिता। जञ्जपिष्यते। जञ्जप्यताम्। अजञ्जप्यत। जञ्जप्येत। जञ्जपिषीष्ट। अजञ्जपिष्ट। अजञ्जपिष्यत।

१३. गॄ—निगरणे।

दशलकारेषु—जेगिल्यते[3]। जेगिलाञ्चक्रे। जेगिलिता। जेगिलिष्यते। जेगिल्यताम्। अजेगिल्यत। जेगिल्येत। जेगिलिषीष्ट। अजेगिलिष्ट। अजेगिलिष्यत।

१४. सूच—पैशुन्ये।

दशलकारेषु—सोसूच्यते। सोसूचाञ्चक्रे। सोसूचिता। सोसूचिष्यते। सोसूच्यताम्। असोसूच्यत। सोसूच्येत। सोसूचिषीष्ट। असोसूचिष्ट। असोसूचिष्यत।

१५. सूत्र—वेष्टने।

दशलकारेषु—सोसूत्र्यते। सोसूत्राञ्चक्रे। सोसूत्रिता। सोसूत्रिष्यते।

---

1. "न कवतेर्यङि" से अभ्यास को कुत्वनिषेध। अदादिगण के 'कु' का रूप तो 'चोकूयते' होगा ही।

2. गर्हितं जपति। "जपजभदहदशभञ्जपशां च" से नुक् आगम।

3. "ग्रो यङि" से लत्व।

सोसूत्र्यताम् । असोसूत्र्यत । सोसूत्र्येत । सोसूत्रिषीष्ट । असोसूत्रिष्ट । असोसूत्रिष्यत ।

१६. मूत्र—प्रस्रवणे ।

दशलकारेषु—मोमूत्र्यते । मोमूत्राञ्चक्रे । मोमूत्रिता । मोमूत्रिष्यते । मोमूत्र्यताम् । अमोमूत्र्यत । मोमूत्र्येत । मोमूत्रिषीष्ट । अमोमूत्रिष्ट । अमोमूत्रिष्यत ।

१७. अट—गतौ ।

दशलकारेषु—अटाट्यते[1] । अटाटाञ्चक्रे । अटाटिता । अटाटिष्यते । अटाट्यताम् । आटाट्यत । अटाट्येत । अटाटिषीष्ट । अटाटिष्ट । अटाटिष्यत ।

१८. ऋ—गतौ ।

दशलकारेषु—अरार्यते[2] । अराराञ्चक्रे । अरारिता । अरारिष्यते । अरार्यताम् । आरार्यत । अरार्येत । अरारिषीष्ट । अरारिष्ट । अरारिष्यत ।

१९. अश—भोजने ।

दशलकारेषु—अशाश्यते । अशाशाञ्चक्रे । अशाशिता । अशाश्यताम् । आशाश्यत । अशाश्येत । अशाशिषीष्ट । आशाशिष्ट । आशाशिष्यत ।

२०. ऊर्णुञ्—आच्छादने ।

दशलकारेषु—ऊर्णोनूयते[3] । ऊर्णोनूयाञ्चक्रे । ऊर्णोनूयिता । ऊर्णोनूयिष्यते । ऊर्णोनूयताम् । और्णोनूयत । ऊर्णोनूयेत । ऊर्णोनूयिषीष्ट ।

---

1. अजादि होने पर भी—"सूचिसूत्रिमूत्र्य..." से यङ । अजादेस्तु द्वितीयस्य, से 'अट्' को द्वित्व, हलादिशेष, "दीर्घोऽकितः" ।

2. ऋ+य, "यङि च" से गुण, 'र्य' को द्वित्व ।

3. "सूचिसूत्रि .." से यङ्, 'नु' को द्वित्व ।

औरोर्णनूयिष्ट । औरोर्णनूयिष्यत ।

२१. सिच्—सेचने।

दशलकारेषु—सेसिच्यते[1] । सेसिचाञ्चक्रे । सेसिचिता । सेसिचिष्यते । सेसिच्यताम् । असेसिच्यत । सेसिच्येत । सेसिचिषीष्ट । असेसिचिष्ट असेसिचिष्यत ।

२२. हन्—हिंसायाम्।

दशलकारेषु—जेघ्नीयते[2] । जेघ्नीयाञ्चक्रे । जेघ्नीयिता । जेघ्नीयिष्यते । जेघ्नीयताम् । अजेघ्नीयत । जेघ्नीयेत । जेघ्नीयिषीष्ट । अजेघ्नीयिष्ट । अजेघ्नीयिष्यत ।

२३. हन—गत्यर्थे।

दशलकारेषु—जङ्घन्यते[2] । जङ्घनाञ्चक्रे । जङ्घनिता । जङ्घनिष्यते । जङ्घन्यताम् । अजङ्घन्यत । जङ्घन्येत । जङ्घनिषीष्ट । अजङ्घनिष्ट । अजङ्घनिष्यत ।

२४. शीङ—स्वप्ने।

दशलकारेषु—शाशय्यते[3] । शाशयाञ्चक्रे । शाशयिता । शाशयिष्यते । शाशय्यताम् । अशाशय्यत । शाशय्येत । शाशयिषीष्ट । अशाशयिष्ट । अशाशयिष्यत ।

---

1. निसेसिच्यते—"सिचो यङि" से षत्व निषेध।

2. अतिशयेन पुनः पुनर्वा हन्ति । "हन्ते हिंसायाम् यङि घ्नीभावो वाच्यः" । कुटिलं हन्ति (गच्छति) । "नुगतोऽनुनासिकान्तस्य" ।

3. शी+य, "अयङ् यि क्ङिति" से अय् आदेश करके 'शय्' को द्वित्व, अभ्यासदीर्घ ।

२५. ञिष्वप्—शये।

दशलकारेषु—सोषुप्यते[1] । सोषुपाञ्चक्रे । सोषुपिता सोषुपिष्यते । सोषुप्यताम् । असोषुप्यत । सोषुप्येत । सोषुपिषीष्ट असोषुपिष्ट । असोषुपिष्यत ।

२६. स्यमु—शब्दे।

दशलकारेषु—सेसिम्यते । सेसिमाञ्चक्रे । सेसिमिता । सेसिमिष्यते। सेसिम्यताम् । असेसिम्यत । सेसिम्येत । सेसिमिषीष्ट । असेसिमिष्ट । असेसिमिष्यत ।

२७. व्येञ्—तन्तुसन्ताने।

दशलकारेषु वेवीयते[2] । वेवीयाञ्चक्रे । वेवीयिता । वेवीयिष्यते । वेवीयताम् । अवेवीयत । वेवीयेत । वेवीयिषीष्ट । अवेवीयिष्ट । अवेवीयिष्यत ।

२८. वश—कान्तौ।

दशलकारेषु—वावश्यते[3] । वावशाञ्चक्रे । वावशिता । वावशिष्यते । वावश्यताम् । अवावश्यत । वावश्येत । वावशिषीष्ट । अवावशिष्ट । अवावशिष्यत ।

२९. चायृ—पूजानिशामने ।

दशलकारेषु—चेकीयते[4] । चेकीयाञ्चक्रे । चेकीयिता । चेकीयिष्यते ।

---

1. "स्वपि स्यमि व्येञां यङि" से सम्प्रसारण करके 'सुप्' को द्वित्व, अभ्यासगुण ।

2. "स्वपिस्यमि..." से सम्प्रसारण ।

3. ग्रहिज्या..." से प्राप्त सम्प्रसारण का "न वशः" से निषेध ।

4. "चाय: की" से ची धातु को की आदेश ।

चेकीयताम् । अचेकीयत । चेकीयेत । चेकीयिषीष्ट । अचेकीयिष्ट । अचेकीयिष्यत

३०. घ्रा—गन्धोपादाने ।

दशलकारेषु—जेघ्रीयते[1] । जेघ्रीयाञ्चक्रे । जेघ्रीयिता । जेघ्रीयिष्यते । जेघ्रीयताम् । अजेघ्रीयत । जेघ्रीयेत । जेघ्रीयिषीष्ट । अजेघ्रीयिष्ट । अजेघ्रीयिष्यत ।

३१. ध्मा—शब्दाग्निसंयोगयोः ।

दशलकारेषु—देध्मीयते[2] । देध्मीयाञ्चक्रे । देध्मीयिता । देध्मीयिष्यते । देध्मीयताम् । अदेध्मीयत । देध्मीयेत । देध्मीयिषीष्ट । अदेध्मीयिष्ट । अदेध्मीयिष्यत ।

३२. वञ्चु—गतौ ।

दशलकारेषु—वनीवच्यते[3] । वनीवचाञ्चक्रे । वनीवचिता । वनीवचिष्यते । वनीवच्यताम् । अवनीवच्यत । वनीवच्येत । वनीवचिषीष्ट । अवनीवचिष्ट । अवनीवचिष्यत ।

३३. स्रंसु—अधःपतने ।

दशलकारेषु—सनीस्रस्यते । सनीस्रसाञ्चक्रे । सनीस्रसिता । सनीस्रसिष्यते । सनीस्रस्यताम् । असनीस्रस्यत । सनीस्रस्येत । सनीस्रसिषीष्ट । असनीस्रसिष्ट । असनीस्रसिष्यत ।

३४. भ्रंसु—अधःपतने ।

दशलकारेषु—बनीभ्रस्यते । बनीभ्रसाञ्चक्रे । बनीभ्रसिता ।

---

1. "ई घ्राध्मोः" से ईकार, 'घ्री' को द्वित्व ।

2. "ईघ्राध्मोः" ।

3. "नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसु..." से अभ्यास को नीक् आगम, "अनिदिताम्..." से उपधानकार का लोप ।

बनीभ्रसिष्यते । बनीभ्रस्यताम् । अबनीभ्रस्यत । बनीभ्रस्येत । बनीभ्रसिषीष्ट । अबनीभ्रसिष्ट । अबनीभ्रसिष्यत ।

३५. कस – गतौ ।

दशलकारेषु - चनीकस्यते । चनीकसाञ्चक्रे । चनीकसिता । चनीकसिष्यते चनीकस्यताम् । अचनीकस्यत । चनीकस्येत । चनीकसिषीष्ट । अचनीकसिष्ट । अचनीकसिष्यत ।

३६. पत्लृ—पतने ।

दशलकारेषु—पनीपत्यते । पनीपताञ्चक्रे । पनीपतिता । पनीपतिष्यते । पनीपत्यताम् । अपनीपत्यत । पनीपत्येत । पनीपतिषीष्ट । अपनीपतिष्ट । अपनीपतिष्यत ।

३७. पद् – गतौ ।

दशलकारेषु - पनीपद्यते । पनीपदाञ्चक्रे । पनीपदिता पनीपदिष्यते । पनीपद्यताम् । अपनीपद्यत । पनीपद्येत । पनीपदिषीष्ट अपनीपदिष्ट । अपनीपदिष्यत ।

अथ यङन्तधातु-तालिका

धातु	लट्	लिट्	लुङ्
घट	जाघटयते	जाघटाञ्चक्रे	अजाघटिष्ट
दा	देदीयते	देदीयाञ्चक्रे	अदेदीयिष्ट
दिश्	देदिश्यते	देदिशाञ्चक्रे	अदेदिशिष्ट
दीप्	देदीप्यते	देदीपाञ्चक्रे	अदेदीपिष्ट
दुह	दोदुह्यते	दोदुहाञ्चक्रे	अदोदुहिष्ट
दृश	दरीदृश्यते	दरीदृशाञ्चक्रे	अदरीदृशिष्ट

नम्	नंनम्यते	नंनमाञ्चक्रे	अनंनमिष्ट
नुद	नोनुद्यते	नोनुदाञ्चक्रे	अनोनुदिष्ट
पच	पापच्यते	पापचाञ्चक्रे	अपापचिष्ट
भ्रम्	बंभ्रम्यते	बम्भ्रमाञ्चक्रे	अबम्भ्रमिष्ट
मद	मामद्यते	मामदाञ्चक्रे	अमामदिष्ट
सृज	सरीसृज्यते	सरीसृजाञ्चक्रे	असरीसृजिष्ट
स्तृ	तास्तर्यते	तास्तराञ्चक्रे	अतास्तरिष्ट
लिह	लेलिह्यते	लेलिहाञ्चक्रे	अलेलिहिष्ट
श्वि	शोशूयते, शेश्वीयते	शोशूयाञ्चक्रे, शेश्वीयाञ्चक्रे	अशोशूयिष्ट, अशेश्वीयिष्ट

इति यङन्त-प्रक्रिया

अथ यङ्लुगन्त-प्रकरणम्

१ भू—सत्तायाम ।

लट्

प्र० पु०	बोभवीति[1], बोभोति	बोभूतः	बोभुवति
म० ,,	बोभवीषि, बोभोषि	बोभूथः	बोभूथ
उ० ,,	बोभवीमि, बोभोमि	बोभूवः	बोभूमः

लिट्—बोभवाञ्चकार । लुट्—बोभविता । लृट्—बोभविष्यति ।

लोट्

प्र० पु०	बोभवतु[2], बोभोतु, बोभूतात्	बोभूताम्	बोभुवतु
म० ,,	बोभूहि, बोभूतात्	बोभूतम्	बोभूत
उ० ,,	बोभवानि	बोभवाव	बोभवाम

लङ्

प्र० पु०	अबोभवीत्, अबोभोत्	अबोभूताम्	अबोभवुः[3]
म० ,,	अबोभवीः, अबोभोः	अबोभूतम्	अबोभूत
उ० ,,	अबोभवम्	अबोभूव	अबोभूम

विधिलिङ्—बोभूयाताम् । आ० लि०—बोभूयास्ताम् । लुङ्—अबोभूवीत्—अबोभोत्, अबोभूताम्, अबोभूवुः[4] । लृङ्—अबोभविष्यत् ।

---

1. "यङो वा" से हलादिपित् में ईट् का विकल्प ।

2. "अदभ्यस्तात् ।

3 जुसिच" ।

4. "भुवो वुग् लुङ् लिटोः" ।

२. गम्लृ—गतौ ।

प्र० पु०	जङ्गमीति, जङ्गन्ति	जङ्गतः[1]	जङ्ग्मति[2]
म० ,,	जङ्गमीषि, जङ्गन्सि	जङ्गथः	जङ्गथ
उ० ,,	जङ्गमीमि, जङ्गन्मि	जङ्गन्वः[3]	जङ्गन्मः

लिट्—जङ्गमाञ्चकार । लुट्—जङ्गमिता । लृट्—जङ्गमिष्यति ।

लोट्

प्र० पु०	जङ्गमीतु, जङ्गन्तु, जङ्गतात्	जङ्गताम्	जङ्ग्मतु
म० ,,	जङ्गहि[4], जङ्गतात्	जङ्गतम्	जङ्गत
उ० ,,	जङ्गमानि	जङ्गमाव	जङ्गमाम

लङ्

प्र० पु०	अजङ्गमीत्, अजङ्गन्[5]	अजङ्गताम्[6]	अजङ्ग्मन्
म० पु०	अजङ्गमीः, अजङ्गन्	अजङ्गतम्	अजङ्गत
उ० ,,	अजङ्गमम्	अजङ्गन्व[7]	अजङ्गन्म

वि० लिङ्—जङ्गम्यात् । आ० लिङ्—जङ्गम्यास्ताम् । लुङ्—अजङ्गामीत् । लृङ्—अजङ्गमिष्यत् ।

---

1. "अनुदात्तोपदेश......" से अनुनासिकलोप ।

2. "गमहनजन........" से उपधालोप ।

3. "म्वोश्च" ।

4. अनुनासिकलोप आभीयत्वेन असिद्ध है अतः 'हि' का लुक् न हुआ ।

5. "मो नो धातोः" ।

6. अनुबन्धनिर्दिष्ट होने से च्लि को अङ् न हुआ । ईट् पक्ष में रुक्, रिक्, रीक् । यहाँ "नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके" निषेध से उपधागुण न हुआ ।

7. ईट् के अभाव में तीन रूप ।

३, वृतु—वर्तने ।

लट्—वर्वृतीति, वरिवृतीति, वरीवृतीति । वर्वर्ति,[1] वरिवर्ति, वरीवर्ति ।

लिट्—वर्वर्तामास, वरिवर्तामास, वरीवर्तामास ।

लुट्—वर्वर्तिता, वरिवर्तिता, वरीवर्तिता ।

लृट्—वर्वर्तिष्यति, वरिवर्तिष्यति, वरीवर्तिष्यति ।

लोट्—वर्वृतीतु, वरिवृतीतु, वरीवृतीतु--वर्वर्तु, वरिवर्तु, वरीवर्तु-वर्वृतात्, वरिवृतात्, वरीवृतात् ।

लङ्—अवर्वृतीत्, अवरिवृतीत्, अवरीवृतीत्,--अवर्वर्त्, अवरिवर्त्, अवरीवर्त्, । सिप्—अवर्वृतीः३, अवर्वत् ३, अवर्वाः २ ।

विधिलिङ्—वर्वृत्यात्, वरिवृत्यात्, वरीवृत्यात् ।

आ० लिङ्—वर्वृत्यास्ताम्, वरिवृत्यास्ताम्, वरीवृत्यास्ताम् ।

लुङ्—अवर्वर्तीत्, अवरिवर्तीत्, अवरीवर्तीत् ।

लृङ्—अवर्वर्तिष्यत्, अवरिवर्तिष्यत्, अवरीवर्तिष्यत् ।

४. डुकृञ्—करणे ।

लट्—चर्करीति, चरिकरीति, चरीकरीति—चर्कर्ति, चरिकर्ति, चरीकर्ति ।

लिट्—चर्कराञ्चकार, चरिकराञ्चकार, चरीकराञ्चकार ।

लुट्—चर्करिता, चरिकरिता, चरीकरिता ।

लृट्—चर्करिष्यति, चरिकरिष्यति, चरीकरिष्यति ।

लोट्—चर्करीतु, चरिकरीतु, चरीकरीतु, चर्कर्तु, चरिकर्तु, चरीकर्तु, चर्कृतात्[2] चरिकृतात्, चरीकृतात् ।

लङ्—अचर्करीत् अचरिकरीत्, अचरीकरीत्—अचर्कः, अचरिकः अचरीकः ।

---

1. गणनिर्दिष्ट होने से "न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः" से इट् निषेध न हुआ ।

2. तातङ् ङित् है अतः इट् न हुआ ।

वि. लिङ्—चर्कृयात, चरिकृयात्, चरीकृयात् ।

आ. लिङ्—चर्क्रियात्[1], चरिक्रियात्, चरीक्रियात् ।

लुङ्—अचर्कारीत्[2]. अचरिकारीत्, अचरीकारीत् ।

लृङ्—अचर्करिष्यत्, अचरिकरिष्यत्, अचरीकरिष्यत् ।

५. कॄ—विक्षेपे ।

लट्—चाकर्ति–चाकरीति, चाकीर्तः[3] । चाकिरति ।

लिट्—चाकराञ्चकार । लुट्—चाकरिता । लृट—चाकरिष्यति ।

लोट्—चाकर्तु-चाकरीतु-चाकीर्तात्, चाकीर्ताम्, चाकिरतु । चाकीर्हि-चाकीर्तात्, चाकीर्तम्, चाकिरत । चाकराणि, चाकराव, चाकराम ।

लङ्—अचाकरीत्-अचाकः, अचाकीर्ताम्, अचाकरुः ।

वि. लिङ्—चाकीर्यात् । आ० लिङ्—चाकीर्यास्ताम् । लुङ्—अचाकारीत्, अचाकारिष्टाम् । लृङ्—अचाकरिष्यत् ।

६. तॄ—प्लवन तरणयोः ।

लट्—तातरीति-तातर्ति, तातीर्तः, तातिरति । तातरीषि, तातर्षि: तातीर्थः, तातीर्थ ।

लिट्—तातराञ्चकार । लुट्—तातरिता । लृट् - तातरिष्यति ।

लोट्—तातरीतु, तातर्तु-तातीर्तात् । तातीर्ताम् तातिरतु । तातीर्हि[4] ।

लङ्—अतातरीत्–अतातः[5] । वि. लिङ्—तातीर्यात् । आ. लि.—तातीर्यास्ताम् । लुङ्—अतातारीत् । लृङ्—अतातरिष्यत् ।

---

1. "रिङ् शयग लिङ्क्षु" ।
2. "सिचि वृद्धिः—" ।
3. "ॠत इद्धातोः" "हलिच" ।
4. ॠत इत्, उपधादीर्घ ।
5. गुण, "रात्सस्य" ।

यङ्लुगन्तधातुतालिका—

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लुङ्
नाथ	नानथीति[1]	नानथीतु,	अनानथीत्	अनानाथीत्
	नानात्ति	नानात्तु	अनानात्	
धा	दादधीति,	दादधीतु,	अदादधीत्,	अदादाधीत्,
	दादद्धि	दादद्धु	अदाधत्	अदादधीत्
मुद्	मोमुदीति,	मोमुदीतु, मोमोत्तु,	अमोमुदीत्,	अमोमोदीत्
	मोमोत्ति	मोमुत्तात्	अमोमोत्	
वञ्चु	वनीवञ्चीति,	वनीवञ्चीतु,	अवनीवञ्चीत्,	अवनीवञ्चीत्
	वनीवङ्क्ति	वनीवङ्क्तु	अवनीवन्	
		वनीवक्तात्		
हन्	जङ्घनीति,	जङ्घनीतु,	अजङ्घनीत्	अवधीत्
	जङ्घन्ति	जङ्घन्तु	अजङ्घन्	
चर्	चञ्चुरीति,	चञ्चुरीतु,	अचञ्चुरीत्,	अचञ्चुरीत्
	चञ्चूर्ति	चञ्चूर्तु	अचञ्चूः	
यु	योयवीति	योयवीतु	अयोयवीत्	अयोयावीत्
	योयोति	योयोतु, यो-युतात्	अयोयोत्	
ओहाक्	जाहेति, जाहाति	जाहातु, जाहेतु	अजाहेत्, अजाहात्	अजाहासीत्
स्वप्	सास्वपीति,	सास्वपीतु	असास्वपीत्	असास्वापीत्
	सास्वप्ति	सास्वप्तु	असास्वप्	
		सासुप्तात्		

1. यङ्लुगन्त में सार्वधातुक लकारों में ही रूप रचना क्लिष्ट होती है।

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लुङ्
गृह	जगृंहीति, जर्गढि	जगृंहीतु[1] जगृंढु जगृंढात्	अजगृहीत् अजाग्राढ्	अजगर्हीत्
ग्रह	जाग्रहीति, जाग्राढ़ि	जाग्रहीतु[3] जागढु[3] जागृढात्[3]	अजाग्रहीत्[3] अजार्घट्[3]	अजाग्रहीत्[3]
प्रच्छ	पाप्रच्छीति पाप्रष्टि	पाप्रच्छीतु पाप्रष्टु पापृष्टात्	अपाप्रच्छीत् अपाप्रट्	अपाप्रच्छीत्
मूर्च्छ	मोमूर्च्छीति मोमोर्ति	मोमूर्च्छीतु मोमोर्तु मोमूर्तात्	अमोमूर्च्छीत् अमोमूः	अमोमूर्च्छीत
मव	मामवीति, मामोति	मामवीतु, मामोतु मामूतात्	अमामवीत्, अमामोत्	अमामावीत "

इति यङ्लुगन्त प्रक्रिया

1. जहाँ रूप के आगे तीन का अङ्क है वहाँ रुक् रिक् रीक् आगम से तीन तीन रूप समझें।

अथ नामधातुप्रकरणम्

१ आत्मनः पुत्रम् इच्छति ।

दशलकारेषु—पुत्रीयति[1] । पुत्रीयाञ्चकार । पुत्रीयिता । पुत्रीयिष्यति । पुत्रीयतु । अपुत्रीयत् । पुत्रीयेत् । पुत्रीय्यात् । अपुत्रीयीत् । अपुत्रीयिष्यत् ।

२. अशनं (सद्यः) भोक्तुमिच्छति ।

दशलकारेषु—अशनायति[2] । अशनायाञ्चकार । अशनायिता । अशनायिष्यति । अशनायतु । आशनायत् । अशनायेत् । अशनाय्यात् । आशनायीत् । आशनायिष्यत् ।

३. अश्वमिच्छति (मैथुनार्थम्)

दशलकारेषु—अश्वस्यति[3] । अश्वस्या-साञ्चकार । अश्वस्यि-स्यिता । अश्वस्यि-स्यिष्यति । अश्वस्यतु । आश्वस्यत् । अश्वस्येत् । अश्वस्यात् । आश्वस्यीत् । आश्वस्यिष्यत् ।

४. राजानमात्मन इच्छति ।

दशलकारेषु—राजीयति[4] । राजीयाञ्चकार । राजीयिता ।

---

1. इच्छार्थे क्यच् । "क्यचि च" ईत् ।

2. "अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु" से क्यजन्त 'अशनाय' का निपातन । 'अशनमात्मन इच्छति' इत्यादि अर्थान्तर में अशनीयति, उदकीयति, धनीयति इत्यादि रूप होंगे । एवं—उदकं पातुमिच्छति-उदन्यति । उदकं सेचनाद्यर्थं मिच्छति-उदकीयति ।

3. अश्वमारोहणार्थमिच्छति-अश्वीयति ।

4. "नःक्ये" से पदत्व, न लोप ।

राजीयिष्यति । राजीयतु । अराजीयत् । राजीयेत् । राजीय्यात् । अराजीयीत् । अराजीयिष्यत् ।

५. पुत्रमात्मन इच्छति ।

दशलकारेषु—पुत्रकाम्यति[1] । पुत्रकाम्याञ्चकार । पुत्रकाम्यिता । पुत्रकाम्यिष्यत । पुत्रकाम्यतु । अपुत्रकाम्यत् । पुत्रकाम्येत् । पुत्रकाम्यात् । अपुत्रकाम्यीत् । अपुत्रकाम्यिष्यत् ।

६. कृष्ण इवाचरति ।

दशलकारेषु—कृष्णति[2] । कृष्णाञ्चकार । कृष्णिता । कृष्णिष्यति । कृष्णतु । अकृष्णत् । कृष्णेत् । कृष्ण्यात् । अकृष्णीत् । अकृष्णिष्यत् ।

७. राजेवाचरति

दशलकारेषु—राजानति । राजानाञ्चकार । राजानिता । राजानिष्यति । राजानतु । अराजानत् । राजानेत् । राजान्यात् । अराजानीत् । अराजानिष्यत् ।

८. पन्था इवाचरति

दशलकारेषु—पथीनति । पथीनाञ्चकार । पथीनिता । पथीनिष्यति । पथीनतु । अपथीनत् । पथीनेत् । पथीन्यात् । अपथीनीत् । अपथीनिष्यत् ।

९. कृष्ण इवाचरति

दशलकारेषु—कृष्णायते[3] । कृष्णायाञ्चक्रे । कृष्णायिता । कृष्णायिष्यते । कृष्णायताम् । अकृष्णायत । कृष्णायेत । कृष्णायिषीष्ट । अकृष्णायिष्ट । अकृष्णायिष्यत ।

---

1. काम्यच् प्रत्यय ।

2. क्विप् प्रत्यय ।

3. क्यङ् प्रत्यय ।

नामधातु-तालिका

विग्रह	लट्	लिट	लुङ्
अप्सरस इवाचरते-अप्सरायते	-	अप्सरायाञ्चक्रे	आप्सरायिष्ट
विद्वानिवाचरति-	विद्वायते	विद्वायाञ्चक्रे	अविद्वायिष्ट
	विद्वस्यते	विद्वस्या-साञ्चक्रे	अविद्वस्यिष्ट
अवगल्भ इवाचरति-अवगल्भते[1]		अवगल्भाञ्चक्रे	अवगल्भिष्ट
अलोहितो लोहितो भवति-लोहितायति[2]		लोहितायाञ्चकार	अलोहितायीत्
पटत् करोति-पटपटायति[3]		पटपटायाञ्चकार	अपटपटायीत्
कष्टाय क्रमते[4]	कष्टायते	कष्टायाञ्चक्रे	अकष्टायिष्ट
रोमन्थं वर्तयति[5]	रोमन्थायते	रोमन्थायाञ्चक्रे	अरोमन्थायिष्ट
तपश्चरति	तपस्यति[6]	तपस्याञ्चकार	अतपस्यीत्
बाष्प मुद्वमति	बाष्पायते[7]	बाष्पायाञ्चक्रे	अबाष्पायिष्ट
शब्दं करोति	शब्दायते	शब्दायाञ्चक्रे	अशब्दायिष्ट
पुच्छमुदस्यति	उत्पुच्छयते[8]	उत्पुच्छयाञ्चक्रे	उदपुपुच्छत
भाण्डानि समाचिनोति	सम्भाण्डयते	सम्भाण्डयाञ्चक्रे	समबभाण्डत

1. एवं क्लीब इव, होड इवाचरति—क्लीबायते, होडायते ।
2. "वाक्यषः" से परस्मैपद का विकल्प । पक्ष—लोहितायते ।
3. डाजन्त से क्यष् । आत्मनेपद-पटपटायते ।
4. क्यङ् प्रत्यय ।
5. "कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः" क्यङ् ।
6. क्यङ् । "तपसः परस्मैपदं च" ।
7. क्यङ् । ऊष्माणा मुद्वमति-ऊष्मायते ।
8. णिङ् ।

विग्रह	लट्	लिट्	लुङ्
मुण्डं करोति	मुण्डयति[1]	मुण्डयाञ्चकार	अमुमुण्डत्
हलं गृह्णाति	हलयति	हलयाञ्चकार	अजहलत्
सत्यं करोति	सत्यापयति[2]	सत्यापयाञ्चकार	असंसत्यापयत्
सेनयाऽभियाति	अभिषेणयति	अभिषेणयाञ्चकार	अभ्यषिषेणत्
वर्मणा संनह्यति	सम्वर्मयति	सम्वर्मयाञ्चकार	समवर्मत

इति नामधातुप्रक्रिया ।

1. णिच् ।
2. णिच् । सत्यार्थवेदानामापुगवक्तव्यः ।

अथोपसर्गविषयः

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।
प्रहाराहार संहार विहारपरिहारवत् ॥१॥

भू

व्यादिः[1] प्रादिश्च[2] भूधातु र्विभूत्यर्थे विनिश्चितः ।
पराभि[3] परिपूर्वो भूस्तिरस्कारार्थबोधकः ॥२॥
उत्पत्तावुद्युतो[4] भूः स्यात् संभवे[5] संयुतो भवेत् ।
आविः[6] प्रादुर्द्वयो र्योगे भूः प्राकट्यार्थ वाचकः ॥३॥
प्रत्यादिः[7] प्रतिनिध्यर्थे ज्ञाने स्यादनुपूर्वकः[8] ।

ईक्ष

ईक्षधातोः प्रपूर्वस्य[9] विचार्यकरणार्थता ॥४॥
अन्यस्मिंस्तु पदार्थे स्यादन्यस्यारोपणं यदि ।
उत्प्रेक्षैव तदार्थोऽस्ति[10] प्रादुत्पूर्वात्तथेक्षतेः ॥५॥
दोषं ज्ञात्वा परित्यागे ह्युपादि[11] रयमिष्यते ।
परिपूर्वः परीक्षायामीक्षधातोरयं क्रमः ॥६॥

कृ

कृधातो रधिपूर्वस्याधिकारोऽर्थो[12] निरूपितः ।

---

1. विभूतिः । 2. प्रभवति-प्रभुः । 3. पराभवति, परिभवति, अभिभति । 4. उद्भवति । 5. संभवति । 6. आविर्भवति । प्रादुर्भवति । आविर्भावः, प्रादुर्भावः । 7. प्रतिभूः । 8. अनुभवति । 9. प्रेक्षते । प्रेक्षावान्-विचारशीलः । 10. उत्प्रेक्षते । 11. उपेक्षते । 12. अधिकुरुते ।

विपूर्वो[1] वैकृतौ ज्ञेयः प्रस्तावे स्यात्प्रपूर्वकः[2] ॥७॥
साम्यार्थे चानुपूर्वः[3] स्याद् अपाच्चा[4] निष्टकारकः ।
प्रतिपूर्वः प्रतीकारे[5] शोधने परिपूर्वकः[6] ॥८॥
स्यान्निरप[7] परायोगे कृधातुस्तु निवारणे ।
आविः[8] प्रादुर्द्वयोर्योगे प्राकट्यार्थे प्रकीर्तितः ॥९॥

क्रम

विपराभ्यां[9] च सामर्थ्ये सम्पूर्वो[10] मेलने क्रमुः ।
प्रादुपाच्च[11] समारंभे निर्नि[12] सोऽत्र बहिर्गतौ ॥१०॥

इण्

इणस्तु प्र-परायोगे परलोक[13] गतिः स्मृता ।
उदादिश्च[14] प्रकाशे स्यादूर्ध्वके गमनेऽपि च ॥११॥
अभि प्र युगभिप्राये[15] विपर्यादि विपर्यये[16] ।

कल

कलिः संयोजने[17] संयुक् व्यवयुक्ते[18] वियोजने ॥१२॥

ग्रह्

विपूर्वस्तु ग्रहो[19] युद्धे तिरस्कारे[20] निपूर्वकः ।
हठे चाङ्[21] संयुतो ज्ञेयः प्रतियुक्तः प्रतिग्रहे[22] ॥१३॥

---

1. विकारः । 2. प्रकरणम् । 3. अनुकरोति-समतां धत्ते । 4. अपकरोति । 5. प्रतिकरोति । 6. परिष्कारः । 7. पराकरोति । 8. आविष्करोति, प्रादुष्करोति । 9. रिपौ विक्रमते । पराक्रमते । 10. रोगाः सङ्क्रामन्ति । 11. प्रक्रमते, उपक्रमते व्याख्यातुम् । 12. निष्क्रामति नगरात् । 13. प्रेतः, परेतः । 14. उदितः सूर्यः । 15. अभिप्रायः । 16. बुद्धिविपर्ययः । 17. सङ्कलनम् । 18. व्यवकलनम् । 19. विग्रहः । 20. निग्रहः । 21. आग्रहः । 22. प्रतिगृह्णाति गाम् ।

संग्रहे[1] संयुतश्चापि कृपायामनु[2] पूर्वकः ।

दिश

दिश धातुस्तु सम्पूर्वः सन्देशे चापदेशे[3] छले ॥ १४ ॥

उपपूर्वश्चोपदेशे कथने निर्युतो भवेत् ।

आज्ञायाञ्च तथादेशे आङ् युतोऽसौ प्रकीर्तितः ॥ १५ ॥

धा

सम्पूर्वो धाऽस्ति सन्धानेऽनुसन्ध्यां विचारणे ।

अन्तर्धानं तिरोधानं विधानं परिधानकम् ॥ १६ ॥

आधानमभिधानं च सन्निध्यां सन्निधानकः ।

एष्वर्थः स्पष्टमाभाति तस्मान्नोक्तं पदान्तरैः ॥ १७ ॥

विपूर्वो धा करोत्यर्थे अभिपूर्वस्तु भाषणे ।

मेलने संसमायुक्तो निपूर्वः स्थापने[4] मतः ॥ १८ ॥

पद्

पद् धातु विपूर्वस्तु विपत्तौ, तु संसमायुतः ।

उत्पत्तौ, तूपपत्तौ स्यादुपपूर्वः प्रकीर्तितः ॥ १९ ॥

सम्पत्तौ संयुतो ज्ञेय आपत्तावाङ् युतो भवेत् ।

स्वीकारेऽभ्युपयुक्तश्च भिन्नार्था उपसर्गकाः ॥ २० ॥

---

1. धान्यं सङ्गृह्णाति ।

2. भक्तमनुगृह्णाति ।

3. व्यपदेशेन महतां सिद्धिः संजायते ।

4. पुस्तकं निधेहि । अति पूर्वक 'धा' का ठगना अर्थ होता है--'प्रतारणमतिसन्धानम्' इत्यमरः ।

5. तदेतन्नोपपद्यते ।

मन

मनधातोस्तु सम्मानं विमान मपमानकम् ।
अवमानं चाभिमानं निर्माणञ्च प्रमाणकम् ॥ २१ ॥

नी

उत्पूर्वस्य नी धातो रूर्ध्वक्षेपणमुच्यते ।
अभिपूर्वस्त्वभिनये विपूर्वो विनये मतः ॥ २२ ॥

बन्ध

बन्धो न्यादि निबन्धे स्यात्प्रबन्धे च प्रपूर्वकः ।
निर्बन्धे निर्युतो ज्ञेयः प्रत्यादिः प्रतिबन्धके ॥ २३ ॥
सम्बन्धे संयुतश्च स्यादनुबन्धे[1] ऽनुपूर्वकः ।
उदादि[2] बन्ध धातुस्तु स्यादुद्बन्धार्थकस्तदा ॥ २४ ॥

यम

यमधातु र्निसम्पूर्वः संयमे[3] नियमे क्रमात् ।
आयामे चाङ् युतो ज्ञेय उत्पूर्वस्तु तथोद्यमे ॥२५ ॥

वस

विदेश गमने प्रादि[4]: सोपो[5] ऽभोजनके वसिः ।

विश

विश धातुस्तु संपूर्वः शयनार्थे प्रकीर्तितः ॥ २६ ॥
अभिनिद्वय[6] संयुक्तो बुद्धेः स्यात्तु प्रवेशने ।

---

1. विपद् विपदन्तर मनुबध्नाति ।
2. पाशेन आत्मान मुद्बध्नाति ।
3. वाचं संयच्छति, नियच्छति ।
4. ग्रामात् प्रवसति ।
5. सोपः-उपसहितः । उपोषिता ब्राह्मणाः , त्यक्तभोजना इत्यर्थः ।
6. पापेऽभिनिविशते । "अभिनिविशश्च" इत्यात्मनेपदम् ।

उपस्थिता वृपादिः स्यात् पर्यादिः परिवेशने ॥ २७ ॥

वृत्

विस्तारे वृत् वियुक्तः स्यात्[1] संकोचे[2] संयुतस्तथा ।

विच्

विचि विवेचने व्यादिः—

शंसू

शंसः प्रादिः प्रशंसने ॥ २८ ॥

भवेदाशंसने चाङ्युक् अभिशापेऽभिसंयुतः ।

शिष्

अवपूर्वो विशिष्टे शिष् विशेषकरणे वियुक् ॥ २९ ॥

श्वस्

विपूर्वः श्वस् च विश्वासे आश्वासे चाङ्युतो भवेत् ।

सञ्ज्

सञ्जधातुः प्रसंगे[3] च प्रपूर्वश्चाभिधीयते ॥ ३० ॥

अनुपूर्वोऽनुषङ्गे स्यादभिपूर्वोऽभिषङ्गके ।

सद्

सदि व्यादि विषादे स्यात् प्रसादे प्रादिरेव च ॥ ३१ ॥

आसन्ने चाङ्युतश्च स्यात्—

सिच्

सिच् निषेके निपूर्वकः ।

अभिषेकेऽभिपूर्वः स्यादुत्पूर्वो गर्ववाचकः[4] ॥ ३२ ॥

---

1. ग्रन्थाशयं विवृणोति ।
2. आकारं सम्वृणोति ।
3. नैवं दोषः प्रसज्यते ।
4. उत्सेकः-गर्वः । "भाग्येष्वनुत्सेकिनी" शाकुन्तले ।

षिध—

न्यादिः षिधु र्निषेधे स्यात् प्रत्यादिः प्रतिषेधके ।
आङ्युतो राजतो रोधे सेधतिश्च प्रकीर्तितः ॥३३॥

सृ—

प्रादिः प्रसारणे[1] धातुः सृगतौ चैव दृश्यते ।
अभिसारे[2]ऽभियुक्तश्च विस्तारे वियुतोऽपि च ॥३४॥
अस्थिरे[3] स्याच्च सम्पूर्वोऽनुसृतौ[4] योजितोऽनुना ।

स्था—

प्रतिपूर्वः[5] प्रतिष्ठायां स्था प्रस्थाने प्रपूर्वकः[6] ॥३५॥
अध्यादिः स्यादधिष्ठाने सचोत्थाने ह्युदादिकः ।

हन्—

संघाते संयुतो हन् स्यात् परायुक्तः पराहतौ ॥३६॥
व्याघ्राते व्याङ्युतो ज्ञेय उद्घाते चोद्युतो भवेत् ।
प्रत्यादिः प्रतिघाते स्याद् विघाते च विपूर्वकः ॥३७॥

हृञ्—

हृञुदादि रिहोद्धारे कथने व्यायुतो[7] भवेत् ।
नियुक् निर्हरणे च स्यादभ्यवाभ्यां[8] च भोजने ॥३८॥
एवमेवान्य धातूनां योगे चाप्यर्थभेदतः ।
उपसर्गकृता ज्ञेया दिङ्मात्र मिह दर्शितम् ॥३८॥

इति उपसर्गविषयः ।

---

1. प्रसरति: तमः ।
2. अभिसरति कामिनी यामिनीषु ।
3. संसरति इति संसार: ।
4. गुरुमनुसरति शिष्य: ।
5. अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ।
6. विजयाय प्रतिष्ठते ।
7. एवं व्याहरन्ति मुनय: ।
8. अभ्यवहरति—भुङ्क्ते ।

अथ भावकर्म-प्रक्रिया[1]

१. भू—भावे

दशलकारेषु—भूयते[2] । बभूवे । भाविता-भविता । भाविष्यते-भविष्यते । भूयताम् । अभूयत । भूयेत । भाविषीष्ट-भविषीष्ट । अभावि । अभाविष्यत-अभविष्यत ।

२. अनु[3]—भू—कर्मणि

दशलकारेषु—अनुभूयते । अनुबभूवे । अनुभाविता-अनुभविता । अनुभाविष्यते-अनुभविष्यते । अनुभूयताम् । अन्वभूयत । अनुभूयेत । अनुभा-भविषीष्ट । अन्वभावि । अन्वभाविष्यत-अन्वभविष्यत ।

---

1. भाववाच्य अकर्मक धातुओं से और कर्मवाच्य सकर्मकधातुओं से होता है। भाववाच्य में क्रिया को सदा प्रथमपुरुष एकवचन होगा । कर्मवाच्य की क्रिया को पुरुष, वचन, कर्म के अनुसार होंगे न कि कर्ता के अनुसार । यथा—"देवदत्तो ग्रन्थौ पठति" में क्रिया एक वचन कर्ता 'देवदत्तः' के अनुसार है, परन्तु कर्मवाच्य में 'देवदत्तो ग्रन्थौ पठ्येते' ऐसा होगा, क्योंकि कर्म 'ग्रन्थौ' द्विवचन है। इसी प्रकार 'देवदत्तः माम् ताडयति' का कर्मवाच्य—'देवदत्तेन अहं ताड्ये' होगा, अर्थात क्रिया को उत्तमपुरुष कर्म 'माम्' को लेकर न कि कर्ता को लेकर ।

2. यक् कित् है, गुण नहीं हुआ ।

3. उपसर्गसंयोग से अर्थान्तर हो जाने से सकर्मक है।

३ भावि (ण्यन्ताद्भूधातोः) कर्मणि ।

द० ल० - भाव्यते[1] । भावयाञ्चक्रे-मासे-बभूवे । भावयिता-भाविता[2] । भावयिष्यते-भाविष्यते । भाव्यताम् । अभाव्यत । भाव्येत । भावयिषीष्ट-भाविषीष्ट । अभावि, अभावयिषाताम्-अभाविषाताम् । अभावयिष्यत-अभाविष्यत ।

४. बुभूष (सन्नन्ताद् भूधातोः)भावे ।

द० ल०—बुभूष्यते[3] । बुभूषाञ्चक्रे । बुभूषिता । बुभूषिष्यते । बुभूष्यताम् । अबुभूष्यत । बुभूष्येत । बुभूषिषीष्ट । अबुभूषिष्ट । अबुभूषिष्यत ।

५. बोभूय (यङन्ताद्भूधातोः) भावे ।

द० ल० — बोभूय्यते[4] । बोभूयाञ्चक्रे । बोभूयिता । बोभूयिष्यते । बोभूय्यताम् । अबोभूय्यत । बोभूय्येत । बोभूयिषीष्ट । अबोभूयिष्ट । अबोभूयिष्यत ।

६. ष्टुञ्—स्तुतौ । कर्मणि ।

द० ल०—स्तूयते[5] । तुष्टुवे[6] । स्ताविता[7]-स्तोता । स्ताविष्यते-स्तोष्यते । स्तूयताम् । अस्तूयत । स्तूयेत । स्ताविषीष्ट-स्तोषीष्ट । अस्तावि, अस्ताविषाताम्-अस्तोषाताम्, अस्ताविषत-अस्तोषत । अस्ताविष्यत-अस्तोष्यत ।

---

1. देवदत्त स्तं भावयति इति देवदत्तेन सः भाव्यते ।
2. देवदत्तेन भवितुमिष्यते । परिवर्तन—सः भवितुमिच्छति ।
3. आभीयत्व से चिण्वदिट् असिद्ध होने से पक्ष में णिलोप ।
4. देवदत्तेन पुनःपुनर्भूयते । परिवर्तन—देवदत्तः पुनःपुन र्बोभूयते ।
5. "अकृत्सार्वधातुकयोः" से दीर्घ ।
6. देवदत्तो विष्णुं तुष्टाव इति देवदत्तेन विष्णु स्तुष्टुवे ।
7. चिण्वदिट् का विकल्प ।

७. ऋ—गतौ। भावे—

द० ल० अर्यते[1] । आरे[2] । आरिता-अर्ता । आरिष्यते-अरिष्यते। अर्यताम् । आर्यत । अर्येत । आरिषीष्ट-ऋषीष्ट । आरि, आरिषाताम्, आर्षाताम् । आरिष्यत-अरिष्यत ।

८. स्मृ—स्मरणे। कर्मणि

द० ल०—स्मर्यते । सस्मरे । स्मारिता-स्मर्ता । स्मारिष्यते-स्मरिष्यते । स्मर्यताम् । अस्मर्यत । स्मर्येत । स्मारिषीष्ट-स्मृषीष्ट । अस्मारि, अस्मारिषाताम्-अस्मार्षाताम् । अस्मारिष्यत-अस्मरिष्यत ।

९. स्रंसु—भावे

द० लु० स्रस्यते[3] । सस्रंसे । स्रंसिता । स्रंसिष्यते । स्रस्यताम् । अस्रस्यत । स्रस्येत । स्रंसिषीष्ट । अस्रंसि । अस्रंसिष्यत ।

१० नदि—भावे

द० ल०—नन्द्यते । ननन्दे । नन्दिता । नन्दिष्यते । नन्द्यताम् । अनन्द्यत । नन्द्येत । नन्दिषीष्ट । अनन्दि । अनन्दिष्यत ।

११. यज्—कर्मणि

द० ल०—इज्यते । ईजे । यष्टा । यक्ष्यते । इज्यताम् । ऐज्यत । इज्येत । यक्षीष्ट । अयाजि, अयक्षाताम् । अयक्ष्यत ।

१२. तन्—कर्मणि

द० ल०—तायते[4]-तन्यते । तेने । तनिता । तनिष्यते । तायताम्-

1. "गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः" से गुण ।

2. "ऋच्छत्यृताम्" ।

3. यक् कित् है, "अनिदिताम्..." से न लोप ।

4. "तनोतेर्यकि" से आकारादेश ।

तन्यताम् । अतायत-अतन्यत । तायेत-तन्येत । तनिषीष्ट । अतानि । अतनिष्यत ।

१३. तप्—कर्मणि ।

द्० ल०—तप्यते । तेपे । तप्ता । तप्स्यते । तप्यताम् । अतप्यत । तप्येत । तपिषीष्ट । अतापि-अतप्त[1] । अतप्स्यत ।

१४. दा—कर्मणि ।

द्० ल०—दीयते[2] । ददे । दाता-दायिता । दायिष्यते[3]-दास्यते । दीयताम् । अदीयत । दीयेत । दायिषीष्ट-दासीष्ट । अदायि, अदायिषाताम्-अदिषाताम्[4] । अदायिष्यत-अदास्यत ।

१५. धा – कर्मणि ।

द्० ल०—धीयते । दधे । धायिता-धाता । धायिष्यते-धास्यते । धीयताम् । अधीयत । धीयेत । धायिषीष्ट-धासीष्ट । अधायि, अधायिषाताम्, अधिषाताम् । अधास्यत ।

१६. शम[5]—कर्मणि ।

द्० ल०—शम्यते । शेमे । शामिता[6]-शमिता-शमयिता[7] । शामिष्यते-शमिष्यते-शमयिष्यते । शम्यताम् । अशम्यत । शम्येत । शामिषीष्ट-

---

1. "तपोऽनुतापे च" कर्मकर्ता और अनुताप में च्लि को चिण् न होगा ।

2. "घुमास्था..." से ईत्व ।

3. चिण्वदिट्, "आतो युक् चिण्कृतोः" ।

4. "स्थाघ्वोरिच्च" ।

5. चुरादिण्यन्त से कर्म में लकार ।

6. चिण्वद्भाव होकर "चिण्णमुलो—" से दीर्घ का विकल्प ।

7. चिण्वद् के अभाव में रूप ।

शमिषीष्ट-शमयिषीष्ट । अशामि । अशमिष्यत-अशामिष्यत-अशमयिष्यत ।

१७. शम (अकर्मकात्) भावे ।

द्० ल०—शम्यते[1] । शेमे । शमिता । शमिष्यते । शम्यताम् । अशम्यत । शम्येत । शमिषीष्ट । अशमि[2] ; अशमिष्यत ।

१८. दम—कर्मणि ।

द्० ल०—दम्यते । देमे । दमिता । दमिष्यते[3] । दम्यताम् । अदम्यत । दम्येत । दमिषीष्ट । अदमि । अदमिष्यत ।

१९. गम्—कर्मणि ।

द्० ल०—गम्यते । जग्मे । गन्ता । गंस्यते । गम्यताम् । अगम्यत । गम्येत । गंसीष्ट । अगामि । अगंस्यत ।

२०. वद्—कर्मणि ।

द्० ल० —उद्यते[4] । ऊदे । वदिता । वदिष्यते । उद्यताम् । औद्यत । उद्येत । वदिषीष्ट । अवादि । अवदिष्यत ।

२१. कम—कर्मणि ।

द्० ल०— काम्यते । कामयाञ्चक्रे[5] । कामयिता-कामिता कमिता । कामयिष्यते-कामिष्यते-कमिष्यते । काम्यताम् । अकाम्यत । काम्येत । कामयिषीष्ट-कामिषीष्ट-कमिषीष्ट । अकामि । अकामयिष्यत-अकामिष्यत-अकमिष्यत ।

२२. वम्—कर्मणि ।

द्० ल०—वम्यते । ववमे । वमिता । वमिष्यते ।

---

1. दिवादिगणीय अकर्मक है ।
2. "नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यऽनाचमेः" उपधावृद्धि का निषेध ।
3. उदात्तोपदेश नहीं होगा ।
4. सम्प्रसारण ।
5. आय् के अभाव में-चकमे ।

२३ भञ्ज्—कर्मणि।

द० ल०—भज्यते। बभञ्जे। भङ्क्ता। भङ्क्ष्यते। भज्यताम्। अभज्यत। भज्येत। भङ्क्षीष्ट। अभाजि-अभञ्जि। अभङ्क्ष्यत।

२४ लभ—कर्मणि।

द० ल०—लभ्यते। लेभे। लब्धा। लप्स्यते। लभ्यताम्। अलभ्यत। लभ्येत। लप्सीष्ट। अलाभि-अलम्भि। अलप्स्यत।

अथ भाव-कर्मवाच्य धातुरूपतालिका—

धातु	लट्	लिट्	लुट्	लुङ्
अर्च्	अर्च्यते	आनर्चे	अर्चिता	आर्चि
अश्	अश्यते	आशे	अशिता-ष्टा	आशि
आप्	आप्यते	आपे	आप्ता	आपि
इण्	ईयते	ईये	आयिता-एता	आयि
इङ्	अधीयते	अधिजगे	अध्यायिता	अध्यायि
			अध्येता	अध्यगायि
इष	इष्यते	ईषे	एषिता-एष्टा	ऐषि
ऊह	ऊह्यते	ऊहे	ऊहिता	औहि
कथ्	कथ्यते	कथयाम्बभूवे	कथयिता-कथिता	अकथि
कपि	कम्प्यते	चकम्पे	कम्पिता	अकम्पि
कुप्	कुप्यते	चुकुपे	कोपिता	अकोपि
कृञ्	क्रियते	चक्रे	कारिता-कर्ता	अकारि

धातु	लट्	लिट्	लुट्	लुङ्
कृष्	कृष्यते	चकृषे	क्रष्टा, कर्ष्टा	अकर्षि
कम	कम्यते	चकमे	कमिता	अकमि
क्लिश	क्लिश्यते	चिक्लिशे	क्लेशिता	अक्लेशि
क्षिप्	क्षिप्यते	चिक्षिपे	क्षेप्ता	अक्षेपि
खन्	खन्यते,	खायते-चख्ने	खनिता	अखानि
खाद्	खाद्यते	चखादे	खादिता	अखादि
गण	गण्यते	जगणे	गणिता	अगणि
गर्ह	गर्ह्यते	जगर्हे	गर्हिता	अगर्हि
गाह	गाह्यते	जगाहे	गाहिता	अगाहि
गुप्	गोपाय्यते, गुप्यते	गोपायाञ्चक्रे, जुगुपे	गोपायिता, गोपिता,	अगोपायि अगोपि
गॄ	गीर्यते	जगरे	गरि-रीता	अगारि-लि
तॄ	तीर्यते	ततरे	तरि-रीता	अतारि
ग्रथि	ग्रन्थ्यते	जग्रन्थे	ग्रन्थिता	अग्रन्थि
ग्रह्	गृह्यते	जगृहे	ग्राहिता, ग्रहीता	अग्राहि
घ्रा	घ्रायते	जघ्रे	घ्रायिता, घ्राता	अघ्रायि
चर	चर्यते	चेरे	चरिता	अचारि
चित्	चित्यते	चिचिते	चेतिता	अचेति
छाद्	छाद्यते	चच्छादे	छादिता	अच्छादि
जि	जीयते	जिग्ये	जायिता, जेता	अजायि
तर्क्	तर्क्यते	ततर्के	तर्किता	अतर्कि
त्रप्	त्रप्यते	तत्रपे, त्रेपे	त्रपिता, त्रप्ता	अत्रापि
त्वर्	त्वर्यते	तत्वरे	त्वरिता	अत्वारि-अत्वरि
दृश	दृश्यते	ददृशे	दर्शिता, द्रष्टा	अदर्शि

धातु	लट्	लिट्	लुट्	लुङ्
दह्—	दह्यते	देहे	दग्धा	अदाहि
दुष्—	दुष्यते	दुदुषे	दोष्टा	अदोषि
दुह्—	दुह्यते	दुदुहे	दोग्धा	अदोहि
द्विष्—	द्विष्यते	दिद्विषे	द्वेष्टा	अद्वेषि
नृत्—	नृत्यते	ननृते	नर्तिता	अनर्ति
ध्यै —	ध्यायते	दध्याये	ध्यायिता, ध्याता	अध्यायि
नम्	नम्यते	नेमे	नन्ता	अनामि
नश्—	नश्यते	नेशे	नशिता, नंष्टा	अनाशि
नह्—	नह्यते	नेहे	नद्धा	अनाहि
पठ्—	पठ्यते	पेठे	पठिता	अपाठि
नी —	नीयते	निन्ये	नायिता, नेता	अनायि
पुष्—	पुष्यते	पुपुषे	पोष्टा	अपोषि
पूर्—	पूर्यते	पुपूरे	पूरिता	अपूरि
प्री—	प्रीयते	पिप्रिये	प्रायिता, प्रेता	अप्रायि
वच्—	उच्यते	ऊचे	वक्ता	अवाचि
भी—	भीयते	बिभ्ये	भायिता, भेता	अभायि
भुज्—	भुज्यते	बुभुजे	भोक्ता	अभोजि
मा—	मीयते	ममे	माता	अमायि
पा—	पीयते	पिप्ये	पायिता, पाता	अपायि
मुच्—	मुच्यते	मुमुचे	मोक्ता	अमोचि
युज्—	युज्यते	युयुजे	योक्ता	अयोजि
रभ्—	रभ्यते	रेभे	रब्धा	अरम्भि
रम्—	रम्यते	रेमे	रन्ता	अरामि

धातु	लट्	लिट्	लुट्	लुङ्
रुद्	रुद्यते	रुरुदे	रोदिता	अरोदि
वृत्	वृत्यते	ववृते	वर्तिता	अवर्ति
विध्	विध्यते	विविधे	व्यद्धा	अव्याधि
व्रश्च	वृश्च्यते	ववृश्चे	व्रश्चिता, व्रष्टा	अव्रश्चि
वप	उप्यते	ऊपे	वप्ता	अवापि
वस्	उष्यते	ऊषे	वस्ता	अवासि
शक्	शक्यते	शेके	शक्ता	अशाकि
श्रु	श्रूयते	शुश्रुवे	श्राविता, श्रोता	अश्रावि
शी	शय्यते	शिश्ये	शायिता, शयिता	अशायि
हन्	हन्यते	जघ्ने	घानिता, हन्ता	अवधि, अघानि
स्वप	सुप्यते	सुषुपे	स्वप्ता	अस्वापि
हा	हीयते	जहे	हाता	अहायि
हु	हूयते	जुहुवे	हाविता, होता	अहावि
स्था	स्थीयते	तस्थे	स्थायिता, स्थाता	अस्थायि
हृञ्	ह्रियते	जह्रे	हरिता, हर्ता	अहारि
शास्	शिष्यते	शशासे	शासिता	अशासि
सिच्	सिच्यते	सिषिचे	सेक्ता	असेचि
वदि	वन्द्यते	ववन्दे	वन्दिता	अवन्दि
मिल्	मिल्यते	मिमिले	मेलिता	अमेलि
धृ	ध्रियते	दध्रे	धारिता, धर्ता	अधारि
नु	नूयते	नुनुवे	नोता	अनावि
लिख्	लिख्यते	लिलिखे	लेखिता	अलेखि

इति भावकर्म प्रक्रिया ।

अथ कृदन्तरूपावलिः

धातु	क्त	क्त्वा	क्तवतु	तुमुन्	शतृ-शानच्	तव्य	अनीयः
अद्	जग्धः	जग्ध्वा	जग्धवान्	अत्तुम्	अदन्-अदती	अत्तव्यः	अदनीयः
अस्	भूतः	भूत्वा	भूतवान्	भवितुम्	सन्-सती	भवितव्यम्	भवनीयम्
आस्	आसितः	आसित्वा	आसितवान्	आसितुम्	आसीनः-ना	आसितव्यम्	आसनीयम्
दृश्	दृष्टः	दृष्ट्वा	दृष्टवान्	द्रष्टुम्	पश्यन्-पश्यन्ती	द्रष्टव्यः	दर्शनीयः
इष्	इष्टः	इष्ट्वा	इष्टवान्	एष्टुम्	इच्छन्-इच्छन्ती	एष्टव्यः	एषणीयः
इ	इतः	इत्वा	इतवान्	एतुम्	यन्	एतव्यः	अयनीयः
आप्	आप्तः	आप्त्वा	आप्तवान्	आप्तुम्	आप्नुवन्-ती	आप्तव्यः	आपनीयः
अधि+इ	अधीतः	अधीत्य	अधीतवान्	अध्येतुम्	अधीयान	अध्येतव्यः	अध्ययनीयः
ईक्ष्	ईक्षितः	ईक्षित्वा	ईक्षितवान्	ईक्षितुम्	ईक्षमाणः	ईक्षितव्यः	ईक्षणीयः
कथ	कथितम्	कथयित्वा	कथितवान्	कथयितुम्	कथयन्	कथयितव्यः	कथनीयः
कृ	कृतम्	कृत्वा	कृतवान्	कर्तुम्	कुर्वन्-कुर्वाणः	कर्तव्यम्	करणीयम्
क्री	क्रीतम्	क्रीत्वा	क्रीतवान्	क्रेतुम्	क्रीणन्-क्रीणानः	क्रेतव्यम्	क्रयणीयम्
गम्	गतः	गत्वा	गतवान्	गन्तुम्	गच्छन्	गन्तव्यम्	गमनीयम्
ग्रह	गृहीतः	गृहीत्वा	गृहीतवान्	ग्रहीतुम्	गृह्णन्	ग्रहीतव्यम्	ग्रहणीयम्

धातु	क्त	क्त्वा	क्तवतु	तुमुन्	शतृ–शानच्	तव्य	अनीय
चुर्	चोरितः	चोरयित्वा	चोरितवान्	चोरयितुम्	चोरयन्–चोरयमाणः	चोरयितव्यः	चोरणीयः
चिन्त	चिन्तितः	चिन्तयित्वा	चिन्तितवान्	चिन्तयितुम्	चिन्तयन्	चिन्तयितव्यः	चिन्तनीयः
जि	जित.	जित्वा	जितवान्	जेतुम्	जयन्	जेतव्यः	जयनीयः
जन्	जातः	जनित्वा	जातवान्	जनितुम्	जायमानः	जनितव्यः	जननीयः
जागृ	जागरितः	जागरित्वा	जागरितवान्	जागरितुम्	जाग्रत्	जागरितव्यम्	जागरणीयम्
ज्ञा	ज्ञातः	ज्ञात्वा	ज्ञातवान्	ज्ञातुम्	जानन्	ज्ञातव्यः	ज्ञानीयः
ताड्	ताडितः	ताडयित्वा	ताडितवान्	ताडयितुम्	ताडयन्	ताडयितव्यः	ताडनीयः
तन्	ततः	तत्वा	ततवान्	तनितुम्	तन्वन्	तनितव्यः	तननीयः
दिव	द्यूतः-नः	देवित्वा	द्यूनवान्	देवितुम्	दीव्यन्	देवितव्यम्	देवनीयम्
दुह	दुग्धम्	दुग्ध्वा	दुग्धवान्	दोग्धुम्	दुहन्	दोग्धव्यम्	दोहनीयम्
दा	दत्तः	दत्वा	दत्तवान्	दातुम्	ददन्	दातव्यम्	दानीयम्
नम्	नतः	नत्वा	नतवान्	नन्तुम्	नमन्	नन्तव्यः	नमनीयः
नी	नीतः	नीत्वा	नीतवान्	नेतुम्	नयन्	नेतव्यम्	नयनीयः
नश्	नष्टः	नष्ट्वा	नष्टवान्	नशितुम्	नश्यन्	नष्टव्यम्	नशनीयम्
पा	पीतः	पीत्वा	पीतवान्	पातुम्	पिबन्	पातव्यः	पानीयः

धातु	क्त	क्त्वा	क्तवतु	तुमुन्	शतृ-शानच्	तव्य	अनीय
पठ्	पठितः	पठित्वा	पठितवान्	पठितुम्	पठन्	पठितव्यः	पठनीयः
पच्	पक्तः	पक्त्वा	पक्ववान्	पक्तुम्	पचन्	पक्तव्यः	पचनीयः
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्ट्वा	पृष्टवान्	प्रष्टुम्	पृच्छन्	प्रष्टव्यः	प्रच्छनीयः
ब्रू	उक्तः	उक्त्वा	उक्तवान्	वक्तुम्	ब्रुवन्, ब्रुवाणः	वक्तव्यम्	वचनीयम्
भू	भूतः	भूत्वा	भूतवान्	भवितुम्	भवन्	भवितव्यम्	भवनीयम्
भ्रम्	भ्रान्तः	भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा	भ्रान्तवान्	भ्रमितुम्	भ्राम्यन्	भ्रमितव्यम्	भ्रमणीयम्
भक्ष्	भक्षितः	भक्षयित्वा	भक्षितवान्	भक्षयितुम्	भक्षयन्	भक्षयितव्यः	भक्षणीयः
भी	भीतः	भीत्वा	भीतवान्	भेतुम्	बिभ्यत्	भेतव्यम्	भयनीम्
भृ	भृतः	भृत्वा	भृतवान्	भर्तुम्	भरन्	भर्तव्यम्	भरणीयम्
भुज्	भुक्तः	भुक्त्वा	भुक्तवान्	भोक्तुम्	भुञ्जानः	भोक्तव्यः	भोजनीयः
मुद्	मुदितः, मोदितः	मुदित्वा	मोदितवान्, मुदितवान्	मोदितुम्	मोदमानः	मोदितव्यम्	मोदनीयम्
मृ	मृतः	मृत्वा	मृतवान्	मर्तुम्	म्रियमाणः	मर्तव्यम्	मरणीयम्

धातु	क्त	क्त्वा	क्तवतु	तुमुन्	शतृ-शानच्	तव्य	अनीय
मुञ्च्	मुक्तः	मुक्त्वा	मुक्तवान्	मोक्तुम्	मुञ्चन्	मोक्तव्यः	मोचनीयः
मुष्	मुषितः	मुषित्वा	मुषितवान्	मोषितुम्	मुष्णन्	मोषितव्यः	मोषणीयः
याच्	याचितः	याचित्वा	याचितवान्	याचितुम्	याचमानः	याचितव्यः	याचनीयः
युज्	युक्तः	युक्त्वा	युक्तवान्	योक्तुम्	युञ्जन्	योक्तव्यः	योजनीयः
बुध्	बुद्धः	बुद्ध्वा	बुद्धवान्	बोद्धुम्	बुध्यमानः	बोद्धव्यः	बोधनीयः
रञ्ज्	रञ्जितः	रञ्जित्वा	रञ्जितवान्	रञ्जितुम्	रञ्जन्	रञ्जितव्यः	रञ्जणीयः
रुद्	रुदितः	रुदित्वा	रुदितवान्	रोदितुम्	रुदन्	रोदितव्यः	रोदनीयम्
लभ्	लब्धः	लब्ध्वा	लब्धवान्	लब्धुम्	लभमानः	लब्धव्यः	लभनीयम्
वद्	उदितः	उदित्वा	उदितवान्	वदितुम्	वदन्	वदितव्यम्	वदनीयम्
वृध्	वृद्धः	वृद्ध्वा	वृद्धवान्	वर्धितुम्	वर्धमानः	वर्धितव्यम्	वर्धनीयम्
वृत्	वृत्तः	वृत्त्वा	वृत्तवान्	वर्तितुम्	वर्तमानः	वर्तितव्यम्	वर्तनीयम्
व्यध्	विद्धः	विद्ध्वा	विद्धवान्	व्यद्धुम्	विध्यन्	वेद्धव्यम्	व्यधनीयम्
विद्	वित्तः	वित्त्वा	वित्त-न्नवान्	वेत्तुम्	विद्यमानः	वेत्तव्यम्	वेदनीयम्
विद्	विदितः	विदित्वा	विदितवान्	वेदितुम्	विदन्	वेदितव्यः	वेदनीयः
शम्	शान्तः	शमित्वा, शान्त्वा	शान्तवान्	शमितुम्	शाम्यन्	शमितव्यः	शमनीयः
शी	शयितः	शयित्वा	शयितवान्	शयितुम्	शयानः	शयितव्यम्	शयनीयम्

धातु	क्त	क्त्वा	क्तवतु	तुमुन्	शतृ-शानच्	तव्य	अनीय
श्रु	श्रुतः	श्रुत्वा	श्रुतवान्	श्रोतुम्	शृण्वन्	श्रोतव्यः	श्रवणीयः
शक्	शक्तः	शक्त्वा	शक्तवान्	शक्तुम्	शक्नुवन्	शक्तव्यम्	शकनीयम्
सेव्	सेवितः	सेवित्वा	सेवितवान्	सेवितुम्	सेवमानः	सेवितव्यः	सेवनीयः
सह्	सोढः	सोढ्वा	सोढवान्	सोढुम्	सहमानः	सोढव्यम्	सहनीयः
स्तु	स्तुतः	स्तुत्वा	स्तुतवान्	स्तोतुम्	स्तुवन्	स्तोतव्यः	स्तवनीयः
स्पृश्	स्पृष्टः	स्पृष्ट्वा	स्पृष्टवान्	स्प्रष्टुम्	स्पृशन्	स्प्रष्टव्यः	स्पर्शनीयः
स्था	स्थितः	स्थित्वा	स्थितवान्	स्थातुम्	तिष्ठन्	स्थातव्यम्	स्थानीयम्
स्मृ	स्मृतः	स्मृत्वा	स्मृतवान्	स्मर्तुम्	स्मरन्	स्मर्तव्यः	स्मरणीयः
हस्	हसितः	हसित्वा	हसितवान्	हसितुम्	हसन्	हसितव्यम्	हसनीयम्
हन्	हतः	हत्वा	हतवान्	हन्तुम्	घ्नन्	हन्तव्यः	हननीयः

इति श्री पं० चरणदास शास्त्रि साहित्यालङ्कारकृतः

धातुरूप संग्रहः

॥ समाप्तः ॥